# AMARAPRAKASA

# ॥ अमरप्रकाश ॥

अर्थात्

अकारादि क्रम से अमरकोष के शब्दों का लि-
ङ्गादिनिर्देशसहित हिन्दी भाषा में अर्थ ।

जिसे

जयनारायण कालेज के प्रधान संस्कृताध्यापक
श्रीयुत पं० गोपालशर्म्मा ने बनाया ।

श्रीमन्महाराजाधिराज द्विजराज श्रीकाशिराज
श्री५मदीश्वरीप्रसाद नारायणसिंह देव बहादुर
जी० सी० एस्० आइ० जू की आज्ञानुसार
श्री वैद्यनाथ पण्डित ने प्रकाशित किया ।




भारतजीवन यन्त्रालय बनारस ।

संवत् १९४२ ।

मूल्य २)

Bhàratajìwana Press •
Benares.

॥ श्री ॥

# भूमिका ।

शब्दाब्धितरयः कोशा ये कृताः पूर्वसूरिभिः ।

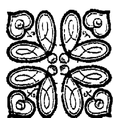
तेषामनुगमी कोशः प्लवोऽयङ्गृह्यताम्बुधाः ॥ १ ॥

यह कोश मैंने अमरकोश देख कर बनाया है अर्थात् उसी के सब शब्द और अर्थों को देख कर लिखा है, कहीं २ प्रसङ्गवश से कई एक शब्द और कई एक अर्थ अधिक भी लिखे गये हैं, यद्यपि शब्द और अर्थ असङ्ख्य हैं तथापि मै समझता हूं कि षट्काव्य नाटक और इस से अधिक जो आज कल के प्रचलित ग्रन्थ हैं इन में प्रायः अमरकोश के शब्दों से अधिक कोई शब्द नहीं व्यवहृत हैं इस लिये और २ कोशों के शब्दों का लिखना केवल परिश्रम समझ कर मैंने छोड़ दिया क्योंकि पढ़ने वाले लोगों का काम इतनेहीं मे पूरा हो जायगा और ऐसी भी इच्छा है कि अवकाश पा कर कई एक कोशों को एकट्ठा करके लिखूं ।

इस कोश में पुल्लिङ्ग स्त्रीलिङ्ग नपुंसकलिङ्ग और तीनोलिङ्ग के शब्दों के लिङ्गों के ज्ञान के लिये उन के अगाड़ी मैंने क्रम से (पुं०) (स्त्री) (नपुं०) (त्रि०) ऐसे सङ्केत कर दिये हैं और जो शब्द प्रातिपदिकत्वावस्था में और प्रथमा के एकवचनान्तत्वावस्था में एकसा है उस को छोड़ बाकी शब्दों का प्रातिपदिकरूप लिख कर उस के पीछे उस का लिङ्गनिर्देश कर के अनन्तर कोई अक्षर जो प्रथमा के एकवचन में विकृत हो जाता है उस का स्वरूप जिस लिङ्ग मे जैसा होता है वैसा लिख दिया है जैसा—दृष्ट (त्रि०) (ष्टः।

ष्टा। ष्टम्) अर्थात् क्रम से पुल्लिङ्ग में "धृष्टः" स्त्रीलिङ्ग में "धृष्टा" और नपुंसक लिङ्ग में "धृष्टम्" ऐसा जानना और जिस शब्द के अर्थों के मध्य वा अन्त में [ ] ऐसे कोष्ठ के बीच जो शब्द का समग्र स्वरूप लिखा हुआ है उसे उस अर्थ में उसी शब्द का पर्याय जानना चाहिये ॥

| | |
|---|---|
| बनारस<br>सं० १९४२ श्रावण कृष्ण १<br>वार मङ्गल। | गोपालशर्म्मा<br>प्रधानसंस्कृताध्यापक<br>जयनारायणपाठशाला। |



# अमरप्रकाश ॥

-00-

सर्वेऽर्था यान्ति सिद्धिं सकलगुणनिधिं विघ्ननाशैकहेतुं
देवेड्यं ध्यायतां यं सुविमलमनसा भक्तिभाजां नराणाम् ॥
तं दिव्यैभास्यमादौ दिविषदमखिलैः सर्वकार्य्येषु पूज्यम्
पार्वत्यानन्दसिन्धुं वरदवरमहं श्रीगणेशं स्मरामि ॥ १ ॥
राधाधररसलुब्धं मुग्धं स्निग्धाम्बुदाभसौम्यतनुम् ।
तं कमपीड्यं जगतामीडे शरणं स्वभक्तजन्मवताम् ॥ २ ॥

## ( अ )

अः ( पुं० ) वासुदेव, ( अ ) निषेध अर्थ में अव्यय है ।

अकरणिः ( स्त्री ) अकरणिः, अजीवनिः, अजननिः इत्यादि शब्द शाप देने में बोले जाते हैं जैसा "अकरणिस्ते शठ भूयात्" = हे शठ तेरा न करना होवे इत्यादि और उदाहरण जानना ।

अकूपारः ( पुं० ) समुद्र ।

अक्लिष्टकर्म्मन्, नान्त ( त्रि० ) ( र्म्मा । र्म्मा । र्म्म ) जिसका काला कर्म्म नहीं है अर्थात् शुभ कर्म्म करने वाला = ली ।

अक्रीड़ः ( पुं० ) राजा का वन जो सर्व्व साधारण है अर्थात् सब के लिये है ।

अक्ष ( पुं० । नपुं० ) ( क्षः । क्षम् ) ( पुं० ) पासा, सोलह मासा, बहेड़ा. ( नपुं० ) सोचर नोन, इन्द्रिय ।

अक्षताः, बहुवचनान्त ( पुं० ) कोरा चावल ।

अक्षदर्शकः ( पुं० ) प्राड्विवाक में देखो ।

अक्षदेविन् ( पुं० ) ( वी ) जुआरी ।

अक्षधूर्त्तः ( पुं० ) तथा ।

अक्षपादः ( पुं० ) नैयायिक में देखो । [ आक्षपादः ]

अक्षरम् ( नपुं० ) मोक्ष, परब्रह्म, ककारादि वर्ण ।

अक्षरचणः ( पुं० ) लेखक ।

अक्षरचुञ्चुः ( पुं० ) तथा ।

अक्षरसंस्थानम् ( नपुं० ) लिपि वा लिखना ।

अक्षवती ( स्त्री ) जूआ ।
अक्षाग्रकीलकम् (नपुं०) अणि में देखो ।
अक्षान्तिः ( स्त्री ) दूसरे के बढ़ती को न सहना ।
अक्षि, इदन्त (नपुं०) नेत्र वा आँख ।
अक्षिकूटकम् ( नपुं० ) हाथियों का नेत्रगोलक ।
अक्षिगत (त्रि०) ( तः । ता । तम् ) द्वेष करने के योग्य, आंख में गत वा प्राप्त वा प्रविष्ट ।
अक्षीव ( त्रि० ) ( वः । वा । वम् ) ( पुं० ) सहिंजन वृक्ष ( त्रि० ) नहीं मतवाला, =ली (नपुं०) समुद्र का नोन [ अक्षिवम् ]
अक्षोटः ( पुं० ) अखरोट मेवा । [ अक्षोडः ] [ आक्षोडः ] [ आ-क्षोटः ] [ आखोटः ]
अक्षौहिणी ( स्त्री ) दश अनीकिनी का समूह अर्थात् जिस सेना में २१८७० रथ, २१८७० हाथी, ६५६१० घोड़े, १०९३५० पैदल।
अखण्ड ( त्रिः ) ( ण्डः । ण्डा । ण्ड-म् ) समग्र ।
अखातम् ( नपुं० ) अकृत्रिम जलाशय अर्थात् किसी ने नहीं खोदवाया जैसा सरोवर इत्यादि ।
अखिल ( त्रि० ) ( लः । ला । लम् ) समग्र वा सम्पूर्ण ।
अगः ( पुं० ) पर्वत, वृक्ष ।
अगदः ( पुं० ) औषध ।
अगदङ्कारः ( पुं० ) वैद्य ।
अगमः ( पुं० ) वृक्ष ।
अगरी ( स्त्री ) वन्दाल एक प्रकार की घास ।
अगरु ( पुं० । नपुं० ) ( रुः । रु ) अगर, काला अगर वृक्ष विशेष ।
अगस्त्यः ( पुं० ) अगस्त्य ऋषि ।
अगाध ( त्रि० ) ( धः । धा । धम् ) बहुत गहिरा =री ।
अगारम् ( नपुं० ) घर [आगारम्]
अगुरु ( पुं० । नपुं० ) ( रुः । रु ) सीसो वृक्ष, ( नपुं० ) अगर ।
अगुरुशिंशपा ( स्त्री ) भस्मगर्भा में देखो ।
अग्नायी ( स्त्री ) अग्नि की स्त्री ।
अग्निः ( पुं० ) आग ।
अग्निकण ( त्रि० ) ( णः । णा । णम् ) चिनगारी ।
अग्निचित् ( पुं० ) अग्निहोत्री ।
अग्निज्वाला ( स्त्री ) अग्नि की ज्वाला, धव नामक वृक्ष विशेष ।
अग्निचयम् ( नपुं० ) दक्षिणाग्नि, आहवनीयाग्नि, गार्हपत्याग्नि इन तीनो अग्नियों का समूह ।
अग्निभूः ( पुं० ) स्वामिकार्तिक

नामक शिव का एक पुत्र ।
अग्निमन्थः ( पुं० ) जयपर्णी वा अरणी अर्थात् अगेथु वृक्ष विशेष ।
अग्निमुखी ( स्त्री० ) भेलावाँ, विष विशेष ।
अग्निशिख ( स्त्री । नपुं० ) ( खा । खम् ) ( स्त्री ) कलिहारी वा करियारी, इन्द्रपुष्पी लताविशेष, ( नपुं० ) केसर ।
अग्न्युत्पातः ( पुं० ) आकाशादि में अग्निविकार ।
अग्र ( त्रि० ) ( ग्रः । ग्रा । ग्रम् ) (त्रि०) प्रधान वा मुख्य, (नपुं०) वृक्ष इत्यादि की चोटी, अगाड़ी, अधिक ।
अग्रजः ( पुं० ) जेठा भाई ।
अग्रजन्मन्, नान्त ( पुं० ) ( न्मा ) ब्राह्मण ।
अग्रतः ( अव्यय ) अगाड़ी ।
अग्रतःसर ( त्रि० ) ( रः । रा । रम् ) अगाड़ी चलने वाला = ली ।
अग्रमांसम् ( नपुं० ) कलेजा ।
अग्रिय ( त्रि० ) ( यः । या । यम् ) ( त्रि० ) प्रधान वा मुख्य (पुं०) जेठा भाई ।
अग्रीय, तथा ।
अग्रेदिधिषूः ( पुं० ) जिस ब्राह्मणादि तीनो वर्णों की कुटम्ब वाली स्त्री अर्थात् पुत्रादि वाली पुनर्भू होय वह ब्राह्मणादि ।
अग्रेसरः ( पुं० ) अगाड़ी चलनेवाला । [ अग्रसरः ]
अग्र्य, अग्रिय के समान जानो ।
अघम् ( नपुं० ) पाप, दुःख, खराब लत्त जैसा शिकार जूआ इत्यादि
अघमर्षण ( त्रि० ) ( णः । णा । णम् ) सब पापों का नाश करनेवाला जो जप्य अर्थात् ऋचा इत्यादि ।
अघ्न्या ( स्त्री ) गैया ।
अङ्कः ( पुं० ) संख्या, चिन्ह, गोदी।
अङ्कुरः ( पुं० ) वृक्षादि का अँखुआ।
अङ्कुशः ( पुं० ) आँकुस हाथी की शिक्षा के लिये ।
अङ्कोटः ( पुं० ) टेरा वृक्षविशेष [अङ्कोठः ] [ अङ्कोलः ]
अङ्क्यः ( पुं० ) हरीतकी के सदृश मृदङ्ग ।
अङ्ग ( अव्यय ) सम्बोधन, फेर ।
अङ्गम् ( नपुं० ) देह के भाग जैसा हाथ, पैर, इत्यादि छन्दःकल्पादि वेदाङ्ग ।
अङ्गणम् ( नपुं० ) अंगना ।
अङ्गदम् ( नपुं० ) हाथ का गहना बिजायठ ।
अङ्गना ( स्त्री ) सुन्दर अङ्गवाली

स्त्री, सार्वभौम दिग्गज की स्त्री।

अङ्गविक्षेपः ( पुं० ) नाचना।

अङ्गसंस्कारः ( पुं० ) देह को स्नान इत्यादि से भूषित करना।

अङ्गहारः ( पुं० ) नाचना।

अङ्गारः ( पुं० ) जलता वा बुता कोइला।

अङ्गारकः ( पुं० ) मङ्गल ग्रह।

अङ्गारधानिका ( स्त्री ) बोरसी।

अङ्गारवल्लरी ( स्त्री ) एक प्रकार का करञ्ज वृक्ष।

अङ्गारवल्ली ( स्त्री ) ब्रह्मदण्डी ओषधी।

अङ्गारशकटी ( स्त्री ) बोरसी।

अङ्गिरस्, सान्त ( पुं० ) ( राः ) अङ्गिराऋषि।

अङ्गीकारः ( पुं० ) अंगीकार।

अङ्गीकृत ( त्रि० ) ( तः । ता । तम् ) अङ्गीकार किया गया वा कीगई।

अङ्गुलिमानम् ( नपुं० ) एक प्रकार का नाप अङ्गुल हाथ गज इत्यादि इसी नाप को प्रमाण भी कहते हैं।

अङ्गुलिमुद्रा ( स्त्री ) वह अंगूठी जिस पर अक्षर खुदे हों।

अङ्गुली ( स्त्री ) अंगुरी [ अङ्गुलिः ]

अङ्गुलीयकम् ( नपुं० ) अंगूठी।

अङ्गुष्ठः ( पुं० ) अंगूठा।

अङ्घ्रिः ( पुं० ) पैर।

अङ्घ्रिनामकः ( पुं० ) वृक्ष इत्यादि की जड़।

अङ्घ्रिपर्णिका ( स्त्री ) पिठवन ओषधी।

अङ्घ्रिवल्लिका ( स्त्री ) तथा।

अचण्डी ( स्त्री ) क्रोधरहित स्त्री।

अचल ( त्रि० ) ( लः । ला । लम् ) ( त्रि० ) स्थिर ( पुं० ) पर्वत, ( स्त्री ) पृथ्वी।

अचिक्कण ( त्रि० ) ( णः । णा । णम ) चिकना नहीं।

अच्युतः ( पुं० ) विष्णु।

अच्युताग्रजः ( पुं० ) बलदेव।

अच्छ ( त्रि० ) ( च्छः । च्छा । च्छम् ) निर्मल, ( पुं० ) भालू।

अच्छभल्लः ( पुं० ) भालू।

अज ( पुं० । स्त्री ) ( जः । जा ) ( पुं० ) विष्णु, ब्रह्मा, महादेव, बकरा, ( स्त्री ) बकरी।

अजगन्धिका ( स्त्री ) बर्बरा, तुङ्गी में देखो लताविशेष।

अजगरः ( पुं० ) अजगर सर्प।

अजगवम् ( नपुं० ) शिव का धनुष। [ अजगवम् ]

अजन्यम् ( नपुं० ) उत्पात जो आकाश इत्यादि से लुक गिरते हैं।

अजमोदा ( स्त्री ) अजवाइन ओ-

षधी।

अजशृङ्गी (स्त्री) मेढ़ाशृङ्गी नेत्र की ओषधी।

अजस्र (त्रि०) (स्रः। स्रा। स्रम्) निरन्तर. अव्ययवाची (नपुं०) और द्रव्यवाची तीनों लिङ्ग हैं।

अजा (स्त्री) केवाँच तरकारी।

अजा (स्त्री) बकरी।

अजाजी (स्त्री) जीरा भोजन का मसाला।

अजाजीवः (पुं०) भेड़िहारा वा गंडेरिया।

अजित (त्रि०) (तः। ता। तम्) (पुं०) शिव, विष्णु, (त्रि०) जो जीता न गया = यो।

अजिनम् (नपुं०) मृगचर्म वा हरिण का चमड़ा।

अजिनपत्रा (स्त्री) चमगुदरी।

अजिनयोनिः (पुं०) हरिण।

अजिरम् (नपुं०) अंगना, विषय, शरीर।

अजिह्म (त्रि०) (ह्मः। ह्मा। ह्मम्) सीधा वा सोधी।

अजिह्मगः (पुं०) बाण।

अज्झुका (स्त्री) वेश्या नाट्य मे।

अज्झटा (स्त्री) भूमि का अंवरा एक फल वा भूम्य मलकी।

अज्ञ (त्रि०) (ज्ञः। ज्ञा। ज्ञम्) मूर्ख,।

अज्ञानम् (नपुं०) अज्ञान, मूर्खता, अहङ्कार।

अञ्चित (त्रि०) (तः। ता। तम्) पूजित।

अञ्जन (त्रि०) (नः। ना-नी। नम) (पुं०) पश्चिम दिशा का दिग्गज, (स्त्री) हनुमान् की माता, (नपुं०) सुरमा।

अञ्जनकेशी (स्त्री) मालकागणी ओषधि।

अञ्जनावती (स्त्री) सुप्रतीकना-मा दिग्गज की स्त्री।

अञ्जलिः (पुं०) अंजुरी।

अञ्जसा (अव्यय) जल्दी,. निश्चय।

अटनिः (स्त्री) धनुष् का टोंका [अटनी]

अटरूषः (पुं०) अरुस एक वृक्ष।

अटवी (स्त्री) बन।

अटा (स्त्री) पर्य्यटन वा घूमना।

अट्टः (पुं०) अटारी।

अट्या (स्त्री) पर्यटन वा घूमना।

अणक (त्रि०) (कः। का। कम्) अधम वा नीच। [आणकः]

अणव्यम् (नपुं०) मोथी कोदों इत्यादि छोटे अन्न का खेत।

अणिः (पुं०। स्त्री) (णिः। णिः) पहिया के नाभि काष्ठ के अग्र

भाग में पहिया के धारणार्थ जो कील ।

अणिमन् (पुं०) (मा) अणुता वा सूक्ष्मता ।

अणीयस् (त्रि०) (यान् । यसी । यः) अतिसूक्ष्म ।

अणु (त्रि०) (णुः । णवी । णु) (त्रि०) सूक्ष्म, (पुं०) एक प्रकार का चावल जिसको चीना कहते हैं ।

अण्डम् (नपुं०) अण्डा ।

अण्डकोशः (पु०) अण्डकोश वा प्राणी के वीर्य्य रहने का स्थान [अण्डकोषः]

अण्डज (त्रि०) (जः । जा । जम्) (त्रि०) पक्षी, मत्स्य इत्यादि जन्तु जो अण्डा से उत्पन्न होते हैं (पुं०) ब्रह्मा ।

अतटः (पुं०) पर्वत से बेरोक गिरने की जगह ।

अतर्कित (त्रि०) (तः । ता । तम्) तर्कणा न किया गया = यी ।

अतलस्पर्श (त्रि०) (र्शः । र्शा । र्शम्) बहुत गहिरा कूआँ इत्यादि ।

अतसी (स्त्री) तीसी एक तेल का दाना ।

अति (अव्यय) अतिशय, बड़ाई, प्रकर्ष, लङ्घन ।

अतिक्रमः (पुं०) अतिक्रमण, निडर शत्रु पर चढाई ।

अतिचरा (स्त्री) साक एक प्रकार का अन्न ।

अतिच्छत्र (पुं० । स्त्री) (त्रः । त्रा) (पुं०) जल से उत्पन्न तृण विशेष (स्त्री) सौंफ ओषधी ।

अतिजवः (पुं०) अतिवेग वाला ।

अतिथि (पुं० । स्त्री) (थिः । थी) अतिथि जिसने तिथि और सब पर्वों को छोड़ा है वह सब, प्राणियों का अतिथि है शेष अभ्यागत हैं अर्थात् पहुना ।

अतिनिर्हारिन् (त्रि०) (री । रिणी । रि) अत्यन्त आकर्षण करने वाला = ली ।

अतिनौ (त्रि०) (नौः । नौः । नु) नाव को जो नही मानता वा नहीं मानती ऐसा नद नदी इत्यादि अर्थात् बड़ा वेग जिसमें है ।

अतिपथिन् (पुं०) (न्थाः) अच्छा मार्ग ।

अतिपातः (पुं०) अतिक्रमण, क्रम का उल्लङ्घन ।

अतिप्रसिद्ध (त्रि०) (द्धः । द्धा । द्धम्) अत्यन्त प्रसिद्ध ।

अतिमात्र (त्रि०) (त्रः। त्रा। त्रम्) (नपुं०) अत्यन्त वा अतिशय, द्रव्य वाची तीनों लिङ्ग में जानना।

अतिमुक्तः (पुं०) एक तरह का कुन्द जो वसन्त में फूलता है।

अतिमुक्तकः (पुं०) वञ्जुल एक प्रकार का वृक्ष।

अतिरिक्त (त्रि०) (क्तः। क्ता। क्तम्) बहुत, अधिक।

अतिवक्तृ (त्रि०) क्ता। क्त्री। क्तृ) बहुत बोलनेवाला = ली।

अतिवादः (पुं०) अप्रियवचन, बहुत बोलना।

अतिविषा (स्त्री) अतीस ओषधी।

अतिवेल, अतिमात्र में देखो।

अतिशक्तिता (स्त्री) अतिपराक्रम।

अतिशय, अतिमात्र में देखो।

अतिशस्त (त्रि०) (स्तः। स्ता। स्तम्) बहुत अच्छा = च्छी।

अतिशोभन (त्रि०) (नः। ना। नम्) अत्यन्त सुन्दर।

अतिसंस्कृत (त्रि०) (तः। ता। तम्) अत्यन्त भूषित।

अतिसर्जनम् (नपुं०) अत्यन्त दान।

अतिसारकिन् (त्रि०) (की। किणी। कि) अतिसार रोगवाला = ली।

अतिसौरभ (त्रि०) (भः। भा। भम्) अत्यंत सुगन्ध युक्त।

अतीक्ष्ण (त्रि०) (क्ष्णः। क्ष्णा। क्ष्णम) चोखा नही वा चोखी नहीं।

अतीत (त्रि०) (तः। ता। तम्) बीत गया = ई।

अतीतनौक (त्रि०) (कः। का। कम्) जो नाव को अतिक्रमण कर गया = ई।

अतीन्द्रिय (त्रि०) (यः। या। यम्) इन्द्रियों से जिसका ग्रहण न हो सके।

अतीव (अव्यय) अतिशय वा अत्यंत

अत्तिका (स्त्री) बड़ी बहिन नाट्य मे (अन्तिका)

अत्यन्तकोपन (त्रि०) (नः। ना। नम्) अत्यन्त क्रोधी।

अत्यन्तीनः (पुं०) अत्यन्त गमन करने वाला बहुत चलने वाला।

अत्ययः (पुं०) मरना, उल्लङ्घन, क्लेश, दोष, दण्ड, नाश।

अत्यर्थ, अतिमात्र में देखो।

अत्यल्प (त्रि०) (ल्पः। ल्पा। ल्पम्) बहुत थोड़ा = ड़ी।

अत्याहितम् (नपुं०) महाभय, प्राण की अपेक्षा न करके जो काम करना वा साहस।

अत्रिः (पुं०) सप्तर्षियों में अत्रिऋषि

अथ (अव्यय) मङ्गल, अनन्तर, आरम्भ, प्रश्न, सम्पूर्णता, अथवा। अथो, तथा।

अदभ्र (त्रि०) (भ्रः। भ्रा। भ्रम्) बहुत, द्रव्यवाची तीनों लिङ्ग में जानना।

अदर्शनम् (नपुं०) नहीं देख पड़ना।

अदितिनन्दनः (पुं०) देवता।

अदृक् (त्रि०) (क्। क्। क्) अन्धा वा अन्धी वा नेत्र रहित।

अदृष्ट (त्रि०) (ष्टः। ष्टा। ष्टम्) (त्रि०) नहीं देखा गया=यी, हीन, (नपुं०) अग्नि जल इत्यादि से जो भय, भाग्य।

अदृष्टि (त्रि०) (ष्टिः। ष्टिः। ष्टि) (त्रि०) दृष्टिहीन, कठोर देखना

अद्धा (अव्यय) निश्चय।

अद्भुत (त्रि०) (तः। ता। तम्) (पुं०) अद्भुत रस (त्रि०) द्रव्य वाची।

अद्मर (त्रि०) (रः। रा। रम्) खानेवाला=ली।

अद्य (अव्यय) आज दिन।

अद्रिः (पुं०) वृक्ष, पर्वत, सूर्य्य।

अद्रिनितम्बः (पुं०) पर्वत का मध्य भाग जिसे मेखला भी कहते हैं

अद्वयवादिन् (पुं०) (दी) बुद्ध नास्तिकों के देवता।

अधम (त्रि०) (मः। मा। मम्) न्यून, निन्दित।

अधमर्ण (त्रि०) (र्णः। र्णा। र्णम्) ऋण का लेनेवाला=ली

अधर (त्रि०) (रः। रा। रम्) (पुं०) नीचे, नीचे का ओठ, (त्रि०) हीन, नीच।

अधरेद्युस् (अव्यय) (द्युः) हीन दिवस अथवा नहीं ऊंचा दिन वा हीन दिन।

अधस् (अव्यय) (धः) नीचे।

अध मार्गवः (पुं) चिचिड़ा लता।

अधिकर्द्धि (त्रि०) (र्द्धिः। र्द्धिः। र्द्धि) बड़ा धनाढ्य वा बड़ा धनी।

अधिकाङ्गः (पुं०) योद्धा लोक चोलना की दृढ़ता के लिये कमर में बंधी है अर्थात् पटुका। [अधिकाङ्गः]

अधिकारः (पुं०) प्रक्रिया में देखो।

अधिकृत (त्रि०) (तः। ता। तम्) अध्यक्ष मुकर्रर किया गया=यी।

अधिक्षिप्त (त्रि०) (प्तः। प्ता। प्तम्) डाह वा स्पर्द्धा करने वाले से सामने निन्दा किया गया

वा तिरस्कार किया गया वा धिक्कारा गया = ई ।

अधित्यका ( स्त्री ) पर्वत के ऊपर की भूमि ।

अधिपः ( पुं० ) प्रभु वा स्वामी ।

अधिभूः ( पुं० ) तथा ।

अधिरोहिणी ( स्त्री ) काष्ठ इत्यादि की सीढ़ी ।

अधिवासनम् ( नपुं० ) वस्त्र वा ताम्बूल इत्यादि को गन्धद्रव्य से सुगन्धित करना वा बासना इसको 'सौरभाधान' भी कहते हैं ।

अधिविन्ना ( स्त्री ) कृतसापत्निका में देखो ।

अधिश्रयणी ( स्त्री ) चूल्हा ।

अधिष्ठानम् ( नपुं० ) पहिया, नगर, आक्रमण वा अमल में कर लेना ।

अधीन ( त्रि० ) (नः । ना । नम्) परतन्त्र वा परवश ।

अधीर ( त्रि० ) ( रः । रा । रम् ) कादर ।

अधीश्वरः ( पुं० ) सब दिशा के राजे जिसको प्रणाम करैं ऐसा राजा ।

अधुना ( अव्यय ) इस घड़ी ।

अधृष्ट ( त्रि० ) ( ष्टः । ष्टा । ष्टम् ) जो ढीठा वा ढीठी नहीं अर्थात् लज्जायुक्त ।

अधोक्षजः ( पुं० ) विष्णु ।

अधोगन्तृ (त्रि०) (न्ता । न्त्री । न्तृ) (त्रि०) नीचे जानेवाला = ली, ( पुं० ) मूसा ।

अधोभुवनम् ( नपुं० ) पाताल ।

अधोमुख ( त्रि० ) ( खः । खी । खम् ) जिसका मुख नीचे है ।

अधोंशुकम् ( नपुं० ) पहिरने की धोती ।

अध्यक्ष ( त्रि० ) (क्षः । क्षा ।क्षम्) (त्रि०) अधिकारी, निगहमानी करनेवाला = ली ( नपुं० ) प्रत्यक्ष ज्ञान, ( त्रि० ) प्रत्यक्ष ज्ञान का विषय ।

अध्यवसायः ( पुं० ) उत्साह, निश्चय, उद्योग ।

अध्यात्मम् ( अव्यय ) आत्मा के भीतर ।

अध्यापक ( त्रि० ) (पकः । पिका । पकम् ) पढ़ाने वाला = ली ।

अध्याहारः ( पुं० ) तर्क ।

अध्यूढा ( स्त्री ) कृतसापत्निका में देखो ।

अध्येषणा (स्त्री) गुरु इत्यादि का सेवन वा उनको प्रार्थना से कोई प्रयोजन में लगाना ।

अध्वग (पुं० । स्त्री ) (गः । गा) राह चलने वाला = ली ।

अध्वन् (पुं० ) ( ध्वा ) मार्ग वा रस्ता ।

अध्वनीन (पुं० । स्त्री ) ( नः । ना ) अध्वग में देखो ।

अध्वन्य (पुं० । स्त्री ) ( न्यः । न्या ) तथा ।

अध्वरः ( पुं० ) यज्ञ ।

अध्वर्युः ( पुं० ) यजुर्वेद का जानने वाला ऋत्विक् ।

अनक्षर ( त्रि० ) (रः । रा । रम्) निन्दा के वचन इत्यादि ।

अनङ्गः ( पुं० ) कामदेव ।

अनच्छ ( त्रि० ) ( च्छः । च्छा । च्छम् ) मलिन वा मैला = ली ।

अनडुह् ( पुं० । स्त्री ) ( ड्वान् । ड्वाही-डुही ) (पुं०) बैल (स्त्री) गैया ।

अनध्यक्ष ( त्रि० ) ( क्षः । क्षा । क्षम् ) इन्द्रियों से ग्राह्य ।

अनन्त ( त्रि० ) (न्तः । न्ता । न्तम्) ( त्रि० ) जिसका अन्त नहीं, ( पुं० ) शेषनाग, विष्णु, (स्त्री) भूमि, जवासा वा हिंगुआ, उत्पलशारिवा ओषधी, इन्द्रपुष्पी ओषधी, दूर्वा घास, ( नपुं० ) आकाश ।

अनन्यजः ( पुं० ) कामदेव ।

अनन्यवृत्ति ( त्रि० ) ( त्तिः । त्तिः । त्ति ) एकाग्र वा जिसका मन चञ्चल नहीं है ।

अनयः (पुं०) दुर्व्यसन जूआ इत्यादि, दुष्ट भाग्य, विपत्ति, अनीति

अनर्थक ( त्रि० ) ( कः । का । कम् ) व्यर्थ वचन इत्यादि ।

अनलः ( पुं० ) अग्नि वा आग ।

अनवधानता ( स्त्री ) भूल ।

अनवरत ( त्रि० ) ( तः । ता । तम् ) (नपुं०) निरन्तर (त्रि०) द्रव्यवाची ।

अनवरार्ध्य ( त्रि० ) ( र्ध्यः । र्ध्या । र्ध्यम् ) प्रधान वा मुख्य ।

अनवस्कर ( त्रि० ) ( रः । रा । रम् ) मलरहित वा निर्मल ।

अनस् ( नपुं० ) ( नः ) गाड़ी ।

अनागतार्तवा ( स्त्री ) जिस स्त्री को रजोधर्म नहीं भया है ।

अनातपः ( पुं० ) छाँह ।

अनादरः ( पुं० ) अनादर ।

अनामयम् ( नपुं० ) आरोग्य वा रोगराहित्य ।

अनामिका (स्त्री) कनिष्ठा के पास वाली अंगुली ।

अनायासकृत ( त्रि० ) ( तः । ता । तम् ) परिश्रम के बिना कि-

या गया = ई ।
अनारत, अनवरत में देखो ।
अनार्यतिक्तः (पुं०) चिरायता औषध ।
अनाहः (पुं०) लम्बाई वस्त्रादिक की । [ आनाहः ]
अनाहत ( त्रि० ) (तः । ता । तम्) कोरा वा नया कपड़ा।
अनिमिषः ( पुं० ) देवता, मत्स्य वा मछली ।
अनिरुद्ध (त्रि०) ( द्धः । द्धा । द्धम् ) ( त्रि० ) जो रोका नहीं है। ( पुं० ) कामदेव का पुत्र ।
अनिलः ( पुं० ) वायु ( अनिलाः ) यह बहुवचनान्त शब्द गणदेवतावाचक है जो कि गण नाम में ४९ हैं।
अनिशम् ( अव्यय ) निरन्तर ।
अनीक ( पुं० । नपुं० ) (कः । कम्) सेना, संग्राम ।
अनीकस्थः ( पुं० ) राजा के रक्षकसमूह ।
अनीकिनी ( स्त्री ) सेना ।
अनु ( अव्यय ) पीछे तुल्यता ।
अनुक ( त्रि० ) ( कः । का । कम् ) कामदेव से व्याकुल ।
अनुकम्पा ( स्त्री ) दया, करुणा रस ।
अनुकर्षः ( पुं० ) रथ के नीचे के भाग की लकड़ी ।
अनुकल्पः ( पुं० ) मुख्य से अधम जो विधि अर्थात् गौण विधि जैसा 'व्रीह्यभावे नीवारैर्यजेत' इसका अर्थ—धान न होय तो तिन्नी से यज्ञ करना ।
अनुकामिनः ( पुं० ) यथेच्छ गमन करनेवाला ।
अनुकारः ( पुं० ) नकल करना जैसा "खन् खन्" ऐसा पैजेब के शब्द की नकल ।
अनुक्रमः (पुं०) क्रम वा परिपाटी ।
अनुक्रोशः ( पुं० ) दया, करुणारस ।
अनुग (त्रि०) (गः । गा । गम्)(पुं०) नौकर ( त्रि० ) पीछे चलनेवाला = ली ( नपुं० ) पीछे ।
अनुग्रहः ( पुं० ) अनुग्रह, कृपा, अङ्गीकार ।
अनुचर (पुं० । स्त्री ) ( रः । री ) ( पुं० । स्त्री ) सहाय ( स्त्री ) दासी ।
अनुज ( पुं० । स्त्री ) ( जः । जा ) ( पुं० ) छोटा भाई ( स्त्री ) छोटी बहिन ।
अनुजीविन् (पुं०) ( वी ) नौकर।
अनुतर्षणम् (नपुं०) मद्य का पीना।
अनुतापः ( पुं० ) पछतावा ।

अनुत्तम (त्रि०) (मः। मा। मम्) प्रधान वा मुख्य।

अनुत्तर (त्रि०) (रः। रा। रम्) श्रेष्ठ, अश्रेष्ठ।

अनुदात्त (त्रि०) (त्तः। त्ता। त्तम्) (पुं०) एक प्रकार का स्वर, (त्रि०) प्रधान वा मुख्य।

अनुपदम् (नपुं०। अव्यय) पीछे।

अनुपदीना (स्त्री) एक प्रकार का जूता जो पैर भर के है।

अनुपम (त्रि०) (मः। मा। मम्) (त्रि०) जिस वस्तु की उपमा नहीं है, (स्त्री) उपमा का न होना, कुमुददिग्गज की स्त्री।

अनुप्लवः (पुं०) सहाय।

अनुबन्धः (पुं०) दोष का उत्पन्न करना, प्रकृति प्रत्यय आगम आदेश इत्यादि में जिसका नाश होगया हो वह, पिता इत्यादि बड़ों का अनुसरण करनेवाला बालक, प्रारम्भ किये वस्तु का परम्परा से चला आना।

अनुबोधः (पुं०) पीछे से ज्ञान होना, जिसका गन्ध निकल गया हो उसका फेर प्रगट करना।

अनुभवः (पुं०) साक्षात्कार।

अनुभावः (पुं०) भाव का सूचक गुण क्रिया इत्यादि, प्रभाव, सज्जन के ज्ञान का निश्चय।

अनुमतिः (स्त्री) सम्मति, वह पूर्णिमा जिसमें चन्द्र कलाहीन है।

अनुयोगः (पुं०) प्रश्न।

अनुरोधः (पुं०) अनुकूलता वा अनुसरण।

अनुलापः (पुं०) बारबार बोलना।

अनुलेपनम् (नपुं०) केसर इत्यादि सुगन्ध द्रव्य जो शरीर में लगाया जाता है।

अनुवर्तनम् (नपुं०) अनुकूलता वा अनुसरण।

अनुवाकः (पुं०) वेद का एक भाग।

अनुशयः (पुं०) बड़ा वैर, पश्चात्ताप।

अनुष्ण (त्रि०) (ष्णः। ष्णा। ष्णम्) (त्रि०) गरम नहीं (पुं०) आलसी।

अनुस्वारः (पुं०) अनुकार में देखो।

अनूकम् (नपुं०) स्वभाव, वंश।

अनूचानः (पुं०) सांग वेद जिस ने पढ़ा है।

अनूनक (त्रि०) (कः। का। कम्) समग्र।

अनूपम् (नपुं०) अधिक जलवाला देश।

अनूरुः (पुं०) सूर्य्य का सारथि।

अनृजु (त्रि०) (जुः। जुः-ज्वी। जु) टेढा वा टेढ़ी, टेढ़ा अन्तःकरणवाला = ली।

अनृत (त्रि०) (तः। ता। तम्) (त्रि०) मिथ्यावचनादि (नपुं०) खेती करना।

अनेकप (पुं०। स्त्री) पः। पा) हाथी।

अनेडमूक (त्रि०) (कः। का। कम्) अत्यन्त अन्धा और गूंगा, न अन्धा न गूंगा, धूर्त।

अनेहस् (पुं०) (हा) काल वा समय।

अनोकहः (पुं०) वृक्ष।

अन्त (पुं०। नपुं०) (न्तः। न्तम्)(पुं०) मरना (पुं०। नपुं०) पिछला।

अन्तःपुरम् (नपुं०) राजों के स्त्रियों के रहने का स्थान।

अन्तकः (पुं०) यमराज।

अन्तर (त्रि०) (रः। रा। रम्) (त्रि०) पहिरने के वस्त्रादि, आत्मसम्बन्धी वा अपना वस्तु, बाह्य वस्तु, अदृश्य वस्तु, (नपुं०) अवकाश, अवधि, अदृश्य होना, भेद, तादर्थ्य, छिद्र, विना, अवसर, मध्य, अन्तरात्मा।

अन्तरा (अव्यय) मध्य।

अन्तराभवसत्व (पुं०। नपुं०) (त्वः। त्वम्) मरण और जन्म के बीच में स्थित प्राणी।

अन्तरायः (पुं०) विघ्न।

अन्तरालम् (नपुं०) मध्य।

अन्तरिक्षम् (नपुं०) आकाश। [अन्तरीक्षम्]

अन्तरीप (पुं०। नपुं०) (पः। पम्) जल के बीच का स्थान।

अन्तरीयम् (नपुं०) उपसंव्यान में देखो।

अंतरे (अव्यय) मध्य।

अन्तरेण (अव्यय) मध्य, विना।

अन्तर् (अव्यय) (न्तः) मध्य।

अन्तर्गत (त्रि०) (तः। ता। तम्) भूल गया, भीतर गया।

अन्तर्द्धा (स्त्री) गुप्त होना।

अन्तर्द्धिः (पुं०) तथा।

अन्तर्द्वारम् (नपुं०) खिड़की।

अन्तर्मनस् (त्रि०) (नाः। नाः। नः) व्याकुल चित्तवाला = ली।

अन्तर्वत्नी (स्त्री) गर्भवती वा गुर्विणी।

अन्तर्वाणि (त्रि०)(णिः। णिः। णि) शास्त्र का जानने वाला = ली।

अन्तर्वंशिकः (पुं०) अन्तःपुर का अधिकारी [अन्तर्वंशिकः]

अन्तावसायिन् (पुं०) (यी) हज्जाम।

अन्तिक ( त्रि० ) (कः । का । कम्) समीप ।
अन्तिकतम ( त्रि० ) ( मः । मा । मम् ) अतिसमीप ।
अन्तिका (स्त्री) चूल्हा [ अग्निका ]
अन्तेवासिन् ( पुं० ) ( सी ) शिष्य, चाण्डाल ।
अन्त्य ( त्रि० ) ( न्त्यः । न्त्या । न्त्यम् ) पिछला = ली ।
अन्त्रम् ( नपुं० ) पेट की अंतड़ी ।
अन्दुकः ( पुं० ) बेड़िया, सिक्कड़ ।
अन्ध ( त्रि० ) (न्धः । न्धा । न्धम्) ( त्रि० ) नेत्रहीन, ( नपुं० ) अन्धकार ।
अन्धकरिपुः ( पुं० ) शिव ।
अन्धकार (पुं० । नपुं०) (रः । रम्) अन्धकार ।
अन्धतमसम् ( नपुं० ) गाढ़ा अन्धकार ।
अन्धतामिस्रः ( पुं० ) एक प्रकार का नरक ।
अन्धस् ( नपुं० ) ( न्धः ) भात ।
अन्धुः ( पुं० ) कूआँ ।
अन्न ( त्रि० ) ( न्नः । न्ना । न्नम् ) ( त्रि० ) खाया गया = यी, ( नपुं० ) भात ।
अन्य ( त्रि० ) (न्यः । न्या । न्यत्) अन्य वा दूसरा = री ।
अन्यतम (त्रि०) ( मः । मा । मम्) बहुत में से कोई एक ।
अन्यतर ( त्रि० ) (रः । रा । रत्) दो में से कोई एक ।
अन्यतरेद्युस् (अव्यय) ( द्युः ) दो में से कोई एक दिन ।
अन्यतस् ( अव्यय ) ( तः ) दूसरी ओर, दूसरे से ।
अन्यत्र ( अव्यय ) और जगह ।
अन्यथा ( अव्यय ) अन्य प्रकार से, उलटा ।
अन्येद्युस् ( अव्यय ) ( द्युः ) अन्य दिन वा दूसरे दिन ।
अन्वक् ( अव्यय ) पीछे ।
अन्वक्ष ( त्रि० ) (क्षः । क्षा । क्षम्) पीछे चलने वाला = ली ।
अन्वक्षम् (अव्यय ) पीछे ।
अन्वञ्च् ( त्रि० ) ( न्वङ् । नूची । न्वक् ) पीछे चलनेवाला = ली ।
अन्वयः ( पुं० ) सम्बन्ध, वंश ।
अन्ववायः ( पुं० ) वंश ।
अन्वाहार्यम् ( नपुं० ) अमावास्या तिथि का श्राद्ध ।
अन्विष्ट ( त्रि० ) (ष्टः । ष्टा । ष्टम् ) खोजा गया = ई ।
अन्वेषणा (स्त्री) धर्म्मादि का खोजना ।
अन्वेषित (त्रि० ) (तः । ता । तम्)

अन्विष्ट में देखो।

अपकारगिर् (स्त्री) (गीः) अपकार का वचन जैसा 'तूं चोर है तुझे मारूंगा'।

अपक्रमः (पुं०) भागना वा भाग जाना।

अपघनः (पुं०) हस्तपादादि अङ्ग।

अपचयः (पुं०) घट जाना वा कम होजाना, क्षीन लेना।

अपचायित (त्रि०) (तः। ता। तम्) पूजित।

अपचित, तथा।

अपचितिः (स्त्री) पूजा, क्षय।

अपटु (त्रि०) (टुः। टुः—ट्वी। टु) रोगयुक्त, असमर्थ।

अपत्यम् (नपुं०) लड़का, लड़की।

अपत्रपा (स्त्री) दूसरे से लज्जा।

अपत्रपिष्णु (त्रि०) (ष्णुः। ष्णुः। ष्णु) लोकलज्जायुक्त।

अपथम् (नपुं०) राह नहीं वा मार्गाभाव।

अपथिन् (पुं०) (न्थाः) तथा।

अपदान्तर (त्रि०) (रः। रा। रम्) अनन्तर वा पास वा सटा हुआ = ई [अपटान्तर]

अपदिशम् (नपुं०। अव्यय) दिशों का मध्य जैसा पूर्व और उत्तर का मध्य वा पूर्व और दक्षिण का मध्य।

अपदेशः (पुं०) बहाना, निशाना वा लक्ष्य, निमित्त वा हेतु।

अपध्वस्त (त्रि०) (स्तः। स्ता। स्तम्) चूर्ण किया गया = ई। [अवध्वस्त]

अपभ्रंशः (पुं०) अपभ्रष्ट शब्द अर्थात् संस्कृत से बिगड़ा शब्द जैसा संस्कृत दधि और भाषा दही।

अपयानम् (नपुं०) भाग जाना।

अपरपक्षः (पुं०) महीने का कृष्ण पक्ष।

अपरस्पर (त्रि०) (रः। रा। रम्) क्रिया के नैरन्तर्य से ऐसा प्रयोग होता है जैसा "अपरस्पराः सार्था गच्छन्ति" अपर और पर झुण्ड निरन्तर गमन करते हैं इत्यादि।

अपराजिता (स्त्री) विष्णुक्रान्ता एक लतापुष्प, पटसण एक लता।

अपराद्धपृषत्कः (पुं०) लक्ष्य से जिसका बाण च्युत होगया है।

अपराधः (पुं०) अपराध वा कसूर।

अपराह्णः (पुं०) दोपहर के अनन्तर का काल अर्थात् तृतीय

अहरादि ।
अपरेद्युस् ( अव्यय ) ( द्युः ) दूसरे दिन ।
अपर्णा ( स्त्री ) पार्वती ।
अपलापः ( पुं० ) छिपाना जैसा ऋणी कहै कि हमने ऋण नहीं लिया ।
अपवर्गः ( पुं० ) मोक्ष ।
अपवर्जनम् ( नपुं० ) दान ।
अपवादः ( पुं० ) निन्दा, आज्ञा । [ अववादः ]
अपवारणम् ( नपुं० ) गुप्त होना ।
अपशब्दः (पुं०) अपभ्रंश में देखो ।
अपष्ठु ( त्रि० ) ( ष्ठुः । ष्ठुः । ष्ठु ) उलटा वा विपरीत ।
अपसदः ( पुं० ) नीच ।
अपसर्पः ( पुं० ) हलकारा ।
अपसव्य ( त्रि० ) ( व्यः । व्या । व्यम् ) ( त्रि० ) विपरीत वा उलटा (नपुं०) दहिना अङ्ग।
अपस्करः ( पुं० ) रथ का अङ्ग ।
अपस्नात (त्रि०) (तः । ता । तम् ) मृतक का उद्देश करके जिसने नहाया है ।
अपस्नानम् ( नपुं० ) मृतक का उद्देश करके नहाना ।
अपहारः ( पुं० ) छीन लेना ।
अपाङ्ग ( त्रि० ) (ङ्गः । ङ्गी । ङ्गम्) ( पुं० ) नेत्रों के कोने ( त्रि०) अङ्गहीन, ( पुं० ) तिलक ।
अपान ( पुं० । नपुं० ) (नः । नम्) ( पुं० ) विष्ठाद्वार का वायु, ( नपुं० ) विष्ठाद्वार ।
अपामार्गः ( पुं० ) चिचिटा वृक्ष-विशेष ।
अपाम्पतिः ( पुं० ) समुद्र ।
अपावृत ( त्रि० ) (तः । ता । तम् ) खुलाहुवा = ई, स्वतन्त्र ।
अपासनम् ( नपुं० ) मारडालना ।
अपि ( अव्यय ) निन्दा, समुच्चय, प्रश्न, शङ्का, सम्भावना ।
अपिधानम् ( नपुं० ) गुप्त होना वा छिप जाना, ढांपना, ढपना ।
अपिनद्ध ( त्रि० ) (द्धः । द्धा । द्धम्) ( त्रि० ) ढाँपा गया = ई (पुं०) जिस योद्धा ने कवच पहिना है वह ।
अपूपः ( पुं० ) पूप में देखो ।
अपोगण्ड ( त्रि० ) ( ण्डः । ण्डा । ण्डम् ) विकलाङ्ग में देखो ।
अप्पतिः ( पुं० ) वरुण ।
अप्पित्तम् ( नपुं० ) अग्नि ।
अप्रगुण (त्रि०) (णः । णा । णम् ) व्याकुल ।
अप्रत्यक्ष ( त्रि० ) ( क्षः । क्षा । क्षम् ) इन्द्रियों से ग्रहण करने

के अयोग्य ।
अप्रधानम् ( नपुं० ) अप्रधान वा अमुख्य अर्थात् मुख्य नहीं ।
अप्रहत ( त्रि० ) (तः । ता । तम्) बिना जोती भूमि वा स्थल ।
अप्राग्र (त्रि०) (ग्रः । ग्रा । ग्रम्) "अप्रधान" में देखो ।
अप्सरस् ( स्त्री ) ( राः ) एक प्रकार की देवता ।
अप्सरस, बहुवचनान्त, ( स्त्री ) (सः ) स्वर्ग की वेश्या ( उर्वशी इत्यादि ) ।
अफल ( त्रि० ) ( लः । ला । लम् ) बिना फल के वृक्ष इत्यादि ।
अबद्ध ( त्रि० ) ( द्धः । द्धा । द्धम् ) नहीं बांधा हुआ = ई, समुदाय के अर्थ से शून्य वचन इत्यादि ।
अबद्धमुख (त्रि०) (खः । खा—खी । खम् ) जो बात संसार के नहीं बोलता = ती ।
अबन्ध्य, "अवन्ध्य" में देखो ।
अबला ( स्त्री ) स्त्री ।
अबाध ( त्रि० ) (धः । धा । धम्) अनर्गल वा स्वतन्त्र ।
अब्ज ( पुं० । नपुं० ) ( ब्जः । ब्जम् ) ( पुं० ) शङ्ख, चन्द्र, धन्वन्तरि वैद्य, (नपुं०) कमल ।
अब्जयोनिः ( पुं० ) ब्रह्मा ।
अब्जिनीपतिः ( पुं० ) सूर्य्य ।
अब्दः ( पुं० ) वर्ष, मेघ ।
अब्धिः ( पुं० ) समुद्र ।
अब्धिकफः ( पुं० ) समुद्रफेन ।
अब्रह्मण्यम् ( नपुं० ) "बध के योग्य नहीं है" ऐसा बोलना ( नाट्य में ) ।
अभय ( त्रि० ) ( यः । या । यम् ) भयरहित, (स्त्री) हर्रे, (नपुं०) खस ।
अभाषण (त्रि०) (णः । णा । णम्) चुप रहनेवाला = ली, (नपुं०) चुप रहना ।
अभिक ( त्रि० ) (कः । का । कम्) काम की इच्छा करनेवाला = ली । [ अभीक ]
अभिक्रमः ( पुं० ) निडर की शत्रु पर चढ़ाई ।
अभिख्या ( स्त्री ) नाम, शोभा ।
अभिग्रहः ( पुं० ) कलह में वा कलह के लिये ललकारना ।
अभिग्रहणम् ( नपुं० ) चोराना ।
अभिघातिन् ( पुं० ) ( ती ) शत्रु । [ अभिघाती ] [ अभिघातिः ]
अभिचरः ( पुं० ) सहाय ।
अभिचारः ( पुं० ) जिसका फल हिंसा है ऐसा कर्म ( जलाना मारना इत्यादि ) ।

अभिजनः (पुं॰) कुल में मुख्य, जन्मभूमि, वंश ।

अभिजात (त्रि॰) (तः । ता । तम्) कुलीन, पण्डित ।

अभिज्ञ (त्रि॰) (ज्ञः । ज्ञा । ज्ञम्) निपुण ।

अभितस् (अव्यय) (तः) समीप, दोनों तरफ, जलदी, सम्पूर्ण-रूप से ।

अभिधेय (त्रि॰) (यः । या । यम्) बोलने के योग्य वा वाच्य ।

अभिधा (स्त्री) नाम ।

अभिधानम् (नपुं॰) नाम ।

अभिध्या (स्त्री) दूसरे की वस्तु को चोरी इत्यादि से ले लेने की चाह ।

अभिनयः (पुं॰) मन के भाव का प्रकाश करनेवाली अङ्ग की चेष्टा (नाट्य में) ।

अभिनव (त्रि॰) (वः । वा । वम्) नया = ई ।

अभिनवोद्भिद् (पुं॰) (त् – द्) बीज का अङ्कुर ।

अभिनिर्मुक्तः (पुं॰) जिस के सूतने में सूर्य्य अस्त हो जाय ।

अभिनिर्याणम् (नपुं॰) यात्रा ।

अभिनीत (त्रि॰) (तः । ता । तम्) न्याय से च्युत नहीं जो द्रव्य इत्यादि, अत्यन्त प्रशस्त, भूषित वा अलङ्कृत, सहनेवाला = ली ।

अभिपन्न (त्रि॰) (न्नः । न्ना । न्नम्) अपराधी, जीता गया = ई, विपत्ति को प्राप्त भया = ई ।

अभिप्रायः (पुं॰) अभिप्राय ।

अभिभूत (त्रि॰) (तः । ता । तम्) जिसका अहङ्कार नष्ट होगया है वा जीता गया = ई ।

अभिमानः (पुं॰) धन इत्यादि से उत्पन्न भया जो अहङ्कार, ज्ञान, प्रेम, हिंसा ।

अभियोगः (पुं॰) ललकारना, अद्भुत प्रश्न ।

अभिरूप (त्रि॰) (पः । पा – पी । पम्) पण्डित, मनोहर ।

अभिलावः (पुं॰) धान्य इत्यादि का काटना ।

अभिलाषः (पुं॰) अभिलाष ।

अभिलाषुक (त्रि॰) (कः । का । कम्) अभिलाष करनेवाला = ली ।

अभिवादक (त्रि॰) दकः । दिका । दकम्) नाम और गोत्र का उच्चारण करके नमस्कार करने का जिस्का स्वभाव है ।

अभिवादनम् (नपुं॰) नाम और गोत्र का उच्चारण करके नमस्कार करना ।

अभिव्याप्तिः ( स्त्री ) चारो ओर से भर जाना ।

अभिशस्त ( त्रि० ) ( स्तः । स्ता । स्तम् ) लोकापवाद से दूषित ।

अभिशस्तिः (स्त्री) माँगना । [ अभिषस्तिः ]

अभिशापः ( पुं० ) झूठा दोष लगाना जैसा 'तूने मद्य पीया है' इत्यादि, गाली देना ।

अभिषङ्गः (पुं०) शाप, गाली देना, पराजय वा हार, तिरस्कार वा दुरदुराना । [ अभीषङ्गः ]

अभिषवः ( पुं० ) मद्य का चुवाना, "सुत्या" में देखो ।

अभिषेणनम् ( नपुं० ) सेना लेकर शत्रु पर चढ़ाई करना ।

अभिष्टुत ( त्रि० ) (तः । ता । तम्) स्तुति किया गया पदार्थ ।

अभिसम्पातः ( पुं० ) सङ्ग्राम ।

अभिसरः ( पुं० ) सहाय ।

अभिसारिका ( स्त्री ) पति के लिये जो सङ्केत स्थान में जाय वह स्त्री ।

अभिहारः (पुं०) चोराना, कवच इत्यादि का धारण, नालिश इत्यादि शत्रु के नाश का उपाय। [ अभ्याहारः ]

अभिहित (त्रि०) (तः । ता । तम्) कहा गया = ई ।

अभीक, "अभिक" में देखो ।

अभीक्ष्णम् ( अव्यय । नपुं० ) निरन्तर, बारम्बार ।

अभीप्सित (त्रि०) (तः । ता । तम्) अभीष्ट वा जो बहुत चाहा जाता है ।

अभीरु ( त्रि० ) ( रुः । रुः । रु ) (त्रि०) निडर, (स्त्री) सतावर ओषधी ।

अभीरुपत्री ( स्त्री ) सतावर ओषधी ।

अभीषङ्गः (पुं०) "अभिषङ्ग" में देखो।

अभीषुः ( पुं० ) किरण, डोरी, पगहा लगाम इत्यादि ।

अभीष्ट ( त्रि० ) ( ष्टः । ष्टा । ष्टम् ) "अभीप्सित" में देखो ।

अभ्यग्र ( त्रि० ) (ग्रः । ग्रा । ग्रम् ) समीपवाला = ली ।

अभ्यञ्जनम् (नपुं०) तेल, उबटन, उबटना ।

अभ्यन्तरम् ( नपुं० ) मध्य ।

अभ्यमित (त्रि०) (तः । ता । तम् ) बीमार वा रोगी ।

अभ्यमित्रीणः ( पुं० ) जो शत्रुओं के साथ सामर्थ्य से युद्ध करने को सम्मुख जाता है ।

अभ्यमित्रीयः ( पुं० ) तथा ।

अभ्यमित्र्यः ( पुं० ) तथा ।
अभ्यर्ण (त्रि०) (र्णः । र्णा । र्णम् ) समीप में विद्यमान ।
अभ्यर्हित (त्रि०) (तः । ता । तम् ) पूजित ।
अभ्यवकर्षणम् ( नपुं० ) धँसे हुए काँटा इत्यादि का निकालना ।
अभ्यवस्कन्दनम् ( नपुं० ) डाँका डालना ।
अभ्यवहृत (त्रि०) (तः । ता । तम् ) खायागया = ई ।
अभ्याख्यानम् ( नपुं० ) मिथ्या विवाद ।
अभ्यागमः ( पुं० ) सङ्ग्राम ।
अभ्यागारिक ( त्रि० ) (कः । का । कम् ) कुटुम्बपोषण में तत्पर ।
अभ्यादानम् ( नपुं० ) आरम्भ ।
अभ्यान्त ( त्रि० ) ( न्तः । न्ता । न्तम् ) रोगी ।
अभ्यामर्दः ( पुं० ) सङ्ग्राम । [ अभिमर्दः ]
अभ्याश (त्रि०) ( शः । शा । शम् ) पासवाला = ली, (पुं०) पास । [ अभ्यास ]
अभ्यासादनम् ( नपुं० ) डाँका डालना ।
अभ्युत्थानम् ( नपुं० ) उत्थान-पूर्वक सत्कार ।
अभ्युदितः ( पुं० ) जिस पुरुष के सूतने में सूर्योदय होय ।
अभ्युपगमः ( पुं० ) अङ्गीकार ।
अभ्युपपत्तिः ( स्त्री ) तथा ।
अभ्यूषः (पुं०) "पौलि" में देखो।
अभ्रम् ( नपुं० ) मेघ, आकाश।
अभ्रकम् ( नपुं० ) अभ्रक अर्थात् जिसका बुक्का बनता है ।
अभ्रपुष्पः ( पुं० ) बेंत ।
अभ्रमातङ्गः (पुं०) इन्द्र का हाथी ऐरावत ।
अभ्रमुः ( स्त्री ) ऐरावत की स्त्री ।
अभ्रमुवल्लभः ( पुं० ) अभ्रमु का पति वा ऐरावत ।
अभ्रिः ( स्त्री ) नाव साफ करने की काठ की कुदारी ।
अभ्रिय ( त्रि० ) ( यः । या । यम् ) मेघ से उत्पन्न जलादिक ।
अभ्रेषः ( पुं० ) न्याय वा नीति ।
अमत्रम् ( नपुं० ) पात्र ।
अमरः ( पुं० ) देवता ।
अमरावती ( स्त्री ) इन्द्र की पुरी।
अमर्त्यः ( पुं० ) देवता ।
अमर्षः (पुं०) कोप वा न सहना ।
अमर्षण ( त्रि० ) ( णः । णी । णम् ) क्रोधी वा न सहनेवाला = ली ।
अमल ( त्रि० ) ( लः । ला । लम् )

निर्मल, ( स्त्री ) भूमि का अँवरा वा "भूम्यामलकी"।
अमा ( स्त्री । अव्यय ) (स्त्री) अमावस तिथि, ( अव्यय ) साथ, समीप।
अमात्यः (पुं०) राजा का मन्त्री।
अमावस्था (स्त्री) अमावस तिथि।
अमावास्या (स्त्री) तथा [अमावसी] [ अमावासी ]
अमांस ( त्रि० ) (सः । सा । सम्) निर्बल।
अमित्रः ( पुं० ) शत्रु।
अमुत्र ( अव्यय ) दूसरा जन्म, परलोक।
अमृणालम् ( नपुं० ) खस वा गाँडर की जड़।
अमृत ( त्रि० ) ( तः । ता । तम् ) ( त्रि० ) जो नहीं मरा = री, ( स्त्री ) अँवरा, हरैं, गुरुच, ( नपुं० ) अमृत, जल, घीव, यज्ञ का शेष, मोक्ष, बिना माँगी भीख।
अमृतान्धस् (पुं०) ( धाः ) देवता।
अमोघ ( त्रि० ) ( घः । घा । घम् ) निष्फल नहीं, ( स्त्री ) पाँड़र, बाभीरङ्ग।
अम्बरम् ( नपुं० ) आकाश, वस्त्र।
अम्बरीष (पुं० नपुं०) (षः । षम् ) (पुं०) एक राजा, ( नपुं० ) भाड़ वा भरसाँई।
अम्बष्ठ ( पुं० । स्त्री ) ( ष्ठः । ष्ठा ) ब्राह्मण से वैश्या स्त्री में उत्पन्न, ( स्त्री ) सोनापाढ़ा, जूही, लोनियाँ।
अम्बा ( स्त्री ) माता ( नाट्य में )।
अम्बिका ( स्त्री ) पार्वती।
अम्बु ( नपुं० ) जल।
अम्बुकणः (पुं०) 'शीकर' में देखो।
अम्बुज (पुं० । नपुं० ) (जः । जम्) (पुं०) स्थल का बेंत, समुद्र का फल, (नपुं) कमल।
अम्बुभृत्, तान्त, ( पुं० ) मेघ।
अम्बुवेतसः (पुं०) पानी का बेंत।
अम्बुमरणम् (नपुं०) आप से जल का बहना अर्थात् सोता।
अम्बूकृत (त्रि०) ( तः । ता । तम् ) खखार निकलने के साथ वचन का बोलना।
अम्भस् ( नपुं० ) ( म्भः ) जल।
अम्भोरुहम् ( नपुं० ) कमल।
अम्मय (त्रि०) ( यः । यी । यम् ) जल का विकार वा जल से उत्पन्न
अम्ल (त्रि०) (म्लः । म्ली म्लम्) खट्टारसवाला = ली, ( पुं० ) खट्टा रस, (स्त्री) अमिली वृक्ष।
अम्ललोणिका ( स्त्री ) लोनियाँ

साग । [ अम्ललोलिका ]
अम्लान (त्रि०) (नः । ना । नम) जो नहीं कुम्हिलाना = नी, (पुं०) कठसरैया पुष्पवृक्ष ।
अम्लिका ( स्त्री ) अमिली वृक्ष । [ अम्लीका ]
अंशः (पुं०) बाँटा, टुकड़ा, हिस्सा।
अंशुः ( पुं० ) किरण ।
अंशुकम ( नपुं ) वस्त्र वा कपड़ा ।
अंशुमत् ( त्रि० ) ( मान् । मती । मत् ) किरणवाला = ली, (पुं०) सूर्य, (स्त्री) सरिवन ओषधी।
अंशुमत्फला ( स्त्री ) केला ।
अंशुमालिन् ( पुं० ) ( ली ) सूर्य ।
अंसः (पुं०) कांधा ।
अंसलः ( पुं० ) बलवान् ।
अंहतिः ( स्त्री ) दान ।
अंहस् ( नपुं० ) (हः) पाप ।
अयः (पुं०) शुभकारक भाग्य ।
अयनम् (नपुं०) तीन ऋतु, मार्ग।
अयस् ( नपुं० ) ( यः ) लोहा ।
अयःप्रतिमा (स्त्री) लोहे की मूर्ति।
अयि ( अव्यय ) कोमल सम्बोधन, बिनती वा मनावना ।
अयोग्रम् (नपुं०) मुशल वा मूसर ।
अर (त्रि०) ( रः । रा । रम् ) शीघ्र द्रव्यवाची, ( नपुं० ) शीघ्रता ।
अरणि ( पुं० । स्त्री ) ( णिः । णिः-णी ) जिस लकड़ी को मथ के अग्नि निकालते हैं ।
अरण्यम् ( नपुं० ) वन ।
अरण्यानी ( स्त्री ) महावन ।
अरत्निः ( पुं० ) हाथ की चार अँगुलियाँ बन्द रहैं और एक कनिष्ठा खुली रहै उसके अग्र से केहुनी तक हाथ ।
अररम् ( नपुं० ) केवाड़ी ।
अररि (पुं० । स्त्री) ( रिः । री ) तथा ।
अरलुः ( पुं० ) सोनापाढ़ा ।
अरविन्दम् ( नपुं० ) कमल ।
अरातिः ( पुं० ) शत्रु ।
अराल ( त्रि० ) (लः । ला । लम्) टेढ़ा = ढ़ी ।
अरिः ( पुं० ) शत्रु ।
अरित्रम् (नपुं०) नाव की पतवार।
अरिमेदः ( पुं० ) दुर्गन्धिखैर वा गुहागर ।
अरिष्ट ( पुं० । नपुं०) ( ष्टः । ष्टम् ) ( पुं० ) कौवा, लहसुन, नीम, रीठो, ( नपुं० ) दण्ड से मथा गोरस, मङ्गल, अमङ्गल, सौरी का घर ।
अरिष्टदुष्टधी (त्रि०) ( धीः । धीः । धि ) मरने के पास पास जिस के बुद्धि को भ्रम हो जाता है।

अरुण (त्रि०) (णः। णा। णम्) लाल काला मिश्रित रङ्गवाली वस्तु, (पुं०) लाल काला मिश्रित रङ्ग (जैसा सन्ध्या का होता है), सूर्य, सूर्य का सारथि, (स्त्री) अतीस।

अरुन्तुद (त्रि०) (दः। दा। दम्) मर्म का छेदन करनेवाला = ली।

अरुष् (नपुं०) (रुः) "व्रण" में देखो।

अरुष्कर (त्रि०) (रः। री। रम्) घाव करनेवाला = ली, (पुं०) भेलावाँ।

अरोक (त्रि०) (कः। का। कम्) दीप्तिहीन, छिद्रहीन।

अर्कः (पुं०) सूर्य्य, स्फटिक, मन्दार वृक्ष।

अर्कपर्णः (पुं०) मन्दार वृक्ष।

अर्कबन्धुः (पुं०) शाक्य नामक बौद्धों के आचार्य्य।

अर्काह्वः (पुं०) मन्दार वृक्ष।

अर्गल (त्रि०) (लः। ला। लम्) केवाड़ी का बेंवड़ा।

अर्गली (स्त्री) केवाड़ी की अगरी।

अर्घः (पुं०) मूल्य वा दाम, पूजाविधि।

अर्घ्य (त्रि०) (र्घ्यः। र्घ्या। र्घ्यम्) जो वस्तु पूजा के लिये है जैसे जल इत्यादि।

अर्चा (स्त्री) पूजा, प्रतिमा।

अर्चित (त्रि०) (तः। ता। तम्) पूजित।

अर्चिष् (स्त्री। नपुं०) (र्चिः। र्चिः) (स्त्री) ज्वाला, (स्त्री। नपुं०) प्रकाश।

अर्जकः (पुं०) श्वेतपर्णास वृक्ष।

अर्जुन (त्रि०) (नः। ना। नम्) (त्रि०) श्वेत रङ्गवाला पदार्थ, (पुं०) अर्जुन पाण्डव, अर्जुन वृक्ष, श्वेत रङ्ग, (नपुं०) कोपातकनामा घास।

अर्जुनी (स्त्री) गैया।

अर्णवः (पुं०) समुद्र।

अर्णस् (नपुं०) (र्णः) जल।

अर्तगलः (पुं०) नीली कठसरैया। [आर्तगलः]

अर्तनम् (नपुं०) घिन करना, निन्दा करना।

अर्तिः (स्त्री) पीड़ा, धनुष् का टोंका।

अर्थः (पुं०) शब्द का अर्थ, धन, ठीक वा यथार्थ, निवृत्ति, प्रयोजन।

अर्थना (स्त्री) मांगना।

अर्थप्रयोगः (पुं०) ब्याज वा सूद।

अर्थशास्त्रम् (नपुं०) भूमि इत्यादि के ज्ञान का शास्त्र।

अर्थिन् (पुं०) (र्थी) याचक, सेवक।
अपार्थ (त्रि०) (पार्थः। पार्था। पार्थम्) (त्रि०) अर्थ से च्युत वा दूर न भया = ई, बुद्धिमान् = मती, (नपुं०) शिलाजीत।
अर्दना (स्त्री) माँगना।
अर्दित (त्रि०) (तः। ता। तम्) माँगागया = ई।
अर्द्ध (पुं०। नपुं०) (र्द्धः। र्द्धम्) (पुं०। नपुं०) टुकड़ा, (नपुं०) आधा।
अर्द्धचन्द्रा (स्त्री) श्यामतिधारा सेहुँड़।
अर्द्धनावम् (नपुं०) नाव का आधा।
अर्द्धरात्रः (पुं०) आधीरात।
अर्द्धर्चः (पुं०) ऋचा का आधा।
अर्द्धहारः (पुं०) बारह लड़ का हार।
अर्द्धोरुकस् (नपुं०) लहँगा।
अर्बुदः (पुं०) दश करोड़।
अर्भकः (पुं०) बालक।
अर्मम् (नपुं०) नेत्र का कोई रोग।
अर्य (पुं०। स्त्री) (र्यः। र्या) (पुं०) वैश्य, स्वामी, (स्त्री) वैश्य जाति वाली स्त्री, स्वामिनी।
अर्यमन् (पुं०) (मा) सूर्य।
अर्याणी (स्त्री) वैश्य जातिवाली स्त्री, स्वामिनी।
अर्यी (स्त्री) स्वामी की स्त्री, वैश्य की स्त्री।
अर्वन् (पुं०) (र्वा) घोड़ा, अधम वा नीच।
अर्वाक् (अव्यय) अवर वा एहवर।
अर्शम् (नपुं०) बवासीर रोग।
अर्शस (त्रि०) (सः। सा। सम्) जिसको बवासीर है।
अर्शस् (नपुं०) (र्शः) बवासीर।
अर्शोघ्नः (पुं०) सूरण तरकारी
अर्शोरोगयुक्त (त्रि०) (क्तः। क्ता। क्तम्) बवासीर रोग जिस को भया है।
अर्हणा (स्त्री) पूजा। [अर्हणम्]
अर्हित (त्रि०) (तः। ता। तम्) पूजित।
अलकः (पुं०) टेढ़े २ केश, चोटी।
अलका (स्त्री) कुबेर की पुरी।
अलक्तः (पुं०) महावर रङ्ग।
अलक्ष्मीः (स्त्री) लक्ष्मी से विरुद्ध वा दारिद्र्य।
अलगर्दः (पुं०) जल का सर्प, एक प्रकार की जोंक।
अलङ्करिष्णु (त्रि०) (ष्णुः। ष्णुः। ष्णु) भूषण करनेवाला वा सिँगारिया, जिसका भूषण करने का स्वभाव है।
अलङ्कृत (त्रि०) (तः। ता। तम्)

भूषण करनेवाला = ली ।
अलङ्कर्मीण ( त्रि० ) ( णः । णा । णम् ) काम करने में समर्थ ।
अलङ्कारः (पुं०) भूषण वा गहना ।
अलङ्कृतः ( त्रि० ) (तः । ता । तम्) सिंगारा हुवा = ई ।
अलङ्क्रिया ( स्त्री ) सिँगारना ।
अलञ्जरः ( पुं० ) बडा घडा वा माठ [ अलिञ्जरः ] ।
अलम् ( अव्यय । नपुं० ) (अव्यय) मना करना, भूषण, पर्याप्ति वा बस वा 'बहुत है' ऐसा बोलने में ( नपुं० ) हरताल ।
अलर्कः (पुं०) बौराना कुत्ता, श्वेत मंदार ।
अलवालम् ( नपुं० ) आलवाल में देखो ।
अलस ( त्रि० ) ( सः । सा । सम् ) आलसी ।
अलातम् ( नपुं० ) लुकाठा वा बुती लकड़ी जिसमें आग लगी हो ।
अलाबूः ( स्त्री ) तुम्बा का कद्दू । [ अलावुः ] [आलावुः] [आलाबूः]
अलिः ( पुं० ) भंवरा, बिच्छी ।
अलिकम् ( नपुं० ) ललाट, अप्रिय, झूठ [ अलीकम् ]
अलिञ्जरः (पुं०) अलञ्जर में देखो ।
अलिन् ( पुं० ) ( ली ) भंवरा ।
अलिन्दः ( पुं० ) चौखट के बाहर की जगह ।
अलीकम् ( नपुं० ) अलिक में देखो ।
अल्प ( त्रि० ) (ल्पः । ल्पा । ल्पम्) सूक्ष्म, छोटा = टी, थोड़ा = ड़ी
अल्पतनु ( त्रि० ) ( नुः । नुः । नु ) अल्प वा छोटे शरीरवाला = ली
अल्पमारिषः (पुं०) चौराईभाजी ।
अल्पसरस् ( नपुं० ) ( रः ) छोटा सरोवर ।
अल्पिष्ठ ( त्रि० ) ( ष्ठः । ष्ठा । ष्ठम् ) अति सूक्ष्म वा बहुत छोटा = टी ।
अल्पीयस् ( त्रि० ) ( यान् । यसी । यः ) तथा ।
अवकरः ( पुं० ) कतवार ।
अवकीर्णिन् ( पुं० ) ( र्णी ) जिसका व्रत वा नियम नष्ट हो गया है ।
अवकृष्ट ( त्रि० ) ( ष्टः । ष्टा । ष्टम् ) खींच के निकाला हुवा = ई जैसे काँटा इत्यादि ।
अवकेशिन् ( त्रि० ) ( शी । शिनी । शि ) निष्फल वा बंझा वा वन्ध्या
अवक्रयः ( पुं० ) मूल्य वा दाम ।
अवगणित ( त्रि० ) ( तः । ता ।

तम्) जिसकी निन्दा की गई।
अवगत (त्रि०) (तः। ता। तम्) जाना गया = ई।
अवगीत (त्रि०) (तः। ता। तम्) (नपुं०) लोकापवाद (त्रि०) जिसकी निन्दा की गई।
अवग्रहः (पुं०) वृष्टि का नाश वा सूखा पड़ना।
अवग्राहः (पुं०) तथा।
अवचूर्णित (त्रि०) (तः। ता। तम्) चूर्ण किया गया = ई।
अवज्ञा (स्त्री) अनादर।
अवज्ञात (त्रि०) (तः। ता। तम्) जिसका अनादर किया गया।
अवटः (पुं०) गड्ढा।
अवटीट (त्रि०) (टः। टा। टम्) चिपटी नाकवाला = ली।
अवटुः (स्त्री) गले की घाँटी।
अवतमसम् (नपुं०) जो अन्धकार थोड़ा हो गया वा क्षीण हो गया।
अवतंसः (पुं०) कर्णफूल वा कर्ण भूषण, सिरपेंच।
अवतोका (स्त्री) वतोका में देखो
अवदंशः (पुं०) मद्यपान के रुचि के लिये भूंजा चना इत्यादि का खाना।
अवदात (त्रि०) (तः। ता। तम्) (त्रि०) शुद्ध वा साफ पदार्थ, श्वेत पदार्थ, पीला पदार्थ (पुं०) श्वेत रङ्ग, पीला रङ्ग,।
अवदानम् (नपुं०) पूर्व में हो गया जो चरित।
अवदारणम् (नपुं०) कुदारी।
अवदाहम् (नपुं०) खस।
अवदीर्ण (त्रि०) (र्णः। र्णा। र्णम्) फट गया, टिघल गया।
अवद्य (त्रि०) (द्यः। द्या। द्यम्) अधम वा नीच।
अवधानम् (नपुं०) समाधान वा सावधानी।
अवधारणम् (नपुं०) निश्चय।
अवधिः (पुं०) सीमा वा हद्द, गड्ढा, काल वा समय।
अवध्वस्त (त्रि०) (स्तः। स्ता। स्तम्) अपध्वस्त में देखो।
अवनत (त्रि०) (तः। ता। तम्) जिसका मुख नीचे है।
अवनम् (नपुं०) रक्षा करना, तृप्ति।
अवनाट (त्रि०) (टः। टा। टम्) चिपटी नाकवाला = ली।
अवनायः (पुं०) नीचे लेजाना, ओनावना।
अवनिः (स्त्री) भूमि।
अवन्तिसोमम् (नपुं०) काँजी।

अवन्ध्य ( त्रि० ) ( न्ध्यः । न्ध्या । न्ध्यम् ) समय पर फल अवश्य करनेवाला वृक्ष इत्यादि ।
अवभृथः ( पुं० ) यज्ञ में दीक्षा का समापक जो दृष्टिपूर्वक एक प्रकार का स्नान ।
अवभ्रट ( त्रि० ) (टः । टा । टम्) चिपटी नाक वाला = ली ।
अवम ( त्रि० ) ( मः । मा । मम् ) अधम वा नीच ।
अवमत ( त्रि० ) ( तः । ता । तम् ) अपमान किया गया = ई ।
अवमर्दः ( पुं० ) देश इत्यादि को उपद्रव देना ।
अवमर्शः, नाट्य में ( पुं० ) चौथी सन्धि ।
अवमानना ( स्त्री ) अनादर ।
अवमानित ( त्रि० ) ( तः । ता । तम् ) अपमान किया गया = ई
अवयवः ( पुं० ) हाथ पैर इत्यादि अङ्ग ।
अवर ( त्रि० ) ( रः । रा । रम् ) (त्रि०) पिछला = ली, (नपुं०) हाथियों के पीछे का जङ्घादि अङ्ग ।
अवरज ( पुं० । स्त्री ) ( जः । जा ) ( पुं० ) छोटा भाई, ( स्त्री ) छोटी बहिन ।
अवरतिः ( स्त्री ) उपरति में देखो
अवरवर्णः ( पुं० ) शूद्र ।
अवरीण (त्रि०) (णः । णा । णम् ) धिक्कृत वा धिक्कारा गया = ई ।
अवरोधः ( पुं० ) राजों का जनानखाना ।
अवरोधनम् ( नपुं० ) तथा ।
अवरोहः ( पुं० ) ऊंचे से उतरना, बरोह गूलर इत्यादि जो वृक्ष से लपटी रहती हैं ।
अवर्णः ( पुं० ) निन्दा ।
अवलग्न (त्रि०) (ग्नः । ग्ना । ग्नम् ) वलग्न में देखो
अवलग्नम् ( नपुं० ) कमर ।
अवलम्बनम् ( नपुं० ) थाँभना ।
अवलम्बित ( त्रि० ) ( तः । ता । तम् ) (नपुं०) थाँभना, (त्रि०) थांभा गया = ई वा पकड़ा गया = ई ।
अवलेपः ( पुं० ) घमण्ड वा अहङ्कार ।
अवल्गुजः ( पुं०) बकुची ओषधी ।
अववादः ( पुं० ) निन्दा, आज्ञा [ अपवादः ]
अवश्यम्, क्रिया विशेषण (अव्यय । नपुं०) निश्चय ।
अवश्यायः (पुं०) पाला वा बरफ ।
अवष्टब्ध ( त्रि० ) ( ब्धः । ब्धा ।

ब्धम्) आश्रित, पासवाला = ली, बंधा हुआ = ई ।
अवष्टम्भः (पुं०) अवलेप में देखो ।
अवसरः (पुं०) अवसर, प्रसङ्ग ।
अवसानम् (नपुं०) अन्त वा अखीर, समाप्ति ।
अवसित (त्रि०) (तः। ता। तम्) समाप्त हुवा = ई, जानागया = ई ।
अवस्करः (पुं०) विष्ठा, स्त्री वा पुरुष का मूत्रेन्द्रिय ।
अवस्था (स्त्री) अवस्था ।
अवहारः (पुं०) ग्राह जलजन्तु ।
अवहित्था (स्त्री) शोकादि से उत्पन्न भया जो मुखमालिन्यादि उसको छिपाना ।
अवहेलनम् (नपुं०) अनादर । [अवहेला] [अवहेलम्]
अवाक्पुष्पी (स्त्री) सौंफ ।
अवाग्भव (त्रि०) (वः। वा। वम्) दक्षिण दिशा में उत्पन्न भया, नीचे उत्पन्न भया ।
अवाग्र (त्रि०) (ग्रः। ग्रा। ग्रम्) अधोमुख वा नीचे मुखवाला = ली ।
अवाचीन (त्रि०) (नः। ना। नम्) अवाग्भव में देखो ।
अवाच् (अव्यय) (क्) (त्रि०) (ङ्। ची। क्) (त्रि०) गूंगा = गी, अधोमुख वा नीचे मुखवाला = ली, (अव्यय) दक्षिण दिशा, दक्षिण देश, (स्त्री) दक्षिणी दिशा ।
अवाच्य (त्रि०) (च्यः। च्या। च्यम्) निन्दा के वचन इत्यादि ।
अवारम् (नपुं०) नदी इत्यादि का पूर्व तीर ।
अवासस् (त्रि०) (साः। साः। सः) नङ्गा वा नङ्गी ।
अवि (पुं०। स्त्री) (विः। विः) (पुं०) भेंड़ा, पर्वत, सूर्य्य । (स्त्री) रजस्वला स्त्री ।
अविग्नः (पुं०) करौंदा ।
अवित (त्रि०) (तः। ता। तम्) रक्षित वा रक्षा कियागया = ई ।
अविद्या (स्त्री) अहङ्कार, अज्ञान ।
अविद्धकर्णी (स्त्री) सीनापाढ़ा ।
अविनीत (त्रि०) (तः। ता। तम्) अशिक्षित वा अहङ्कारी, दुष्ट ।
अविरत (त्रि०) (तः। ता। तम्) (त्रि०) निरन्तर द्रव्यवाची (नपुं०) अद्रव्यवाची ।
अविलम्बित (त्रि०) (तः। ता। तम्) (त्रि०) तथा (नपुं०) शीघ्र वा जल्दी ।
अविस्पष्ट (त्रि०) (ष्टः। ष्टा। ष्टम्)

अप्रकट बोलना।
अवी (स्त्री) रजस्वला स्त्री।
अवीचि (त्रि०) (चिः। चिः। चि) (पुं०) एक प्रकार का नरक, (त्रि०) तरङ्गरहित जलाशय इत्यादि।
अवीरा (स्त्री) पतिपुत्ररहित स्त्री
अवेक्षा (स्त्री) निगहमानी।
अव्यक्त (त्रि०) (क्तः। क्ता। क्तम्) (त्रि०) अप्रकट वा अस्फुट (पुं०) आत्मा, विष्णु, शिव, (नपुं०) महदादि सांख्यशास्त्रोक्त तत्व।
अव्यक्तराग (त्रि०) (गः। गा। गम्) (त्रि०) काला लाल मिश्रित रङ्ग जैसा सन्ध्या का (त्रि०) उसी रङ्ग वाला पदार्थ।
अव्यण्डा (स्त्री) केवाँच।
अव्यथा (स्त्री) हरें, माक।
अव्यवहित (त्रि०) (तः। ता। तम्) पासवाला = ली वा सटा = टी।
अशनाया (स्त्री) भूख वा खाने की इच्छा।
अशनायित (त्रि०) (तः। ता। तम्) भूखा = खी।
अशनि (पुं०। स्त्री) (निः। निःनी) वज्र।
अशित (त्रि०) (तः। ता। तम्) खाया गया = ई।
अशिश्वी (स्त्री) जिस को लड़का नहीं है ऐसी स्त्री।
अशुभम् (नपुं०) अमङ्गल।
अशेष (त्रि०) (षः। षा। षम्) सम्पूर्ण वा सब।
अशोक (त्रि०) (कः। का। कम्) (पुं०) अशोकवृक्ष (स्त्री) कुटकी (त्रि०) शोकरहित।
अशोकरोहिणी (स्त्री) कुटकी।
अश्मगर्भः (पुं०) पन्ना।
अश्मजम् (नपुं०) सिलाजीत।
अश्मन् (पुं०) (श्मा) पत्थर।
अश्मन्तम् (नपुं०) चूल्हा।
अश्मपुष्पम् (नपुं०) सिलाजीत।
अश्मरी (स्त्री) पथरी रोग जिसके होने से मूत्र की राह से पत्थर के सदृश वीर्य्य बहता है
अश्मसारः (पुं०) लोहा।
अश्रान्त (त्रि०) (न्तः। न्ता। न्तम्) अविरत में देखो।
अश्रिः (स्त्री) कोना, तरवार इत्यादि का टोंका [अश्री]
अश्रु (नपुं०) आँसू [अस्रु] [अस्रम्] [अश्रम्]
अश्लील (त्रि०) (लः। ला। लम्) भाँड़ इत्यादि का बोलना अर्थात् अनुचित बोलना।

अश्वः ( पुं० ) घोड़ा ।

अश्वकर्णकः ( पुं० ) सखुआ वृक्ष ।

अश्वत्थ (पुं० । नपुं०) (त्थः । त्थम्) ( पुं० ) पीपर का वृक्ष (नपुं०) पीपर का फल ।

अश्वयुज् (स्त्री) (क्-ग्) अश्विनीतारा ।

अश्ववडव (पुं० । नपुं०) पुंल्लिङ्ग में द्विवचनान्त और बहुवचनान्त है ( वौ । वाः ) नपुंसक केवल एक वचनान्त है ( वम् ) घोड़ा और घोड़ी, घोड़े और घोड़ियां ।

अश्वा ( स्त्री ) घोड़ी ।

अश्वाभरणम् ( नपुं० ) घोड़ों का गहना ।

अश्वारोहः ( पुं० ) घोड़सवार ।

अश्विनी ( स्त्री ) अश्विनीतारा

अश्विनीसुतौ, अदन्त द्विवचन (पुं०) अश्विनीकुमार ।

अश्विनौ, नान्त द्विवचन ( पुं० ) तथा ।

अश्वीयम् (नपुं०) घोड़ों का झुण्ड

अषडक्षीण ( त्रि० ) ( णः । णा । णम् ) जिस मन्त्र वा सलाह इत्यादि को दोही जन जानें अर्थात् ६ कान में न जाने पावे वह ।

अष्टमूर्तिः ( पुं० ) महादेव ।

अष्टापद (पुं० । नपुं०) (दः । दम् । (पुं० । नपुं० ) सुवर्ण वा सोना, ( नपुं० )चौपड़ इत्यादि खेलने में गोटी रखने के लिये कपड़ा इत्यादि जिसपर बना रहता है वह ।

अष्ठीवत् ( पुं० । नपुं० ) ( वान् । वत् ) पैर का घुटना ।

असकृत्, क्रिया विशेषण ( अव्यय ) बारम्बार ।

असतीसुत ( पुं० ) कुलटा का वा वेश्या का पुत्र ।

असत् (त्रि०) (न् । ती । त्) (त्रि०) झूठा = ठी, दुष्ट, (स्त्री ) कुलटा वा खानगी स्त्री ।

असनः (पुं०) विजयसार [आसनः]

असनपर्णी ( स्त्री ) पटसण [ आसनपर्णी ]

असमीक्ष्यकारिन् ( त्रि० ) ( री । रिणी । रि ) बिना समझे बूझे काम करने वाला = ली ।

असवः, उदन्त बहुवचन ( पुं० ) प्राण वायु ।

असार ( त्रि० ) ( रः । रा रम् ) निर्बल वा बलरहित ।

असिः ( पुं० ) तरवार ।

असिक्नी ( स्त्री स्त्री वृद्ध जोन)

हो और कोई काम के लिये भेजी जाय और जनाने में रहै
असित ( त्रि० ) ( तः । ता । तम् ) ( त्रि० ) काला रङ्ग वाला ( पुं० ) काला रङ्ग ।
असिधावकः ( पुं० ) खड्गादिक का साफ करनेवाला ।
असिधेनुका ( स्त्री ) छूरी ।
असिपत्रवनम् ( नपुं० ) एक प्रकार के नरक का नाम ।
असिपुत्री ( स्त्री ) छूरी ।
असिहेतिः ( पुं० ) खड्गधारी ।
असुधारणम् ( नपुं० ) प्राण का धारण करना ।
असुरः ( पुं० ) दैत्य ।
असूक्षणम् ( नपुं० ) अनादर । [ असूर्क्षणम् ]
असूया ( स्त्री ) गुण में दोष लगाना ।
असृग्धरा ( स्त्री ) खाल का चमड़ा [ असृग्धारा ] [असृग्वरा]
असृज् ( नपुं० ) ( क् - ग् ) लोहू
असौम्यस्वर ( त्रि० ) ( रः । रा । रम् ) कौआ इत्यादि की नाईं जिसका दुष्ट स्वर वा शब्द है
असंहत ( त्रि० ) ( तः । ता । तम् ) ( त्रि० ) जो सटा वा मिला नहीं ( पुं० ) सेना का व्यूह वा रचना जो पृथक् स्थित है।
अस्त ( त्रि० ) ( स्तः । स्ता । स्तम् ) ( त्रि० ) प्रेरित वा आक्षिप्त वा हुकुम दिया गया वा चलाया गया जैसा बाण इत्यादि, ( पुं० ) अस्ताचल पर्वत,
अस्तम् ( अव्यय ) नहीं देख पड़ना,
अस्ति ( अव्यय ) है ।
अस्तु ( अव्यय ) ईर्ष्यापूर्वक अङ्गीकार ।
अस्त्रम् ( नपुं० ) आग्नेयादि अस्त्र ।
अस्त्रिन् ( पुं० ) ( स्त्री ) धनुर्द्धर ।
अस्थि ( नपुं० ) हड्डी ।
अस्थिर ( त्रि० ) ( रः । रा । रम् ) चञ्चल प्रकृति वाला = ली ।
अस्फुटवाच् ( पुं० ) ( क् - ग् ) स्पष्ट नहीं बोलने वाला = ली
अस्र ( पुं० । नपुं० ) ( स्रः । स्रम् ) ( पुं० ) कोण, कोना, ( नपुं० ) आंसू, लोहू ।
अस्रपः ( पुं० ) राक्षस ।
अस्रु ( नपुं० ) आंसू ।
अस्वच्छन्द ( त्रि० ) ( न्दः । न्दा । न्दम् ) परतन्त्र ।
अस्वप्नः ( पुं० ) देवता ।
अस्वर ( त्रि० ) ( रः । रा । रम् ) कौवा इत्यादि की तरह दुष्ट स्वरयुक्त ।

अस्वाध्यायः ( पुं० ) अपने शाखा के वेद के अध्ययन से हीन ।
अहङ्कारः ( पुं० ) अहङ्कार वा अभिमान ।
अहङ्कारवत् ( पुं० ) ( वान् ) अभिमानी ।
अहन् ( नपुं० ) ( हः ) दिन वा दिवस ।
अहमहमिका ( स्त्री ) कार्य में "मैं काम करसकताहूं" ऐसा बोलना
अहम्पूर्विका ( स्त्री ) कार्य में 'मैं पहले मैं पहिले' ऐसा बोलना
अहम्मतिः ( स्त्री ) अहङ्कार ।
अहर्पतिः ( पुं० ) सूर्य ।
अहर्मुखम् ( नपुं० ) प्रातःकाल ।
अहस्करः ( पुं० ) सूर्य ।
अहह ( अव्यय ) अद्भुत, खेद ।
अहार्यः ( पुं० ) पर्वत ।
अहिः (पुं०) सर्प, वृत्रनामा दैत्य ।
अहितः ( पुं० ) शत्रु ।
अहितुण्डिकः ( पुं० ) सर्प का पकड़नेवाला ।
अहिभयम् ( नपुं० ) सर्प से भय, राजों को अपने सहाय से भय।
अहिभुज् ( पुं० ) ( क्-ग् ) मयूर वा मोर, गरुड़ ।
अहिर्बुध्न्यः (पुं०) महादेव ।
अहेरुः ( स्त्री ) सतावर ओषधी ।
अहो ( अव्यय ) विस्मय वा आश्चर्य ।
अहोरात्रः ( पुं० ) दिन रात्रि वा तीस मुहूर्त ।
अहंयुः ( पुं० ) अहङ्कारी ।
अह्नाय ( अव्यय ) जल्दी वा झटपट ।

-※——

# ( आ )

आ (अव्यय) स्मरण में, वाक्य का एक देश पूरा करने में ।
आः ( त्रि० ) ( आः । आः । अम् ) ( पुं० ) ब्रह्मा, । ( स्त्री ) पूजा ( त्रि० ) मङ्गल कर्म ।
आः ( अव्यय ) कोप में, पीड़ा में।
आकम्पित (त्रि०) (तः । ता । तम्) थोड़ा कंपा ।
आकरः ( पुं० ) खान ।
आकर्षः ( पुं० ) जूआ, गोटियों के रखने के लिये वस्त्रादि से बना घर, पासा ।
आकल्पः ( पुं० ) अलङ्कार की रचना इत्यादि से की गई शोभा ।

आकारः ( पुं० ) अभिप्राय के स-
दृश चेष्टा, आकृति।
आकारगुप्तिः ( स्त्री ) शोक इत्या-
दि से उत्पन्न जो मुखमालिन्या-
दि उसका छिपाना।
आकारणा ( स्त्री ) पुकारना।
आकाश (पुं०। नपुं०) (शः। शम्)
आकाश।
आकीर्ण (त्रि०) (र्णः। र्णा। र्णम्)
जनादिकों से अत्यन्त भरा
स्थानादि, नानाजातियों से
मिलित।
आकुल ( त्रि० ) ( लः। ला। लम्)
घबड़ाया हुवा = ई।
आकृतिः ( स्त्री ) स्वरूप।
आक्रन्दः ( पुं० ) आर्तशब्द, रक्षक,
भयङ्कर युद्ध।
आक्रीडः ( पुं० ) अक्रीड में देखो।
आक्रोशः ( पुं० ) रुदन, चिल्लाना,
गालीदेना।
आक्रोशनम् ( नपुं० ) गालीदेना।
आक्षारणा ( स्त्री ) मैथुन के वि-
षय में स्त्री का पुरुष को वा पुरुष
का स्त्री को तोहमत लगाना।
[ आक्षारणम् ]
आक्षारित (त्रि०) (तः। ता। तम्)
लोकापवाद से दूषित।
आक्षेपः (पुं०) निन्दा, अद्भुत प्रश्न
आखण्डलः ( पुं० ) इन्द्र।
आखुः ( पुं० ) मूसा।
आखुभुज् ( पुं० ) (क्-ग्) बिलार,
सर्प
आखेटः ( पुं० ) शिकार वा अहेर
करना।
आख्या ( स्त्री ) नाम।
आख्यात ( त्रि० ) (तः। ता। तम्)
कहागया = ई।
आख्यायिका ( स्त्री ) सत्यतापूर्वक
जिसका अर्थ मालुम है ऐसी
कथा।
आगन्तुः ( पुं० ) कोई कार्यवश
से आगया पहुना इत्यादि।
आगस् ( नपुं० ) ( गः ) अपराध,
पाप।
आगारम् ( नपुं० ) घर।
आगुर् ( स्त्री ) ( गूः ) अपराध।
आग्नीध्रः ( पुं० ) एक प्रकार का
ऋत्विक्।
आग्नेयीपतिः ( पुं० ) अग्नि।
आग्रहायणिकः ( पुं० ) अगहन
महीना।
आग्रहायणी ( स्त्री ) अगहन की
पूर्णमासी।
आङ्, यह ङित् है (अव्यय) (आ)
थोड़ा, अभिव्याप्ति जैसा,—'आ
सत्यलोकात्' = सत्यलोकपर्यंत,

सीमा, क्रिया के योग में उत्पन्न भया जो अर्थ उसमें ।
आङ्गिक, नाट्य में (त्रि०) (कः । की । कम्) अङ्ग से सिद्ध चेष्टा जैसा—भौंह का मरोरना ।
आङ्गिरसः (पुं०) बृहस्पति ।
आचमनम् (नपुं०) आचमन ।
आचामः (पुं०) भात का माँड़ ।
आचार्य (पुं० । स्त्री) (र्यः । र्या) (पुं०) वेद की व्याख्या करनेवाला, (स्त्री) आपही जो वेद के मन्त्रों की व्याख्या करै वह स्त्री ।
आचार्यानी (स्त्री) आचार्य की स्त्री ।
आचितः (पुं०) दस भार अथवा वह भार जो कि छकड़ा से ढोने के योग्य है ।
आच्छादनम् (नपुं०) ढाँपना, छिपाना, वस्त्र इत्यादि से वेष्टन, वस्त्र, गुप्त होना ।
आच्छुरितकम् (नपुं०) जोर से अथवा जिससे दूसरे को क्रोध उत्पन्न हो ऐसा हंसना ।
आच्छोदनम् (नपुं०) शिकार करना ।
आजकम् (नपुं०) बकरों और बकरियों का झुण्ड ।
आजानेयः (पुं०) कुलीन घोड़ा ।
आजिः (स्त्री) समान भूमि, युद्ध ।
आजीवः (पुं०) जीविका ।
आजुर् (स्त्री) (जूः) बिना दाम कर्म करना, हठ से नरक में डालना, मूंड़ना ।
आजूः, ऊदन्त (स्त्री) तथा ।
आज्ञा (स्त्री) आज्ञा ।
आज्यम् (नपुं०) घीव ।
आडम्बरः (पुं०) तैयारी, बाजा का शब्द, बड़े हाथियों का शब्द ।
आडिः (स्त्री) आड़ी पक्षी । [आड़ी] [आटिः] [आटी]
आढक (त्रि०) (कः । की । कम्) (पुं०) एक हाथ लम्बा चौड़ा और ऊंचा नपुवा जिस को दक्षिण में पाइली कहते हैं (त्रि०) उससे नपा हुआ अन्न ।
आढकिक (त्रि०) (कः । की । कम्) आढक भर अन्न बोने लायक खेत ।
आढकी (स्त्री) रहर ।
आढ्य (त्रि०) (ढ्यः । ढ्या । ढ्यम्) धनवान् ।
आणवीनम् (नपुं०) छोटे अन्न का खेत जिसमें मोथी कोदो इत्यादि बोये जाते हैं ।

आतङ्कः (पुं०) भय, सन्ताप, रोग।
आतञ्चनम् (नपुं०) वेग, तृप्त करना, दूध में मंठा डालना।
आततायिन् (पुं०) (यी) मारने की इच्छा करके जो सन्नद्ध वा तैयार हो, दुर्घट कर्म में प्रवृत्त होनेवाला, गुण्डा वा बदमाश
आतपः (पुं०) घाम।
आतपत्रम् (नपुं०) छत्र वा छाता
आतरः (पुं०) पार उतराई का द्रव्य।
आतापिन् (पुं०) (पी) चील्ह पक्षी। [आतायी]
आतिथेय (त्रि०) (यः। यी। यम्) अतिथियों में साधु वा उनकी सेवा करनेवाला=ली।
आतिथ्य (त्रि०) (थ्यः। थ्या। थ्यम्) जो वस्तु कि अतिथि के लिये है।
आतुर (त्रि०) (रः। रा। रम्) रोगी।
आतोद्यम् (नपुं०) बाजा।
आत्तगर्व (त्रि०) (र्वः। र्वा। र्वम्) जिसका अहङ्कार नष्ट करदिया गया है।
आत्मगुप्ता (स्त्री) केवाँच।
आत्मघोषः (पुं०) कौवा।
आत्मज (पुं०। स्त्री) (पुं०) पुत्र, (स्त्री) पुत्री।
आत्मन् (पुं०) (त्मा) आत्मा, देह, स्वभाव, बुद्धि, ब्रह्म, उपाय, धीरता वा धैर्य्य।
आत्मभूः (पुं०) ब्रह्मा, कामदेव
आत्मम्भरि (त्रि०) (रिः। रिः। रि) अपना पेट भरनेवाला=ली।
आत्रेयी (स्त्री) अत्रि के गोत्र में उत्पन्न स्त्री, रजस्वला स्त्री।
आथर्वणम् (नपुं०) अथर्व का समूह।
आदर्शः (पुं०) दर्पण।
आदिः (पुं०) पहिला=ली।
आदिकविः (पुं०) वाल्मीकि।
आदिकारणम् (नपुं०) मुख्य कारण।
आदितेयः (पुं०) देवता, यह शब्द बहुवचनान्त वायुवाचक है जो कि ४९ हैं।
आदित्यः (पुं०) सूर्य्य, देवता, यह शब्द बहुवचनान्त गणदेवतावाची है जो कि १२ हैं।
आदीनवः (पुं०) दोष, क्लेश।
आदृत (त्रि०) (तः। ता। तम्) आदर किया गया=ई।
आद्य (त्रि०) (द्यः। द्या। द्यम्) पहिला=ली।
आद्यून (त्रि०) (नः। ना। नम्)

जो जीतने की इच्छा वा बड़ाई की इच्छा नहीं करता = ती अर्थात् अत्यन्त भूखा = खी।

आद्योतः ( पुं० ) प्रकाश।

आधारः ( पुं० ) आधार, पानी का बाँध।

आधिः ( पुं० ) बन्धक वा गीरों, विपत्ति, मन की पीड़ा, बैठना।

आधूत ( त्रि० ) ( तः। ता। तम् ) थोड़ा कंपा वा कंपाया गया।

आधोरणः ( पुं० ) हाथीवान्।

आध्यानम् ( नपुं० ) स्मरण।

आनकः ( पुं० ) एक प्रकार का नगाड़ा जिसको भेरी वा पटह कहते हैं।

आनकदुन्दुभिः ( पुं० ) वसुदेव।

आनत ( त्रि० ) ( तः। ता। तम् ) जिसने मुख नीचे किया है।

आनद्धम् ( नपुं० ) मृदङ्ग ढोलक इत्यादि चमड़े से मढ़ा बाजा

आननम् ( नपुं० ) मुख।

आनन्दः (पुं०) सुख।

आनन्दथुः ( पुं० ) तथा।

आनन्दनम् ( नपुं० ) कुशलप्रश्नादि से किया गया आनन्द।

आनर्तः (पुं०) आनर्त देश, संग्राम, नृत्य का स्थान।

आनायः ( पुं० ) जाल।

आनाय्यः ( पुं० ) एक प्रकार का यज्ञ का अग्नि जो गार्हपत्य से ल्याय करके दक्षिणाग्नि बनाया जाता है।

आनाहः (पुं०) मल मूत्र का रोध वा रोकावट।

आनुपूर्वम् (नपुं०) क्रम वा परम्परा

आनुपूर्वी ( स्त्री ) तथा।

आनुपूर्व्यम् ( नपुं० ) तथा।

आन्त्रम् ( नपुं० ) पेट की अंतड़ी।

आन्त्री ( स्त्री ) पेट की अंतड़ी, वृद्धदारक नाम एक वृक्ष।

आन्धसिकः ( पुं० ) रसोइंदार।

आन्वीक्षिकी ( स्त्री ) तर्कविद्या।

आपः, बहुवचनान्त, इसका मूल शब्द "अप्" है, ( स्त्री ) जल।

आपक्वम् ( नपुं० ) पौलि में देखो।

आपगा ( स्त्री ) नदी।

आपणः ( पुं० ) बजार।

आपणिकः ( पुं० ) बनिया।

आपत्प्राप्त (त्रि०) (प्तः। प्ता। प्तम्) जो विपत्ति को प्राप्त है।

आपद् ( स्त्री ) ( त्-द् ) विपत्ति।

आपन्न ( त्रि० ) ( न्नः। न्ना। न्नम् ) जो विपत्ति को प्राप्त है।

आपन्नसत्त्वा ( स्त्री ) गर्भवती स्त्री।

आपमित्यकम् ( नपुं० ) बदल कर

ली हुई चीज़ जैसा—एक चीज़ देकर दूसरी चीज़ लिई ।
आपानम् ( नपुं० ) मद्यपान के लिये सभा ।
आपीड़ः ( पुं० ) शिखा में बाँधने की माला ।
आपीनम् ( नपुं० ) गैया के स्तन का ओहा ।
आपूपिकः ( पुं० ) तैलपक्व इत्यादि भक्ष्य पदार्थ का बनानेवाला ।
आपूपिकम् ( नपुं० ) रोटियों का राशि ।
आप्त ( त्रि० ) ( प्तः । प्ता । प्तम् ) विश्वस्त अर्थात् जिसके ऊपर विश्वास होता है ।
आप्य (त्रि०) (प्यः । प्या । प्यम्) जल का विकार वा जल से बनी वस्तु ।
आप्यायनम् ( नपुं० ) तृप्त करना ।
आप्रच्छनम् (नपुं०) कुशलप्रश्नादि से किया गया अनुमोदन वा आनन्द, अपने जाने के लिये पूछना ।
आप्रपदम् ( नपुं० ) पाद के अग्रभाग तक ।
आप्रपदीन ( त्रि० ) ( नः । ना । नम् ) जो वस्त्र इत्यादि पैर तक लम्बा होय ।
आप्लवः (पुं०) स्नान । [ आप्लावः ]
आप्लवव्रतिन् ( पुं० ) (ती) स्नातक में देखो ।
आप्लुतव्रतिन् (पुं०) ( ती ) तथा ।
आबन्धः ( पुं० ) योक्त्र में देखो ।
आभरणम् ( नपुं० ) भूषण वा गहना ।
आभाषणम् ( नपुं० ) बातचीत करना ।
आभास्वराः, बहुवचनान्त ( पुं० ) ६४ गणदेवता ।
आभीरः ( पुं० ) ग्वाल वा अहिर [ अभीरः ]
आभीरपल्ली (स्त्री) गोपका गाँव वा घर [ आभीरपल्लिः ]
आभीरी ( स्त्री ) अहिर जातिवाली स्त्री वा अहिर की स्त्री ।
आभील (त्रि०) ( लः । ला । लम् ) (नपुं०) शरीर की पीड़ा, (त्रि०) पीड़ायुक्तशरीरवाला = ली ।
आभोगः ( पुं० ) परिपूर्णता ।
आमगन्धि ( त्रि० ) ( न्धिः । न्धिः —न्धी । न्धि ) ( नपुं० ) कच्चे माँस इत्यादि का गन्ध (त्रि०) कच्चे मांस का गन्धवाला = ली
आमनस्यम् ( नपुं० ) मन की पीड़ा ।
आमयः ( पुं० ) रोग ।

आमयाविन् (त्रि०) ( वी। विनी। वि ) रोगी।

आमलक (त्रि०) ( कः। की। कम् ) अंवरा।

आमिक्षा ( स्त्री ) पक्के और उष्ण दूध में दही डालने से जो वस्तु बनजाता है अर्थात् छेना।

आमिषम् ( नपुं० ) माँस, दूध।

आमिषाशिन् (त्रि०) ( शी। शिनी शि ) मत्स्य मांस का खानेवाला = ली।

आमुक्त ( त्रि० ) (क्तः। क्ता। क्तम्) ( त्रि० ) पहिना गया हार इत्यादि, ( पुं० ) जिस योद्धा ने कवच पहिना है।

आमोदः ( पुं० ) हर्ष, अत्यन्त मनोहर गन्ध।

आमोदिन् (त्रि० ) ( दी। दिनी। दि ) मुख को सुगन्ध देनेवाला बीड़ा इत्यादि, गन्धयुक्त, हर्षयुक्त।

आम् ( अव्यय ) हाँ वा इसी प्रकार से [ आँ ]

आम्नायः ( पुं० ) वेद, गुरुपरम्परा से चला आया अच्छा उपदेश।

आम्रः ( पुं०। नपुं० ) (म्रः। म्रम्) ( पुं० ) आम वृक्ष, ( नपुं० ) आम फल।

आम्रातकः (पुं०) अमड़ा, [ अम्रातकः ]

आम्रेडित (त्रि०) (तः। ता। तम्) जो दो वा तीन बार कहा गया जैसा—सांप सांप।

आम्लिका ( स्त्री ) इमिली [ आम्लीका ]

आयत ( त्रि० ) ( तः। ता। तम् ) लम्बा = म्बी।

आयतनम् (नपुं०) घर, यज्ञस्थान, नाम रक्खा हुवा वृक्ष।

आयतिः ( स्त्री ) आनेवाला समय, प्रभाव, लम्बाई।

आयत्त ( त्रि० ) (त्तः। त्ता। त्तम्) अधीन वा परतन्त्र।

आयामः ( पुं० ) लम्बाई।

आयुधम् ( नपुं० ) शस्त्र खड्ग इत्यादि।

आयुधिकः ( पुं० ) शस्त्रजीविका वाला।

आयुधीयः ( पुं० ) तथा।

आयुष् (नपुं०) (युः) जीवनकाल।

आयुष्मत् (त्रि०) ( ष्मान्। ष्मती। ष्मत् ) प्रशस्त वा बड़े आयुर्बल वाला = ली।

आयोधनम् ( नपुं० ) सङ्ग्राम।

आरकूट ( पुं०। नपुं० ) ( टः।

टम् ) पीतर ।
आरग्वधः (पुं०) अमिलतास [आ-
ग्र्वधः] [ अरग्वधः ] [ अर्ग्वधः ]
आरतिः ( स्त्री ) बड़ी प्रीति, उप-
रति में देखो ।
आरनालकम् ( नपुं० ) काँजी ।
आरम्भः (पुं०) प्रारम्भ, उत्पत्ति ।
आरवः ( पुं० ) शब्द ।
आरा ( स्त्री ) लकड़ी चीरने का
आरा ।
आरात् ( अव्यय ) दूर, समीप ।
आराधनम् (नपुं०) सन्तुष्ट करना,
सिद्ध करना, लाभ ।
आरामः ( पुं० ) घर का उपवन
वा बगीचा ।
आरालिकः ( पुं० ) रसोईदार ।
आरावः ( पुं० ) शब्द ।
आरेवतः ( पुं० ) अमिलतास ।
आरोग्यम् ( नपुं० ) आरोग्य वा
रोग का न रहना ।
आरोहः (पुं०) चढ़ना, श्रेष्ठ स्त्री
का कटिभाग, वृक्ष इत्यादि की
उंचाई ।
आरोहणम् ( नपुं० ) चढ़ना, प-
त्थर इत्यादि की सीढ़ी ।
आर्तगलः (पुं०) नीली कठसरैया
[ अन्तर्गलः ]
आर्तवम् ( नपुं० ) महीने भर पर
स्त्री को जो रुधिर जाता है
आर्द्र (त्रि०) ( र्द्रः । र्द्रा । र्द्रम् )
ओदा = दी ।
आर्द्रकम् ( नपुं० ) आदी नाम
एक प्रकार का तीता कन्द ।
आर्य ( त्रि० ) ( र्यः । र्या । र्यम् )
( त्रि० ) श्रेष्ठ वा कुलीन (स्त्री)
सास ।
आर्यावर्तः (पुं०) विन्ध्य और हि-
मालय के बीच का देश ।
आर्षभ्यः (पुं०) साँड़ होने के योग्य
बैल ।
आर्हतः (पुं०) स्याद्वादिक मे देखो
आलबालम् ( नपुं० ) वृक्षों का
थाला [ आलवालम् ]
आलम् ( नपुं० ) हरताल ।
आलम्भः ( पुं० ) मार डालना,
स्पर्श वा आलिङ्गन करना ।
आलयः ( पुं० ) घर ।
आलवालम् ( नपुं० ) वृक्षों का
थाला ।
आलस्य ( त्रि० ) ( स्यः । स्या ।
स्यम् ) (त्रि०) आलसी (नपुं०)
आलस्य वा सुस्ती ।
आलानम् (नपुं०) हाथी के बाँधने
का खूँटा ।
आलापः (पुं०) बात चीत करना
आलिः (स्त्री) सखी, पंक्ति, बिच्छी,

सेतु वा पुल [आली]
आलिङ्ग्य (त्रि०) (ङ्ग्यः । ङ्ग्या । ङ्ग्यम्) (त्रि० ) आलिङ्गन करने के योग्य, (पुं० ) गोपुच्छ के सदृश मृदङ्ग ।
आलीढम् (नपुं०) बाण चलाने के समय में वीर की स्थिति विशेष अर्थात् जिस में दहिनी जङ्घा फैली रहती है और बायीं जङ्घा सङ्कुचित रहती है
आलुः (स्त्री) चावल इत्यादि के धोने का पात्र करवेती वा कठवत [आलूः]
आलोकः (पुं० ) प्रकाश, देखना ।
आलोकनम् (नपुं० ) देखना ।
आवपनम् (नपुं० ) पात्र ।
आवर्तः (पुं० ) जल का घूमना जिस को नाँद कहते हैं, एक प्रकार का राजा इत्यादि कों का घर ।
आवलिः (स्त्री ) पंक्ति ।
आवसित (त्रि०) (तः । ता । तम्) साफ करके ढेरी किया हुआ अन्न [अवसितम्]
आवापः (पुं० ) वृक्षों का थाला ।
आवापकः (पुं०) प्रकोष्ठ का गहना कड़ा वा पहुंची ।
आवालम् (नपुं०) वृक्षों का थाला
आविग्नः (पुं० ) करौंदा वृक्ष ।
आविद्ध (त्रि० ) (द्धः । द्धा । द्धम्) टेढ़ा = ढ़ी, प्रेरित वा चलाया गया = ई ।
आविधः (पुं० ) वढ़ई का बरमा जिस से काठ छेदते हैं ।
आविर् (अव्यय) (विः) प्रगट अर्थ में ।
आविल (त्रि० ) (लः । ला । लम्) मलिन ।
आवुकः, नाट्य में (पुं० ) पिता ।
आवुत्तः, नाट्य मे (पुं०) बहनोई [आवृत्तः]
आवृत (त्रि० ) (तः । ता । तम्) लपेटा वा घेरा हुआ = ई ।
आवृत् (स्त्री ) क्रम वा परिपाटी ।
आवेगी (स्त्री) वृद्धदारक ओषधी ।
आवेशनम् (नपुं० ) कारीगर का घर ।
आवेशिकः (पुं०) घरपर जो आवे अर्थात् अतिथि वा पहुना ।
आशयः (पुं० ) अभिप्राय ।
आशरः (पुं० ) राक्षस ।
आशा (स्त्री) बड़ी तृष्णा, दिशा
आशित (त्रि० ) (तः । ता । तम्) जहाँ गैया इत्यादि को पहिले खिलाया गया वह स्थान, खायागया = ई ।

आशितङ्गवीन (त्रि०) (नः । ना । नम्) जहां गैया इत्यादि को पहिले खिलायागया वह स्थान
आशिष् (स्त्री) (शीः) आशीर्वाद, सर्प का विषदन्त ।
आशीविषः (पुं०) सर्प ।
आशु (अव्यय) जल्दी ।
आशु (त्रि०) (शुः । शुः । शु) (त्रि०) जल्दीबाज (पुं०) धान ।
आशुगः (पुं०) बाण, वायु ।
आशुव्रीहिः (पुं०) धान ।
आशुशुक्षणिः (पुं०) अग्नि ।
आशंसित (त्रि०) (ता । त्री । त) वाञ्छा करने वाला = ली
आशंसु (त्रि०) (सुः । सुः । सु) तथा ।
आश्चर्य (त्रि०) (र्यः । र्या । र्यम्) (नपुं०) आश्चर्य्य, अद्भुत रस, (त्रि०) आश्चर्यवाला = ली, अद्भुतरसवाला = ली ।
आश्रम (पुं० । नपुं०) (मः । मम्) ब्रह्मचर्य, गार्हपत्य, वानप्रस्थ, सन्यास-इन में प्रत्येक का यह नाम है ।
आश्रयः (पुं०) आश्रय वा अवलम्ब [ आशयः ]
आश्रयाशः (पुं०) अग्नि ।
आश्रव (त्रि०) (वः । वा । वम्) (पुं०) अङ्गीकार, (त्रि०) कहना माननेवाला = ली ।
आश्रुत (त्रि०) (तः । ता । तम्) अङ्गीकार किया गया = ई ।
आश्लिष्ट (त्रि०) (ष्टः । ष्टा । ष्टम्) अप्रकट बोलना ।
आश्वम् (नपुं०) घोड़ों का समूह ।
आश्वत्थम् (नपुं०) पीपर का फल ।
आश्वयुजः (पुं०) कुआर महीना ।
आश्विनः (पुं०) तथा ।
आश्विनेयौ, द्विवचनान्त (पुं०) अश्विनीकुमार ।
आश्वीनम् (नपुं०) जो रस्ता घोड़ा एक दिन में जा सकता है ।
आषाढः (पुं०) असाढ़ महीना, ब्रह्मचर्य में पलाश का दण्ड ।
आसक्त (त्रि०) (क्तः । क्ता । क्तम्) आसक्त वा तत्पर ।
आसन (पुं० । नपुं०) (नः । नम्) (पुं०) बिजयसार (नपुं०) पीढ़ा इत्यादि आसन, हाथियों का काँधा, बैठना ।
आसना (स्त्री) बैठना ।
आसन्दी (स्त्री) एक प्रकार का मञ्च ।
आसनपर्णी (स्त्री) पटसण ।
आसन्न (त्रि०) (न्नः । न्ना । न्नम्) समीपवाला = ली ।
आसवः (पुं०) मैरेय मद्य ।

आसादित (त्रि०) (तः। ता। तम्) प्राप्त कियागया वा पाया गया = ई।

आसारः (पुं०) वृष्टि, चारो ओर सेना का फैलना।

आसित (त्रि०) (तः। ता। तम्) बैठने का स्थान, जहाँ गैया इत्यादि को पहिले खिलाया-गया वह स्थान।

आसुरी (स्त्री) राई।

आसेचनक (त्रि०) (नकः। निका। नकम्) जिसके देखने से नेत्र और मन को तृप्ति न हो वा तृप्ति का अन्त न हो।

आस्कन्दनम् (नपुं०) युद्ध।

आस्कन्दित (त्रि०) (तः। ता। तम्) (त्रि०) दबायागया वा जीता गया = ई, एक प्रकार की घोड़े की गति जिसमें कि घोड़ा न देखता है न सुनता है।

आस्तरणम् (नपुं०) बिछौना, हाथी का झूल।

आस्था (स्त्री) सभा, प्रयत्न वा उपाय।

आस्थानम् (नपुं०) सभा।

आस्थानी (स्त्री) तथा।

आस्पदम् (नपुं०) प्रतिष्ठा, कार्य।

आस्फोट (पुं०। स्त्री) (टः। टा) (पुं०) मंदार [आस्फोतः] (स्त्री) वन में उत्पन्न भई बेला का फूल, विष्णुक्रान्ता वा कौवा-ठोंठी फूल, [आस्फोता]

आस्फोटनी (स्त्री) मोती इत्यादि के बेधने की सूई [लास्फोटनी]

आस्यम् (नपुं०) मुख।

आस्या (स्त्री) बैठना।

आस्रवः (पुं०) क्लेश।

आहत (त्रि०) गुणित—जैसे,—पांच से गुणित चार बीस होता है, मिथ्यार्थक—जैसा,—"वन्ध्या का पुत्र जाता है", ताड़ित।

आहतलक्षणः (पुं०) शौर्यादि गुणों से प्रसिद्ध [आहितलक्षणः]

आहवः (पुं०) युद्ध।

आहवनीय (त्रि०) (यः। या। यम्) होम करने के योग्य पदार्थ, (पुं०) यज्ञ में एक प्रकार का अग्नि।

आहारः (पुं०) भोजन।

आहार्य (त्रि०) (र्यः। र्या। र्यम्) (त्रि०) बुद्धि से आरोप करने के योग्य, भोजन करने के योग्य, (पुं०) पर्वत।

आहावः (पुं०) कूप के समीप में रचित जलाधार वा हौद।

आहितुण्डिकः ( पुं० ) सर्प का पकड़नेवाला वा सर्प से खेलनेवाला।

आहेय ( त्रि० ) ( यः । यी । यम् ) सर्पसम्बन्धी हड्डी विष इत्यादि वस्तु ।

आहो ( अव्यय ) विकल्प अर्थ में ।

आहोपुरुषिका ( स्त्री ) अपने में शक्ति का प्रकाश करना ।

आह्वयः ( पुं० ) नाम ।

आह्वा ( स्त्री ) तथा ।

आह्वानम् ( नपुं० ) पुकारना ।

—०❋०—

# ( इ )

इ ( पुं० । अव्यय ) ( इः । इ ) ( पुं०) कामदेव, ( अव्यय ) विस्मय वा आश्चर्य ।

इक्षुः ( पुं० ) ऊख ।

इक्षुगन्धा ( स्त्री ) ज्यौड़ी वृक्ष, काश एक प्रकार का तृण, गोखुरू औषधी, तालमखाना, सफेद भूमिकोहंड़ा ।

इक्षुरः ( पुं० ) तालमखाना।

इक्षुरसोदः ( पुं० ) एक प्रकार का समुद्र जो ऊख के रस से भरा है

इक्षुरस्यः ( पुं० ) एक तरह का ऊख

इक्ष्वाकु ( पुं० ) सूर्यवंशी एक राजा, कड़ुवा तुम्बा ।

इङ्ग ( त्रि० ) ( ङ्गः । ङ्गा । ङ्गम् ) (त्रि०) गमनस्वभाववाला (पुं०) अभिप्राय के अनुरूप चेष्टा ।

इङ्गितम् ( नपुं० ) अभिप्राय के अनुसार चेष्टा ।

इङ्गुदी ( स्त्री) इंगुआ एक वृक्ष वा जीयापूता ।

इच्छा ( स्त्री ) चाह ।

इच्छावत् ( त्रि० ) ( वान् । वती । वत् ) धन इत्यादि की इच्छा करनेवाला = ली ।

इज्जलः ( पुं० ) स्थल का बेंत, समुद्र का फल ।

इज्या ( स्त्री ) यज्ञ वा याग ।

इज्याशीलः ( पुं० ) यज्ञ करनेका जिसका स्वभाव है ।

इट्चरः ( पुं० ) साँड़ [ इट्वरः ]

इडा ( स्त्री) एक प्रकार की नाड़ी, गैया, पृथ्वी, वाणी, [ इला ]

इतर ( त्रि० ) ( रः । रा । रत् ) अन्य, नीच ।

इतरेद्युस् ( अव्यय ) ( द्युः ) इतर वा अन्य दिवस ।

इति ( अव्यय ) समाप्ति, हेतु, प्रकरण, प्रकाश, इस प्रकार से।
इतिह ( अव्यय ) ऐतिह्य में देखो
इतिहासः ( पुं० ) भारत इत्यादि कथा।
इत्वरः ( पुं० ) साँड़।
इत्वरी ( स्त्री ) कुलटा वा खानगी स्त्री।
इदानीम् ( अव्यय ) इसघड़ी।
इध्मम् (नपुं०) इन्धन वा लकड़ी।
इनः ( पुं० ) प्रभु वा स्वामी, सूर्य।
इन्दिरा ( स्त्री ) लक्ष्मी।
इन्दीवरम् ( नपुं०) नील कमल।
इन्दीवरी ( स्त्री ) सतावर ओषधी
इन्दुः ( पुं० ) चन्द्रमा।
इन्द्रः ( पुं० ) इन्द्र।
इन्द्रद्रुः ( पुं० ) अर्जुन वृक्ष वा

इन्द्रयव (पुं० । नपुं०) (वः । वम्) इन्द्रजव ओषधी।
इन्द्रलुप्तकः ( पुं० ) केशघ्न एक प्रकार का रोग है जिससे मोछ दाढ़ी वा सिर के बाल झड़ जाते हैं।
इन्द्रवारुणी ( स्त्री ) इन्द्रारुनवृक्ष।
इन्द्रसुरसः ( पुं० ) म्योड़ी वृक्ष।
इन्द्रसुरिसः ( पुं० ) तथा।
इन्द्राणिका ( स्त्री ) तथा।
इन्द्राणी ( स्त्री ) इन्द्र की स्त्री।
इन्द्रायुधम् ( नपुं० ) इन्द्र का धनुष् जो प्रायः वर्षाकाल में आकाश में देख पड़ता है।
इन्द्रारिः ( पुं० ) असुर वा दैत्य।
इन्द्रावरजः ( पुं० ) वामनावतार विष्णु, दैत्य।
इन्द्रियम् ( नपुं० ) चक्षुरादि इन्द्रिय, वीर्य।
इन्द्रियार्थः ( पुं० ) रूप रस गन्ध स्पर्श और शब्द ये इन्द्रियार्थ कहलाते हैं।
इन्धनम् ( नपुं० ) आग जलाने की लकड़ी।
इभ ( पुं० । स्त्री ) ( भः । भी ) (पुं०) हाथी, (स्त्री) हथिनी।
इभ्य ( त्रि० ) (भ्यः । भ्या । भ्यम्) धनवान्।
इरणम् ( नपुं० ) सूनसान वा वीरान स्थान, ऊसर, [ इरिणम् ] [ ईरणम् ] [ ईरिणम् ]
इरम्मदः ( पुं० ) परस्पर टक्कर लगने से जो तेज मेघ से निकल कर वृक्षादि पर गिरता है अर्थात् मेघज्योति।
इरा ( स्त्री ) मद्य, भूमि, वाणी, जल।
इर्वारुः ( स्त्री ) ककड़ी फल।

[ इर्वालुः ] [ ईर्वालुः ]
इला ( स्त्री ) बुध की पत्नी, इडा में देखो।
इल्वलाः, बहुवचन ( स्त्री ) मृगशिरा नक्षत्र के मस्तक देश में रहने वाले पाँच छोटे तारा।
इव ( अव्यय ) तुल्यता अर्थ में।
इषः ( पुं० ) कुआर महीना।
इषिका (स्त्री) हाथियों का नेत्रगोलक, [ ईषिका ] [ इषीका ] [ ईषीका ]
इषु ( पुं० । स्त्री ) ( षुः । षुः ) बाण वा तीर।
इषुधि (पुं० । स्त्री) ( धिः । धिः—धी ) बाण का घर वा तरकस।
इष्ट ( त्रि० ) ( ष्टः । ष्टा । ष्टम् ) ( त्रि० ) इष्ट वा चाही हुई वस्तु, ( नपुं० ) यज्ञ, दान।
इष्टकापथम् ( नपुं० ) खस वा एक प्रकार की सुगन्धयुक्त घास।
इष्टगन्धः ( पुं० ) मनोहर गन्ध।
इष्टार्थोद्युक्त ( त्रि० ) ( क्तः । क्ता । क्तम् ) इष्ट वा चाहे हुये अर्थ में उद्योग करनेवाला = ली।
इष्टिः ( स्त्री ) यज्ञ, इच्छा।
इष्वासः ( पुं० ) धनुष्।
इह ( अव्यय ) इस स्थान पर।

......o......

ईः ( स्त्री ) लक्ष्मी।
ईक्षणम् ( नपुं० ) नेत्र, देखना।
ईक्षणिका ( स्त्री ) विप्रश्निका में देखो।
ईडित ( त्रि० ) ( तः । ता । तम् ) स्तुति कियागया = ई, [ईलित]
ईतिः ( स्त्री ) ईति सात प्रकार की होती है—अतिवृष्टि, सूखा पड़ना, खेतों में मूसा का लगना, टिड्डियों का उपद्रव, सुग्गों से हानि, और राजाओं से वैर, इन प्रत्येक को 'ईति' कहते हैं, प्रवास वा परदेश में वास।
ईरित ( तः । ता । तम् ) फेंकागया = ई वा चलायागया = ई वा प्रेरित हुआ = ई।
ईर्म्मम् ( नपुं० ) व्रण वा घाव।
ईर्ष्या ( स्त्री ) दूसरे की उन्नति को न सहना।
ईलित ( त्रि० ) ( तः । ता । तम् ) ईडित में देखो।
ईली ( स्त्री ) एक प्रकार की तलवार जिसको खाँड़ा वा गुप्ती कहते हैं [ ईल्लिः ] [ इली ]
ईशः ( पुं० ) स्वामी, शिव।
ईशानः ( पुं० ) शिव।

ईशानी (स्त्री) पार्वती।
ईशिष्ट (त्रि०) (ता। त्री। ष्ट) प्रभु वा स्वामी।
ईशित्वम् (नपुं०) प्रभुता।
ईश्वरः (पुं०) स्वामी, शिव।
ईश्वरी (स्त्री) पार्वती।
ईषत् (अव्यय) थोड़ा।
ईषा (स्त्री) हल का दण्ड, [ईशा]
ईषिका (स्त्री) सींक, तूलिका में देखो [इषिका] [इषीका]
ईहा (स्त्री) इच्छा।
ईहामृगः (पुं०) हुंडार वा वृक नामक वनजन्तु।

-000

## ( उ )

उ (पुं०। अव्यय) (उः। उ) (पुं०) शिव, (अव्यय) वितर्क अर्थ में, क्रोध से बोलने में।
उक्त (त्रि०) (क्तः। क्ता। क्तम्) (नपुं०) बोलना, (त्रि०) कहागया = ई।
उक्तिः (स्त्री) बोलना।
उक्थम् (नपुं०) सामभेद।
उक्षन् (पुं०) (क्षा) बैल।
उखा (स्त्री) बटलोही इत्यादि अर्थात् दाल भात इत्यादि चुराने का बरतन [उषा]
उख्य (त्रि०) (ख्यः। ख्या। ख्यम्) जो बटलोही में पकाया गया = ई।
उग्र (त्रि०) (ग्रः। ग्रा। ग्रम्) (पुं०) शिव, क्षत्रिय से शूद्रा स्त्री में उत्पन्न, (नपुं०) रौद्ररस, (त्रि०) रौद्ररसवाला = ली।
उग्रगन्धा (स्त्री) बच ओषधी, अजवाइन ओषधी।
उच्च (त्रि०) (च्चः। च्चा। च्चम्) ऊंचा = ची।
उच्चटा (स्त्री) मोथा वा एक प्रकार की घास।
उच्चण्ड (त्रि०) (ण्डः। ण्डा। ण्डम्) (नपुं०) जलदी, (त्रि०) जलदीबाज वा जल्दी करने वाला = ली।
उच्चारः (पुं०) विष्ठा।
उच्चावच (त्रि०) (चः। चा। चम्) बहुत प्रकार का वस्तु, ऊंचा नीचा।
उच्चैर्घुष्टम् (नपुं०) ऊंचा शब्द।
उच्चैःश्रवस् (पुं०) (वाः) इन्द्र का

घोड़ा ।
उच्चैस् ( अव्यय ) ( च्चैः ) बड़ा,

उच्छ्रयः ( पुं० ) उंचाई ।
उच्छ्रायः ( पुं० ) तथा ।
उच्छ्रित ( त्रि० ) (तः । ता । तम्) ऊंचा = ची, उत्पन्न, अहङ्कार-युक्त, अत्यन्त बढ़ा = ढ़ी ।
उज्जासनम् ( नपुं० ) मारडालना
उज्ज्वल ( त्रि० ) (लः । ला । लम्) ( पुं० ) श्वेत रङ्ग, शृङ्गार रस, (त्रि०) निर्मल, सफेद वा श्वेत, शृङ्गाररसवाला = ली ।
उञ्छः ( पुं० ) लवने के समय खेत में गिरे हुये अन्न का एक एक दाना करके बीनना ।
उटज (पुं० । नपुं०) ( जः । जम् ) पत्तों से छाया घर वा मुनियों की कुटी ।
उडु ( स्त्री । नपुं० ) ( डुः । डु ) अश्विन्यादि तारा ।
उडुपम् ( नपुं० ) तृण इत्यादि से बना हुवा पार उतरने का साधन जैसा—घरनई इत्यादि ।
उड्डीनम् (नपुं०) पक्षी का ऊपर चलना वा उड़ना ।
उत ( अव्यय ) विकल्प जैसा—यह वा वह, 'भी' इस अर्थ में वा 'अपि' इस अर्थ में ।
उत ( त्रि० ) ( तः । ता । तम् ) पोयागया = ई वा सीयागया = ई । [ ऊत ]
उताहो (अव्यय) विकल्प जैसा—यह वा वह ।
उत् ( अव्यय ) ऊपर ।
उत्क (त्रि०) ( त्कः । त्का । त्कम् ) उत्कण्ठितचित्तवाला = ली वा अत्यन्त लालसायुक्त ।
उत्कट ( त्रि० ) ( टः । टा । टम् ) तेज वा तीखा = खी, मतवाला = ली ।
उत्कण्ठा ( स्त्री ) बड़ी इच्छा ।
उत्करः ( पुं० ) राशि वा ढेरी ।
उत्कर्षः ( पुं० ) प्रकर्ष वा प्रकृष्टता वा बड़ाई ।
उत्कलिका ( स्त्री ) उत्कण्ठा वा बड़ी इच्छा, कल्लोल वा खेलना ।
उत्कारः (पुं०) धान्यादि के साफ करने के लिये वा ओसावने के लिये पाच दौरी इत्यादि ।
उत्क्रोशः ( पुं०) कुररी एक पक्षी ।
उत्त ( त्रि० ) ( तः । ता । तम् ) ओदा = दी, गीला = ली ।
उत्तप्तम् ( नपुं० ) सूखा माँस ।
उत्तम ( त्रि० ) (मः । मा । मम्)

प्रधान वा श्रेष्ठ ।
उत्तमर्णः ( पुं० ) ऋणदेनेवाला ।
उत्तमाङ्गम् ( नपुं० ) मस्तक ।
उत्तर ( त्रि० ) ( रः । रा । रम् ) ( त्रि० ) उत्तर देश में उत्पन्न भया = ई, श्रेष्ठ वा मुख्य, (पुं०। स्त्री) उत्तर दिशा, (पुं०)विराट का पुत्र, ऊपर ( स्त्री ) विराट की पुत्री, ( नपुं० ) उत्तर वा जवाब ।
उत्तरायणम् ( नपुं० ) सूर्य की उत्तर दिशा में गति ।
उत्तरासङ्गः ( पुं० ) दुपट्टा इत्यादि वस्त्र जो कांधे पर रक्खा जाता है ।
उत्तरीयम् ( नपुं० ) तथा ।
उत्तरेद्युस् ( अव्यय ) (द्युः) अगाड़ी आनेवाला दिन ।
उत्तान ( त्रि० ) (नः । ना । नम्) छिछिला, उताना = नी ।
उत्तानशय ( त्रि० ) ( यः । या । यम् ) ( स्त्री ) छोटी लड़की, (त्रि०) उताना सूतनेवाला = ली।
उत्तंसः ( पुं० ) कर्णफूल नाम कान का गहना, सिरपेच ।
उत्थानम् ( नपुं० ) उठना वा खड़ा होना, उद्योग, कुटुम्बकार्य, सिद्धान्त, उत्तम औषध ।
उत्थित ( त्रि० ) (तः । ता । तम्) ( त्रि० ) उत्पन्न, उठा वा खड़ा हुआ = ई, वृद्धि - मान् = मती, तैयार वा उद्यत हुआ = ई ।
उत्पतिष्णु ( पुं० ) ( ता ) उड़नेवाला ।
उत्पतिष्णुः ( पुं० ) तथा ।
उत्पत्तिः ( स्त्री ) जन्म ।
उत्पन्न ( स्त्री ) ( न्नः । न्ना । न्नम् ) पैदा हुवा = ई ।
उत्पलम् (नपुं०) कमल, कोई फूल, कुट्ठ ओषधी ।
उत्पलशारिवा ( स्त्री ) सरिवन ओषधी ।
उत्पातः ( पुं० ) उपद्रव वा उत्पात ।
उत्फुल्ल ( त्रि० ) ( ल्लः । ल्ला । ल्लम्) फूला हुआ वृक्ष इत्यादि
उत्सः (पुं०) पानी का झरना जो पर्वत इत्यादि से निकलता है
उत्सर्जनम् ( नपुं० ) दान ।
उत्सवः ( पुं० ) उत्सव वा मङ्गल कार्य, औद्धत्य वा गर्व वा बड़ाई, कोप, इच्छा का वेग,आनन्द का समय ।
उत्सादनम् ( नपुं० ) नाश करना वा उखाड़ देना, उबटना जैसा तैल इत्यादि से शरीर में लेप करना ।

उत्साहः ( पुं० ) मन की वेग से प्रवृत्ति वा लगना ।
उत्साहनम् ( नपुं० ) उभाड़ना ।
उत्साहवर्द्धन ( त्रि० ) ( नः । नी । नम् ) उत्साह को बढ़ानेवाला =ली ।
उत्सुक ( त्रि० ) ( कः । का । कम् ) इष्ट अर्थ में उद्योग करनेवाला =ली ।
उत्सृष्ट ( त्रि० ) ( ष्टः । ष्टा । ष्टम् ) त्याग किया गया =ई ।
उत्सेधः ( पुं० ) ऊंचाई, शरीर ।
उदकम् ( नपुं० ) जल ।
उदक् ( अव्यय ) उत्तर दिशा वा उत्तर देश ।
उदक्या ( स्त्री ) रजस्वला वा रजोधर्मवती स्त्री ।
उदग्भव ( त्रि० ) ( वः । वा । वम् ) उत्तर दिशा में उत्पन्न भया =ई
उदग्र ( त्रि० ) ( ग्रः । ग्रा । ग्रम् ) उन्नत, ऊंचा =ची ।
उदजः ( पुं० ) पशु अर्थात् गैया इत्यादि का हाँकना ।
उदधिः ( पुं० ) समुद्र ।
उदन्तः ( पुं० ) वृत्तान्त वा समाचार ।
उदन्या ( स्त्री ) पिपासा वा पियास
उदन्वत् ( पुं० ) ( न्वान् ) समुद्र ।
उदपान ( पुं० । नपुं० ) ( नः । नम् ) कूप वा कूआँ ।
उदयः ( पुं० ) उदय होना, वृद्धि, उदयाचल पर्वत ।
उदरम् ( नपुं० ) पेट ।
उदर्कः ( पुं० ) अगाड़ी होनेवाला फल ।
उदवसितम् ( नपुं० ) घर ।
उदश्वित् ( नपुं० ) आधा जल मिलाकर मथेहुए दही का मंठा ।
उदात्तः ( पुं० ) बड़ा, उदात्तस्वर ।
उदानः ( पुं० ) कण्ठ का वायु ।
उदारः ( पुं० ) दाता, बड़ा, सरल वा सूधा ।
उदासीनः ( पुं० ) जो न किसी का शत्रु न किसी का मित्र है ।
उदाहारः ( पुं० ) जिसका वर्णन करना है ऐसे उपयोगी वा उपकारक अर्थ का वर्णन वा प्रकृत वा प्रसंगोपात्त का साधक दृष्टान्तादि वा उदाहरण ।
उदित ( त्रि० ) ( तः । ता । तम् ) कहागया =ई, बाँधा हुवा =ई
उदीची ( स्त्री ) उत्तर दिशा ।
उदीचीन ( त्रि० ) ( नः । ना । नम् ) उत्तर दिशा में उत्पन्न भया =ई ।
उदीचीपतिः ( पुं० ) कुवेर ।

उदीच्य ( त्रि० ) ( च्यः । च्या । च्यम् ) उत्तर दिशा में वा देश में उत्पन्न भई वस्तु ( पुं० ) शरावती नदी से पश्चिम उत्तर का देश, ( नपुं० ) नेत्रबाला ओषधी ।

उदुम्बर ( पुं० । नपुं० ) ( रः । रम् ) ( पुं० ) गुल्लर का वृक्ष, ( नपुं० ) गुल्लर का फल, ताँबा धातु ।

उदुम्बरपर्णी ( स्त्री ) वज्रदन्ती ओषधीवृक्ष । [ उडुम्बरपर्णी ] [ ऊदुम्बरपर्णी ]

उदूखलम् ( नपुं० ) कूटने के लिये ऊखल वा ओखरी, गुगुल का

उद्गत (त्रि०) (तः । ता । तम्) उत्पन्न भया = ई, निकला = ली, वमन किया गया अन्नादि ।

उद्गमनीयम् ( नपुं० ) धोये हुए कपड़ों का जोड़ा ।

उद्गाढ ( त्रि० ) ( ढः । ढा । ढम् ) ( नपुं० ) अतिशय, ( त्रि० ) अतिशयवाला = ली ।

उद्गातृ (पुं०) (ता) यज्ञ में सामवेद का जाननेवाला ऋत्विक् ।

उद्गारः ( पुं० ) वमन करना ।

उद्गीथः ( पुं० ) सामभेद ।

उद्गूर्ण ( त्रि० ) (र्णः । र्णा । र्णम् ) मारने के लिये उठाया खड्गादि ।

उद्ग्राहः ( पुं० ) ढेकारना ।

उद्घः ( पुं० ) प्रशस्त वा प्रशंसा के योग्य ।

उद्घनः (पुं०) जिस काठ पर काठ रख के काटते हैं ।

उद्घाटनम् ( नपुं० ) खोलना, रहट वा एक प्रकार का पानी खींचने का यन्त्र ।

उद्घातः ( पुं० ) प्रारम्भ, ठोकर।

उद्दानम् ( नपुं० ) बन्धन ।

उद्दालः ( पुं० ) लिसोड़ा वृक्ष, एक ऋषि ।

उद्दालकः ( पुं० ) तथा ।

उद्दित ( त्रि० ) ( तः । ता । तम् ) बाँधाहुआ = ई । [ उदित ]

उद्द्रावः ( पुं० ) भागना ।

उद्धर्षः ( पुं० ) उत्सव ।

उद्धवः ( पुं० ) कृष्ण का मन्त्री, उत्सव ।

उद्धानम् ( नपुं० ) चूल्हा, [ उद्ध्मानम् ] [ उद्धारम् ]

उद्धान्त (त्रि०) (न्तः । न्ता । न्तम्) वमन कियागया अन्नादिक [ उद्वान्त ] [ उद्वात ]

उद्धारः ( पुं० ) ऋण, खींच के निकालना ।

उद्धृत ( त्रि० ) ( तः । ता । तम् ) खींच के निकाला हुआ =ई ।
उद्भवः ( पुं० ) जन्म वा उत्पत्ति ।
उद्भिज्ज (त्रि०) (ज्जः । ज्जा । ज्जम्) पृथ्वी को फोड़ के उत्पन्न होनेवाले वृक्ष लता इत्यादि ।
उद्भिदम् ( नपुं० ) तथा ।
उद्भिद् ( त्रि० ) ( त्-द् । त्-द् । त्-द् ) तथा ।
उद्भ्रमः (पुं०) उद्वेग वा घबराहट ।
उद्यत ( त्रि० ) ( तः । ता । तम् ) तैयार, मारने के लिये उठाया खड्गादि ।
उद्यमः ( पुं० ) बोझा इत्यादि का उठाना ।
उद्यानम् ( नपुं० ) बगीचा, निकालना, प्रयोजन ।
उद्योगः ( पुं० ) उत्साह ।
उद्रः ( पुं० ) एक प्रकार का जलजन्तु ।
उद्रवः ( पुं० ) तथा ।
उद्वर्तनम् ( नपुं० ) उबटना वा तैलादि से मल दूर करने के लिये देह का मर्द्दन करना ।
उद्वान्त (त्रि०) ( न्तः । न्ता । न्तम् ) वमन किया हुआ अन्नादि, (पुं०) जिस हाथी का मद निकल गया है ।
उद्वासनम् ( नपुं० ) मारडालना ।
उद्वाहः ( पुं० ) विवाह ।
उद्वेग ( पुं० । नपुं० ) (गः । गम्) ( पुं० ) घबराहट, सुपारी का वृक्ष (नपुं०) सुपारी का फल ।
उन्दुरः ( पुं० ) मूसा, [ उन्दुरुः ]
उन्न ( त्रि० ) ( न्नः । न्ना । न्नम् ) ओदा =दी ।
उन्नत ( त्रि० ) ( तः । ता । तम् ) ऊंचा =ची ।
उन्नद्ध ( त्रि० ) ( द्धः । द्धा । द्धम् ) गर्वित, उठाय करके बांधा गया = ई ।
उन्नयः ( पुं० ) ऊपर लेजाना, तर्क करना ।
उन्नायः ( पुं० ) तथा ।
उन्मत्त ( त्रि० ) (त्तः । त्ता । त्तम्) पागल, ( पुं० ) धतूरा वृक्ष ।
उन्मदिष्णु ( त्रि० ) ( ष्णुः । ष्णुः । ष्णु ) उन्मत्त वा सनकी ।
उन्मनस् (त्रि०) (नाः । नाः । नः) उत्कण्ठित वा लालसायुक्त चित्तवाला =ली ।
उन्माथः ( पुं० ) मृग और पक्षियों के बझाने के लिये जाल इत्यादि, मारडालना, [ उन्मथः ]
उन्मादः ( पुं० ) चित्त का बिगड़ जाना वा ठिकाने पर न रहना

उन्मादवत् ( चि० ) ( वान् । वती । वत् ) पागल ।

उपकण्ठः ( पुं० ) समीप ।

उपकारिका (स्त्री) राजा का घर ।

उपकार्या ( स्त्री ) तथा ।

उपकुञ्चिका (स्त्री) छोटी लाइची, कालीजीरी ओषधी ।

उपकुल्या ( स्त्री ) पीपर वृक्ष ।

उपक्रमः ( पुं० ) प्रारम्भ, प्रथम प्रारम्भ, उपायपूर्वक प्रारम्भ, मन्त्री के स्वभाव की परीक्षा का उपाय, चिकित्सा वा दवाई करना ।

उपक्रोशः ( पुं० ) निन्दा ।

उपगत ( त्रि० ) ( तः । ता । तम् ) अङ्गीकार किया गया = ई ।

उपगूहनम् ( नपुं० ) आलिङ्गन ।

उपग्रहः ( पुं० ) कैदी जो चोर इत्यादि को होती है ।

उपग्राह्य ( त्रि० ) ( ह्यः । ह्या । ह्यम् ) भेंट वा नज़र जो राजा इत्यादि को दी जाती है ।

उपघ्नः ( पुं० ) समीप का आश्रय वा अवलम्ब ।

उपचरित (त्रि०) (तः। ता । तम्) जिसकी सेवा की गई ।

उपचाय्यः ( पुं० ) यज्ञ में एक प्रकार का अग्नि का स्थान, उस स्थान का अग्नि ।

उपचित ( त्रि० ) (तः । ता । तम्) वृद्धि को प्राप्त भया = ई, बढाया गया = ई, निदिग्ध में देखो ।

उपचित्रा ( स्त्री ) मूसाकर्णी ओषधी, एक प्रकार के छन्द का नाम ।

उपजापः ( पुं० ) फोड़फाड़ करना वा मिले हुवों को जुदा करना ( इस शब्द को राज्यकार्य में लेना चाहिये )

उपज्ञा (स्त्री) प्रथम ज्ञान जैसा— व्याकरण पाणिनि की उपज्ञा ।

उपतप्त ( त्रि० ) ( प्तः । प्ता । प्तम् ) गरम हुवा = ई, दुःखित हुवा = ई ।

उपतप्तृ ( पुं० ) ( प्ता ) उपताप नाम रोग ।

उपतापः ( पुं० ) रोग ।

उपत्यका ( स्त्री ) पर्वत की समीप की भूमि ।

उपदा ( स्त्री ) उपग्राह्य में देखो ।

उपधा ( स्त्री ) धर्म अर्थ काम और भय से मन्त्री इत्यादिकों की परीक्षा करना ।

उपधानम् ( नपुं० ) सिर के नीचे रखने की तकिया ।

उपधिः ( पुं० ) कपट ।

उपनाहः (पुं०) जहाँ वीणा का तार बाँधा जाता है उसके ऊपर की जगह।
उपनिधिः (पुं०) धरोहर।
उपनिषद् (स्त्री) (त्—द्) धर्म, एकान्त, वेदान्त।
उपनिष्करम् (नपुं०) पुर से निकलने का मार्ग।
उपन्यासः (पुं०) वचन का प्रारम्भ।
उपपतिः (पुं०) स्त्री का जार वा यार।
उपबर्हः (पुं०) माथे के नीचे रखने को तकिया।
उपभृत् (स्त्री) एक प्रकार का स्रुवा जिससे अग्नि में घृत डालते हैं।
उपभोगः (पुं०) सुखादि का उपभोग।
उपम (त्रि०) (मः। मा। मम्) सदृश वा तुल्य—इसका विशेष अर्थ प्रतीकाश में देखो।
उपमा (स्त्री) सादृश्य वा तुल्यता
उपमातृ (स्त्री) (ता) धाय।
उपमानम् (नपुं०) जिससे उपमा दी जाती है वह पदार्थ।
उपयमः (पुं०) विवाह।
उपयामः (पुं०) तथा।
उपरक्त (त्रि०) (क्तः। क्ता। क्तम्) (त्रि०) क्लेश से पीड़ित, प्रतिबिम्बित वा जिसका प्रतिबिम्ब पड़ा है (पुं०) राहुग्रस्त चन्द्र वा सूर्य।
उपरक्षणम् (नपुं०) पहरा देना।
उपरतिः (स्त्री) रुक जाना, समीप में क्रीड़ा।
उपरमः (पुं०) रोक देना, रुक जाना, समीप में क्रीड़ा।
उपरागः (पुं०) सूर्य चन्द्र का ग्रहण, प्रतिबिम्ब जैसा—दर्पण में मुख का वा पानी इत्यादि में मुख इत्यादि का, प्रतिबिम्ब पड़ना।
उपरामः (पुं०) उपरम में देखो।
उपरि (अव्यय) ऊपर।
उपल (पुं०। स्त्री) (लः। ला) (पुं०) पत्थर, रत्न, (स्त्री) सिकटी।
उपलब्धार्थी (स्त्री) आख्यायिका में देखो।
उपलब्धिः (पुं०) लाभ, बुद्धि।
उपलम्भः (पुं०) साक्षात्कार वा प्रत्यक्ष।
उपला (स्त्री) चीनी, बालू।
उपवनम् (नपुं०) लगाये हुये वृक्षों का बगीचा।
उपवर्तनम् (नपुं०) देश, स्थान।

उपवासः ( पुं० ) उपवास वा भोजनाभाव वा भूखा रहना ।
उपविषा ( स्त्री ) अतीस ओषधी ।
उपवीतम् ( नपुं० ) जनेऊ ।
उपशल्यम् ( नपुं० ) ग्राम इत्यादि का समीप देश ।
उपशायः ( पुं० ) पहरूदार इत्यादि का पारी से सूतना ।
उपश्रुत ( त्रि० ) ( तः । ता । तम् ) अङ्गीकार कियागया = ई ।
उपसम्पन्न ( त्रि० ) ( न्नः । न्ना । न्नम् ) रसादि करके वा पाक करके संस्कृत व्यञ्जनादिक, प्रमीत में देखो ।
उपसरः (पुं०) प्रथम गर्भग्रहण ।
उपसर्गः ( पुं० ) उत्पात वा उपद्रव, प्र परा इत्यादि जो धातु के पूर्व में बोले जाते हैं ।
उपसर्जनम् ( नपुं० ) अप्रधान वा असुख्य ।
उपसर्या ( स्त्री ) वह गैया जो बरदाने के योग्य है ।
उपसूर्यकम् (नपुं० ) चन्द्र और सूर्य के चारो ओर जो मण्डल पड़ता है ।
उपसंव्यानम् ( नपुं० ) अधोवस्त्र धोती इत्यादि ।
उपस्कारः ( पुं० ) वेसवार में देखो
उपस्थः ( पुं० ) स्त्री वा पुरुष का मूत्रद्वार ।
उपस्पर्शः ( पुं० ) जलादि का आचमन ।
उपह्वारः (पुं०) उपशाल्य में देखो ।
उपह्वरम् ( नपुं० ) एकान्त, पास ।
उपाकरणम् ( नपुं० ) वेद के पाठ के आरम्भ का एक प्रकार का विधि अर्थात् उपनयनसंस्कारपूर्वक वेद का ग्रहण ।
उपाकृतः ( पुं० ) जो पशु वेदमन्त्र से अभिमन्त्रित करके मारा गया ।
उपात्ययः ( पुं० ) क्रम का उल्लङ्घन ।
उपादानम् (नपुं०) ग्रहण करना, इन्द्रियों का आकर्षण ।
उपाधिः ( पुं० ) उपनाम वा खिताब, पदार्थ का धर्म, कुटुम्बपालन में तत्पर ।
उपाध्यायः ( पुं० ) पढ़ानेवाला ।
उपाध्याया (स्त्री) पढ़ानेवाली स्त्री
उपाध्यायानी ( स्त्री ) पढ़ानेवाले की स्त्री ।
उपाध्यायी (स्त्री) पढ़ानेवाली स्त्री, पढ़ाने वाले की स्त्री ।
उपानह् ( स्त्री ) ( त्-द् ) पैर का जूता ।

उपायः (पुं०) साम दान भेद और दण्ड ये चार उपाय हैं कहीं कहीं तीन और उसमें मिलाते हैं जैसा,—माया उपेक्षा और इन्द्रजाल ये मिल कर सात उपाय कहलाते हैं।

उपायनम् (नपुं०) उपग्राह्य में देखो।

उपालम्भः (पुं०) धिक्कारना (वह दो प्रकार का है, १ स्तुतिपूर्वक, २ निन्दापूर्वक, पहिला जैसे— महाकुलीन जो तुम हो सो तुमको यह उचित है? दूसरा जैसा,—कुलटा पुत्र जो तू है सो तुझे यह उचितही है)

उपावृत्तः (पुं०) श्रम के दूर होने के लिए भूमि पर लोटा हुआ घोड़ा।

उपासङ्गः (पुं०) बाण का घर वा तरकस।

उपासनम् (नपुं०) सम्मुख बैठना वा शुश्रूषा करना, बाण चलाने का अभ्यास।

उपासना (स्त्री) तथा।

उपासित (त्रि०) (तः। ता। तम्) जिसकी उपासना वा शुश्रूषा वा सेवा की गई।

उपाहित (त्रि०) (तः। ता। तम्) (पुं०) आकाशादिक में अग्निविकार (त्रि०) संयोजित में देखो।

उपांशु (अव्यय) मौन, एकान्त।

उपेन्द्रः (पुं०) वामनावतार विष्णु।

उपोदिका (स्त्री) पोय को साग [उपादिका]

उपोद्घातः (पुं०) ग्रन्थ के प्रारम्भ में जो कुछ ग्रन्थ के विषय में लिखते हैं जिसको ग्रन्थ की भूमिका भी कहते हैं, उदाहरण।

उपोषणम् (नपुं०) उपवास वा भोजन न करना।

उपोषित (त्रि०) (तः। ता। तम्) जिसने उपवास किया है (नपुं०) उपवास।

उप्तकृष्ट (त्रि०) (ष्टः। ष्टा। ष्टम्) पहिले बोया गया पीछे जोता गया खेत इत्यादि।

उभ, द्विवचनान्त (त्रि०) (भौ। भे। भे) दो।

उभय (पुं०। नपुं) पुल्लिङ्ग में इस शब्द का द्विवचन किसी के मत में नहीं होता और किसी के मत में होता है (यः। यम्) दो अवयव वाला वा दोनों, ('दोनों'-यह अर्थ प्रायः नपुं-

सक्त में होता है )
उभयद्युस् ( अव्यय) (द्युः) दो दिन
उभयेद्युस् (अव्यय) ( द्युः ) तथा ।
उमा ( स्त्री ) पार्वती, तीसी वृक्ष वा फल वा दाना ।
उमापतिः ( पुं० ) शिव ।
उम् ( अव्यय ) प्रश्न में । [ ऊम् ]
उम्यम् ( नपुं० ) तीसी का खेत ।
उरगः ( पुं० ) सर्प [ उरङ्गः ]
उरणः ( पुं० ) बकरा ।
उरणाक्षः ( पुं० ) चकवड़ वा पुआड़ वृक्ष ।
उरणाख्यः ( पुं० ) तथा ।
उरभ्रः ( पुं० ) बकरा ।
उररी (अव्यय) अङ्गीकार, विस्तार ।
उररीकृत ( त्रि० ) (तः । ता । तम्) अङ्गीकार कियागया = ई ।
उरश्छदः ( पुं० ) कवच ।
उरस् ( नपुं० ) ( रः ) छाती वा वक्षःस्थल ।
उरसिल ( त्रि० ) (लः । ला । लम्) बड़ी छाती वाला = ली ।
उरस्य ( पुं० । स्त्री ) (स्यः । स्या) विवाहिता सवर्णा स्त्री में उत्पन्न लड़का वा लड़की ।
उरस्वत् ( त्रि० ) ( स्वान् । स्वती । स्वत् ) बड़ी छाती वाला = ली
उरःसूत्रिका ( स्त्री ) मोतियों की बनी ललंतिका वा एक प्रकार का हार ।
उरीकृत ( त्रि० ) (तः । ता । तम्) अङ्गीकार कियागया = ई ।
उरु ( त्रि० ) ( रुः । रु--र्वी । रु ) विस्तीर्ण वा बड़ा = ड़ी ।
उरुवुकः ( पुं० ) रेंड़ [ उरूवूकः ]
उर्वरा ( स्त्री ) सब धान्य से युक्त भूमि ।
उर्वशी (स्त्री) एक स्वर्ग की वेश्या।
उर्वारुः ( स्त्री ) ककड़ी ।
उर्वी ( स्त्री ) पृथिवी ।
उलपः (पुं०) शाखा पत्रादिकों का जिस में समूह है ऐसी लता, वगई वृक्ष ।
उलूकः ( पुं० ) उल्लू पक्षी ।
उलूखलम् (नपुं०) ऊखल वा ओखरी जिस में धान इत्यादि कूटा जाता है ।
उलूखलकम् (नपुं०) गुग्गुल वृक्ष ।
उलूपिन् (पुं०) ( पी) सुइंस मत्स्य
उल्का ( स्त्री ) तेज का समूह वा लुक्क ।
उल्मुकम् ( नपुं० ) जलता वा बुता आगका लुक्केठा ।
उल्लाघ ( त्रि० ) (घः । घा । घम्) निरोग वा बीमारी से अच्छा हुआ = ई ।

उल्लोचः (पुं०) कपड़ा इत्यादि से बना चंदवा ।
उल्लोलः (पुं०) जलका बड़ा तरङ्ग
उल्वम् ( नपुं० ) जरायु में देखो, ( कोई कहते हैं कि यह वीर्य और रुधिर के समूह का वा उनके मेल का नाम है )
उल्वण (त्रि०) ( णः। णा। णम्) स्पष्ट वा प्रकाश ।
उशनस् ( पुं० ) ( ना ) शुक्र वा दैत्यगुरु ।
उशीर (पुं०। नपुं०) (रः। रम्) खस वा गाँडर की जड़ ।
उषणा ( स्त्री ) पीपर एक प्रकार की तीती ओषधी । [ ऊषणा ]
उषर्बुधः ( पुं० ) अग्नि ।
उषस् ( नपुं० ) (षः) प्रातःकाल।
उषा ( स्त्री । अव्यय ) ( षा । षा ) (स्त्री) बटलोही वा दाल भात इत्यादि पकाने का बर्तन (अव्यय) रात्रि की समाप्ति ।
उषापतिः ( पुं० ) अनिरुद्ध वा कामदेव का पुत्र ।
उषित ( त्रि० ) ( तः । ता । तम् ) वास किया गया = ई, वा टिकागया = ई, जलायागया = ई ।
उष्ट्रः ( पुं० ) ऊंट ।
उष्ण (त्रि०) (ष्णः । ष्णा । ष्णम्) गरम, चतुर, ( पुं० ) जेठ और असाढ़ महीने का ऋतु ।
उष्णरश्मिः ( पुं० ) सूर्य ।
उष्णिका ( स्त्री ) लपसी ।
उष्णीषः ( पुं० ) पगड़ी, किरीट ।
उष्णोपगमः ( पुं० ) जेठ और असाढ़ का ऋतु ।
उष्मकः ( पुं० ) तथा ।
उस्रः ( पुं० ) किरण ।
उस्रा ( स्त्री ) गैया ।

—०*०—

# ( ऊ )

ऊः ( पुं० ) लक्षण, रक्षण, ब्रह्म ।
ऊत ( त्रि० ) ( तः । ता । तम् ) पोया वा सीयागया = ई ।
ऊधस् ( नपुं० ) ( धः ) गैया के स्तन का आधार वा ओड़ा ।
ऊनः ( पुं० ) थोड़ा, कम ।
ऊम् ( अव्यय ) प्रश्न में ।
ऊररी (अव्यय) अङ्गीकार, विस्तार
ऊरव्यः ( पुं० ) वैश्य ।
ऊरी (अव्यय) अङ्गीकार, विस्तार
ऊरीकृत (त्रि०) (तः । ता । तम्)

अङ्गीकार कियागया = ई ।

ऊरुः ( पुं० ) घुटने के ऊपर का भाग अर्थात् जङ्घा ।

ऊरुजः ( पुं० ) वैश्य ।

ऊरुपर्वन् ( नपुं० ) ( र्व ) पैर का घुटना ।

ऊर्जः ( पुं० ) कार्तिक महीना ।

ऊर्जस्वलः (पुं०) अत्यन्त पराक्रम-वाला ।

ऊर्जस्विन् ( पुं० ) ( स्वी ) तथा ।

ऊर्णनाभः ( पुं० ) मकड़ी ।

ऊर्णा ( स्त्री ) भेंड़ी का बार, दोनो भौं के बीच की बार की भौंरी ।

ऊर्णायुः ( पुं० ) कम्बल, बकरा ।

ऊर्ध्वकः ( पुं० ) यव के सदृश जिसका मध्य है ऐसा मृदङ्ग ।

ऊर्ध्वजानु ( त्रि० ) ( नुः । नुः । नु ) ऊंची जङ्घा वाला = ली ।

ऊर्ध्वज्ञ ( त्रि० ) (ज्ञः । ज्ञा । ज्ञम् ) तथा ।

ऊर्ध्वज्ञु ( त्रि० ) (ज्ञुः । ज्ञुः । ज्ञु) तथा ।

ऊर्म्मि ( पुं० । स्त्री ) ( र्म्मिः । र्म्मि—र्म्मी ) पानी की लहर वा तरङ्ग ।

ऊर्म्मिका (स्त्री) हाथ की अंगूठी ।

ऊर्म्मिमत् (त्रि०) ( मान् । मती । मत् ) लहरयुक्त, वक्र वा टेढ़ा = ढी ।

ऊर्वी ( स्त्री ) भूमि ।

ऊषः ( पुं० ) खारी मट्टी ।

ऊषणम् (नपुं०) मिरिच [उषणम्]

ऊषर ( त्रि० ) ( रः । रा । रम् ) ऊसर अर्थात जिस खेत इत्यादि में अन्न न उत्पन्न हो ।

ऊषवत् ( त्रि० ) ( वान् । वती । वत् ) तथा ।

ऊषा ( स्त्री ) अनिरुद्ध की स्त्री ।

ऊष्मकः ( पुं० ) जेठ और असाढ़ का ऋतु ।

ऊष्मागमः ( पुं० ) तथा ।

ऊहः ( पुं० ) तर्क ।

-❋❋❋-

# ऋ )

ऋ ( स्त्री ) ( आ—री ) देवों की माता ।

ऋक्थम् ( नपुं० ) धन ।

ऋच्छ (पुं० । नपुं०) ( च्छः । च्छम् ) ( पुं० ) भालू, सोनापाढ़ा, ( नपुं० ) अश्विन्यादि तारा ।

ऋक्षगन्धा ( स्त्री ) वृद्धदारक ओषधी ।
ऋक्षगन्धिका ( स्त्री ) काला भुंइंकोंहड़ा ।
ऋच् ( स्त्री ( क्-ग् ) वेद की ऋचा, ऋग्वेद ।
ऋजीषम् ( नपुं० ) तावा वा कराही अथवा रोटी वा तरकारी बनाने का बर्तन [ ऋचीषम् ]
ऋजु ( त्रि० ) ( जुः । जुःज्वी । जु ) सूधा = धी ।
ऋणम् ( नपुं० ) ऋण वा कर्ज़ ।
ऋत ( त्रि० ) ( तः । ता । तम् ) सच्चा बोलने वाला = ली(नपुं०) सच्चा वचन इत्यादि, उञ्छशिलवृत्ति अर्थात् पूर्वकाल में ऋषि लोगों की एक प्रकार की जीविका ।
ऋतीया ( स्त्री ) घिन करना, निन्दा करना, दया करना ।
ऋतुः ( पुं० ) वसन्तादि ६ ऋतु, माघ फागुन का महीना, स्त्री का रज ।
ऋतुमती ( स्त्री ) रजस्वला स्त्री ।
ऋते ( अव्यय ) विना ।
ऋत्विज् ( पुं० ) ( क्-ग् ) याजक में देखो ।
ऋद्ध ( त्रि० ) ( द्धः । द्धा । द्धम् ) समृद्ध वा धनदौलतवाला वा सम्पत्तिवाला = ली ( नपुं० ) तृण इत्यादि के दूर करने से साफ किया हुआ अन्न ।
ऋद्धिः ( स्त्री ) समृद्धि वा सम्पत्ति, सिद्धिनामक वा वृद्धिनामक औषध ।
ऋभुः ( पुं० ) देवता ।
ऋभुक्षिन् ( पुं० ) ( क्षाः ) इन्द्र ।
ऋषभः ( पुं० ) बैल, ऋषभनामक स्वरविशेष जिस स्वर से गाय बोलती है, ऋषभनामक औषध, पुङ्गव में देखो ( पुङ्गव शब्द की नाईं इस शब्द का भी प्रयोग होता है )
ऋषिः ( पुं० ) ऋषि ।
ऋष्टिः ( स्त्री ) एक प्रकार की तरवार ।
ऋष्यः ( पुं० ) एक प्रकार का मृग जो बहुत जल्दी दौड़ता है । [ ऋश्यः ]
ऋष्यकेतुः ( पुं० ) कामदेव, अनिरुद्ध । [ ऋश्यकेतुः ]
ऋष्यगन्धा ( स्त्री ) वृद्धदारक ओषधी ।
ऋष्यप्रोक्ता (स्त्री) केवाँच, सतावर ।

—※—

## ( ॠ )

ॠ ( अव्यय ) वाक्यारम्भ में,

ॠः ( स्त्री ) दानवों की माता अर्थात् दनु, देवों की माता अर्थात् अदिति ।

—❊❊—

## ( ऌ )

( अव्यय ) पृथिवी, पर्वत ।

( स्त्री ) ( भा ) देवजातियं की माता ।

## ( ॡ )

ॡ ( अव्यय ) देवाङ्गना ।

ॡः ( स्त्री ) माता वा जननी ।

—❊❊—

## ( ए )

एः ( पुं० ) विष्णु ।

एक ( त्रि० ) ( कः । का । कम् ) एक, मुख्य वा प्रधान, दूसरा = री, अकेला = ली ।

एकक ( त्रि० ) ( ककः । किका । ककम् ) अकेला = ली ।

एकतान (त्रि०) ( नः । ना । नम् ) एकाग्र वा तत्पर ।

एकतालः ( पुं० ) नृत्य गीत और वाद्य इनकी समता ।

एकदन्तः ( पुं० ) गणेश ।

एकदा ( अव्यय ) एक समय में ।

एकदृष्टिः ( पुं० ) कौवा पक्षी ।

एकधुर ( त्रि० ) ( रः । रा । रम् ) एक बोझा का ढोनेवाला = ली

एकधुरावह ( त्रि० ) ( हः । हा । हम् ) तथा ।

एकधुरीण ( त्रि० ) ( णः । णा । णम् ) तथा ।

एकपदी ( स्त्री ) रस्ता वा पगडंडी

एकपिङ्गः ( पुं० ) कुबेर ।

एकसर्ग ( त्रि० ) (र्गः । र्गा । र्गम्) एकाग्र वा तत्पर ।

एकहायनी ( स्त्री ) एक बरस की गैया इत्यादि ।

एकाकिन् ( त्रि० ) ( की । किनी । कि ) अकेला = ली ।
एकाग्र ( त्रि० ) ( ग्रः । ग्रा । ग्रम् ) एकाग्र वा तत्पर, स्वस्थचित्त ।
एकाग्र्य (त्रि०) ( ग्र्यः । ग्र्या । ग्र्यम् ) तथा ।
एकान्त ( त्रि० ) ( न्तः । न्ता । न्तम् ) अतिशय वा अत्यन्त (इस लिङ्ग में यह शब्द द्रव्यवाची है ) ( नपुं० ) अतिशय वा अत्यन्त (इस लिङ्ग में अद्रव्यवाची है ) ( त्रि० ) एकान्त वा अकेला गृह इत्यादि ।
एकाब्दा ( स्त्री ) एक बरस की ।
एकायन ( त्रि० ) (नः । ना । नम्) एकाग्र वा तत्पर ।
एकायनगत ( त्रि० ) ( तः । ता । तम् ) तथा ।
एकावली (स्त्री) एक लड़ का हार ।
एकाष्ठीलः ( पुं० ) गुम्मा भाजी ।
एकाष्ठीला ( स्त्री ) सोनापाढ़ा ।
एड ( त्रि० ) ( डः । डा । डम् ) बहिरा = री ।
एडक (पुं० । नपुं० ) (कः । कम्) ( पुं० ) भेंड़ा, ( नपुं० ) झाड़ इत्यादि की भीत ।
एडगजः ( पुं० ) पुआड़ वा चकवड़ वृक्ष ।
एडमूक ( त्रि० ) (कः । का । कम्) बोलने और सुनने में अशिक्षित वा मूर्ख, बहिरा = री गूंगा = गी ।
एडुकम् ( नपुं० ) झाड़ इत्यादि की भीत ।
एडूकम् ( नपुं० )तथा । [एडोकम्]
एण ( पुं० । स्त्री ) ( णः । णी । ( पुं० ) वह मृग जिसके आँख की कवि लोग उपमा देते हैं ( स्त्री ) मृगी ।
एत ( त्रि० ) ( तः । ता । तम् ) ( पुं०) चितकबरा रङ्ग, (त्रि०) चितकबरा रङ्गवाला = ली ।
एतर्हि ( अव्यय ) इस घड़ी ।
एधः ( पुं० ) आग जलाने के लिए तृण काष्ठ इत्यादि ।
एधस् ( नपुं० ) ( धः ) तथा ।
एधा ( स्त्री ) उपचय वा वृद्धि ।
एधित ( त्रि० ) ( तः । ता । तम् ) वृद्धि को प्राप्त भया = ई ।
एनस् ( नपुं० ) ( नः ) पाप ।
एरण्डः ( पुं० ) रेंड वृक्ष ।
एर्वारुः ( स्त्री ) ककड़ी फल ।
एलगजः ( पुं० ) पुआड़ वा चकवड़ वृक्ष ।
एला ( स्त्री ) बड़ी लाइची ।
एलापर्णी ( स्त्री ) एलापर्णी लता-

विशेष ।

एलावालुकम् ( नपुं० ) बालुका-नाम गन्धद्रव्य ।

एव (अव्यय) अवधारण वा निश्चय-पूर्वक ज्ञान ।

एवम् ( अव्यय ) तुल्यता, इस प्र-कार से, अङ्गीकार, अवधारण ।

एषणिका (स्त्री) तौलने का काँटा

-०००-

# ( ऐ )

ऐः ( पुं० ) शिव ।

ऐकागारिकः ( पुं० ) चोर ।

ऐङ्गुदम् ( नपुं० ) इङ्गुदी वृक्ष का फल ।

ऐण ( त्रि० ) ( णः । णी । णम् ) मृग का चमड़ा हाड़ मास इत्यादि ।

ऐणेय ( त्रि० ) (यः । यी । यम् ) मृगी का चमड़ा हाड़ मास इत्यादि ।

ऐतिह्यम् ( नपुं० ) परम्परा से जो सुन पड़ता चला आता है ।

ऐन्द्रियक ( त्रि० ) ( कः । का । कम् ) इन्द्रिय से ग्रहण करने के योग्य ।

ऐन्द्री ( स्त्री ) पूर्वदिशा, इन्द्रश-क्तिदेवता ।

ऐरावणः ( पुं० ) इन्द्र का हाथी।

ऐरावतः ( पुं० ) इन्द्र का हाथी, नारङ्गी फल ।

ऐरावती ( स्त्री ) बिजुली ।

ऐलविलः ( पुं० ) कुवेर ।

ऐलेयम् (नपुं० ) वालुकानामक गन्धद्रव्य ।

ऐशानीपतिः ( पुं० ) शिव ।

ऐश्वर्यम् (नपुं०) अणिमादि आठ प्रकार की सिद्धि ।

ऐषमस् ( अव्यय ) ( मः ) वर्तमान वर्ष ।

# ( ओ )

ओ ( पुं० ) ( औः ) ब्रह्मा ।

ओकस् ( पुं० । नपुं ) (काः । कः) ( पुं० ) आश्रय वा अवलम्ब, ( नपुं० ) घर ।

ओघः ( पुं० ) समूह, जल का त-

रखा, द्रुत ( चलता अर्थात् शो-घ्रतायुक्ततालवाला ) नृत्य वाद्य गीत ।

ओङ्कारः ( पुं० ) ओङ्कार, ब्रह्मा, शेषनाग ।

ओजस् ( नपुं० ) ( जः ) बल, प्रकाश ।

ओड्रपुष्पम् (नपुं०) उड़हुल का फूल

ओतुः ( पुं० ) बिलार वा बिल्ली ।

ओदन ( पुं० । नपुं० ) (नः । नम्) भात ।

ओम् ( अव्यय ) अङ्गीकार अर्थ में ।

ओष ( पुं० ) दाह ।

ओषधी (स्त्री) फल पकने पर जिस वृक्ष का नाश होजाय वह वृक्ष जैसा,—जव गेंहूं इत्यादि अन्न, ओषधी वा दवाई ।

ओषधीशः ( पुं० ) चन्द्रमा ।

ओष्ठः ( पुं० ) ओंठ वा मुख का एक अंग ।

—***—

# ( औ )

औः ( पुं० ) आश्चर्य, सर्प ।

औक्षकम् (नपुं०) बैलों का झुंड।

औचिती ( स्त्री ) योग्यता ।

औचित्यम् ( नपुं० ) तथा ।

औत्तानपादिः ( पुं० ) उत्तानपाद-नामक एक राजा का पुत्र जिस का नाम ध्रुव है ।

औत्सुक्यम् ( नपुं० ) उत्कण्ठा ।

औदनिकः ( पुं० ) रसोईदार।

औदरिक ( त्रि०) (कः । का । कम्) "आद्यून" में देखो ।

औदुम्बरम् ( नपुं० ) गुल्लर वृक्ष का फल, ताँबा धातु ।

औपगवकम् ( नपुं० ) गैया के रक्षकों के सन्तति का समूह ।

औपयिक (त्रि०) ( कः । की । कम्) न्याय से च्युत नहीं वा न्याय के सदृश ।

औपवस्तम् ( नपुं० ) उपवास ।

औरभ्रकम् (नपुं०) भेंड़ों का झुंड।

औरस ( पुं० । स्त्री ) ( सः । सी) विवाहिता जो सवर्णा स्त्री उससे उत्पन्न बेटा = टी ।

औरस्य ( पुं० । स्त्री ) (स्यः । स्या) तथा ।

और्ध्वदेहिक ( त्रि० ) ( कः । की । कम् ) मरण दिन से ले दस दिन पर्य्यन्त जो मृत के निमित्त पिण्डादि का दान [ औ-

दूर्द्रेष्टिक ]

औवैः (पुं०) समुद्र का बड़वाग्नि।

औलूक्यः (पुं०) वैशेषिक में देखो।

औशीर ( पुं० । नपुं० ) (रः । रम्) ( पुं० ) चंवर का दण्ड (नपुं०) शयन और आसन, ( किसी के मत में यह शब्द पृथक् २ शयन और आसन का वाचक है )

औषधम् (नपुं०) औषध वा दवाई।

औष्ट्रकम् ( नपुं० ) ऊंटों का झुंड।

## ( क )

क ( पुं० । नपुं० ) ( कः । कम् ) ( पुं० ) कौन, वायु, ब्रह्मा, सूर्य (नपुं०) कौन, सिर, जल, सुख

ककुद ( पुं० । नपुं० ) (दः । दम्) राजचिन्ह अर्थात् राजा का छत्र चमर इत्यादि, बैल के पीठ पर जो पिंड के सदृश रहता है वह वा बैल का डील; प्रधानता।

ककुद्मती ( स्त्री ) कमर।

ककुभः ( पुं० ) वीणा का तुम्बा, अर्जुन वृक्ष।

ककुभ् ( स्त्री ) ( प-ब् ) पूर्वादि दिशा।

कक्कोलकम् ( नपुं० ) गडुला फल वा कंकोल।

कक्षः ( पुं० ) काँख वा बगल, तृण वा घास, लता।

कक्ष्या ( स्त्री ) 'दूष्या' में देखो, राजा की डेउढ़ी, स्त्रियों के कमर का गहना जिसका नाम 'काञ्ची' 'मेखला' और 'क्षुद्रघंटिका' भी है, हाथियों के मध्यशरीर का बन्धन उसको 'वरत्रा' भी कहते हैं।

कङ्कः ( पुं० ) कंकाहड़ा पक्षी जिसका पर तीर में लगाते हैं, ( इसी लिये बाण 'कङ्कपत्र' कहा जाता है )

कङ्कटकः ( पुं० ) योद्धों के पहिनने का कवच।

कङ्कणम् ( नपुं० ) हाथ का गहना जिसको 'कङ्गन' कहते हैं।

कङ्कणी ( स्त्री ) घुंघुरू, [किङ्किणिः] [ किङ्किणी ]

कङ्कतिका ( स्त्री ) बाल साफ करने की कंगही।

कङ्कालः ( पुं० ) शरीर के हड्डी का ठाट।

कङ्कोलकम् (नपुं०) गडुला फल।

काङ्गुः ( स्त्री ) कङ्गुनी अन्न जिसको टंगुनी वा काँक भी कहते हैं।

कचः (पुं०) केश वा बाल, बृहस्पति का पुत्र ।

कचपाशः (पुं०) केशों का समूह ।

कच्चर ( त्रि० ) ( रः । रा । रम् ) मलिन ।

कच्चित् ( अव्यय ) प्रश्न वा पूछने अर्थ में ।

कच्छः (पुं०) अधिक जलयुक्त देश, तुन्न वृक्ष, काछा ।

कच्छप. ( पुं० ) कछुवा जलजन्तु, एक प्रकार का निधि ।

कच्छपी ( स्त्री ) कछुई, सरस्वती की वीणा ।

कच्छुर ( त्रि० ) ( रः । रा । रम् ) जिसको औदो खजुली का रोग है ।

कच्छुरा ( स्त्री ) जवासा वा हिंगुवा नाम एक काँटा का वृक्ष ।

कच्छूः ( स्त्री ) औदो खजुली ।

कञ्चुकः ( पुं० ) साँप की केंचुली, योद्धा लोगों का युद्ध के समय पहिरने का चोलना ।

कञ्चुकिन् ( पुं० ) ( की ) राजों किल्हों के डेवढ़ीदार "सौविद" में देखो, सर्प ।

कटः ( पुं० ) हाथी का गण्डस्थल, गमर, कमर के दोनों बगल, डिबिया, हाथी का गाल ।

कटक ( पुं० । नपुं० ) (कः । कम्) "आतापक" में देखो, पर्वत का मध्य भाग, पर्वत का पीछा, कड़ा नाम हाथ का भूषण, चक्र ।

कटभी ( स्त्री ) मालकांगुनी ।

कटम्बरा ( स्त्री ) कुब्जप्रसारिणी वृक्ष, कटुकी वृक्ष ।

कटम्भरा ( स्त्री ) तथा ।

कटाक्षः ( पुं० ) नेत्रों के कोने, नेत्रों के कोनों से देखना ।

कटाहः ( पुं० ) कड़ाहा, खप्पड़, खपड़ा, कछुवा की पीठ, ढाल, पंड़ा वा भैंस का बच्चा ।

कटिः ( स्त्री ) कमर, [ कटी ] "प्रोथ" में देखो ।

कटिप्रोथौ, द्विवचन (पुं०) 'प्रोथ' में देखो ।

कटु ( त्रि० ) ( टुः । टुः-ट्वी । टु ) तीखा वा तेज़, कड़ुई वस्तु, (पुं०) कड़ुआ रस, (नपुं०) करने के अयोग्य कार्य, ( स्त्री ) ईर्ष्या वा डाह ( स्त्री ) कुटकी ।

कटुतुम्बी ( स्त्री ) कड़ुआ तुम्बा ।

कटुरोहिणी ( स्त्री ) कुटकी ।

कट्फलः ( पुं० ) कायफल नाम एक वृक्ष का फल ।

कटुङ्गः ( पुं० ) सोनापाढ़ा ।

कठिञ्जरः ( पुं० ) कठसरैया पुष्प-वृक्ष ।

कठिन ( त्रि० ) ( नः । ना । नम् ) कठोर वा कड़ा = ड़ी ।

कठिल्लकः ( पुं० ) करैला तरकारी [ कटिल्लकः ]

कठोर ( त्रि० ) ( रः । रा । रम् ) कठोर वा कड़ा = ड़ी ।

कडङ्गरः ( पुं० ) भूसा [ कडङ्करः ]

कडम्बः ( पुं० ) भाजी का डंठा।

कडार ( त्रि० ) ( रः । रा । रम् ) ( पुं० ) कपिल रङ्ग जैसा त्वचा के अग्नि का होता है, ( त्रि० ) कपिलरङ्गवाला = ली ।

कडुरा ( स्त्री ) केवाँच वृक्ष ।

कणः ( पुं० ) अत्यन्त सूक्ष्म, धान्य का टुकड़ा जैसा तण्डुल-कण ।

कणा ( स्त्री ) जीरा, पीपर ।

कणिका ( स्त्री ) जयपर्ण वा अरणी अर्थात् अगेथू ।

कणिशम् ( नपुं० ) जव इत्यादि की बाल ।

कण्टक ( पुं० । नपुं० ) ( कः । कम् ) सूई का अग्र, रोमाञ्च, काँटा, छोटा शत्रु ।

कण्टकफलः ( पुं० ) कटहर [ कण्टकिफलः ]

कण्टकारिका (स्त्री) भटकटैया एक कंटैली लता, भटकटैया का फल ।

कण्ठः ( पुं० ) कण्ठ वा गला ।

कण्ठभूषा (स्त्री ) कण्ठा नाम गले का गहना ।

कण्ठीरवः ( पुं० ) सिंह ।

कण्डूः ( स्त्री ) सूखी खजुली रोग। [ कण्डुः ]

कण्डूया ( स्त्री ) तथा ।

कण्डूरा ( स्त्री ) केवाँच वृक्ष [ कण्डुरा ]

कण्डोलः ( पुं० ) झाँपी ।

कण्डोलवीणा ( स्त्री ) किंगरी बाजा [ कण्डोली ]

कण्वः ( पुं० । नपुं० ) ( ण्वः । ण्वम् ) ( पुं० ) एक ऋषि, ( नपुं० ) तण्डुलादि द्रव्य से बना मद्य का बीज [ किण्वम् ]

कत्तृणम् (नपुं०) रोहिस एक प्रकार का घास ।

कथा ( स्त्री ) कादम्बरी इत्यादि कथा वा कहानी ।

कदध्वन् ( पुं० ) ( ध्वा ) खराब रास्ता ।

कदम्ब ( पुं० । नपुं० ) ( म्बः । म्बम् ) ( पुं० ) कदम्ब वृक्ष,

(नपुं०) समूह वा झुण्ड ।
कदम्बक (पुं० । नपुं०) (कः । कम्) (पुं०) सरसों, (नपुं०) समूह वा झुण्ड ।
कदम्बिनी (स्त्री) मेघों की पंक्ति ।
कदरः (पुं०) सपेद खैर ।
कदर्य (त्रि०) (र्यः । र्या । र्यम्) सूम ।
कदलम् (नपुं०) केला का फल ।
कदली (स्त्री) केला का वृक्ष एक प्रकार का हरिण जिस के खाल का मृगचर्म बनता है ।
कदाचित् (अव्यय) कदाचित् वा कभी ।
कदुष्ण (त्रि०) (ष्णः । ष्णा । ष्णम्) थोड़ा गरम वस्तु, (नपुं०) थोड़ा गरम ।
कद्रु (त्रि०) (द्रुः । द्रुः । द्रु) जिस वस्तु का सोना के सदृश रङ्ग है, (पुं०) सोना के सदृश रङ्ग, (स्त्री) नागों की माता ।
कद्वद (त्रि०) (दः । दा । दम्) निन्दित बोलनेवाला = ली ।
कनक (पुं० । नपुं०) (कः । कम्) (पुं०) धतूरा वृक्ष, (नपुं०) सुवर्ण वा सोना ।
कनकालुका (स्त्री) पानी की झारी ।
कनकाह्वयः (पुं०) धतूरा वृक्ष ।
कनिष्ठ (त्रि०) (ष्ठः । ष्ठा । ष्ठम्) अत्यन्त छोटा, अत्यन्त जवान, (पुं०) छोटा भाई, (स्त्री) हाथ के अंगुलियों में से सब से छोटी अंगुली ।
कनीनिका (स्त्री) आँख की पुतली ।
कनीयस् (त्रि०) (यान् । यसी । यः) अत्यन्त जवान, अत्यन्त छोटा (पुं०) छोटा भाई ।
कन्था (स्त्री) कथरी ।
कन्दः (पुं०) कमल का कन्द, सूरन तरकारी, गुहेदार वृक्ष की जड़ ।
कन्दर (पुं० । स्त्री) (रः । रा) पर्वत की कन्दरा वा गुहा ।
कन्दरालः (पुं०) अखरोट मेवा, गेठी वृक्ष ।
कन्दर्पः (पुं०) कामदेव ।
कन्दली (स्त्री) एक प्रकार का मृग जिसके खाल का मृगचर्म बनता है ।
कन्दु (त्रि०) (न्दुः । न्दुः । न्दु) मद्य बनाने का पात्र ।
कन्दुकः (पुं०) गेंदा ।
कन्धरा (स्त्री) गरदन ।
कन्या (स्त्री) प्रथम वय वाली

स्त्री वा अविवाहिता स्त्री वा लड़की, राशिविशेष अर्थात् कन्या राशि ।
कपट (पुं० । नपुं०) छल ।
कपर्दः (पुं०) शिव के जटा का जूड़ा ।
कपर्दिन (पुं०) (र्दी) शिव ।
कपाट (त्रि०) (टः । टी । टम्) केवाड़ा [कवाट]
कपाल (पुं० । नपुं०) (लः । लम्) सिर की खोपड़ी, घट का अवयव खपड़ा वा खप्पर ।
कपालभृत् (पुं०) शिव ।
कपिः (पुं०) वानर ।
कपिकच्छुः (स्त्री) केवाँच । [कपिकच्छूः]
कपिञ्जलः (पुं०) एक प्रकार का पक्षी ।
कपित्थः (पुं०) कइत वृक्ष ।
कपिल (त्रि०) (लः । ला । लम्) कपिल रङ्गवाला=ली, (पुं०) कपिल रङ्ग, कपिलमुनि ।
कपिला (स्त्री) पुण्डरीक दिग्गज की स्त्री, रेणुकबीज नाम एक गन्धद्रव्य 'भस्मगर्भा' में देखो।
कपिवल्ली (स्त्री) गजपीपर ओषधी ।
कपिश (त्रि०) (शः । शा । शम्) वानर के रोम के समान काला पीला मिश्रित रङ्गवाला=ली, (पुं०) काला पीला मिश्रित रंग जैसा वानर के रोम का होता है ।
कपीतनः (पुं०) अमड़ा वृक्ष, गेठी वृक्ष, सिरसा वृक्ष ।
कपोतः (पुं०) कबूतर ।
कपोतपालिका (स्त्री) कबूतर इत्यादि पक्षियों के पालने के लिये गृहों के ऊपर जो स्थान बना रहता है छतरी इत्यादि ।
कपोताङ्घ्रिः (स्त्री) मालकांगुनी ओषधी ।
कपोलः (पुं०) गाल ।
कफः (पुं०) कफ ।
कफिन् (त्रि०) (फी । फिनी । फि) कफवाला=ली, (पुं०) एक प्रकार का हाथी ।
कफोणि (पुं० । स्त्री) (णिः । णिः—णी) हाथ की केहुनी ।
कबन्ध (पुं० । नपुं०) (न्धः । न्धम्) (पुं०) बिना सिर का धड़, (नपुं०) जल ।
कबरी (स्त्री) झार करके बाँधा केश अर्थात् चोटी जूड़ा ।
कमठः (पुं०) कछुवा जलजन्तु ।
कमठी (स्त्री) कछुई ।

कमण्डलु ( पुं० । नपुं० ) ( लुः । लु ) व्रतियों का जलपात्र वा कमण्डल ।
कमन ( त्रि० ) ( नः । ना । नम) ( पुं० ) कामी पुरुष, ( स्त्री ) कामिनी स्त्री, (नपुं० ) कामी कुल इत्यादि ।
कमल ( पुं० । नपुं० ) ( लः । लम् ) जल, कमल (पुं०) मृग ।
कमला ( स्त्री ) लक्ष्मी ।
कमलासनः ( पुं० ) ब्रह्मा ।
कमलोत्तरम् ( नपुं० ) कुसुम का फूल ।
कमलोद्भवः ( पुं० ) ब्रह्मा ।
कमित्ट ( त्रि० ) ( ता । त्री । तृ ) कामी वा कामिनी ।
कम्पः ( पुं० ) कम्प वा काँपना ।
कम्पन (त्रि०) ( नः । ना । नम् ) जिसका काँपने का स्वभाव है, ( नपुं० ) काँपना ।
कम्प्र (त्रि०) (म्प्रः । म्प्रा । म्प्रम् ) जिसका काँपने का स्वभाव है ।
कम्बलः ( पुं० ) कम्बल, दुपट्टा, ऊन का वस्त्र ।
कम्बिः ( स्त्री ) करछुल अर्थात् रसोंई में का एक बरतन [कम्बी]
कम्बु (पुं० । नपुं० ) ( म्बुः । म्बु) शङ्ख, (पुं०) कङ्कण वा कङ्कन ।
कम्बुग्रीवा ( स्त्री ) तीन रेखा से युक्त गला वा गरदन ।
कम्भारी ( स्त्री ) खंभारी वृक्ष ।
कम्र ( त्रि० ) ( म्रः । म्रा । म्रम् ) कामी वा कामिनी ।
करः (पुं० ) हाथ, हाथी का सूंड़, किरण, मासूल वा कर ।
करक ( पुं० । स्त्री ) ( कः । का । बनौरी जो कभी २ पानी के सङ्ग बरसती है, अनार फल, करवा वा कमण्डलु ।
करज (पुं० । नपुं० ) (जः । जम्) (पुं०) नख, करंज वृक्ष, (नपुं०) व्याघ्रनखनामक गन्धद्रव्य ।
करञ्जक ( पुं० । नपुं० ) ( कः । कम्) (पुं०) करंज वृक्ष, (नपुं०) व्याघ्रनखनामक गन्धद्रव्य ।
करटः ( पुं० ) कौवा, हाथी का गण्डस्थल ।
करण (पुं० । नपुं० ) (णः । णम्) ( नपुं० ) क्रिया के सिद्ध में अत्यन्त उपकारक जैसा मारने में तरवार, खेत, शरीर, इन्द्रिय अर्थात् चक्षु इत्यादि, (पुं०) वैश्य से शूद्रा स्त्री में उत्पन्न ।
करतोया (स्त्री) नदीविशेष अर्थात् ( पार्वती के विवाह में कन्यादान के जल से उत्पन्न भई )

करपत्रम् ( नपुं० ) आरा।
करभः ( पुं० ) गट्टे से लेकर कनिष्ठा के शिखा तक हाथ का बाह्य भाग, ऊंट का बच्चा।
करभूषणम् ( नपुं० ) कङ्कण।
करमर्दकः ( पुं० ) करौंदा वृक्ष।
करम्भः ( पुं० ) दही मिला सतुवा [ करम्बः ] ( यह शब्द कहीं नपुंसक भी मिलता है )
कररुहः ( पुं० ) नख।
करवालः ( पुं० ) तरवार [ करपालः ]
करवालिका ( स्त्री ) खाँड़ा वा गुप्ती।
करवीरः ( पुं० ) कंटइल पुष्पवृक्ष।
करशाखा ( स्त्री ) अंगुली।
करशीकरः ( पुं० ) हाथी के सूंड़ का पानी।
करहाटः (पुं०) कमल का कन्द।
करहाटकः ( पुं० ) मैनफल का वृक्ष।
कराल ( त्रि० ) (लः । ला । लम्) भयङ्कर, ऊंचे दाँतवाला = ली, ऊंचा = चौ।
करिणी ( स्त्री ) हथिनी।
करिन् ( पुं० ) ( री ) हाथी।
करिपिप्पली ( स्त्री ) गजपीपर ओषधी।
करिशावकः (पुं०) हाथी का बच्चा।
करीर ( पुं० । नपुं० ) (रः । रम्) बाँस का छड़का ( पुं० ) करील वा टेंटी वृक्ष, एक प्रकार का काटेंदार वृक्ष, घटना वा मेल।
करीष ( पुं० । नपुं० ) (षः । षम्) सूखा गोबर वा गोहरी।
करुणः ( पुं० ) करुण रस।
करुणा ( स्त्री ) करुणा वा दया।
करेटुः ( पुं० ) 'कर्करेटु' में देखो, [ करटुः ]
करेणु ( पुं० । स्त्री ) ( णुः । णुः ) (पुं०) हाथी ( स्त्री ) हथिनी।
करोटिः (स्त्री) सिर की खोपड़ी।
कर्कः ( पुं० ) श्वेत घोड़ा, राशिविशेष वा कर्क राशि।
कर्कटकः ( पुं० ) केकड़ा जलजन्तु, एक प्रकार का ऊख।
कर्कटी ( स्त्री ) केकड़ा की स्त्री, ककड़ी फल।
कर्कन्धु ( पुं० । स्त्री) (न्धुः । न्धुः ) बदर फल।
कर्करी ( स्त्री ) 'आलु' में देखो।
कर्करेटुः ( पुं० ) कर्करुवा एक प्रकार का अशुभ बोलनेवाला पक्षी। [ कर्कराटुः ] [ करटुः ] [ करेटुः ]

कर्कश ( त्रि० ) ( शः । शा । शम् ) कठोर, दुःस्पर्श, साहसी वा विवेकहीन, ( स्त्री ) झगड़ालू स्त्री, ( पुं० ) कबीला ओषधी ।
कर्कारुः ( स्त्री ) ककड़ी फल ।
कर्चूरः ( पुं० ) आँबाहरदी [ कर्बूरः ] [ कर्बुरः ]
कर्चूरकः ( पुं० ) कचूर [कर्बूरकः]
कर्णः ( पुं० ) कान, एक राजा ।
कर्णजलौकस् ( स्त्री ) ( काः ) गोजर जन्तु ।
कर्णधारः ( पुं० ) नाव का पतवार पकड़नेवाला मल्लाह ।
कर्णपूरः ( पुं० ) कर्णफूल वा कान का गहना ।
कर्णवेष्टनम् ( नपुं ) कुण्डल नाम कान का गहना ।
कर्णिका ( स्त्री ) तरकी नाम कान का भूषण, हाथी के सूंड़ का अग्र भाग; कमल का छाता जिसके छिद्र में कमलगट्टा रहता है, मध्यम अंगुली ।
कर्णिकारः ( पुं० ) कठचम्पा पुष्प वृक्ष, झुमका पुष्प ।
कर्णीरथः ( पुं० ) "प्रवहण" में देखो ।
कर्णेजपः ( पुं० ) चुगलखोर ।
कर्तरी ( स्त्री ) कैंची [ कर्तनी ]
कर्दमः ( पुं० ) चहला वा कीचड़ ।
कर्पटः ( पुं० ) चिरकुट वा लत्ता ।
कर्परः ( पुं० ) कपाल, खपड़ा ।
कर्परालः ( पुं० ) अखरोट मेवा ।
कर्परी ( स्त्री ) तुतिया ओषधी ।
कर्पासी ( स्त्री ) कपास वा रुई । [ कार्पासी ]
कर्पूर ( पुं० । नपुं ) ( रः । रम् ) कपूर ।
कर्बुर ( त्रि० ) ( रः । रा । रम् ) चितकबरा रङ्गवाला = ली, ( पुं० ) राक्षस, चितकबरा रंग ( नपुं० ) सुवर्ण वा सोना ।
कर्बूर ( त्रि० ) ( रः । रा । रम् ) तथा ।
कर्मकरः ( पुं० ) जो मजूरी ले के काम करता है अर्थात् मजूर ।
कर्मकरी (स्त्री) मजूरिन वा दासी ।
कर्मकारः ( पुं० ) कारीगर, बिना मजूरी काम करनेवाला जैसा घर का आदमी ।
कर्मक्षमः ( पुं० ) काम करने में समर्थ ।
कर्मठः ( पुं० ) प्रयत्न से आरम्भ किए हुए काम को जो समाप्त करता है ।
कर्मण्यभुज् ( पुं० ) ( क्—ग् ) मजूरी लेकर काम करनेवाला ।

कर्मण्या ( स्त्री ) मजूरी वा तलब ।
कर्मन् ( नपुं० ) ( र्म ) क्रिया वा काम ।
कर्मन्दिन् ( पुं० ) (न्दी) सन्यासी।
कर्ममोटी ( स्त्री ) शक्तिदेवता ।
कर्मशीलः ( पुं० ) नित्य जो कार्यों में लगा रहता है ।
कर्मशूरः ( पुं० ) आरम्भ किए हुए कार्यों को जो प्रयत्न से समाप्त करता है ।
कर्मसचिवः ( पुं० ) कर्मों का उपयोगी मन्त्री ।
कर्मसाक्षिन् (पुं०) ( क्षी ) सूर्य्य ।
कर्मारः ( पुं० ) बाँस ।
कर्मेन्द्रियम् ( नपुं० ) वाणी, हस्त, पाद, मलेन्द्रिय और मूत्रेन्द्रिय ये सब 'कर्मेन्द्रिय' कहलाते हैं ।
कर्षः ( पुं० ) एक प्रकार की तौल वा बटखरा जो सोलह मासे का होता है ।
कर्षकः ( पुं० ) खेतिहर [कार्षकः]
कर्षफलः (पुं० ) बहेरा फल ।
कर्षूः ( पुं० । स्त्री ) ( र्षूः । र्षूः ) ( पुं० ) पासा, एक प्रकार की तौल, पहिया, बहेरा फल, व्यवहार, करसी की आग, (स्त्री) जीविका, नदी ।
कल ( त्रि० ) ( लः । ला । लम् ) अस्पष्ट मधुर ध्वनि ।
कलकलः ( पुं० ) कोलाहल वा मनुष्यों का मिलकर बोलना ।
कलङ्कः ( पुं० ) चिह्न, लाञ्छन, अपवाद ।
कलत्रम् ( नपुं० ) भार्य्या वा पत्नी, कमर का पीछा वा चूतड़ ।
कलधौतम् (नपुं०) सोना, रुपया ।
कलभः ( पुं० ) हाथी का बच्चा, [ करभः ]
कलमः ( पुं० ) जड़हन धान ।
कलम्बः ( पुं० ) भाजी इत्यादि का डंठा, बाण ।
कलम्बी ( स्त्री ) करेमू साग ।
कलरवः ( पुं० ) परेवा वा एक प्रकार का कबूतर पक्षी ।
कललः (पुं०) वीर्य और रुधिर का सम्पात वा मेल वा समूह ।
कलविङ्कः ( पुं० ) गौरा पक्षी ।
कलशः ( पुं० ) घड़ा [ कलसः ]
कलशिः ( स्त्री ) छोटा घड़ा, पिठवन ओषधी [ कलशी ]
कलहः ( पुं० ) झगड़ा वा कलह वा युद्ध ।
कलहंसः ( पुं० ) बत्तक पक्षी ।
कला (स्त्री) तीस काष्ठा एकसमय, कारीगरी, मूल धन, वृद्धि, टुकड़ा, चन्द्रका सोलहवाँ हिस्सा

सोलहवाँ हिस्सा ।
कलादः ( पुं० ) सोनार ।
कलानिधिः ( पुं० ) चन्द्र ।
कलापः ( पुं० ) समूह, मोर की पोंछ, स्त्री के कमर की पचीस लड़ की करधनी, भूषण वा गहना, तरकस ।
कलायः ( पुं० ) मटर ।
कलिः ( पुं० ) चौथा युग वा कलियुग, युद्ध वा कलह ।
कलिका ( स्त्री ) पुष्प इत्यादि की काली, दिया की टेम ।
कलिकारकः ( पुं० ) कंटैला करञ्ज।
कलिङ्ग ( त्रि० ) (ङ्गः । ङ्गा । ङ्गम्) इन्द्रजव, ( पुं० ) तरबूज फल, कलिङ्ग देश जिस को तैलङ्ग देश कहते हैं, मस्तकचूड़ पक्षी (इसको कोई फेचुहार भी कहते हैं )
कलिद्रुमः ( पुं० ) बहेड़ा ।
कलिमारकः (पुं०) कंटैला करंज ।
कलिलम् ( नपुं० ) दुर्गम स्थान जहाँ दुःख से जा सकते हैं ।
कलुष ( त्रि० ) ( षः । षा । षम् ) मलिन वस्तु, ( नपुं० ) पाप ।
कलेवरम् ( नपुं० ) विष्ठा, पाप, दम्भ वा गर्व वा घमण्ड, शरीर।
कल्क ( पुं० । नपुं० ) ( ल्कः । ल्कम् ) विष्ठा, पाप ।
कल्पः (पुं०) एक वेदाङ्ग, न्याय वा नीति, नियोगशास्त्र, ब्रह्मा का दिन वा रात्रि ।
कल्पना (स्त्री) नायक वा सरदार के चढ़ने के लिये हाथी का तैयार करना वा साजना, आरोप करना ।
कल्पतरुः ( पुं० ) कल्पवृक्ष ।
कल्पवृक्षः (पुं०) देवतों का एक वृक्ष
कल्पान्तः ( पुं० ) प्रलय ।
कल्मषम् ( नपुं० ) पाप ।
कल्माष ( त्रि० ) (षः । षी । षम्) चितकबरा रङ्ग वाला = ली, काला रङ्ग वाला = ली ( पुं० ) काला रङ्ग, चितकबरा रङ्ग ।
कल्प ( त्रि० ) (ल्पः । ल्पा । ल्पम्) रोगरहित वा नीरोग, सज्ज अर्थात् तैयार, मङ्गलवचन इत्यादि, ( नपुं० ) प्रातःकाल ।
कल्याण (त्रि०) (णः । णी । णम्) कल्याणवाला = ली, ( नपुं० ) कल्याण ।
कल्लोलः ( पुं० ) जल का बड़ा तरंग ।
कवच (पुं० । नपुं०) (चः । चम्) योद्धों के पहिरने का कवच ।
कवरी ( स्त्री ) छौंग का वृक्ष,

चलानेवाला ।
काण्डीरः ( पुं० ) तथा ।
काण्डेक्षुः ( पुं० ) तालमखाना ।
कातर ( त्रि० ) ( रः । रा । रम् ) अधीर वा कादर ।
कात्यायनी ( स्त्री ) पार्वती, गेरुआ वस्त्र धारण करने वाली अधेर वय की रण्डा स्त्री ।
कादम्बः ( पुं० ) बत्तक पक्षी ।
कादम्बर ( स्त्री । नपुं० ) ( री । रम् ) एक प्रकार का मद्य ।
कादम्बिनी (स्त्री) मेघों की पंक्ति
काद्रवेयः (पुं०) कद्रू के पुत्र नाग ।
काननम् ( नपुं० ) वन वा जङ्गल ।
कानीनः (पुं०) बिना ब्याही स्त्री का पुत्र जैसे व्यास कर्ण ।
कान्त (त्रि०) ( न्तः । न्ता । न्तम् ) सुन्दर वा मनोहर, ( पुं० ) स्त्री का पति, ( स्त्री ) मनोहर स्त्री ।
कान्तलकः ( पुं० ) तूणी वा तुन्न वृक्ष ।
कान्तार (पुं० । नपुं०) ( रः । रम् ) दुर्गम वा टेढ़ा मार्ग, बड़ा वन ( पुं० ) एक प्रकार का ऊख ।
कान्तारकः ( पुं० ) एक प्रकार का ऊख ।
कान्तिः (स्त्री) शोभा, इच्छा ।
कान्दविकः ( पुं० ) रसोईदार जो तैल इत्यादि से पक्व वस्तु तैयार करता है ।
कान्दिशीक ( त्रि० ) ( कः । का । कम् ) भय से भागा = गी ।
कापथः ( पुं० ) खराब रस्ता ।
कापिलः (पुं०) 'साङ्ख्य' में देखो ।
कापोत (पुं० । नपुं०) (तः । तम् ) ( पुं० ) सज्जीखार, (नपुं० ) कबूतरों का झुण्ड ।
कापोताञ्जनम् ( नपुं० ) एक प्रकार का सुरमा ।
काम ( पुं० । नपुं० ) (मः । मम्) ( पुं० ) कामदेव, इच्छा वा मनोरथ, ( नपुं० ) इच्छा के सदृश, ( नपुं० ) अनिच्छा से सलाह देने अर्थ में ।
कामन ( त्रि० ) (नः । ना । नम्) कामी वा कामिनी ।
कामपालः ( पुं० ) बलदेव वा कृष्ण के बड़े भाई ।
कामयिता ( त्रि० ) (ता । त्री । तृ) कामी वा कामिनी ।
कामिनी ( स्त्री ) बहुत काम वाली वा काम की इच्छा करने वाली स्त्री, वन्दा एक वृक्ष का रोग, स्त्री ।
कामुक ( त्रि० ) ( कः । का । कम्)

कामो वा कामिनी वा इच्छा-
वती स्त्री ।
कामुकी (स्त्री) मैथुन की इच्छा करने वाली स्त्री ।
काम्पिल्यः (पुं०) कबीला औषधी ।
[ काम्पिल्लः ]
काम्बलः (पुं०) कम्बल से घेरा रथ
काम्बविकः ( पुं० ) शङ्ख का काम बनाने वाला ।
काम्बोजः ( पुं० ) कम्बोज देश का घोड़ा ।
काम्बोजी ( स्त्री ) जङ्गली उरद ।
काय ( पुं० । नपुं० ) (यः । यम्) शरीर वा देह, ( नपुं० ) अ-नामिका और कनिष्ठिका के मध्य में जो तीर्थ अर्थात् प्राजापत्य तीर्थ ।
कायस्था ( स्त्री ) हरैं, भंवरा ।
कारणम् ( नपुं० ) कारण वा सबब ।
कारणा ( स्त्री ) कठोर दुःख ।
कारणिकः ( पुं० ) प्रमाणों से शास्त्र का निश्चय करनेवाला ।
कारण्डवः ( पुं० ) करडुआ पक्षी ।
कारम्भा ( स्त्री ) गोंदी वृक्ष ।
कारवी ( स्त्री ) अजमोदा औषधी, सौंफ, काला जीरा, हींग का पेड़, मोर की चोटी ।
कारवेल्लः ( पुं० ) करैला ।
कारा ( स्त्री ) कैदी का घर वा जेहलखाना ।
कारिका ( स्त्री ) एक प्रकार का श्लोक जिस से कठिन विषय स्पष्ट होता है, यातना वा दुःखभोग, करना ।
कारीषम् ( नपुं० ) करसी वा सूखे गोबर का समूह ।
कारुः (पुं०) चितेरा, कारीगर ।
कारुणिक ( त्रि० ) ( कः । का । कम् ) दयावाला =ली ।
कारुण्यम् ( नपुं० ) करुणा वा दया ।
कारोत्तरः ( पुं० ) मद्य का माँड़ ।
[ कारोत्तमः ]
कार्त्तस्वरम् ( नपुं० ) सुवर्ण वा सोना ।
कार्त्तान्तिकः ( पुं० ) ज्योतिष् विद्या का जानने वाला ।
कार्त्तिकः (पुं०) कातिक महीना, स्वामिकार्तिक ।
कार्त्तिकिकः ( पुं० ) कातिक महीना ।
कार्त्तिकेयः (पुं०) स्वामिकार्तिक ।
कार्त्स्न्यम् ( नपुं० ) सम्पूर्णता ।
कार्पास ( त्रि० ) (सः । सी । सम्) कपास से बना वस्त्र इत्यादि,

(स्त्री) कपास वा रुई ।

कार्म (त्रि०) (र्मः । र्मी । र्मम्) जो नित्यही कार्य्य में लगा रहता है ।

कार्मणम (नपुं०) जड़ी से मारण मोहन उच्चाटन इत्यादि कर्म ।

कार्मुकम् (नपुं०) धनुष् ।

काश्मरी (स्त्री) खंभारी वृक्ष । [काश्मरी] [काश्मर्यः]

कार्श्य (पुं० । नपुं०) (र्श्यः । र्श्यम) (पुं०) सखुवा वृक्ष । [कार्श्यः] (नपुं०) दुर्बलता ।

कार्षापणः (पुं०) कर्ष भर चाँदी अर्थात् रुपैया (यह आज काल के लोकव्यवहार से विलक्षण है)

कार्षिकः (पुं०) तथा ।

काल (त्रि०) (लः । ला—ली । लम्) काली वस्तु, (पुं०) काला रंग, यम, काल अर्थात् क्षण दिन मास इत्यादि (स्त्री लिङ्ग में 'काली' इस रूप के ये अर्थ हैं) काली देवी, लिखने की स्याही ।

कालकः (पुं०) देह पर एक प्रकार का काला चिन्ह होता है जिसको लहसुन कहते हैं ।

कालकण्टकः (पुं०) काला कौवा वा जलकौवा ।

कालकूट (पुं० । नपुं०) (टः । टम्) एक प्रकार का ज़हर ।

कालखण्डम् (नपुं०) पेट में दहिनी ओर का मांसपिण्ड जिसको वैद्यक में "यकृत्" कहते हैं ।

कालधर्मः (पुं०) मरना ।

कालपृष्ठम् (नपुं०) कर्ण का धनुष् ।

कालमेषिका (स्त्री) मजीठ (एक प्रकार की रंग की वस्तु है) [कालमेषिका] श्यामतिधारा वृक्ष।

कालमेषी (स्त्री) वकुची ओषधी । [कालमेषी]

कालशेयम् (नपुं०) मथानी से मथा गोरस ।

कालसूत्रम् (नपुं०) एक प्रकार का नरक ।

कालस्कन्धः (पुं०) तमाल वृक्ष, तेंदू वृक्ष।

काला (स्त्री) नील वृक्ष, श्यामतिधारा वृक्ष, पाँडर वृक्ष, कालीजीरी ओषधीवृक्ष ।

कालागुरु (नपुं०) काला अगर ।

कालानुसार्यम् (नपुं०) सिलाजीत ओषधी, पीला चन्दन ।

कालायसम् ( नपुं० ) लोहा ।
कालायीनम् ( नपुं० ) मटर का खेत ।
कालिका ( स्त्री ) एक देवी, मेघ की घटा ।
कालिन्दी ( स्त्री ) यमुना नदी ।
कालिन्दीभेदनः ( पुं० ) बलदेव कृष्ण के भाई ।
काली ( स्त्री ) पार्वती ।
कालीयकः ( पुं० ) दारु हरदी । [ कालेयकः ]
कालीयकम् (नपुं०) पीला चन्दन ।
काल्यकः ( पुं० ) कचूर ओषधी । [ काल्पकः ]
कावचिकम् ( नपुं० ) कवचधारियों का झुण्ड ।
कावेरी ( स्त्री ) एक नदी ।
काव्य ( पुं० । नपुं० ) ( व्यः । व्यम् ) (पुं०) शुक्राचार्य, (नपुं०) रामायणादि काव्य ।
काश ( पुं० । नपुं० ) (शः । शम्) काश एक प्रकार की घास [कास]
काश्मरी ( स्त्री ) खंभारी वृक्ष ।
काश्मर्यः ( पुं० ) तथा ।
काश्मीर ( त्रि० ) (रः । री । रम्) कश्मीर देशमें उत्पन्न भई वस्तु केसर इत्यादि, ( नपुं० ) पुष्कर की जड़ ।
काश्मीरजन्मन् ( पुं० ) ( न्मा ) केसर सुगन्धवस्तु ।
काश्यपिः (पुं०) सूर्य का सारथी ।
काश्यपी ( स्त्री ) पृथ्वी ।
काष्ठम् ( नपुं० ) काठ वा लकड़ी ।
काष्ठकुद्दालः ( पुं० ) नाव साफ करने की काठ की कुदारी ।
काष्ठतक्ष् ( पुं० ) ( ट्—ड् ) बढ़ई, काठ काटने वाला एक जन्तु ।
काष्ठा ( स्त्री ) दिशा, अठारह निमेष वा पल, उत्कर्ष वा बढ़ती मर्यादा वा अवधि ।
काष्ठाम्बुवाहिनी ( स्त्री ) काष्ठ तृण इत्यादि से बनाई जल के पार उतरने की वस्तु ।
काष्ठीला ( स्त्री ) केला वृक्ष ।
कासः ( पुं० ) खाँखी रोग ।
कासमर्दः ( पुं० ) एक प्रकार की जड़ी ।
कासरः ( पुं० ) भैंसा ।
कासारः ( पुं० ) तलाव, बनाया हुआ कमलयुक्त सरोवरादि ।
कासीसम् ( नपुं० ) कासीस एक रंगदार वस्तु ।
कासूः ( स्त्री ) बरछी ।
कांसम् ( नपुं० ) काँसा धातु ।
कांस्यतालः ( पुं० ) काँसे का ताल वा मजीरा ।

किकिः ( पुं० ) चास पक्षी ।

किकिम् ( पुं० ) ( की ) तथा ।

किकीदिविः ( पुं० ) तथा । [ किकीदिवीः ] [ किकीदिवः ] [ किकीदीविः ] [ किकिदिविः ] [ किकिदिवः ]

किङ्करः ( पुं० ) दास ।

किङ्किणी (स्त्री) घुंघुरूदार करधनी

किञ्चित् ( अव्यय ) थोड़ा ( कहीं क्रियाविशेषण में भी मिलता है)

किञ्चुलकः ( पुं० ) केंचुवा कीड़ा । [ किञ्चिलिकः ] [ किञ्चुलुकः ]

किञ्जल्क ( पुं० । नपुं० ) ( ल्कः । ल्कम् ) पुष्प का केसर वा जीरा, ( पुं० ) पुष्प की धूलि ।

किटिः ( पुं० ) सूअर ।

किट्टम् ( नपुं० ) नासिकादि का मल ।

किणः ( पुं० ) घट्ठा ।

किणिही ( स्त्री ) चिचिड़ा ।

किण्वम् ( नपुं० ) तण्डुलादि द्रव्य से बना हुआ मद्य का कीज ।

कितवः ( पुं० ) धूर्त, जुआरी, धतूरा ।

किन्नरः ( पुं० ) एक प्रकार के देवता वा यक्ष ।

किन्नरेशः ( पुं० ) किन्नरों के राजा वा कुबेर ।

किमु ( अव्यय ) अथवा ।

किमुत (अव्यय) अथवा, अतिशय ।

किम् ( अव्यय ) प्रश्न, निन्दा, अथवा ।

किम्पचानः ( पुं० ) सूम ।

किम्पुरुषः ( पुं० ) किन्नर एक देवता ।

किंवदन्ती ( स्त्री ) लोकप्रवाद वा लोगों का किसी बात में शोरा उठा देना जैसा लोग कहते हैं कि 'यह बात सुनने में आती है लेकिन देखी नहीं गई' ।

किंशारुः ( पुं० ) यव इत्यादि अन्न का टूंडा वा सूई के तुल्य अग्र भाग, बाण, कङ्कपक्षी ।

किंशुकः ( पुं० ) पलाश वृक्ष ।

किरणः ( पुं० ) किरण वा प्रकाश

किरातः ( पुं० ) पर्वत पर रहने वाले एक प्रकार के मनुष्य जो म्लेच्छजाति कहलाते हैं ।

किराततिक्तः ( पुं० ) चिरायता ओषधी ।

किरिः ( पुं० ) सूअर । [ किरः ]

किरीट (पुं० । नपुं०) (टः । टम्) मुकुट ।

किर्म्मीर ( त्रि० ) (रः । रा । रम्) चितकबरा रङ्ग वाला = ली,

( पुं० ) चितकबरा रङ्ग ।
किल ( अव्यय ) वार्ता में, सम्भाव्य वस्तु में ।
किलकिञ्चितम् ( नपुं० ) शृङ्गार रस में एक प्रकार का हाव अर्थात् हर्ष से रोना गाना इत्यादि मिश्रित क्रिया।
किलासम् (नपुं०) सेहुंआँ रोग ।
किलासिन् ( त्रि० ) (सी । सिनी । सि ) सेहुंवाँ रोगवाला = ली ।
किलिञ्जकः ( पुं० ) डिबिया ।
किल्बिषम् (नपुं०) पाप, अपराध, प्रीति ।
किशलय ( पुं० । नपुं० ) ( यः । यम् ) नया पत्ता [ किसलय ]
किशोरः ( पुं० ) लड़का, घोड़ा का बच्चा, नया जवान ।
किष्कुः ( पुं० ) हाथ, बित्ता ।
किसलय ( पुं० । नपुं० ) ( यः । यम् ) नया पत्ता ।
कीकसम् ( नपुं० ) हाड़ ।
कीचकः ( पुं० ) बाँसुरी बाजा वा छिद्रयुक्त बाँस जिसमें वायु जाने से शब्द हो ।
कीटः ( पुं० ) कीड़ा जैसा चिउंटा इत्यादि ।
कीनाशः ( पुं० ) यम, सूम, खेतिहर ।



कीरः ( पुं० ) सुग्गा पक्षी ।
कीर्तिः ( स्त्री ) कीर्ति वा यश ।
कील ( पुं० । स्त्री ) ( लः । ला ) अग्नि की ज्वाला, खूंटा वा खूंटी ।
कीलकः ( पुं० ) खूंटा ।
कीलालम् ( नपुं० ) जल, रुधिर ।
कीलित ( त्रि० ) (तः । ता । तम्) बाँधा हुआ = ई ।
कीशः ( पुं० ) बन्दर जन्तु ।
कीशपर्णी ( स्त्री ) चिचिड़ा ।
कु ( अव्यय ) पाप, निन्दा, थोड़ा ।
कुः ( स्त्री ) भूमि वा पृथ्वी ।
कुकः ( पुं० ) चकवा पक्षी ।
कुकर ( त्रि० ) ( रः । रा । रम् ) रोगादि से जिसका हाथ टेढ़ा हो गया है ।
कुकुन्दरम् (नपुं०) चूतड़ पर पीठ के बाँसा के नीचे के दोनो गड़हे [ ककुन्दरम् ]
कुकुरः ( पुं० ) कुत्ता ।
कुकूल ( पुं० । नपुं० ) (लः । लम्) ( पुं० ) करसी की आग, (नपुं०) खूंटियों से भरा हुआ गड़हा ।
कुक्कुटः ( पुं० ) मुरगा पक्षी ।
कुक्कुभः ( पुं० ) बनमुरगा ।
कुक्कुरः ( पुं० ) कुत्ता ।

कुक्षिः ( पुं० ) पेट ।
कुक्षिम्भरि ( त्रि० ) ( रिः । रिः । रि ) पेटुक वा अपने पेट का भरनेवाला ~ ली ।
कुङ्कुमम् ( नपुं० ) केशर एक सुगन्धवृक्ष ।
कुचः ( पुं० ) स्त्री का स्तन ।
कुचन्दनम् ( नपुं० ) रक्त चन्दन ।
कुचर ( त्रि० ) ( रः । रा । रम् ) जिसका दोष वर्णन करने का स्वभाव है अर्थात् निन्दक ।
कुचाग्रम् ( नपुं० ) स्तन का अग्र ।
कुजः ( पुं० ) लतादिकों से आच्छादित स्थान, मङ्गल ग्रह ।
कुञ्चित ( त्रि० ) ( तः । ता । तम् ) टेढ़ा = ढ़ी ।
कुञ्ज ( पुं० । नपुं ) ( ञ्जः । ञ्जम् ) लता का घर, हाथी का दाँत, ठुड्डी ।
कुञ्जरः ( पुं० ) हाथी, "पुङ्गव" में देखो (पुङ्गव शब्द की नाईं इस शब्द का भी प्रयोग होता है)
कुञ्जराशनः (पुं०) पीपर का वृक्ष ।
कुञ्जलम् ( नपुं० ) काँजी ।
कुट ( पुं० । नपुं० ) ( टः । टम् ) घड़ा, ( पुं० ) वृक्ष ।
कुटकम् ( नपुं० ) हल का फार । [ कूटकम् ]
कुटजः ( पुं० ) कोरैया पुष्पवृक्ष ।
कुटन्नट ( पुं० । नपुं० ) ( टः । टम् ) ( पुं० ) सोनापाढ़ा, ( नपुं० ) मोथा ।
कुटपः ( पुं० ) तौलने का पौवा, खानेबाग वा वाटिका ।
कुटिल ( त्रि० ) (लः । ला । लम्) टेढ़ा = ढ़ी ।
कुटी ( स्त्री ) घर ।
कुटुम्बव्यापृतः ( पुं० ) कुटुम्ब के पोषणादि व्यापार में युक्त ।
कुटुम्बिनी ( स्त्री ) वह स्त्री जिस को पति पुत्र इत्यादि हैं ।
कुट्टनी ( स्त्री ) स्त्री पुरुष को मिलाने वाली स्त्री अर्थात् कुटनी ।
कुट्टमितम् ( नपुं० ) शृङ्गार रस में एक प्रकार का हाव अर्थात् सुख में भी हर्ष से दुःख के सदृश आचरण करना ।
कुट्टिम ( पुं० । नपुं० ) ( मः । मम् ) गच ।
कुठरः ( पुं० ) 'दण्डविष्कम्भ' में देखो [ कुटरः ]
कुठार ( पुं० । स्त्री ) ( रः । री ) कुल्हाड़ी ।
कुठेरकः ( पुं० ) पर्णास वा काठसरैया पुष्पवृक्ष ।
कुडवः ( पुं० ) नापने का पौवा ।

[ कुडपः ]
कुडङ्गकः ( पुं० ) वृक्षलता से भरी हुई जगह ।
कुड्मल ( पुं० । नपुं० ) ( लः । लम् ) थोड़ी फूली कली ।
कुड्यम् ( नपुं० ) भीत ।
कुणपः ( पुं० ) मुरदा वा मृत शरीर ।
कुणि ( त्रि० ) ( णिः । णिः । णि ) रोगादि से जिसका हाथ टेढ़ा हो गया है, ( पुं० ) तुन्न वृक्ष ।
कुण्ठ ( त्रि० ) ( ण्ठः । ण्ठा । ण्ठम् ) कामों में मन्द वा ढीला = ली वा सुस्त, भोंठरा = री ।
कुण्ड ( पुं० । नपुं० ) ( ण्डः । ण्डम् ) ( पुं० ) पति के जीते जो उपपति वा जार से उत्पन्न भया लड़का, ( नपुं० ) पानी वा आग का कुण्ड, रसोईं की बटलोही ।
कुण्डलम् ( नपुं० ) कान का कुण्डल ।
कुण्डलिन् ( त्रि० ) ( लि । लिनी । लि ) कुण्डलधारी, ( पुं० ) सर्प ।
कुण्डी ( स्त्री ) व्रतियों का जलपात्र ।
कुतप ( पुं० । नपुं० ) ( पः । पम् ) दिन का आठवाँ हिस्सा । [ कुतुप ]
कुतुकम् ( नपुं० ) तमाशा ।
कुतुपः ( पुं० ) कुप्पी ।
कुतूः ( स्त्री ) कुप्पा ।
कुतूहलम् ( नपुं० ) तमाशा ।
कुत्सा ( स्त्री ) निन्दा ।
कुत्सित ( त्रि० ) ( तः । ता । तम् ) अधम ।
कुथ ( त्रि० ) ( थः । था । थम् ) हाथी का झूल, ( पुं० । नपुं० ) कुश ।
कुद्रुः ( पुं० ) पालकी साग, कुंदुरू तरकारी ।
कुद्दालः ( पुं० ) खोदने की कुदारी, कचनार वृक्ष ।
कुनटी ( स्त्री ) खराब नाचनेवाली, नैपाल की मैनसिल ।
कुनाशकः ( पुं० ) जवासा वा हिंगुवा जिसमें काँटे होते हैं ।
कुन्तः ( पुं० ) भाला ।
कुन्तलः ( पुं० ) केश वा बाल ।
कुन्तलहस्तः ( पुं० ) केशसमूह ।
कुन्द ( पुं० । नपुं० ) ( न्दः । न्दम् ) कुन्द का फूल, ( पुं० ) कुन्द नामक एक पुष्पवृक्ष, एक निधि, कुन्दुरू तरकारी, पालकी साग ।
कुन्दरः ( पुं० ) कुन्दरू तरकारी पालकी साग ।
कुन्दुः ( पुं० ) तथा ।

कुन्दुरुः ( पुं० ) तथा ।
कुन्दुरुकी ( स्त्री ) साल वा सलई वृक्ष ।
कुपिद्धः ( पुं० ) जोलहा ।
कुपूय ( त्रि० ) ( यः । या । यम् ) अधम वा नीच [ कपूय ]
कुप्यम् ( नपुं० ) सोना चाँदी से अन्य द्रव्य अर्थात् ताँबा इत्यादि
कुवलम् ( नपुं० ) बहर का फल ।
कुवलयम् ( नपुं० ) कोईं कमल, पृथ्वीमण्डल ।
कुबेरकः ( पुं० ) तुन्न वृक्ष ।
कुबेराक्षी ( स्त्री ) पाँड़र वृक्ष ।
कुब्ज (त्रि०) (ब्जः । ब्जा । ब्जम्) कुबड़ा =ड़ी ।
कुमारः (पुं०) लड़का वा पहिली वय वाला वा बिनाब्याहा, युवराज, ( नाट्य में ) स्वामि-कार्त्तिक ।
कुमारकः ( पुं० ) वरुण वृक्ष ।
कुमारी ( स्त्री ) लड़की वा पहिली वय वाली स्त्री वा बिना-ब्याही, घिकुआर वृक्ष ।
कुमुद ( पुं० । नपुं० ) (दः । दम्) (पुं०) नैर्ऋत्य कोण का दिग्गज, (नपुं०) श्वेत कमल वा कोईं ।
कुमुदबान्धवः ( पुं० ) चन्द्रमा ।
कुमुदिका ( स्त्री ) कायफल ।
कुमुदिनी ( स्त्री ) कुमुद लता, कुमुदयुक्त देश ।
कुमुद्वती ( स्त्री ) तथा ।
कुमुद्वत् ( त्रि० ) ( द्वान् । द्वती । द्वत् ) वह स्थान जिसमें बहुत कोईं होंयं ।
कुम्बा ( स्त्री ) यज्ञभूमि में शूद्रादि के न देखने के लिये जो वेष्टन अर्थात् वस्त्रादि का घेरा ।
कुम्भ ( पुं० । नपुं० ) ( म्भः । म्भम् ) गूगुल का वृक्ष, ( पुं० ) घड़ा, हाथी के मस्तक के टूहे, कुम्भराशि ।
कुम्भकारः ( पुं० ) कोंहार ।
कुम्भसम्भवः (पुं०) अगस्त्य ऋषि ।
कुम्भिका ( स्त्री ) जलकुम्भी एक प्रकार का जलवृक्ष ।
कुम्भिनी ( स्त्री ) पृथिवी ।
कुम्भिन् ( पुं० ) ( म्भी ) हाथी, कायफल ।
कुम्भीनसः ( पुं० ) धामिन साँप ।
कुम्भीरः ( पुं० ) नाक जलजन्तु ।
कुम्भोलुः ( पुं० ) गूगुल का वृक्ष ।
कुम्भोलूखलकम् ( नपुं० ) तथा ।
कुरङ्गः ( पुं० ) हरिण वा मृग ।
कुरण्टकः ( पुं० ) पीले फूल वाली कठसरैया ।
कुररः ( पुं० ) कुररी पक्षी ।

कुरवकः ( पुं० ) लाल फूल वाली कठसरैया, कोरैया पुष्पवृक्ष ।
कुरुवकः ( पुं० ) तथा ।
कुरुविन्दः ( पुं० ) एक प्रकार का मणि, मोथा घास ।
कुरुविस्तः (पुं०) पल भर सोना ।
कुर्कुरः ( पुं० ) कुत्ता ।
कुलम् ( नपुं० ) समान जाति वालों का समूह ।
कुलक (पुं० । नपुं०) (कः । कम) (पुं०) कारीगरों का सरदार, कुचिला विष, (नपुं०) पाँच इत्यादि श्लोकों का समूह जिन का एक में अन्वय होय, परवर तरकारी ।
कुलटा ( स्त्री ) बहुत पुरुषों से सङ्ग करने वाली स्त्री ।
कुलत्थिका ( स्त्री ) नीला सुरमा, कुरथी एक प्रकार का अन्न ।
कुलपालिका ( स्त्री ) जो स्त्री बुरे कर्म को बचाय कुल की रक्षा करै।
कुलश्रेष्ठिन् ( पुं० ) ( ष्ठी ) कारीगरों का सरदार ।
कुलसम्भव (त्रि०) (वः । वा । वम्) कुलीन वा अच्छे कुल में उत्पन्न।
कुलस्त्री ( स्त्री ) 'कुलपालिका' में देखो ।
कुलायः (पुं०) पक्षियों का खोथा ।
कुलालः ( पुं० ) कोंहार ।
कुलाली ( स्त्री ) नीला सुरमा ।
कुलिकः (पुं०) कारीगरों का प्रधान ।
कुलिन् ( पुं० ) ( ली ) कुलीन ।
कुलिश (पुं० । नपुं० ) (शः । शम्) वज्र ।
कुली ( स्त्री ) भटकटैया ।
कुलीनः ( पुं० ) कुलीन वा अच्छे कुल में उत्पन्न ।
कुलीरः (पुं०) केकड़ा जलजन्तु ।
कुल्माष (पुं०। नपुं०) ( षः । षम् ) ( पुं० ) यव इत्यादि जो आधा पका है [ कुल्मासः ] ( नपुं० ) काँजी ।
कुल्माषाभिषुतम् (नपुं०) काँजी ।
कुल्यम् ( नपुं० ) हाड़ ।
कुल्या ( स्त्री ) कृत्रिम छोटी नदी वा नहर ।
कुवलम् ( नपुं० ) बदर का फल ।
कुवाद ( त्रि० ) ( दः । दा । दम् ) जिसका निन्दा करने का स्वभाव है ।
कुविन्दः ( पुं० ) जोलहा ।
कुवेणी ( स्त्री ) मछली रखने की थैली ।
कुवेरः ( पुं० ) कुवेर दिक्पाल ।

कुश (पुं० । नपुं०) (शः । शम्) कुश एक तरह की घास, (नपुं०) जल ।

कुशल (त्रि०) (लः । ला । लम्) चतुर, सामर्थ्ययुक्त, कल्याण-वाला = ली, (नपुं०) सामर्थ्य, क्षेम, पुण्य, कल्याण ।

कुशी (स्त्री) लोहे की फार जो हल में लगती है ।

कुशीलवः (पुं०) कत्थक ।

कुशेशयम् (नपुं०) कमल ।

कुष्ठम् (नपुं०) कुष्ट ओषधी, सपे-द कोढ़ रोग ।

कुष्माण्डकः (पुं०) कोंहड़ा तर-कारी, ककड़ी ।

कुसीदम् (नपुं०) ब्याज वा सूद। [कुशीदम्] [कुषीदम्]

कुसीदिकः (पुं०) ब्याज से जीने वाला ।

कुसुमम् (नपुं०) पुष्प वा फूल ।

कुसुमाञ्जनम् (नपुं०) गरम किये पीतल से जो मैल निकलती है उससे बनाया भया सुरमा ।

कुसुमेषुः (पुं०) कामदेव ।

कुसुम्भ (पुं० । नपुं०) (म्भः । म्भम्) (पुं०) कमण्डल (नपुं०) कुसुम का फूल ।

कुसृतिः (पुं०) धूर्तता ।

कुस्तुम्बुरुः (स्त्री) धनिया वृक्ष । [कुस्तुम्बरी]

कुहना (स्त्री) अर्थ के लाभ की इच्छा से मिथ्या ध्यान मौन वैराग्य इत्यादि धर्म का ग्रहण करना ।

कुहरम् (नपुं०) बिल ।

कुहूः (स्त्री) जिस अमावस को चन्द्र की कला नष्ट होजाती है वह अमावस ।

कूकुदः (पुं०) जो मनुष्य सत्कार-पूर्वक कन्या को भूषित करके दान देता है । [कुकुदः]

कूट (पुं० । नपुं०) (टः । टम्) पर्वत की चोटी वा शृङ्ग, धा-न्यादि की ढेरी, माया वा छल, निश्चल निर्विकार वस्तु जैसा आकाश, मृग फसाने का जाल, असत्य, लोहा कूटने का घन, हल का अग्रभाग ।

कूटयन्त्रम् (नपुं०) मृग और प-क्षियों के बझाने के लिये जाल इत्यादि ।

कूटशाल्मलिः (पुं०) काला सेमर वृक्ष । [कूटशाल्मलिन्—(ली)]

कूटस्थ (त्रि०) (स्थः । स्था । स्थ-म्) निश्चल होकर स्थिर र-हनेवाला पदार्थ जैसा आका-

शादि ।

कूपः ( पुं० ) कूवाँ वा इनारा ।

कूपकः ( पुं० ) नाव का गुनरखा, नाव बाँधने का खूंटा, सूखी नदी इत्यादि में खोदा हुआ कूवाँ ।

कूबरः ( पुं० ) रथ में जहाँ घोड़ा बाँधा जाता है वह काष्ठ वा जूआ के काठ के बाँधने का स्थान ।

कूर्च (पुं० । नपुं०) दाढी का बाल, दोनो भौं का मध्य स्थान ।

कूर्चशीर्षः ( पुं० ) अष्टवर्गान्तर्गत जीवक ओषधी ।

कूर्चिका ( स्त्री ) कूंची, फटा दूध ।

कूर्दनम् ( नपुं० ) कूदना, गेंदा इत्यादि से खेलना ।

कूर्परः ( पुं० ) हाथ की केहुनी । [ कुर्परः ]

कूर्पासकः ( पुं० ) कञ्चुकी वा अंगरखा वा चोलिया ।

कूर्मः ( पुं० ) कछुआ जलजन्तु ।

कूलम् ( नपुं० ) नदी इत्यादि जलाशय का तीर ।

कूलङ्कषा ( स्त्री ) नदी ।

कूष्माण्डकः ( पुं० ) कोंहड़ा तरकारी, ककड़ी ।

कृकणः ( पुं० ) करैटू चिड़िया ।

कृकलासः ( पुं० ) गिरगिट जन्तु । [ कृकजासः ] [ कृकलाशः ]

कृकवाकुः ( पुं० ) मुरगा ।

कृकाटिका (स्त्री) गले की घाँटी ।

कृच्छ्र ( त्रि० ) ( चकुः । चक्रा । चक्रम् ) दुःखी ( नपुं० ) शरीर की पीड़ा वा दुःख, सान्तपन चान्द्रायण प्राजापत्य और पराक ये चारो इस नाम से कहे जाते हैं ।

कृत ( त्रि० ) ( तः । ता । तम् ) किया गया = ई, ( नपुं० ) पूर्ण वा बस, सत्ययुग, क्रिया ।

कृतपुङ्खः ( पुं० ) अच्छी तरह जो बाण चलाने जानता है ।

कृतमालः (पुं०) अमिलतास वृक्ष ।

कृतमुख ( त्रि० ) ( खः । खा । खम् ) निपुण वा चतुर ।

कृतलक्षण ( त्रि० ) ( णः । णा । णम् ) शौर्यादि गुणों से प्रसिद्ध ।

कृतसापत्निका ( स्त्री ) जिस पुरुष ने अनेक विवाह किये हैं उसकी प्रथम विवाहिता स्त्री । [ कृतसापत्नका ]

कृतहस्तः ( पुं० ) बाण चलाने में दक्ष वा चतुर ।

कृतान्तः (पुं०) यमराज, सिद्धान्त, भाग्य, पाप ।

कृतिन् ( त्रि० ) (ती । तिनी । ति) निपुण वा चतुर, पण्डित ।
कृत्त ( त्रि० ) ( त्तः । त्ता । त्तम् ) काटा हुआ = ई, खण्डित ।
कृत्तिः ( स्त्री ) मृग इत्यादि का चमड़ा ।
कृत्तिवासस् ( पुं० ) ( साः ) शिव।
कृत्य ( त्रि० ) ( त्यः । त्या । त्यम्) धन स्त्री भूमि इत्यादि से फोड़ने के योग्य शत्रु का पुरुष इत्यादि, ( स्त्री ) तामसी देवता जिसको लोग शत्रु पर चलाते हैं, ( नपुं० ) क्रिया वा कर्म ।
कृत्रिमधूपकः ( पुं० ) कई एक सुगन्धद्रव्य से बना हुआ धूप ।
कृत्स्न ( त्रि० ) (त्स्नः । त्स्ना । त्स्नम्) समग्र वा सम्पूर्ण ।
कृपण ( त्रि० ) ( णः । णा । णम् ) दीन वा गरीब, सूम ।
कृपा ( स्त्री ) दया, करुणारस ।
कृपाणः ( पुं० ) तलवार वा खड्ग ।
कृपाणी ( स्त्री ) सुवर्णादि के पात्र काटने की छुरी वा एक प्रकार की कैंची ।
कृपालु (त्रि०) (लुः।लुः।लु) दयावान्
कृपीटयोनिः ( पुं० ) अग्नि ।
कृमिः ( पुं० ) एक प्रकार के छोटे छोटे कीड़े । [ क्रिमिः ]
कृमिघ्नः (पुं०) वाभीरंग ओषधी ।
कृमिजम् ( नपुं० ) अगर एक चन्दन ।
कृश ( त्रि० ) ( शः । शा । शम् ) दुबला = ली, सूक्ष्म ।
कृशानुः ( पुं० ) अग्नि ।
कृशानुरेतस् ( पुं० ) ( ताः ) शिव ।
कृशाश्विन् (पुं०) (श्वी) नापित वा हज्जाम ।
कृषक ( पुं० । स्त्री ) ( षकः । षिका ) हर का फार [कृषिक] ( पुं० ) खेतिहर [ कृषिकः ]
कृषिः ( स्त्री ) खेती ।
कृषिकः ( पुं० ) खेतिहर ।
कृषीवलः ( पुं० ) तथा ।
कृष्ट ( त्रि० ) ( ष्टः । ष्टा । ष्टम् ) जोता हुआ खेत इत्यादि।
कृष्टि ( पुं० । स्त्री ) ( ष्टिः । ष्टिः ) जोतना, पण्डित ।
कृष्ण (त्रि०) (ष्णः । ष्णा । ष्णम्) काला रङ्ग वाला = ली ( पुं० ) कृष्ण भगवान्, काला रङ्ग, ( स्त्री ) द्रौपदी पाण्डवों की स्त्री, भटकटैया एक लता, पीपर ओषधी, ( नपुं० ) मिरिच एक तीता दाना ।
कृष्णपाकफलः (पुं०) करौंदा फल ।
कृष्णफला (स्त्री) बकुची ओषधी ।

कृष्णभेदा ( स्त्री ) कुटकी ।
कृष्णभेदी ( स्त्री ) तथा ।
कृष्णला ( स्त्री ) घुंघुची वृक्ष ।
कृष्णलोहित ( त्रि० ) ( तः । ता । तम् ) काला लाल मिश्रित रङ्ग वाला =ली, ( पुं० ) काला लाल मिश्रित रङ्ग ।
कृष्णवर्त्मन् (पुं०) (र्त्मा) अग्नि ।
कृष्णवृन्ता ( स्त्री ) पाँड़र वृक्ष ।
कृष्णसारः ( पुं० ) एक प्रकार का काला मृग ।
कृष्णायसम् ( नपुं० ) लोहा ।
कृष्णिका ( स्त्री ) राई एक चरफरा दाना ।
कृसरः ( पुं० ) तिल के सहित पकाया भात, खिचड़ी [कृशरः]
केकर ( त्रि० ) ( रः । री । रम् ) बाँड़ा =ड़ी जैसा बाँड़ा कुत्ता इत्यादि, तिरछी आँखवाला =ली ।
केका ( स्त्री ) मोर की बोली ।
केकिन् ( पुं० ) (की) मोर पक्षी ।
केतक ( त्रि० ) (कः । की । कम्) (पुं० । स्त्री) केवड़ा एक पुष्पवृक्ष, (नपुं०) केवड़ा का फूल ।
केतनम् ( नपुं० ) ध्वजा, घर, कार्य, आमन्त्रण ।
केतुः ( पुं० ) ध्वजा, एक ग्रह का नाम ।
केदरः (पुं०) एक प्रकार का व्यावहारिक पदार्थ, एक प्रकार का वृक्ष ।
केदारः ( पुं० ) खेत ।
केनिपातः (पुं०) नाव की पतवार ।
केनिपातकः ( पुं० ) तथा ।
केयूरम् ( नपुं० ) बिजायठ इत्यादि बाहु का भूषण ।
केलि (पुं० । स्त्री) (लिः । लिः—ली ) क्रीड़ा वा खेलना ।
केवल ( पुं० । नपुं० ) (लः । लम्) निर्णय किया गया (पुं०) 'एक' संख्या, सम्पूर्ण ।
केशः ( पुं० ) केश वा बाल ।
केशघ्नः ( पुं० ) जिस रोग से माथा इत्यादि के बाल झड़ जाते हैं वह रोग ।
केशपक्षः (पुं०) केशों का समूह ।
केशपर्णी ( स्त्री ) चिचिड़ा ।
केशपाशः (पुं०) केशों का समूह ।
केशपाशी ( स्त्री ) शिखा ।
केशरः (पुं० ) केसर सुगन्धपुष्पवृक्ष, मौलसरी पुष्पवृक्ष, घोड़ा व्याघ्र सिंह इत्यादि के गरदन पर के बाल, नागकेसर वृक्ष । [ केसरः ]
केशरिन् ( पुं० ) ( री ) सिंह,

घोड़ा, व्याघ्र [ केसरिन्—(री) ]
केशवः ( पुं० ) कृष्ण भगवान्, अच्छे केश वाला ।
केशवत् ( त्रि० ) ( वान् । वती । वत् ) अच्छे केश वाला = ली ।
केशवेशः ( पुं० ) चोटी वा जूड़ा ।
केशाम्बुनामन् ( नपुं० ) ( म ) नेत्रवाला ओषधी ।
केशिक (त्रि०) ( कः । की । कम् ) अच्छे केश वाला = ली ।
केशिनी ( स्त्री ) शंखाहुली लता ।
केशिन् (त्रि०) (शी । शिनी । शि) अच्छे केश वाला = ली ।
केसरः (पुं०) नागचम्पा, "केशर" में देखो ।
केसरिन् (पुं०) (री) सिंह, घोड़ा, व्याघ्र ।
कैटभजित् (पुं०) कृष्ण भगवान् ।
कैटर्यः (पुं०) कायफल । [ कैडर्यः ]
कैतवम् ( नपुं० ) जूवा, धूर्तपना ।
कैदारम् ( नपुं० ) खेतों का समूह ।
कैदारकम् ( नपुं० ) तथा ।
कैदारिकम् ( नपुं० ) तथा ।
कैदार्यम् ( नपुं० ) तथा ।
कैरवम् ( नपुं० ) श्वेत कोंई वा कमल ।
कैलासः ( पुं० ) शिव के रहने का पर्वत, कुवेर का स्थान ।
कैवर्तः ( पुं० ) मल्लाह ।
कैवर्तमुस्तकम् (नपुं०) मोथा घास । [ कैवर्तिमुस्तकम् ] [ कैवर्तीमुस्तकम् ]
कैवल्यम् (नपुं०) एकता, मोक्ष ।
कैशिकम् (नपुं०) केशों का समूह ।
कैश्यम् ( नपुं० ) तथा ।
कोकः ( पुं० ) चकवा पक्षी, हुंड़ार जन्तु ।
कोकनदम् (नपुं०) लाल कमल ।
कोकनदच्छवि ( त्रि० ) ( विः । विः । वि ) लाल कमल के सदृश लाल रंग वाला = ली, ( पुं० ) लाल कमल के सदृश लाल रंग ।
कोकिलः ( पुं० ) कोकिल पक्षी ।
कोकिलाक्षः (पुं०) तालमखाना ।
कोटर (पुं० । नपुं०) ( रः । रम् ) वृक्ष का खोंढ़रा वा बिल ।
कोटवी (स्त्री) नङ्गी स्त्री । [ कोट्टवी ]
कोटिः ( स्त्री ) धनुष् का टोंका, उत्कृष्टता, कोना, खड्ग इत्यादि का टोंका, करोड़ सङ्ख्या । [ कोटी ]
कोटिवर्षा ( स्त्री ) अस्यरक ।
कोटिशः ( पुं० ) ढेला का फोड़ने वाला मुद्गर इत्यादि । [ कोटीशः ]
कोट्टः ( पुं० ) कोट ।
कोट्टारः ( पुं० ) शहर का कूवाँ,

पोखरी का पाट ।

कोठः (पुं०) मण्डलाकार कुष्ठ अर्थात् देह पर गोल २ चकोटे पड़ती है(कोई उसको "गजकर्ण" भी कहते हैं)।

कोणः पुं० ) कोना, खड्ग इत्यादि का टोंका, सितार इत्यादि बजाने का मेज़राब ।

कोदण्ड ( पुं० । नपुं० ) ( ण्डः । ण्डम् ) धनुष् ।

कोद्रवः ( पुं० ) कोदो अन्न । [ कुद्रवः ]

कोपः ( पुं० ) क्रोध ।

कोपन ( त्रि० ) (नः । ना । नम्) क्रोध वाला = ली ।

कोपनी ( स्त्री ) क्रोधवती स्त्री ।

कोपिन् ( त्रि० ) ( पी । पिनी । पि ) क्रोधवाला = ली ।

कोमल (त्रि०) ( लः । ला । लम् ) कोमल ।

कोयष्टिकः (पुं०) एक प्रकार का पक्षी ।

कोरक (पुं० । नपुं०) (कः । कम्) फूल इत्यादि की कली ।

कोरङ्गी ( स्त्री ) छोटी लाइची ।

कोरदूषः ( पुं० ) कोदो अन्न ।

कोल ( त्रि० ) (लः । ला । लम्) (पुं० ) तृणइत्यादि से जल-पार उतरने के लिये बनाई हुई बरनई इत्यादि, सूअर, ( स्त्री ) छोटी पीपर, बइरवृक्ष, ( नपुं० ) बइर का फल ।

कोलकम् ( नपुं० ) मिरिच, गहुला फल वा कक्कोल ।

कोलदलम् ( नपुं० ) नख नामक गन्धद्रव्य ।

कोलम्बकः ( पुं० ) तार को छोड़ बाकी वीणा का शरीर ।

कोलवल्ली ( स्त्री ) गजपीपर ।

कोलाहलः ( पुं० ) कोलाहल वा बहुत मनुष्यों का मिल के शब्द वा मनुष्य इत्यादि प्राणियों का मिल के शब्द ।

कोलिः (स्त्री) बइर वृक्ष । [कोली]

कोविद ( त्रि० ) (दः । दा । दम्) पण्डित वा चतुर वा निपुण ।

कोविदारः (पुं०) कचनार वृक्ष ।

कोश (पुं० । नपुं०) ( शः । शम् ) अण्डा, सोना चाँदी गढ़ा वा बेगढ़ा, [कोष] ( नपुं० ) जायफल ।

कोशफलम् ( नपुं० ) गहुला फल वा कक्कोल ।

कोशातकिन् ( पुं० ) ( की ) एक प्रकार का फल, परवर तरकारी, चिचिड़ा वृक्ष ।

कोष (पुं० । नपुं०) (षः । षम्) पुष्प की कली, तरवार का घर वा म्यान, ख़ज़ाना, शपथ [ कोश ]
कोष्ठः (पुं०) पेट का भीतरी हिस्सा वा कोठा, कोठिला वा बखार वा कोठी, घर का भीतरी हिस्सा वा कोठा वा कोठरी ।
कोष्ण (त्रि०) (ष्णः । ष्णा । ष्णम्) थोड़ा गरम वस्तु, ( नपुं० ) थोड़ा गरम ।
कौक्कुटिकः ( पुं० ) माया वा इन्द्रजाल करने वाला ।
कौक्षेयकः ( पुं० ) तरवार ।
कौटतक्षः ( पुं० ) स्वतन्त्र बढ़ई ।
कौटिकः ( पुं० ) मांस का रोज़गारी ।
कौडविक (त्रि०) (कः । की । कम्) जिसमें कुडव भर अन्न बोया जा सकता है वह खेत इत्यादि (कुडव एक नपुवे का नाम है )
कौणपः ( पुं० ) राक्षस ।
कौतुकम् (नपुं०) तमाशा ।
कौतूहलम् ( नपुं० ) तथा ।
कौद्रवीणम् (नपुं०) कोदो का खेत।
कौन्तिकः ( पुं० ) भाला को धारण करनेवाला ।
कौन्ती ( स्त्री ) रेणुकबीज नामक गन्धद्रव्य ।
कौपीनम् ( नपुं० ) करने के अयोग्य अर्थात् पाप, स्त्री वा पुरुष का मूत्रस्थान, पहिरने का लंगोट ।
कौमारी (स्त्री) कुमारशक्ति देवता ।
कौमुदी ( स्त्री ) चन्द्र का प्रकाश वा अंजोरिया ।
कौमोदकी (स्त्री) कृष्ण की गदा ।
कौलटिनेयः ( पुं० ) भीख माँगने के लिये घर२ जाने वाली पतिव्रता स्त्री का बेटा ।
कौलटेयः ( पुं० ) तथा, कुलटा का पुत्र वा वेश्या का पुत्र ।
कौलटेरः ( पुं० ) कुलटा का पुत्र वा वेश्या का पुत्र ।
कौलीनम् ( नपुं० ) लोकापवाद वा लोकनिन्दा, पशु सर्प पक्षी का युद्ध ।
कौलेयकः ( पुं० ) कुत्ता ।
कौशिकः (पुं०) विश्वामित्र ऋषि [ कौषिकः ], इन्द्र, उल्लू पक्षी, गुग्गुल, साँप का पकड़ने वाला ।
कौशिकी (स्त्री) एक नदी का नाम।
कौशेयम् (नपुं०) रेशम का वस्त्र ।
कौस्तुभः ( पुं० ) कृष्ण के गले का मणि ।
क्रकच (पुं० । नपुं०) (चः । चम्) आरा।

क्रकरः (पुं०) करील वा टेंटी वृक्ष, करेटु पक्षी ।
क्रतुः (पुं०) यज्ञ वा याग, सप्तर्षियों में एक ऋषि ।
क्रतुध्वंसिन् (पुं०) (सी) शिव ।
क्रतुभुज् (पुं०) (क्—ग्) देवता ।
क्रथनम् (नपुं०) मार डालना ।
क्रन्दनम् (नपुं०) रोना, पुकारना, योद्धों का धमकी से ललकारना।
क्रन्दितम् (नपुं०) रोना ।
क्रमः (पुं०) क्रम वा परिपाटी, नियोगशास्त्र ।
क्रमुकः (पुं०) सुपारी वृक्ष, लाल लोध वृक्ष, तूत वृक्ष ।
क्रमेलकः (पुं०) ऊंट ।
क्रयविक्रयिकः (पुं०) बनियाँ ।
क्रयिकः (पुं०) खरीददार ।
क्रय्य (त्रि०) (य्यः । य्या । य्यम्) वेचने के लिये बजार में फैलाई हुई वस्तु ।
क्रव्यम् (नपुं०) माँस ।
क्रव्यादः (पुं०) राक्षस ।
क्रव्याद् (पुं०) (त्—द्) तथा ।
क्रायिकः (पुं०) खरीददार ।
क्रिमिः (पुं०) छोटा कीड़ा (प्रनारे इत्यादि में का) ।
क्रिया (स्त्री) क्रिया वा कर्म, आरम्भ, प्रायश्चित्त, शिक्षा, पूजन, विचार, उपाय, चेष्टा, दवाई करना ।
क्रियावत् (त्रि०) (वान् । वती । वत्) पण्डित, कामों में तैयार।
क्रीड़ा (स्त्री) खेलना ।
क्रुङ् (पुं०) (ङ्) करांकुल पक्षी।
क्रुध् (स्त्री) (त्—द्) क्रोध ।
क्रुष्टम् (नपुं०) रोना ।
क्रूर (त्रि०) (रः । रा । रम्) कठोर वस्तु, परद्रोही, दयारहित ।
क्रेतव्य (त्रि०) (व्यः । व्या । व्यम्) खरीदने के योग्य वस्तु ।
क्रेय (त्रि०) (यः । या । यम्) तथा।
क्रोड (त्रि०) (डः । डा । डम्) (पुं०) सूअर, (स्त्री) घोड़े की छाती, (पुं० । नपुं०) छाती, गोदी ।
क्रोधः (पुं०) क्रोध ।
क्रोधन (त्रि०) (नः । ना । नम्) क्रोधी ।
क्रोष्टु (पुं०) (ष्टा) सियार जन्तु ।
क्रोष्टुविन्ना (स्त्री) पिठवन औषधी।
क्रोष्ट्री (स्त्री) सियारिन, सफेद भुइंकोंहड़ा ।
क्रौञ्चः (पुं०) करांकुल पक्षी, एक पर्वत ।
क्रौञ्चदारणः (पुं०) स्वामिकार्तिक।

क्लमः ( पुं० ) ग्लानि वा खेद ।
क्लमथः ( पुं० ) तथा ।
क्लिन्न ( त्रि० ) ( न्नः । न्ना । न्नम् ) ओदा = दी ।
क्लिन्नाक्ष (त्रि०) (क्षः । क्षी । क्षम्) जिसकी आँखें रोग से सदा डबडबानी रहती हैं ( नपुं० ) रोगयुक्त नेत्र ।
क्लिशित ( त्रि० ) (तः । ता । तम् ) क्लेश को प्राप्त भया = ई ।
क्लिष्ट ( त्रि० ) ( ष्टः । ष्टा । ष्टम् ) तथा, ( नपुं० ) विरुद्ध बोलना जैसा,—'मेरी माता वन्ध्या है', क्लेश ।
क्लीतकम् (नपुं०) जेठीमधु ओषधी ।
क्लीतकिका ( स्त्री ) नील ।
क्लीव ( त्रि० ) ( वः । वा । वम् ) पराक्रमरहित, (पुं०) नपुंसक ।
क्लेशः ( पुं० ) क्लेश ।
क्लोमन् ( नपुं० ) ( म ) पेट में जल रहने का स्थान । [क्लोमम्]
क्वणः (पुं०) भूषण का शब्द, शब्द करना ।
क्वणनम् ( नपुं० ) तथा ।
क्वथित ( त्रि० ) ( तः । ता । तम् ) अच्छी तरह से पकाया गया काढ़ा इत्यादि ।
क्वाणः ( पुं० ) भूषण का शब्द ।
क्षणः ( पुं० ) तीस कला समय, उत्सव, बेकाम बैठना वा विश्राम करना ।
क्षणदा ( स्त्री ) रात्रि ।
क्षणनम् ( नपुं० ) मार डालना ।
क्षणप्रभा ( स्त्री ) बिजुली ।
क्षतजम् ( नपुं० ) लोहू ।
क्षतव्रतः ( पुं० ) जिस का ब्रह्मचर्य्य नष्ट हो गया है ।
क्षत्तृ ( पुं० ) (त्ता) सारथी, शूद्र से क्षत्रिया में उत्पन्न, द्वारपाल ।
क्षत्रियः ( पुं० ) क्षत्रिय ।
क्षत्रिया ( स्त्री ) क्षत्रिय जाति वाली स्त्री ।
क्षत्रियाणी ( स्त्री ) तथा ।
क्षत्रियी ( स्त्री ) क्षत्रिय की स्त्री ।
क्षन्तृ ( त्रि० ) (न्ता । न्त्री । न्तृ) क्षमावाला = ली ।
क्षपा ( स्त्री ) रात्रि ।
क्षपाकरः ( पुं० ) चन्द्र ।
क्षम ( त्रि० ) ( मः । मा । मम् ) योग्य, समर्थ, हित ।
क्षमा ( स्त्री ) पृथ्वी, क्षमा वा सहना ।
क्षमितृ ( त्रि० ) ( ता । त्री । तृ ) क्षमावाला = ली ।
क्षमिन् ( त्रि० ) ( मी । मिनी । मि ) तथा ।

क्षयः ( पुं० ) नाश, प्रलय, राजयक्ष्मा वा क्षय रोग, घर, कम हो जाना वा घट जाना।
क्षवः ( पुं० ) छींक, राई एक चरफरा दाना।
क्षवथुः ( पुं० ) छींक, खोंखी।
क्षान्त ( त्रि०) (न्तः । न्ता । न्तम्) क्षमा किया गया = ई।
क्षान्तिः ( स्त्री ) क्षमा।
क्षार ( त्रि० ) ( रः । रा । रम् ) खारी वस्तु, ( पुं० ) खारा रस, काँच।
क्षारकः ( पुं० ) नई कली, कलियों का समूह वा गुच्छा।
क्षारमृत्तिका (स्त्री) खारी मट्टी।
क्षारित ( त्रि० ) ( तः । ता । तम्) लोकापवाददूषित वा लोकनिन्दित।
क्षितिः (स्त्री) भूमि, क्षय, रहना, कालभेद।
क्षिपा ( स्त्री ) फेंकना वा चलाना वा प्रेरण करना।
क्षिप्त ( त्रि० ) ( प्तः । प्ता । प्तम् ) फेंका गया वा चलाया गया बाण इत्यादि।
क्षिप्नु ( त्रि० ) ( प्नुः । प्नुः । प्नु ) निराकरण करने वाला = ली वा दुरदुराने वाला = ली।
क्षिप्र ( त्रि० ) ( प्रः । प्रा । प्रम् ) जल्दी बाज, ( नपुं० ) जल्दी।
क्षिया (स्त्री) घटना वा कम होना, बड़े का अनादर करना।
क्षीरम् ( नपुं० ) जल, दूध।
क्षीरविदारी (स्त्री) भुइंकोंहड़ा।
क्षीरशुक्ला ( स्त्री ) सफेद भुइंकोंहड़ा।
क्षीरसागरकन्यका (स्त्री) लक्ष्मी।
क्षीराब्धितनया ( स्त्री ) तथा।
क्षीरावी ( स्त्री ) दुधिया औषधी।
क्षीरिका ( स्त्री ) खिरनी फल।
क्षीरोदः ( पुं० ) दूध का समुद्र।
क्षीरोदतनया ( स्त्री ) लक्ष्मी।
क्षीव ( त्रि० ) ( वः । वा । वम् ) मतवाला = ली।
क्षीवन् ( त्रि० ) ( वा । व्नी । व ) तथा।
क्षुतम् ( नपुं० ) छींक।
क्षुत् ( स्त्री ) तथा।
क्षुताभिजननः ( पुं० ) राई एक चरफरा दाना।
क्षुद्र ( त्रि० ) ( द्रः । द्रा । द्रम् ) क्रूर, अधम, अल्प वा थोड़ा = ड़ी, सूम, ( स्त्री ) मधुमाछी, भटकटैया, हीन अंग वाली स्त्री, नटी, वेश्या।
क्षुद्रघण्टिका ( स्त्री ) एक प्रकार

का स्त्री के कमर का गहना, घुंघुरू ।
क्षुद्रशङ्खः ( पुं० ) छोटा शङ्ख ।
क्षुधित ( त्रि० ) (तः । ता । तम् ) भूखा = खी ।
क्षुध् ( स्त्री ) ( त्—द् ) भूख ।
क्षुपः ( पुं० ) वह वृक्ष जिसकी शाखा वा जड़ दोनों सूक्ष्म हों।
क्षुमा ( स्त्री ) तीसी जिस से तेल निकलता है ।
क्षुरः ( पुं० ) छूरा, तालमखाना।
क्षुरकः ( पुं० ) तिलक वृक्ष ।
क्षुरप्रः ( पुं० ) एक प्रकार का बाण ।
क्षुरिन् ( पुं० ) ( री ) हज्जाम ।
क्षुरी ( स्त्री ) छूरी ।
क्षुल्लक ( त्रि० ) (कः । का । कम्) थोड़ा = ड़ी, नीच, छोटा = टी, दरिद्र ।
क्षेत्रम् (नपुं०) खेत, स्त्री, शरीर ।
क्षेत्रज्ञ ( त्रि० ) ( ज्ञः । ज्ञा । ज्ञम्) प्रवीण वा चतुर, (पुं०) आत्मा
क्षेत्राजीवः ( पुं० ) खेतिहर ।
क्षेपणम् ( नपुं० ) फेंकना ।
क्षेपणी ( स्त्री ) नाव का डाँड़ा ।
क्षेपिष्ठ ( त्रि० ) ( ष्ठः । ष्ठा । ष्ठम् ) जलदीबाज ।
क्षेम ( त्रि० ) ( मः । मा । मम् ) कल्याणवाला = ली, ( पुं० ) चोर नामक गन्धद्रव्य, ( पुं० । नपुं० ) कल्याण ।
क्षैत्रम् ( नपुं० ) खेतों का समूह ।
क्षोणी ( स्त्री ) पृथ्वी [ क्षोणिः ]
क्षोदः ( पुं० ) चूर वा बुकनी ।
क्षोदिष्ठ ( त्रि० ) ( ष्ठः । ष्ठा । ष्ठम् ) अत्यन्त क्षुद्र वा अल्प, अत्यन्त क्रूर, अधम, अत्यन्त सूक्ष्म ।
क्षौद्रम् (नपुं०) मक्खी का सहद।
क्षौम ( पुं० । नपुं० ) ( मः । मम् ) अटारी ( नपुं० ) तीसी के छाल का कपड़ा, पट्टवस्त्र वा रेशम का कपड़ा ।
क्षौरम् ( नपुं० ) मुण्डन ।
क्ष्णुत ( त्रि० ) ( तः । ता । तम् ) सान रक्खी हुई छूरी इत्यादि ।
क्ष्मा ( स्त्री ) पृथ्वी ।
क्ष्माभृत् ( पुं० ) राजा, पर्वत ।
क्ष्वेडः ( पुं० ) विष वा जहर ।
क्ष्वेडा ( स्त्री ) वीरों का सिंह के सदृश गरजना, पिंजड़ा इत्यादि के बनाने के लिये बाँस की खमाची ।
क्ष्वेडितः ( पुं० ) वीरों का सिंह की नाईं गरजना ।

# ( ख )

ख ( पुं० । नपुं० ) ( खः । खम् ) (पुं०) स्वर्ग, सामान्य, (नपुं०) आकाश, इन्द्रिय, पुर, खेत, बिन्दु, संवेदन वा जनावना वा वाकिफ़ करना, सुख ।
खगः ( पुं० ) पक्षी, सूर्य, बाण ।
खगेश्वरः (पुं०) पक्षियों का स्वामी वा गरुड़ ।
खजाका ( स्त्री ) करछुल ।
खञ्ज ( त्रि० ) ( ञ्जः । ञ्जा । ञ्जम् ) लंगड़ा = ड़ी ।
खञ्जनः ( पुं० ) खिड़रिच पक्षी ।
खञ्जरीटः ( पुं० ) तथा ।
खटः ( पुं० ) अन्धा कूवाँ, तृण, कफ, टाँकी, प्रहार ।
खट्वा ( स्त्री ) खटिया ।
खड्गः ( पुं० ) तरवार, गैंड़ा वनजन्तु ।
खड्गिन् ( पुं० ) ( ड्गी ) तरवारवाला, गैंड़ा ।
खण्ड ( पुं० । नपुं० ) ( ण्डः । ण्डम् ) टुकड़ा, ( पुं० ) सक्कर ।
खण्डपरशुः ( पुं० ) शिव ।
खण्डविकारः ( पुं० ) सक्कर ।
खण्डिकः ( पुं० ) मटर अन्न ।
खदिरः ( पुं० ) खैर बीड़ा का मसाला ।
खदिरा ( स्त्री ) लजालू लता ।
खद्योतः ( पुं० ) जुगनू, सूर्य ।
खनकः (पुं०) खोदनेवाला, मूसा।
खनिः ( स्त्री ) खान ।[ खनी ]
खनित्रम् ( नपुं० ) कुदारी ।
खपुरः ( पुं० ) सुपारी बीड़ा का मसाला ।
खर ( त्रि० ) ( रः । रा । रम् ) तीखी वा तेज़ वस्तु, अत्यन्त गरम वस्तु, ( पुं० ) गदहा, ( नपुं० ) अत्यन्त गरम ।
खरणस ( त्रि० ) ( सः । सा । सम् ) तीखी नाकवाला = ली।
खरणस् ( त्रि० ) ( णाः । णाः । णः ) तथा ।
खरपुष्पा (स्त्री) 'तुङ्गी' में देखो ।
खरमञ्जरी ( स्त्री ) चिचिड़ा ।
खरा ( स्त्री ) वन्दाल ।
खरागरी ( स्त्री ) तथा ।
खराश्वा ( स्त्री ) मयूरशिखा ओषधी, अजमोदा ओषधी ।
खर्जूः ( स्त्री ) सूखी खजुरी ।
खर्जूर (पुं० । नपुं०) ( रः । रम्) ( पुं० ) खजूर वृक्ष, ( नपुं० ) चाँदी धातु [ खर्जुरम् ] ।
खर्जूरी ( स्त्री ) एक प्रकार का खजूर ।

खर्वः ( पुं० ) बवना, एक प्रकार का निधि ।
खल ( त्रि० ) ( लः । ला । लम् ) झगड़ा लगानेवाला = ली,(पुं०) खलिहान ।
खलकम् ( नपुं० ) गुग्गुल वृक्ष ।
खलपूः ( पुं० ) झाड़ू देनेवाला ।
खलिनी (स्त्री) खलों का समूह ।
खलीकारः (पुं०) दण्ड वा सजा, दोष ।
खलीन (पुं० । नपुं०) (नः । नम्) "कविका" में देखो । [खलिन]
खलु ( अव्यय ) निश्चय, निषेध वा मना करना, वाक्यालङ्कार में, जानने की इच्छा, बिन्ती ।
खलेदारु (नपुं०) "मेधि" में देखो
खल्या ( स्त्री ) खलों का समूह ।
खातम् (नपुं०) चौखूटा जलाशय।
खादित ( त्रि० ) (तः । ता । तम्) खायागया = ई ।
खारिः ( स्त्री) डेढ़मनी नपुवा । [ खारी ] [ खारः ]
खारीक (त्रि०) (कः । का । कम) खारीभर अन्न जिसमें बोया जाय वह ( खेत ) ।
खिल ( त्रि० ) ( लः । ला । लम् ) पूरा नहीं, हल से न जोता गया खेत इत्यादि ।
खुरः ( पुं० ) गैया इत्यादि का खुर, नखनामक गन्धद्रव्य ।
खुरणसः ( पुं० ) खुर के ऐसी नाकवाला ।
खुरणस् ( पुं० ) ( णाः ) तथा ।
खेटः ( पुं० ) छोटा ग्राम, अधम ।
खेटकः (पुं०) छोटा ग्राम, पीढ़ा, ढाल ।
खेयम् (नपुं०) किला के चारोओर की खाँईं ।
खेला ( स्त्री ) खेल वा क्रीड़ा ।
खोड ( त्रि० ) ( डः । डा । डम् ) लंगड़ा = ड़ी । [ खोर ]
ख्यात ( त्रि० ) ( तः । ता । तम् ) प्रसिद्ध वा मशहूर ।
ख्यातगर्हण ( त्रि० ) ( णः । णा । णम् ) निन्दित ।
ख्यातिः ( स्त्री ) प्रसिद्धि ।

—***—

# ( ग )

ग ( त्रि० ) ( गः । गा । गम् ) ( पुं० ) गणेश, गन्धर्व, (स्त्री) गाथा वा कथा, (नपुं०) गीत।

गगनम् ( नपुं० ) आकाश। [ गगणम् ]
गङ्गा ( स्त्री ) गङ्गा नदी।
गङ्गाधरः ( पुं० ) शिव।
गजः ( पुं० ) हाथी।
गजता (स्त्री) हाथियों का झुण्ड।
गजबन्धनी ( स्त्री ) हाथियों के बाँधने का स्थान वा गजशाला।
गजभक्षा ( स्त्री ) साल वा सलई वृक्ष।
गजभक्ष्या ( स्त्री ) तथा।
गजाननः ( पुं० ) गणेश।
गजारिः ( पुं० ) शिव।
गञ्जा ( स्त्री ) मद्यगृह वा हौली, खारा समुद्र।
गडकः ( पुं० ) एक मत्स्य।
गडुः ( पुं० ) कुबड़ा, फोड़ा।
गडुल ( त्रि० ) ( लः। ला। लम् ) कुबड़ा=ड़ी। [ गडुर ]
गणः ( पुं० ) समूह, शिव के अनुचर, वह सेना जिसमें २७ हाथी २७ रथ ८१ घोड़े १३५ पैदल रहते हैं, चोर नाम गन्धद्रव्य।
गणकः ( पुं० ) ज्योतिषी।
गणदेवता ( स्त्री ) १२ आदित्य १० विश्व ८ वसु ३६ तुषित ६४ आभास्वर ४९ अनिल २२० महाराजिक १२ साध्य ११ रुद्र—ये सब गणदेवता कहलाते हैं।
गणन ( स्त्री। नपुं० ) ( ना। नम् ) गिनना।
गणनीय ( त्रि० ) ( यः। या। यम् ) गिनने के योग्य।
गणरात्रम् ( नपुं० ) अनेक रात्रि।
गणरूपः ( पुं० ) मदार वृक्ष।
गणहासकः ( पुं० ) चोर नामक गन्धद्रव्य।
गणाधिपः ( पुं० ) गणेश।
गणिका (स्त्री) वेश्या, जूही पुष्प, हथिनी।
गणिकारिका ( स्त्री ) जयपर्णी वा अरणी वा अगेथू।
गणित ( त्रि० ) ( तः। ता। तम् ) गिना हुआ=ई, गणित।
गणेय ( त्रि० ) ( यः। या। यम् ) गिनने के योग्य।
गण्डः ( पुं० ) गाल, हाथी का मस्तक।
गण्डकः ( पुं० ) गैंड़ा वनजन्तु।
गण्डकारी ( स्त्री ) लजालू वृक्ष। [ गण्डकाली ]
गण्डकी ( स्त्री ) एक नदी।
गण्डशैलः ( पुं० ) बड़े बड़े पत्थर के ढोंके जो पर्वत के आस पास

पड़े रहती हैं।
गण्डाली ( स्त्री ) श्वेत दूर्वा।
गण्डीरः ( पुं० ) "समष्ठिला" में

गण्डूपदः ( पुं० ) केंचुवा कीड़ा।
गण्डूपदी (स्त्री) केंचुवा की स्त्री।
गण्डूषः ( पुं० ) हाथी के सूंड़ की अंगुलियाँ, अंजुरी से नपी हुई वस्तु, कुल्ला।
गण्डूषा ( स्त्री ) कुल्ला।
गत ( त्रि० ) ( तः। ता। तम् ) गया = ई वा प्राप्त भया = ई, ( नपुं० ) गमन।
गतनासिक ( त्रि० ) ( कः। का। कम् ) नकटा = टी।
गतिः (स्त्री) गमन, प्राप्ति, मोक्ष।
गदः (पुं०) रोग, कृष्ण का छोटा भाई।
गदा ( स्त्री ) गदा एक अस्त्र।
गद्यम् ( नपुं० ) ऐसा प्रबन्ध जो छन्द में न बंधा हो।
गन्त्री ( स्त्री ) छकड़ा।
गन्धः ( पुं० ) गन्ध, लेश, गन्धक धातु।
गन्धकः ( पुं० ) गन्धक धातु।
गन्धकुटी ( स्त्री ) मुरनामक गन्धद्रव्य।
गन्धनम् ( नपुं० ) सूचन करना वा चुगली खाना, हिंसा, उत्साह देना वा भरोसा देना।
गन्धनाकुली (स्त्री) रासन वृक्ष।
गन्धफली ( स्त्री ) गोंदी वृक्ष, चम्पा की कली।
गन्धमादन (पुं०। नपुं०) ( नः। नम् ) एक पर्वत।
गन्धमूली ( स्त्री ) आँबाहरदी। [ गन्धमूला ]
गन्धरसः (पुं०) गन्धरस वा बोर। [ रसगन्धः ]
गन्धर्वः (पुं०) विश्वावसु इत्यादि स्वर्ग के गवैये, घोड़ा, एक प्रकार का गन्धयुक्त मृग, जन्म मरण के योग्य अर्थात् मनुष्यादि प्राणी।
गन्धर्वहस्तकः ( पुं० ) रेंड़ वृक्ष।
गन्धवहः ( पुं० ) वायु।
गन्धवहा ( स्त्री ) नासिका।
गन्धवाहः ( पुं० ) वायु।
गन्धसारः ( पुं० ) मलयगिरि-चन्दन।
गन्धाश्मन् ( पुं० ) ( श्मा ) गन्धक धातु।
गन्धिकः ( पुं० ) तथा।
गन्धिनी ( स्त्री ) मुराख्य गन्धद्रव्य।
गन्धोत्तमा (स्त्री) मद्य वा मदिरा।

गन्धोली ( स्त्री ) गंधैली माक्षी ।
गभस्ति (पुं० । स्त्री) (स्तिः । स्तिः) किरण वा प्रकाश ।
गभीर ( त्रि० ) ( रः । रा । रम् ) गहिरा तलाव इत्यादि ।
गमः ( पुं० ) गमन वा यात्रा ।
गमनम् ( नपुं० ) तथा, स्त्री पुरुष का संयोग वा मैथन ।
गम्भारी (स्त्री) खभार वृक्ष, खभार का जड़ वा फूल ।
गम्भीर ( त्रि० ) (रः । रा । रम्) गहिरा तलाव इत्यादि ।
गम्य ( त्रि० ) (म्यः । म्या । म्यम्) गमन वा जाने के योग्य, प्राप्त करने के योग्य वा शक्य, मैथुन करने के योग्य ।
गरणम् ( नपुं० ) निगलना ।
गरलम् ( नपुं० ) विष ।
गरा ( स्त्री ) बन्दाल श्रोषधी ।
गरागरी ( स्त्री ) तथा ।
गरी ( स्त्री ) तथा ।
गरिमन् ( पुं० ) ( मा ) गरुता वा गरुआई ।
गरिष्ठ ( त्रि० ) ( ष्ठः । ष्ठा । ष्ठम् ) अत्यन्त भारी वा गरू वा बड़ा =ही ।
गरुडः (पुं०) गरुड़ वा विष्णु का वाहन पक्षी ।
गरुडध्वजः ( पुं० ) विष्णु ।
गरुडाग्रजः ( पुं० ) गरुड का बड़ा भाई अरुण वा सूर्य का सारथी।
गरुत् ( पुं० ) पक्षियों का पक्ष ।
गरुत्मान् ( पुं० ) गरुड़, पक्षी ।
गर्गरी ( स्त्री ) दही इत्यादि मथने का पात्र, पानी की गगरी।
गर्जित ( त्रि० ) (तः । ता । तम्) जो गर्जा है वा गर्जी है (पुं०) मद बहानेवाला हाथी (नपुं०) मेघ का शब्द ।
गर्त्तः ( पुं० ) गड़हा ।
गर्दभः ( पुं० ) गदहा पशु ।
गर्दभाण्डः ( पुं० ) गेठी वृक्ष ।
गर्द्धन ( त्रि० ) (नः । ना । नम् । लोभी ।
गर्भः (पुं०) स्त्री के पेट का गर्भ, पेट, बालक, नाट्य का तीसरा सन्धि ।
गर्भकः ( पुं० ) केशों के मध्य में धारण की हुई माला ।
गर्भागारम् (नपुं०) घर का मध्य-भाग ।
गर्भाशयः (पुं०) "जरायु" में देखो।
गर्भिणी ( स्त्री ) गर्भवती वा गाभिन ।
गर्भोपघातिनी ( स्त्री ) गर्भ गिरानेवाली गैया इत्यादि ।

गर्मुत् ( स्त्री ) सुवर्ण वा सोना, एक तरह की तृणजाति ।
गर्वः ( पुं० ) अहङ्कार ।
गर्वित ( त्रि० ) (तः । ता । तम्) अहङ्कारी ।
गर्हण (स्त्री । नपुं०) (णा । णम्) निन्दा करना ।
गर्ह्य (त्रि०) (र्ह्यः । र्ह्या । र्ह्यम्) निन्दा करने के योग्य, अधम ।
गर्ह्यवादिन् ( त्रि० ) (दी । दिनी दि ) निन्दित वचन बोलने वाला = ली ।
गलः ( पुं० ) गला ।
गलकम्बलः ( पुं० ) गैयों के गले में जो मांस लटकता है वह ।
गलन्तिका (स्त्री) पानी की झारी, "झर्झरी" में देखो ।
गलित ( त्रि० ) (तः । ता । तम्) गलपड़ा = ड़ी वा चुयपड़ा = ड़ी, गलगया = ई, पघिलगया = ई, सड़ गया = ई ।
गल्या (स्त्री) बड़े कांटों का समूह
गवयः ( पुं० ) एक जङ्गली मृग जो गैया के सदृश होता है जिसको "गवा" कहते हैं ।
गवलम् (नपुं०) भैंसे की सींग ।
गवाक्षः (पुं०) झरोखा वा मूका ।
गवाक्षी ( स्त्री ) एक प्रकार की ककड़ी ।
गवेधुः ( स्त्री ) कसई की बीया एक प्रकार का मुनि का अन्न ( कोंकण देश में इस को "कसाड़कसा" कहते हैं ) । [गवेडुः]
गवेधुका ( स्त्री ) तथा ।
गवेषणा ( स्त्री ) खोजना ।
गवेषित ( त्रि० ) (तः । ता । तम्) खोजागया = ई ।
गव्यम् (नपुं०) जो गैया से उत्पन्न भया (दूध इत्यादि) ।
गव्या ( स्त्री ) गैयों का समूह ।
गव्यूतिः ( स्त्री ) दो कोस ।
गहन ( त्रि० ) (नः । ना । नम्) दुर्गम वा भयङ्कर स्थान इत्यादि, (नपुं०) वन ।
गह्वरम् ( नपुं० ) पर्वत की कन्दरा, अहङ्कार ।
गह्वरी ( स्त्री ) पृथ्वी ।
गाङ्गेय (त्रि०) (यः । यी । यम्) गङ्गा सम्बन्धि वस्तु ( पुं० ) भीष्म कौरव के पितामह, ( नपुं० ) सुवर्ण वा सोना, कसेरू फल वा कन्द ।
गाङ्गेरुकी ( स्त्री ) नागबला वृक्ष ।
गाढ ( त्रि० ) ( ढः । ढा । ढम् ) अतिशयित वस्तु, ( नपुं० ) अतिशय ।

गाणिक्यम् (नपुं॰) वेश्याओं का झुण्ड ।

गाण्डीव ( पुं॰ । नपुं ) (वः । वम्) अर्जुन का धनुष् । [ गाण्डिव ] [ गाण्डीव ]

गात्रम् ( नपुं॰ ) शरीर वा देह, हाथियों का पूर्व जङ्घा इत्यादि अङ्ग ।

गात्रानुलेपनी ( स्त्री ) शरीर में लेपन के योग्य पीसा वा घंसा हुआ सुगन्धद्रव्य ।

गाधेयः (पुं॰) विश्वामित्र ऋषि ।

गानम् ( नपुं॰ ) गाना ।

गान्त्री ( स्त्री ) गाड़ी । [ गन्त्री ]

गान्धारः ( पुं॰ ) षड्ज इत्यादि सात स्वरों में तीसरा स्वर जैसा बकरा बोलता है ।

गायत्री ( स्त्री ) ब्राह्मणों का एक प्रकार का जप्य मन्त्र, एक प्रकार का छन्द, खैर (बीड़ा का मसाला ) ।

गारुत्मतम् (नपुं॰) पन्ना वा हरा मणि ।

गार्भिणम् ( नपुं॰ ) गर्भवतियों का समूह ।

गार्हपत्यः ( पुं॰ ) एक प्रकार का यज्ञ का अग्नि ।

गालवः ( पुं॰ ) एक ऋषि, लोध ।

गिरि (पुं॰ । स्त्री) (रिः । रिः—री ) ( पुं॰ ) पर्वत, ( स्त्री ) निगलना वा लीलना ।

गिरिकर्णी ( स्त्री ) विष्णुक्रान्ता वा कौवाठोंठी पुष्पवृक्ष ।

गिरिका ( स्त्री ) मुसरो वा मुष्टी जन्तु ।

गिरिजम् ( नपुं॰ ) सिलाजीत ।

गिरिजा ( स्त्री ) पार्वती ।

गिरिजामलम् (नपुं॰) अभ्रक वा अबरख ।

गिरिमल्लिका (स्त्री) कोरैया वृक्ष

गिरिशः ( पुं॰ ) शिव ।

गिरीशः ( पुं॰ ) तथा ।

गिर् ( स्त्री ) ( गीः ) वाणी, सरस्वती ।

गिलित (त्रि॰) ( तः । ता । तम् ) खायागया = ई वा लीलागया = ई ।

गीत ( त्रि॰ ) ( तः । ता । तम् ) गायागया = ई, ( स्त्री ) भगवद्गीता इत्यादि, (नपुं॰) गाना।

गीर्ण ( त्रि॰ ) ( र्णः । र्णा । र्णम् ) वर्णन कियागया अर्थ इत्यादि ।

गीर्णिः ( स्त्री ) निगलना ।

गीर्वाणः ( पुं॰ ) देवता ।

गीष्पतिः ( पुं॰ ) बृहस्पति ।

गुग्गुलुः ( पुं॰ ) गुग्गुल का वृक्ष । [ गुग्गुलः ]

गुच्छः (पुं०) गुच्छा, बत्तीस लड़ का हार । [ गुत्सः ]
गुच्छकः ( पुं० ) गुच्छा, वह कली जो फूलने चाहती है । [ गुच्छाकः ]
गुच्छार्द्धः (पुं०) चौबीस लड़ का हार । [ गुत्सार्द्धः ]
गुञ्जा ( स्त्री ) घुंघुची ।
गुडः ( पुं० ) गुड़, मट्टी इत्यादि का गोला ।
गुडपुष्पः ( पुं० ) महुवा वृक्ष ।
गुडफलः ( पुं० ) अखरोट मेवा ( गुजरात में इसको "पीलु" कहते हैं ) ।
गुडा ( स्त्री ) सेंहुड़ वृक्ष [ गुडी ]
गुडूची ( स्त्री ) गुरुच । [ गुडुची ]
गुणः (पुं०) 'रूप रस गन्ध स्पर्श' इत्यादि न्यायशास्त्रोक्त २४ गुण, शूरता सुन्दरता इत्यादि, डोरी, धनुष् की डोरी, सत्व रज और तम, शुक्ल नील पीत इत्यादि, रसोईदार, 'अ' 'ए' 'ओ' ( व्याकरण में इन तीनों कोगुण कहते हैं), सन्धि विग्रह यान आसन द्वैध आश्रय ( ये ६ गुण राजनीति के है) ।
सन्धि—धन दे के शत्रु को प्रीति बढ़ाना ।
विग्रहः—झगड़ा खड़ा करना।
यानम्—शत्रु पर चढ़ाई ।
आसनम्—अशक्ति के कारण क़िला इत्यादि दृढ़ स्थान बनाय कर उस में रहना ।
द्वैधम्—बली के साथ मेल और अबल के साथ विगाड़ करना
आश्रयः—शत्रु से पीड़ित होकर बलवान् राजा इत्यादि का अवलम्बन करना ।
गुणवृक्षकः ( पुं० ) नाव का गुनरखा, नाव बाँधने का खूंटा ।
गुणित ( त्रि० ) (तः । ता । तम्) गुणा हुवा = ई ।
गुण्ठित ( त्रि० ) (तः । ता । तम) धूल से भरा = री, लपेटा हुवा = ई ।
गुदम् ( नपुं० ) मल का द्वार वा विष्ठा निकलने की इन्द्रिय ।
गुन्द्र ( पुं० । स्त्री ) ( न्द्रः । न्द्रा ) ( पुं० ) सरहरी, (स्त्री) नागर मोथा, गोंदी वृक्ष ।
गुप्त ( त्रि० ) ( प्तः । प्ता । प्तम् ) छिपाहुआ = ई, रक्षित वा बचाया हुवा = ई ।
गुप्तिः ( स्त्री ) रक्षा, भूमिका गड्ढा, जेहलखाना ।
गुरणम् ( नपुं० ) बोझा उठाना

[ गूरणम् ]
गुरु (त्रि०) (रुः। रुः—र्वी। रु) भारी, (पुं०) बृहस्पति, बड़े लोग (पिता इत्यादि)।
गुर्विणी (स्त्री) गर्भवती स्त्री।
गुर्वी (स्त्री) भारी वस्तु (गदा-इत्यादि)।
गुल्फः (पुं०) पैर की घुट्ठी।
गुल्म (पुं०। स्त्री) (ल्मः। ल्मा) पिलही रोग, (पुं०) बिना डार का वृक्ष, एक प्रकार की सेना—जिस में ९ रथ ९ हाथी २७ घोड़े ४५ पैदल रहते हैं, (स्त्री) गुच्छा, सेना, सेना की रक्षा।
गुल्मिनी (स्त्री) शाखापत्रादिकों का समूह जिस में हो वह लता।
गुवाकः (पुं०) सुपारी वृक्ष वा फल। [ गूवाकः ]
गुहः (पुं०) स्वामिकार्तिक।
गुहा (स्त्री) पर्वत की कन्दरा, पिठवन औषधी।
गुह्य (त्रि०) (ह्यः। ह्या। ह्यम्) गोप्य वा छिपाने के योग्य, (नपुं०) स्त्री वा पुरुष का मूत्रेन्द्रिय।
गुह्यकः (पुं०) गुह्यक एक देवजाति।
गुह्यकेश्वरः (पुं०) कुबेर।
गूढ (त्रि०) (ढः। ढा। ढम्) छिपाहुवा = ई।
गूढपाद् (पुं०) (त्—द्) सर्प।
गूढपुरुषः (पुं०) हलकारा वा दूत वा भेदिया।
गूथ (पुं०। नपुं०) (थः। थम्) विष्ठा वा गूह।
गून (त्रि०) (नः। ना। नम्) दिशा फिरागया = ई वा मल के द्वार से निकाला गया = ई।
गृञ्जनम् (नपुं०) गाजर तरकारी, लहसुन एक प्रकार का उत्कट वा तीखा गन्धयुक्त कन्द।
गृध्नु (त्रि०) (ध्नुः। ध्नुः। ध्नु) लोभी।
गृध्रः (पुं०) गिद्ध पक्षी।
गृध्रसी (स्त्री) एक प्रकार का वात रोग जो कि ऊरुसन्धि में होता है।
गृष्टि (पुं०। स्त्री) (ष्टिः। ष्टिः) सूअर, (पुं०) वाराही कन्द, (स्त्री) एक बेर की ब्यानी गैया।
गृहम् (नपुं०) घर।
गृहाः, बहुवचन (पुं०) पत्नी, घर।
गृहगोधिका (स्त्री) बिस्तुइया

वा पाल वा छिपकली जन्तु ।
[ गृहगोलिका ]
गृहपतिः ( पुं० ) गृहस्थ ।
गृहयालु ( त्रि० ) (लुः । लुः । लु) ग्रहण करने का जिसका स्वभाव है ।
गृहस्थूणम् (नपुं०) घर का खम्भा
गृहारामः ( पुं० ) घर का उपवन वा बगीचा ।
गृहावग्रहणी ( स्त्री ) द्वार की डेहरी ।
गृहिन् ( पुं०) ( ही ) गृहस्थ ।
गृहीतृ ( त्रि० ) ( ता । त्री । तृ ) ग्रहण करने का जिसका स्वभाव है ।
गृह्यकः ( पुं० ) परतन्त्र वा पराधीन, घरैलू पक्षी वा मृग ।
गेन्दुकः ( पुं० ) खेलने का गेंदा ।
[ गेण्डुकः ] [ गेण्डूकः ]
गेहम् ( नपुं० ) घर ।
गैरिकम् (नपुं०) गेरू धातु, सोना।
गैरेयम् ( नपुं० ) सिलाजीत ।
गो ( पुं० । स्त्री ) ( गौः । गौः ) स्वर्ग, वज्र, जल, किरण, नेत्र, बाण, रोंआँ, ( पुं० ) सूर्य, बैल, किरण, एक प्रकार का यज्ञ, ( स्त्री ) दिशा, वाणी, भूमि, गैया ।
गोकण्टकः (पुं०) गोखुरू औषधी।
गोकर्णः ( पुं० ) अनामिका के शिखा से लेकर अङ्गुष्ठ तक का विस्तार, एक तरह का मृग, सर्प ।
गोकर्णी ( स्त्री ) मुरहारा वा मुर्रा ( यह प्रत्यञ्चा के लिये बड़े काम में आती है ) ।
गोकुलम् ( नपुं० ) गैयों का समूह ।
गोक्षुरकः (पुं०) गोखुरू औषधी ।
गोचरः ( पुं० ) इन्द्रियों के विषय अर्थात् रूप रस गन्ध स्पर्श शब्द इत्यादि, रहने का स्थान।
गोजिह्वा ( स्त्री ) गऊ की जीभ, गोभी तरकारी ।
गोडुम्बा ( स्त्री ) एक तरह की ककड़ी ।
गोण्डः ( पुं० ) नाभि ।
गोत्रः ( पुं० ) पर्वत ।
गोत्रम् ( नपुं० ) वंश, नाम ।
गोत्रभिद् ( पुं० ) (त्—द्) इन्द्र ।
गोत्रा ( स्त्री ) पृथ्वी, गैयों का झुण्ड ।
गोदः ( पुं० ) गैया देनेवाला, मस्तक में एक प्रकार की घी के सदृश जो वस्तु होती है वह ।
गोदारणम् (नपुं०) जोतने का हल

गोदावरी ( स्त्री ) एक नदी ।
गोदुहः ( पुं० ) गैया का दूहनेवाला वा अहीर ।
गोदुह् (पुं०) (धुक्—धुग्) तथा ।
गोधनम् (नपुं०) गैयों का समूह।
गोधा ( स्त्री ) गोह जन्तु, प्रत्यञ्चा के घात के बचाने के लिये गोह के चमड़े से बना हुवा एक प्रकार का बाहुबन्धन ।
गोधापदी ( स्त्री ) हंसपदी वृक्ष ।
गोधिः ( पुं० ) माथे का एक देश अर्थात् ललाट ।
गोधिका ( स्त्री ) गोह जन्तु ।
गोधूमः ( पुं० ) गोहूं अन्न ।
गोनर्दम् ( नपुं० ) मोथा घास ।
गोनसः (पुं०) एक तरह का सर्प ।
गोपः ( पुं० ) अहीर, गन्धरस, अनेक कामों का करनेवाला वा कामदार ।
गोपतिः ( पुं० ) साँड़, गैयों का स्वामी ।
गोपरसः ( पुं० ) गन्धरस ।
गोपा ( स्त्री ) उत्पलशारिवा ओषधी ।
गोपानसी ( स्त्री ) बंगला के छप्पर के ढाए प्रान्त में लगी हुई टेढ़ी लकड़ी ।
गोपायित ( त्रि० ) ( तः । ता । तम् ) रक्षित वा बचाया = ई ।
गोपालः ( पुं० ) अहीर ।
गोपी (स्त्री) अहीर की स्त्री, उत्पलशारिवा ओषधी ।
गोपुरम ( नपुं० ) पुर के बाहर का फाटक, द्वार, मोथा घास ।
गोप्यकः ( पुं० ) दास वा चाकर।
गोमत् ( पुं० ) ( मान् ) गैयों का स्वामी ।
गोमय (पुं० । नपुं०) ( यः । यम् ) गैया का गोबर ।
गोमायुः ( पुं० ) सियार जन्तु ।
गोमिन् ( पुं० ) ( मी ) गैयों का स्वामी ।
गोरस ( पुं० । नपुं० ) (सः । सम्) दण्ड से मथा हुवा दही वा दूध ।
गोर्दम् ( नपुं० ) मस्तक में की एक प्रकार की घी के सदृश वस्तु ।
गोल ( त्रि० ) ( लः । ला । लम् ) गोल वस्तु, ( पुं० ) तोप का गोला, ( स्त्री ) नैपाल की मैनसिल ।
गोलकः ( पुं० ) पति के मरने पर उपपति वा जार वा अन्य पुरुष से पैदा भया लड़का ।
गोलीढ ( त्रि० ) (ढः । ढा । ढम्)

गैया से चाटा गया = ई, (पुं०) एक प्रकार का लोध।
गोलोमी (स्त्री) जटामासी, बच ओषधी, श्वेत दूर्वा घास।
गोवन्दिनी (स्त्री) गोंदी वृक्ष।
गोविन्दः (पुं०) कृष्ण, विष्णु, बृहस्पति, गोठे का स्वामी।
गोविष् (स्त्री) (ट्—ड्) गैया का गोबर।
गोशाल (स्त्री। नपुं०) (ला। लम्) गैयों के रहने का स्थान
गोशीर्षम् (नपुं०) कमल के ऐसा जिसका गन्ध हो वह चन्दन।
गोष्ठम् (नपुं०) गैयों के रहने का स्थान वा गोठा।
गोष्ठपतिः (पुं०) अहीर।
गोष्ठी (स्त्री) सभा।
गोष्पदम् (नपुं०) सेवित देश, भूमि पर गैया के खुर से भया गड़हा।
गोसङ्ख्यः (पुं०) अहीर।
गोस्तनः (पुं०) चार लड़ का हार।
गोस्तनी (स्त्री) दाख मेवा।
गोस्थानकम् (नपुं०) गैयों के रहने का स्थान वा गोठा।
गौतमः (पुं०) षोड़शपदार्थवादी एक ऋषि, शाक्य मुनि।
गौधारः (पुं०) चन्दनगोह जन्तु (यह जन्तु काले सर्प से गोह में उत्पन्न होता है)।
गौधूमीनम् (नपुं०) गोहूं का खेत।
गौधेयः (पुं०) 'गौधार' में देखो।
गौधेरः (पुं०) तथा।
गौर (त्रि०) (रः। री। रम्) श्वेत वा पीत वा लाल रङ्ग-वाली वस्तु, (पुं०) श्वेत रङ्ग, पीला रङ्ग, लाल रङ्ग, (स्त्री) पार्वती, रजोधर्म से पहिली अवस्थावाली स्त्री।
गौरवम् (नपुं०) गरुआई, आ-दर, "अभ्युत्थान" में देखो।
गौष्ठीनम् (नपुं०) पहिला गैयों के रहने का स्थान वा गोठा।
ग्रथिलः (पुं०) विकङ्कत वा कंठेर वृक्ष।
ग्रन्थः (पुं०) शास्त्र, धन, गाँठ।
ग्रन्थिः (पुं०) गाँठ।
ग्रन्थिकम् (नपुं०) पिपरामूल ओषधी।
ग्रन्थित (त्रि०) (तः। ता। तम्) गूहा गया = ई।
ग्रन्थिपर्णम् (नपुं०) कुरोदा ल-तावृक्ष।
ग्रन्थिल (त्रि०) (लः। ला। लम्)

गंठैला = ली, ( पुं० ) करील वा टेंटी वृक्ष ।

ग्रस्त ( त्रि० ) (स्तः । स्ता । स्तम्) खाया गया = ई वा ग्रास किया गया = ई, ( नपुं० ) अशक्ति इत्यादि से सम्पूर्ण न बोलना ।

ग्रहः (पुं०) सूर्य इत्यादि ९ ग्रह, ग्रहण करना, यज्ञ के पात्र, ग्रहण जो सूर्य वा चन्द्र को लगता, है आग्रह वा हठ ।

ग्रहणीरुज् (स्त्री) (क्—ग्) सङ्ग्रहणी रोग ।

ग्रहपतिः ( पुं० ) सूर्य ।

ग्रामः ( पुं० ) गाँवं ( इस शब्द के पूर्व में जब "शब्द" इत्यादि शब्द रहते हैं तब यह समूहवाची होता है जैसा,—शब्दग्राम स्वरग्राम यह शब्द कहीं स्वरवाची भी है ) ।

ग्रामणी (त्रि०) (णीः । णीः । णि) मुख्य वा श्रेष्ठ, ( पुं० ) नापित वा हज्जाम, राजा ।

ग्रामतक्षः ( पुं० ) गाँव का बढ़ई ।

ग्रामता (स्त्री) गाँवों का समूह ।

ग्रामान्तम् ( नपुं० ) गाँव इत्यादि का समीप देश ।

ग्रामीणा ( स्त्री ) नील ।

ग्राम्य (त्रि०) (म्यः । म्या । म्यम्) भाँड़ इत्यादि का बोलना ।

ग्राम्यधर्मः ( पुं० ) मैथुन वा स्त्री पुरुष का संयोग ।

ग्रावन् (पुं०) (वा) पत्थर, पर्वत ।

ग्रासः ( पुं० ) ग्रास वा कवर ।

ग्राहः (पुं०) ग्राह वा मगर जलजन्तु, ग्रहण करना ।

ग्राहिन् (त्रि०)(ही । हिणी । हि) ग्रहण करनेवाला = ली, कइत वृक्ष ।

ग्रीवा ( स्त्री ) गरदन ।

ग्रीष्मः ( पुं० ) ग्रीष्म वा गरमी का मौसिम वा जेठ असाढ़ का ऋतु ।

ग्रैवेयकम् (नपुं०) कण्ठ का गहना ।

ग्लस्त (त्रि०) (स्तः । स्ता । स्तम्) "ग्रस्त" में देखो ।

ग्लहः ( पुं० ) जूआ में जो ( द्रव्य इत्यादि ) दाँव लगाया जाता है वह ।

ग्लान ( त्रि० )(नः । ना । नम्) रोगादि से क्षीण, हर्ष रहित ।

ग्लास्नु (त्रि०) ( स्नुः । स्नुः । स्नु) तथा ।

ग्लौः ( पुं० ) चन्द्रमा ।

—***—

# ( घ )

घ (पुं०। स्त्री) (घः। घा) (पुं०) मेघ, (स्त्री) घण्टा।

घट (त्रि०) (टः। टा। टम्) (पुं०) पानी का घड़ा, (त्रि०) जो मिलता है वा मिल जाता है

घटना (स्त्री) गर्जते हुए हाथियों का झुण्ड, प्रवर्तना वा होना।

घटा (स्त्री) गर्जते हुए हाथियों का झुण्ड, समूह।

घटीयन्त्रम् (नपुं०) रहट पानी निकालने का यन्त्र।

घट्टः (पुं०) घाट।

घण्टा (स्त्री) घण्टा जो कि प्रायः पूजा के समय बजाया जाता है, एक प्रकार की लोध।

घण्टापथः (पुं०) राजमार्ग वा सड़क।

घण्टापाटलिः (स्त्री) एक प्रकार की लोध।

घण्टारवा (स्त्री) घण्टा ओषधी।

घन (त्रि०) (नः। ना। नम्) कठोर वस्तु, गझिन वस्तु, (पुं०) मेघ, मूर्ति का गुण, मुद्गर, (नपुं०) काँसे का बना हुआ ताल वा घण्टा इत्यादि बाजा, मध्य नृत्य गीत वाद्य।

घनरसः (पुं०) जल।

घनसारः (पुं०) कपूर।

घनाघनः (पुं०) बरसने वाला मेघ, इन्द्र, खूनी मतवाला हाथी।

घर्मः (पुं०) गरमी, पसीना।

घस्मर (त्रि०) (रः। रा। रम्) खानेवाला = ली।

घस्रः (पुं०) दिन।

घाटा (स्त्री) गले की घाँटी। [घाटा]

घाण्टिकः (पुं०) "चाक्रिक" में देखो।

घातः (पुं०) मार डालना।

घातुक (त्रि०) (कः। का। कम्) हिंसा करनेवाला = ली, द्रोह करनेवाला = ली।

घासः (पुं०) घास।

घुटिका (स्त्री) पैर की घुट्ठी।

घुणः (पुं०) घुन।

घूकः (पुं०) घुघुआ वा उल्लू पक्षी।

घूर्णित (त्रि०) (तः। ता। तम्) निद्रा से वा पीड़ा से व्याकुल।

घृणा (स्त्री) कृपा, निन्दा, घिन, करुण रस।

घृणिः (पुं०) किरण।

घृतम् (नपुं०) घी, जल।

घृताची (स्त्री) स्वर्ग की एक वेश्या।

घृतोदः ( पुं० ) घी का समुद्र ।
घृष्टि ( पुं० । स्त्री ) ( ष्टिः । ष्टिः ) ( पुं० ) सूअर, ( स्त्री ) वाराहीकन्द, वसना ।
घोटकः ( पुं० ) घोड़ा ।
घोणा (स्त्री) नाक, घोड़े की नाक ।
घोणिन् ( पुं० ) (णी ) सूअर ।
घोण्टा ( स्त्री ) बदर का फल, सुपारी ।
घोर ( त्रि० ) ( रः । रा । रम् ) भयङ्कर, (नपुं०) भयानक रस ।
घोषः (पुं०) अहिर का गाँव, शब्द।
घोषकः ( पुं० ) शब्द करनेवाला, रामतरोई वा भिण्डी तरकारी।
घोषणम् ( नपुं० ) ज़ोर से शब्द करना वा घोखना ।
घोषणा ( स्त्री ) तथा ।
घ्राण ( त्रि० ) ( णः । णा । णम् ) सूँघा हुआ = ई, (नपुं०) नासिका ।
घ्राणतर्पणः ( पुं० ) घ्राण इन्द्रिय को तृप्त कर देनेवाला गन्ध।
घ्रात ( त्रि० ) ( तः । ता । तम् ) सूँघा हुआ = ई ।

—***—

( ङ )

ङः (पुं०) भैरव, विषयों की चाह

—***—

( च )

च ( अव्यय ) अन्वाचय अर्थ में (जहाँ दो में से एक मुख्य और दूसरा गौण हो, जैसा,—"भिक्षामट गाञ्चानय" अर्थात् भिक्षा माँगो और गैया भी लेते आओ, यहाँ दो कार्य्यों में से एक गौण है ), समाहार अर्थ में ( जैसा,—"देवदत्तश्च यज्ञदत्तश्च विष्णुमित्रश्च" इनका समूह ), समुच्चय अर्थ में ( परस्पर निरपेक्ष अनेक शब्दों का एक क्रिया में अन्वय, जैसा,—"ईश्वरं गुरुञ्च भजस्व" यहाँ पर ईश्वर और गुरु का भजन में अन्वय है ), इतरेतरयोग अर्थ में ( जैसा,—"रामकृष्णौ वर्तते" यहाँ राम और कृष्ण का योग है ), पादपूरण में, पुनः वा फेर ।

चः ( पुं० ) चन्द्रमा, सूर्य, चोर ।
चकोरः ( पुं० ) चकोर पक्षी ।
चकोरकः ( पुं० ) तथा ।
चक्र ( पुं० । नपुं० ) ( क्रः । क्रम् ) ( पुं० ) चकवा पक्षी (नपुं०) सेना, राष्ट्र वा राजा के दखल की भूमि, एक प्रकार का अस्त्र, समूह, रथ की पहिया ।
चक्रकारकम् ( नपुं० ) व्याघ्रनख-नामक गन्धद्रव्य ।
चक्रपाणिः ( पुं० ) विष्णु ।
चक्रमर्दकः (पुं०) चकवड़ औषधी।
चक्रयानम् ( नपुं० ) क्रीड़ारथ ।
चक्रला ( स्त्री ) मोथा घास ।
चक्रवर्तिन् ( पुं० ( र्ती ) समुद्र पर्य्यन्त भूमि का स्वामी ।
चक्रवर्तिनी (स्त्री) चकवत औषधी।
चक्रवाकः ( पुं० ) चकवा पक्षी ।
चक्रवाल ( पुं० । नपुं० ) ( लः । लम् ) (पुं०) 'लोकालोकाचल' पर्वत, (नपुं०) वह समूह जो कि चक्राकार होगया हो,मण्डल।
चक्राङ्गः ( पुं० ) हंस पक्षी ।
चक्राङ्गी ( स्त्री ) हंसी वा हंस की स्त्री, कुटकी अन्न ।
चक्रिन् ( पुं० ) ( क्री ) सर्प ।
चक्रीवत् (पुं०) (वान्) गदहा पशु।
चक्षुश्श्रवस् ( पुं० ) ( वाः ) सर्प ।
चक्षुष् (नपुं०) (क्षुः) नेत्र इन्द्रिय ।
चक्षुष्या ( स्त्री ) नीला सुरमा ।
चञ्चल ( त्रि० ) ( लः । ला । लम् ) चञ्चल वा अस्थिर ।
चञ्चला ( स्त्री ) बिजुली ।
चञ्चु (पुं० ।स्त्री) (ञ्चुः । ञ्चु.) (पुं०) रेंड वृक्ष, (स्त्री) पक्षी की चोंच।
चटक ( पुं० । स्त्री ) ( कः । का ) गौरा पक्षी, ( स्त्री ) गौरा का बच्चा स्त्री ।
चटकाशिरस् ( नपुं० ) ( रः ) पिपरामूल औषधी ।
चटिकाशिरस् (नपुं०) (रः) तथा । [ चटिकाशिरम् ]
चटु ( पुं० । नपुं० ) ( टुः । टु ) प्रियवचन ।
चणकः ( पुं० ) चना अन्न ।
चण्ड ( त्रि० ) (ण्डः । ण्डा । ण्डम्) क्रोधी, तीखा वा भयङ्कर (स्त्री) मूसाकर्णी औषधी, चोरनामक गन्धद्रव्य ।
चण्डातः (पुं०) कंदइल पुष्पवृक्ष ।
चण्डातक (पुं० । नपुं०) (कः । कम्) लहंगा ( श्रेष्ठ स्त्रियों के पहिरने का ) ।
चण्डालः ( पुं० ) चण्डाल वा डोम एक जाति, शूद्र से ब्राह्मणी में उत्पन्न ।

चण्डालवल्लकी ( स्त्री ) किंगरी बाजा ।
चण्डिका ( स्त्री ) पार्वती देवी ।
चतुर (त्रि०) (रः । रा । रम्) चतुर
चतुरङ्गुल ( त्रि० ) ( लः । ला । लम् ) चार अङ्गुल की वस्तु, ( पुं० ) अमिलतास वृक्ष ।
चतुरब्द ( त्रि० ) ( ब्दः । ब्दा । ब्दम् ) चार बरस की वय वाला = ली ।
चतुराननः ( पुं० ) ब्रह्मा ।
चतुर्भद्रम् (नपुं०) अर्थ जो अर्थ धर्म काम मोक्ष इन चारों का समूह ।
चतुर्भुजः ( पुं० ) विष्णु ।
चतुर्वर्गः ( पुं० ) अर्थ धर्म काम और मोक्ष इनका समूह ।
चतुर्हायणी ( स्त्री ) चार बरस की गैया इत्यादि ।
चतुश्शालम् (नपुं० ) चौबारा ।
चतुष्पथम् ( नपुं० ) चौरहा ।
चत्वरम् ( नपुं० ) अंगना, यज्ञ के लिये संस्कार की हुई भूमि, चबूतरा ।
चन ( अव्यय ) असम्पूर्णता ।
चन्दन ( पुं० । नपुं० ) (नः । नम्) (पुं०) चन्दन का वृक्ष, (नपुं०) मलयगिरिचन्दन ।
चन्द्रः ( पुं० ) चन्द्रमा, कबीला ओषधी, सुवर्ण वा सोना, कपूर।
चन्द्रकः ( पुं० ) मोर के पोंछ पर जो चन्द्राकार चिह्न रहते हैं ।
चन्द्रभागा ( स्त्री ) एक नदी ।
चन्द्रमस् ( पुं० ) ( माः ) चन्द्रमा।
चन्द्रवाला ( स्त्री ) बड़ी लाइची ।
चन्द्रशाला ( स्त्री ) घर में सब से ऊपर की कोठड़ी अर्थात् बंगला ।
चन्द्रशेखरः ( पुं० ) शिव ।
चन्द्रसंज्ञः ( पुं० ) कपूर ।
चन्द्रहासः ( पुं० ) तरवार ।
चन्द्रिका (स्त्री) चन्द्र का प्रकाश ।
चपल ( त्रि० ) ( लः । ला । लम् ) चञ्चल, बे बिचारे काम करनेवाला = ली, जल्दीबाज, (पुं०) पारा धातु, ( स्त्री ) बिजुली, पीपर वृक्ष, ( नपुं० ) जल्दी ।
चपेटः ( पुं० ) चपेटा वा थपेड़ा । [ चर्पटः ]
चमर ( पुं० । नपुं० ) (रः । रम्) ( पुं० ) वह मृग जिस के पोंछ का चंवर बनता है, ( नपुं० ) चंवर [ चामरम् ] [ चामरा ] ।
चमरिकः ( स्त्री ) कचनार वृक्ष ।
चमस (पुं० । नपुं०) (सः । सम्) एक प्रकार का यज्ञपात्र ( चमच् ) ।
चमसः ( पुं० ) पिष्टभेद, लड्डू ।

चमसी ( स्त्री ) उरद के आँटे की रोटी, मूंग मसुरी इत्यादि का आँटा, काठ से बना हुआ यज्ञपात्र ( दूसरे के मत में ), सूखे उरद का चूर ।

चमूः (स्त्री) सेना, वह सेना जिस में ७२९ हाथी ७२९ रथ २१८७ घोड़े ३६४५ पैदल रहते हैं ।

चमूरुः ( पुं० ) एक प्रकार का मृग ( इसी का चर्म प्रायः बिछाया जाता है ) ।

चम्पकः ( पुं० ) चम्पा वृक्ष ।

चयः (पुं०) समूह, धूस वा अकोर ।

चरः ( पुं० ) जङ्गम अर्थात् चलने फिरने वाला प्राणी, हलकारा वा दूत ।

चरण ( पुं० । नपुं० ) (णः । णम्) पैर, चतुर्थांश ।

चरणायुधः ( पुं० ) मुर्गा पक्षी ।

चरम ( त्रि० ) (मः । मा । मम्) अन्तवाला = ली, पिछला = ली ।

चरमक्ष्माभृत् ( पुं० ) पश्चिम पर्वत अर्थात् अस्ताचल ।

चराचरः ( पुं० ) जङ्गम अर्थात् चलने फिरने वाला प्राणी ।

चरिष्णु ( त्रि० ) (ष्णुः । ष्णुः । ष्णु) गमन करनेवाला = ली वा चलने फिरने वाला = ली ।

चरुः ( पुं० ) अग्नि में होम करने का भात ।

चर्चरी ( स्त्री ) एक प्रकार का गीत, थपोड़ी का शब्द ।

चर्चा ( स्त्री ) विचार, चन्दनादि से देह का लेपन ।

चर्चिका ( स्त्री ) शक्तिदेवता जिस को 'चर्ममुण्डा' भी कहते हैं ।

चर्मन् (नपुं०) (र्म) चमड़ा, ढाल ।

चर्मकषा ( स्त्री ) सिकाकाई ।

चर्मकारः ( पुं० ) चमड़े का काम बनाने वाला अर्थात् चमार ।

चर्मण्वती ( स्त्री ) एक नदी ।

चर्मप्रभेदिका ( स्त्री ) चीरने की आरी ।

चर्मप्रसेविका ( स्त्री ) लोहार की भाथी ।

चर्ममुण्डा ( स्त्री ) एक प्रकार की शक्तिदेवता जिस को "चर्चिका" भी कहते हैं ।

चर्म्मिन् ( पुं० ) ( र्म्मी ) ढाल वाला, भोजपत्र का वृक्ष ।

चर्या (स्त्री) ध्यान मौन इत्यादि जो योगमार्ग उस में स्थिति ।

चर्वणम् (नपुं०) चबाना, चबेना ।

चर्वित ( त्रि० ) ( तः । ता । तम् ) चबाया गया = ई ।

चल (त्रि०) (लः । ला । लम्) चञ्चल

चलदलः ( पुं० ) पीपर वृक्ष ।
चलन ( त्रि० ) ( नः । ना । नम् ) काँपनेवाला = ली, ( नपुं० ) काँपना वा हिलना ।
चलाचल ( त्रि० ) ( लः । ला । लम् ) चञ्चल ।
चलित ( त्रि० ) ( तः । ता । तम् ) थोड़ा कम्पित वा काँपगया = ई वा हिलगया = ई, वह सेना जिसने यात्रा वा कूँच किया है।
चविक (पुं० । स्त्री) ( कः । का—की ) चाभ अर्थात् गजपीपर की लकड़ी ।
चव्य (स्त्री । नपुं०) (व्या । व्यम्) तथा ।
चषक ( पुं० । नपुं० ) (कः । कम्) मद्य पीने का पात्र ।
चषालः ( पुं० ) यज्ञस्तम्भ के सिर पर का कड़ा जो काष्ठ ही से बना रहता है ।
चाक्रिकः ( पुं० ) बहुत से लोग मिल कर जो राजों की स्तुति करते हैं वे 'चाक्रिक' कहलाते हैं, घण्टी बजानेवाला जिसको 'घड़ियाली' भी कहते हैं ।
चाङ्गेरी ( स्त्री ) लोनिया भाजी ।
चाटकैरः ( पुं० ) गौरा का बच्चा जो पुरुष अर्थात् नर है ।
चाटु ( पुं० । नपुं० ) ( टुः । टु ) प्रिय वचन ।
चाणकीनम् ( नपुं० ) चना का खेत ।
चाण्डालः ( पुं० ) "चण्डाल" में देखो ।
चाण्डालिका ( स्त्री ) डोम की स्त्री, किंगरी बाजा ।
चातकः ( पुं० ) पपीहा पक्षी ।
चातुर्वर्ण्यम् ( नपुं० ) ब्राह्मणादि चारो वर्ण ।
चापः ( पुं० ) धनुष् ।
चामरम् ( नपुं० ) चंवर ।
चामीकरम् ( नपुं० ) सुवर्ण वा सोना ।
चामुण्डा ( स्त्री ) शक्तिदेवता ।
चाम्पेयः ( पुं० ) चम्पा पुष्पवृक्ष, नागचम्पा पुष्पवृक्ष ।
चारः ( पुं० ) चलना फिरना, हलकारा, बन्धन ।
चारटी ( स्त्री ) माक भव, गुलाब।
चारणः ( पुं० ) एक देवजाति, कत्थक ।
चारु ( त्रि० ) (रुः । रुः—र्वी । रु) सुन्दर वा मनोहर ।
चार्चिक्यम् ( नपुं० ) चन्दनादि से देह का लेपन ।
चार्मणम् (नपुं०) चमड़ों का समूह

चार्वाकः ( पुं० ) बौद्धमतावलम्बी ( जो देह ही को आत्मा मानता है ) ।
चालनी ( स्त्री ) पिसान चालने की चलनी ।
चाषः ( पुं० ) नीलकण्ठ पक्षी [ चासः ]
चिकित्सकः (पुं०) वैद्य वा हकीम
चिकित्सा ( स्त्री ) रोग का निवारण वा दूर करना ।
चिकुरः ( पुं० ) केश वा बाल [चिकूरः], बे बिचारे काम करनेवाला ।
चिक्कण ( त्रि० ) (णः । णा । णम् ) चिकना = नी ।
चिक्कसः ( पुं० ) जव का चूर ।
चिञ्चा ( स्त्री ) इमिली वृक्ष ।
चिता (स्त्री) मृतक वा मुर्दा जलाने की चिता ।
चितिः ( स्त्री ) तथा, समूह, चतरा ।
चित् ( अव्यय ) बुद्धि, असम्पूर्ण, हिस्सा वा अंश ।
चित्तम् ( नपुं० ) मन ।
चित्तविभ्रमः ( पुं० ) चित्तभ्रम वा मिथ्याज्ञान ।
चित्तसमुन्नतिः ( स्त्री ) मान आदर ।
चित्ताभोगः ( पुं० ) मन का सुखादि में लग जाना वा तत्पर होना ।
चित्तोद्रेकः ( पुं० ) अहङ्कार ।
चित्या ( स्त्री ) मुर्दा जलाने की चिता ।
चित्र ( त्रि० ) ( त्रः । त्रा । त्रम् ) चित्र विचित्र रङ्गवाला = ली, आश्चर्ययुक्त, ( पुं० ) कई एक मिश्रित रङ्ग, ( स्त्री ) एक नक्षत्र, मूसाकर्णी ओषधी, एक तरह की ककड़ी, (नपुं०) अद्भुत रस, तसबीर, आश्चर्य ।
चित्रकः ( पुं० ) चीता एक जङ्गली पशु, चीता वृक्ष, रेंड़ वृक्ष ।
चित्रकम् (नपुं०) कस्तूरी इत्यादि सुगन्धद्रव्य से किया हुआ तिलक ।
चित्रकरः ( पुं० ) रङ्गरेज; मुसौव्विर अर्थात् तसबीर खींचनेवाला ।
चित्रकायः ( पुं० ) सिंह एक जङ्गली पशु ।
चित्रकारः ( पुं० ) रंगसाज, चितेरा ।
चित्रकूटः ( पुं० ) एक पर्वत ।
चित्रकृत् ( पुं० ) मञ्जुल एक प्रकार का वृक्ष ।

चित्रतण्डुला (स्त्री) बाभीरङ्ग ओ-षधी।

चित्रपर्णी (स्त्री) पिठवन ओषधी।

चित्रभानुः (पुं०) सूर्य, अग्नि।

चित्रशिखण्डिजः (पुं०) बृहस्पति।

चित्रशिखण्डिन्, बहुवचनान्त (पुं०) (नः) सप्तर्षि (१ मरीचि २ अ-ङ्गिराः ३ अत्रि ४ पुलस्त्य ५ पु-लह ६ क्रतु ७ वसिष्ठ)।

चित्रा (स्त्री) एक नक्षत्र, मूसा-कर्णी ओषधी, एक प्रकार की ककड़ी।

चिन्ता (स्त्री) स्मरण वा याद, शोक वा अफसोस।

चिपिटकः (पुं०) चिउड़ा अन्न।

चिबुकम् (नपुं०) ओठ और ठुड्डी के बीच का भाग।

चिरक्रिय (त्रि०) (यः। या। यम्) "दीर्घसूत्र" में देखो।

चिरञ्जीविन् (पुं०) (वी) कौवा पक्षी, बहुत काल तक जीने वाला।

चिरण्टी (स्त्री) जवान स्त्री। [चिरिण्टी]

चिरन्तन (त्रि०) (नः। नी। नम्) पुराना = नी।

चिरप्रसूता (स्त्री) बहुत दिन की ब्यानी, बकेन गैया।

चिरबिल्वः (पुं०) करञ्ज वृक्ष। [चिरिबिल्वः]

चिरम् (अव्यय) बहुत 1लक वा लम्बा समय।

चिरराचाय (अव्यय) तथा।

चिरस्य (अव्यय) तथा।

चिरात् (अव्यय) तथा।

चिराय (अव्यय) तथा।

चिरेण (अव्यय) तथा।

चिलिचिमः (पुं०) नरकट के बन की मछली।

चिल्ल (त्रि०) (ल्लः। ल्ला। ल्लम्) "क्लिन्नाक्ष" में देखो, (पुं०) चील्ह पक्षी।

चिल्लिका (स्त्री) झींगुर जो रात्रि को 'झीँ झीँ' वा "चीँ चीँ" बोलता है।

चिह्नम् (नपुं०) चिह्न वा चिन्हानी

चीनः (पुं०) चीन देश, "चमूरु" में देखो।

चीरम् (नपुं०) एक प्रकार का वस्त्र

चीरी (स्त्री) "चिल्लिका" में देखो।

चीलिका (स्त्री) तथा।

चीवरम् (नपुं०) मुनियों के पहि-रने का कपड़ा, बौद्ध सन्यासी का ओढ़ने का कपड़ा।

चुक्र (पुं०। नपुं०) (क्रः। क्रम्) चुक्र एक खट्टी वस्तु, (नपुं०)

अमसुल ।
चुक्रिका ( स्त्री ) लोनियाँ भाजी ।
चुल्लः (पुं०) "क्लिन्नाच" में देखो।
चुल्लिः ( स्त्री ) चूल्हा । [चुल्ली]
चूचुक ( पुं० । नपुं० )(कः । कम)
स्तन का अग्रभाग ।
चूडा (स्त्री) शिखा, मोर के माथे
की कलंगी ।
चूडामणिः (पुं०) मस्तक का मणि।
चूडाला (स्त्री) एक तरह का मोथा
घास ।
चूतः ( पुं० ) आम वृक्ष ।
चूर्ण ( त्रि० ) ( र्णः । र्णा । र्णम् )
चूर हुई वस्तु, (नपुं०) सुगन्ध
चूर्ण ( मसाला इत्यादि ) ।
चूर्णकुन्तलः (पुं०) घुंघुरारे अर्थात्
टेढ़े टेढ़े बाल ।
चूर्णिः (स्त्री ) पातञ्जल व्याकरण,
कौड़ी, १०० कौड़ियाँ ।
चूर्णी ( स्त्री ) कौड़ी, नदीविशेष ।
चूलिका (स्त्री) हाथियों के कान
की जड़ ।
चूष्या ( स्त्री ) "दूष्या" में देखो।
चेटकः ( पुं० ) दास [ चेड़कः ]
[ चेटः ]
चेतकी ( स्त्री ) हरैं ।
चेतनः ( पुं० ) प्राणी ।
चेतना ( स्त्री ) बुद्धि ।
चेतस् ( अव्यय ) ( तः ) मन ।
चेत् ( अव्यय ) यदि वा अगर ।
चेल ( त्रि० ) ( लः । ला । लम् )
नीच वा अधम, (नपुं०) वस्त्र ।
चैत्यम् ( नपुं० ) यज्ञस्थान, नामी
वृक्ष वा प्रसिद्ध वृक्ष ।
चैत्रः ( पुं० ) चैत महीना ।
चैत्ररथम् (नपुं०) कुबेर का बगीचा
चैत्रिकः ( पुं० ) चैत महीना ।
चैल ( त्रि० ) ( लः । ला । लम् )
नीच वा अधम, (नपुं०) वस्त्र ।
चोचम् (नपुं०) तज वृक्ष ।
चोद्यम् ( नपुं० ) अद्भुत प्रश्न ।
चोरः ( पुं० ) चोर ।
चोरपुष्पी (स्त्री) सङ्काहुली ओषधी।
चोरिका ( स्त्री ) चोरी [चोरका]
चोलः ( पुं० ) पहिरने का चोला
वा कञ्चुकी ।
चौरः ( पुं० ) चोर ।
चौरिका ( स्त्री ) चोरी ।
चौर्य्यम् ( नपुं० ) तथा ।
च्युत ( त्रि० ) ( तः । ता । तम् )
चुयपड़ा = ड़ी ।

—***—

# ( छ )

छ ( पुं० । नपुं० ) ( छः । छम् ) ( पुं० ) चञ्चल, छेदने वाला वा काटने वाला, ( नपुं० ) निर्मल ।

छगलकः ( पुं० ) बकरा । [छगलः]

छगला (स्त्री) वृद्धदारक ओषधी ।

छगलान्त्री ( स्त्री ) तथा ।

छगलाङ्घ्री ( स्त्री ) तथा

छगलाण्डी ( स्त्री ) तथा ।

छत्रम् ( नपुं० ) छाता ।

छत्रा ( स्त्री ) जल का तृण, वन की सौंफ, धनियाँ ।

छत्राकी ( स्त्री ) रासन वृक्ष ।

छदः (पुं०) पत्ता, पक्षियों का पर ।

छदनम् ( नपुं० ) पत्ता, ढपना ।

छदिष् ( पुं० । स्त्री ) (दिः । दिः) खपड़ा वा छान्ही ।

छद्मन् ( नपुं० ) ( द्म ) कपट ।

छन्दः ( पुं० ) अभिप्राय, वश वा इख़्तियार, अभिलाष ।

छन्दस् ( नपुं० ) ( न्दः ) एक वेदाङ्ग अर्थात् पिङ्गलादि छन्दोग्रन्थ में गायत्री उष्णिक् अनुष्टुप् इत्यादि छन्द, श्लोक ।

छन्न (त्रि०) (न्नः । न्ना । न्नम्) ढाँपा हुवा = ई, एकान्त स्थान इत्यादि ।

छलम् ( नपुं० ) न्याय से विरुद्ध कर्म वा कपट वा छल ।

छविः ( स्त्री ) शोभा, प्रकाश ।

छागः ( पुं० ) बकरा ।

छागी ( स्त्री ) बकरी ।

छात ( त्रि० ) ( तः । ता । तम् ) निर्बल, खण्डित ।

छात्रः ( पुं० ) शिष्य ।

छादनम् ( नपुं० ) मकान का छज्जा, खपड़े के नीचे का बाँस वा ठाट ।

छादित ( त्रि० ) ( तः । ता । तम् ) ढाँपा हुवा = ई ।

छान्दसः ( पुं० ) वेद पढ़नेवाला, वेद से जो सम्बन्ध रखता है ।

छाया ( स्त्री ) छाया, सूर्य की स्त्री वा शनैश्चर की माता, शोभा, प्रतिबिम्ब ।

छायानाथः ( पुं० ) सूर्य्य ।

छित ( त्रि० ) ( तः । ता । तम् ) खण्डित ।

छिद्रम् ( नपुं० ) बिल वा छेद ।

छिद्रित ( त्रि० ) (तः । ता । तम्) छेदागया = ई वा बेधागया = ई

छिन्न ( त्रि० ) ( न्नः । न्ना । न्नम् ) खण्डित ।

छिन्नरुहा (स्त्री) गुरुच एक लता ।

छुरिका ( स्त्री ) छूरी ।

छेक (त्रि०) (कः। का। कम्) चतुर, पलुवा पशु वा पक्षी।
छेदनम् (नपुं०) छेदना वा काटना।

—❋❋❋—

# ( ज )

जः (पुं०) गाना, जीतना, जीतनेवाला।
जगच्चक्षुः (पुं०) सूर्य्य।
जगती (स्त्री) लोक वा भुवन, एक प्रकार का छन्द, पृथ्वी।
जगत् (नपुं०) लोक वा भुवन, जङ्गम अर्थात् चलने फिरनेवाला प्राणी।
जगत्प्राणः (पुं०) वायु।
जगरः (पुं०) कवच।
जगलः (पुं०) मद्यकल्क वा "मेदक" में देखो।
जग्ध (त्रि०) (ग्धः। ग्धा। ग्धम्) खाया गया = ई।
जग्धिः (स्त्री) भोजन।
जघनम् (नपुं०) स्त्री के कमर के अगाड़ी का हिस्सा वा जङ्घा।
जघनफला (स्त्री) कटुम्बरी ओषधी।
जघनेफला (स्त्री) तथा।
जघन्य (त्रि०) (न्यः। न्या। न्यम्) सब से पिछला = ली, अधम वा नीच, (पुं०) मूत्रेन्द्रिय।
जघन्यजः (पुं०) शूद्र, छोटा भाई।
जङ्गम (त्रि०) (मः। मा। मम्) प्राणी वा प्राणधारी।
जङ्घा (स्त्री) पैर की पिंडुरी, जङ्घा।
जङ्घाकरिकः (पुं०) जो जङ्घा के बल से जीता है।
जङ्घालः (पुं०) अतिवेगवान् [जङ्घिलः]
जटा (स्त्री) केशों की जटा, जटामासी सुगन्धद्रव्य, वृक्ष की जड़ जो जटा के सदृश रहती है।
जटामांसी (स्त्री) जटामासी सुगन्धद्रव्य।
जटिः (पुं०) पाकर वृक्ष।
जटिन् (पुं०) (टी) तथा।
जटिला (स्त्री) जटामासी।
जटुलः (पुं०) "कालक" में देखो।
जठर (त्रि०) (रः। रा। रम्) कठोर वस्तु, (पुं०) वृद्ध वा बूड्ढा, (पुं०। नपुं०) पेट।
जड (त्रि०) (डः। डा। डम्) शीतल वस्तु, अत्यन्त मूढ़, (स्त्री) केवाँच वृक्ष।
जडुलः (पुं०) "कालक" में देखो। [जटुलः]

जतु (नपुं०) महावर रङ्ग, लाही।
जतुकम् ( नपुं० ) हींग ।
जतुका ( स्त्री ) चमगुदरी, चक्रवत ओषधी । [ जतूका ]
जतुकृत् ( पुं० ) चक्रवत ओषधी।
जतूका ( स्त्री ) तथा, चमगुदरी। [ जतुका ]
जत्रु ( नपुं० ) कांधा और बगल जहाँ जुटे हैं वह जोड़ वा हंसुली ।
जनकः ( पुं० ) पिता ।
जनङ्गमः (पुं०) चण्डाल वा डोम।
जनता ( स्त्री ) जनों का समूह ।
जननम् ( नपुं० ) जन्म, वंश ।
जननिः ( स्त्री ) माता ।
जननी ( स्त्री ) तथा ।
जनपदः ( पुं० ) देश ।
जनयित्री ( स्त्री ) माता ।
जनश्रुतिः ( स्त्री ) लोकप्रवाद वा लोगों की सच्ची वा झूठी उड़ाई हुई बात ।
जनार्द्दनः ( पुं० ) विष्णु ।
जनाश्रयः ( पुं० ) जनों के रहने का स्थान वा मण्डप ।
जनिः ( स्त्री ) जन्म ।
जनि ( स्त्री ) ( निः—नी ) पुत्रादिकों की स्त्री वा पतोहू, स्वयंवर में की कन्या जो जयमाल हाथ में लिये घूमती है, चक्रवत ओषधी ।
जनित्री (स्त्री) माता । [जनयित्री]
जनुष् ( नपुं० ) ( नुः ) जन्म ।
जन्तुः ( पुं० ) प्राणी ।
जन्तुफलः ( पुं० ) गुल्लर वृक्ष ।
जन्मन् ( नपुं० ) ( न्म ) जन्म ।
जन्मिन् ( पुं० ) ( न्मी ) प्राणी ।
जन्य ( त्रि० ) (न्यः । न्या । न्यम्) जो पैदा होता है, निन्दित वचन, (पुं०) वर के अर्थात् दमाद के पक्ष वाले वा वर के मित्र इत्यादि, (नपुं०) बजार, युद्ध ।
जन्युः ( पुं० ) प्राणी ।
जपः (पुं०) जप करना, वेदाभ्यास।
जपापुष्पम् (नपुं०) अड़हुल का फूल।
जम्पती, इकारान्त, द्विवचन, (पुं०) स्त्री पुरुष वा पत्नी और पति का जोड़ा ।
जम्बालः (पुं०) कीचड़ वा चहला।
जम्बिरः (पुं०) जंभीरी नीबू । [जम्बीरः ]
जम्बीरः (पुं०) तथा, मरुवा लता ।
जम्बुकः ( पुं० ) सियार जन्तु, वरुण देवता ।
जम्बू ( स्त्री । नपुं० ) (म्बूः । म्बु ) जामुन का फल; ( स्त्री ) जामुन का वृक्ष ।

जम्भः ( पुं० ) जंभीरी नीबू ।
जम्भभेदिन् ( पुं० ) ( दी ) इन्द्र ।
जम्भरः ( पुं० ) जंभीरी नीबू ।
जम्भलः ( पुं० ) तथा ।
जम्भीरः (पुं०) तथा, मरुवा लता ।
जयः ( पुं० ) जीत, जयपर्ण वा अरणी वा अगेथू वृक्ष ।
जयनम् (नपुं०) जीतना वा जीत ।
जयन्तः ( पुं० ) इन्द्र का पुत्र ।
जयन्ती ( स्त्री ) इन्द्र की पुत्री, अरणी वा झाड़ी जिस को "टेकार" कहते हैं ।
जया (स्त्री) अरणी वा झाड़ी वृक्ष जिस को 'टेकार' कहते हैं ।
जय्य (त्रि०) (य्यः । य्या । य्यम्) जो जीतने के शक्य है ।
जरठ ( त्रि० ) (ठः । ठा । ठम्) कठोर, बुड्ढा = ढ्ढी ।
जरण ( त्रि० ) (णः । णा । णम्) वृद्ध वा बुड्ढा = ढ्ढी, जीरा ।
जरत् ( त्रि० ) ( न् । ती । त् ) बुड्ढा = ढ्ढी ।
जरद्गवः ( पुं० ) बुड्ढा बैल ।
जरा ( स्त्री ) बुढ़ाई ।
जरायुः ( पुं० ) माता के पेट में गर्भ जिसमें लपेटा हुवा रहता है वह चमड़ा ।
जरायुजाः, अकारान्त, बहुवचन, ( पुं० ) जरायु से उत्पन्न अर्थात् मनुष्य गज इत्यादि ।
जलम् ( नपुं० ) पानी ।
जलङ्गमः (पुं०) चण्डाल वा डोम, [ जनङ्गमः ]
जलजन्तुः ( पुं० ) जल का जन्तु मगर इत्यादि ।
जलजन्तुका ( स्त्री ) जोंक एक जलजन्तु ।
जलधरः ( पुं० ) मेघ ।
जलनिधिः ( पुं० ) समुद्र ।
जलनिर्गमः ( पुं० ) जल निकलने का छिद्र ।
जलनीली ( स्त्री ) सेवार ।
जलपुष्पम् ( नपुं० ) कोई कमल इत्यादि फूल जो कि जल में होते हैं ।
जलप्रायम् (नपुं०) जलाधिक देश वा जल का कछारा ।
जलमुच् ( पुं० ) (क्—ग्) मेघ ।
जलशायिन् ( पुं० ) ( यी ) विष्णु ।
जलशुक्तिः ( स्त्री ) घोंघा वा छोटी सीप ।
जलाधारः ( पुं० ) पानी का आधार अर्थात् तलाव बावली इत्यादि ।
जलाशय ( पुं० । नपुं० ) ( यः । यम् ) ( पुं० ) तथा, ( नपुं० )

खस एक सुगन्धद्रव्य ।
जलूका ( स्त्री ) जोंक ।
जलोका ( स्त्री ) तथा ।
जलोच्छ्वासः ( पुं० ) बढ़े जल के निकलने का मार्ग वा बहुत जल का चारो ओर से बढ़ना।
जलोरगी ( स्त्री ) जोंक ।
जलौकसी ( स्त्री ) तथा ।
जलौकस्, बहुवचन, ( पुं० । स्त्री ) ( सः । सः ) ( पुं० ) जलजन्तु, ( स्त्री ) जोंक ।
जलौका ( स्त्री ) जोंक ।
जल्पाक ( त्रि० ) (कः । का । कम्) बहुत अवाच्य बोलनेवाला = ली
जल्पित ( त्रि० ) (तः । ता । तम्) कहागया = ई, (नपुं०)बोलना।
जवः ( पुं० ) वेग वा वेग के सहित गमन, वेगवान् ।
जवन ( पुं० । नपुं० ) (नः । नम्) (पुं०) वेगवान्, वेगयुक्त घोड़ा, ( नपुं० ) वेग ।
जवनिका ( स्त्री ) कनात वा कपड़े का परदा ।
जह्नुतनया ( स्त्री ) गङ्गा नदी ।
जागरः ( पुं० ) कवच ( जिस को योद्धा लोग पहिनते हैं ) ।
जागरा ( स्त्री ) जागरण वा जागना । [ जागरः—( पुं० ) ]
जागरितृ ( त्रि० ) ( ता । त्री । तृ ) जागनेवाला = ली ।
जागरूक (त्रि०) (कः । का । कम्) तथा ।
जागर्त्तिः ( स्त्री ) जागरण वा जागना ।
जागर्या ( स्त्री ) तथा ।
जागिया ( स्त्री ) तथा ।
जाङ्गुलिकः ( पुं० ) विषवैद्य वा गारुड़िक ।
जाङ्गुली ( स्त्री ) विषविद्या ।
जाङ्घिकः ( पुं० ) जङ्घा के बल से जो जीता है ।
जात ( त्रि० ) ( तः । ता । तम् ) पैदा हुवा = ई, (नपुं०) पैदा होना, समूह, मनुष्यत्वादि जाति ।
जातरूपम् (नपुं०) सुवर्ण वा सोना।
जातवेदस् ( पुं० ) (दाः ) अग्नि ।
जातापत्या ( स्त्री ) "प्रजाता" में देखो ।
जातिः (स्त्री) मनुष्यत्वादि जाति, जन्म, चमेली पुष्पवृक्ष, जायफल । [ जाती ]
जातीकोशम् ( नपुं० ) जायफल ।
जातीफलम् ( नपुं० ) तथा ।
जातु ( अव्यय ) कदाचित् ।
जातुष ( त्रि० ) ( षः । षी । षम् )

लाह से बना = नी ।
जातोक्षः ( पुं० ) जवान बैल ।
जानु ( नपुं० ) पैर का घुटना ।
जाबालः ( पुं० ) भेंड़िहारा वा गंड़ेरिया ।
जामातृ ( पुं० ) ( ता ) दामाद ।
जामिः ( स्त्री ) बहिन [ जामी ], कुलस्त्री [ जामी ] ।
जाम्बवम् (नपुं०) जामुन का फल ।
जाम्बूनदम् ( नपुं० ) सुवर्ण वा सोना ।
जायकम् ( नपुं० ) पीला चन्दन ।
जाया ( स्त्री ) पत्नी ।
जायाजीवः (पुं०) नट (जोकि प्रायः स्त्री को नचाते फिरते है) ।
जायापत्नी, द्विवचन, ( पुं० ) स्त्री पुरुष वा पत्नी और पुरुष का जोड़ा ।
जायुः ( पुं० ) औषध ।
जारः ( पुं० ) स्त्री का उपपति वा यार ।
जालम् ( नपुं० ) मत्स्यादि पकड़ने का जाल, समूह, झरोखा, न फूली हुई कली ।
जालकम् (नपुं०) नई कलियों वा कलियों का समूह ।
जालिकः ( पुं० ) "वागुरिक" में देखो, जालवाला, मल्लाह ।
जालिन् (त्रि०) (ली । लिनी । लि) जालवाला = ली ।
जाली ( स्त्री ) चिचिड़ा तरकारी ।
जाल्म (त्रि०) (ल्मः । ल्मा । ल्मम्) नीच वा अधम, "असमीक्ष्यकारिन्" में देखो ।
जिघत्सु (त्रि०) (त्सुः । त्सुः । त्सु) भोजन चाहने वाला = ली वा भूखा = खी ।
जिङ्गी ( स्त्री ) मजीठ ( एक प्रकार की रंगने की लकड़ी ) ।
जित्वर ( त्रि० ) (रः । री । रम्) जीतने वाला = ली ।
जिनः (पुं०) बुद्ध अर्थात् विष्णु का नवाँ अवतार ।
जिवाजिवः ( पुं० ) "जीवञ्जीव" में

जिष्णु ( त्रि० ) (ष्णुः । ष्णुः जीतने वाला = ली, (पुं०) इन्द्र ।
जिह्म ( त्रि० ) (ह्मः । ह्मा । ह्मम्) कुटिल, अलस वा आलसी, वक्र वा टेढ़ा = ढ़ी ।
जिह्मगः ( पुं० ) सर्प ।
जिह्वा ( स्त्री ) जीभ ।
जीन ( त्रि० ) ( नः । ना । नम् ) बुड्ढा = ढ़ी ।
जीमूतः ( पुं० ) मेघ, पर्वत, वन्दाल औषधी ।

जीरकः (पुं०) जीरा ।
जीर्ण (त्रि०) (र्णः। र्णा। र्णम्) पुराना = नीवा बुड्ढा = डटी ।
जीर्णवस्त्रम् (नपुं०) पुराना कपड़ा ।
जीर्णिः (स्त्री) जीर्णता वा जीर्ण होना वा पुराना होना ।
जीवः (पुं०) प्राण, बृहस्पति, प्राण का धारण करना ।
जीवकः (पुं०) बिजयसार ओषधी एक लकड़ी, औषधियों के अष्टवर्ग में की एक ओषधी ।
जीवजीवः (पुं०) एक प्रकार का पक्षी (जिसका पङ्ख ठीक मोर के पङ्ख के तुल्य होता है और जिस के देखने से विष का नाश होता है) ।
जीवञ्जीवः (पुं०) तथा ।
जीवनम् (नपुं०) जीना, जीविका, पानी ।
जीवनी (स्त्री) एक वृक्ष ।
जीवनीया (स्त्री) तथा ।
जीवन्तिकः (पुं०) बहेलिया ।
जीवन्तिका (स्त्री) षष्ठी देवी, अकासबंवर, गुरुच ।
जीवन्ती (स्त्री) षष्ठी देवी (लड़के वा लड़की के जन्म के पाँचवें वा दसवें रोज जिस की पूजा होती है), एक वृक्ष ।
जीवा (स्त्री) एक वृक्ष । [जीवनी]
जीवातु (पुं०। नपुं०) (तुः। तु) जीवन का औषध ।
जीवान्तकः (पुं०) बहेलिया । [जीवन्तिकः]
जीविका (स्त्री) जीविका वा जीने का उपाय ।
जुगुप्सा (स्त्री) निन्दा ।
जुङ्गः (पुं०) वृद्धदारक ओषधी ।
जुहूः (स्त्री) एक प्रकार का स्रुवा (जिस से यज्ञ में होम किया जाता है) ।
जूतिः (स्त्री) वेग ।
जूर्तिः (स्त्री) ज्वर रोग ।
जृम्भ (त्रि०) (म्भः। म्भा। म्भम्) मुखादि का विकास अर्थात् जंभाई ।
जृम्भणम् (नपुं०) तथा ।
जेतृ (पुं०) (ता) जीतनेवाला, जिसका जीतने का स्वभाव है ।
जेमनम् (नपुं०) भोजन ।
जेय (त्रि०) (यः। या। यम्) जीतने के योग्य ।
जैत्र (त्रि०) (त्रः। त्रा। त्रम्) जयवाला जी ।
जैमिनीय (पुं०) मीमांसा शास्त्र का जाननेवाला ।
जैवातृकः (पुं०) चन्द्रमा, बड़े

आयुर्बल वाला, कुश घास ।
जोङ्गकम् ( नपुं० ) अगर चन्दन ।
जोषम् (अव्यय) चुप रहना, सुख ।
जोषा ( स्त्री ) स्त्री ।
जोषित् ( स्त्री ) तथा । [जोषिता]
ज्ञः ( पुं० ) पण्डित ।
ज्ञपित ( त्रि० ) ( तः । ता । तम् )
जनायागया = ई ।
ज्ञप्त ( त्रि० ) ( प्तः । प्ता । प्तम् )
तथा ।
ज्ञप्तिः ( स्त्री ) बुद्धि ।
ज्ञातिः ( स्त्री ) समान गोत्रवाला, बिरादरी ।
ज्ञातृ ( त्रि० ) ( ता । त्री । तृ )
जानने वाला = ली ।
ज्ञातेयम् (नपुं०) ज्ञाति का धर्म ।
ज्ञानम् (नपुं०) ज्ञान वा जानना ।
ज्ञानिन् (त्रि०) (नी । निनी । नि)
ज्ञानवाला = ली, (पुं०) ज्योतिषी ।
ज्या ( स्त्री ) धनुष् की डोरी वा प्रत्यञ्चा वा पनच, भूमि ।
ज्यानिः ( स्त्री ) जीर्ण होना वा पुराना होना वा जीर्णता ।
ज्यायस् ( त्रि० ) ( यान् । यसी । यः ) बहुत बुड्ढा = ड्ढी, अत्यन्त प्रशंसा के योग्य ।
ज्येष्ठ ( त्रि० ) ( ष्ठः । ष्ठा । ष्ठम् ) विद्या इत्यादि से बड़ा = ड़ी, अत्यन्त वृद्ध, जेठा = ठी, (पुं०) जेठ महीना, ( स्त्री ) पति की अत्यन्त प्यारी स्त्री ।
ज्योतिरिङ्गणः (पुं०) जुगनू कीड़ा ।
ज्योतिषिकः (पुं०) ज्योतिष् विद्या का जानने वाला ।
ज्योतिष् (नपुं०) ( तिः ) ज्योतिष् विद्या, तारा, प्रकाश, दृष्टि ।
ज्योतिष्मत् (त्रि०) (ष्मान् । ष्मती । ष्मत्) प्रकाशवाला = ली, (स्त्री) मालकंगुनी ओषधी ।
ज्योत्स्ना (स्त्री) अंजोरिया अर्थात् चन्द्र का प्रकाश, चिचिड़ा तरकारी ।
ज्योत्स्नी ( स्त्री ) चिचिड़ा तरकारी ।
ज्वरः ( पुं० ) ज्वर रोग ।
ज्वलनः ( पुं० ) अग्नि ।
ज्वाल ( पुं० । स्त्री ) ( लः । ला ) अग्नि की ज्वाला ।

## ( झ )

झः ( पुं० ) शब्द, नष्ट, वायु, भू-

षण, सर्वांग का ढर।
झञ्झावातः ( पुं० ) वृष्टि के सहित बड़ा वायु।
झटा ( स्त्री ) भुंइआंवरा।
झटामला ( स्त्री ) तथा।
झटिति (अव्यय) जल्दी वा शीघ्र।
झरः ( पुं० ) झरने से निकला हुआ जल का प्रवाह।
झर्झरः ( पुं० ) एक प्रकार का बाजा वा झाँझ।
झल्लरी (स्त्री) हुड़क एक प्रकार का बाजा, लड़कोंके खेलने की चकई
झषः ( पुं० ) मछली।
झषा ( स्त्री ) ककही वृक्ष।
झाटः ( पुं० ) वृक्ष के जड़ में सब के नीचे का झोथरा।
झाटलः (पुं०) एक प्रकार की लोध
झाटलिः(पुं० । स्त्री) (लिः । लिः) एक वृक्ष (जो कि पलाशवृक्ष के सदृश होता है)।
झावुकः ( पुं० ) झाऊ वृक्ष।
झिण्टी (स्त्री) कठसरैया पुष्पवृक्ष।
झिरुका (स्त्री) "चीरी" में देखो। [ झिरिका ] [ झिरीका ]
झिल्लिका ( स्त्री ) तथा। [ झिल्लीका ] [ झिल्लका ]
झीरुका (स्त्री) तथा। [झीरिका]

—***—

## ( ञ )

ञः (पुं०) गानेवाला, गाना, झाँझ का शब्द।

## ( ट )

टः (पुं०) पृथ्वी, करवा ( एक मट्टी का बरतन ), ध्वनि।
टङ्कः (पुं०) टाँकी ( जिस से पत्थर तोड़ा जाता है ), अहङ्कार।
टिटिभकः (पुं०) टिटिहरी पक्षी।
टिट्टिभः ( पुं० ) तथा।
टिट्टिभकः (पुं०) तथा। [टिट्टीभकः]
टिठिभकः ( पुं० ) तथा।
टीका ( स्त्री ) कठिन पदों की व्याख्या।
टुण्टुकः ( पुं० ) सोनापाढ़ा।

-***-

## ( ठ )

ठः (पुं०) जनसमूह, ध्वनि, धूर्त,

शिव, शून्य, बड़ा शब्द, चन्द्र का मण्डल ।

—***—

## ( ड )

डः ( पुं० ) शिव, त्रास वा भय, बड़ा शब्द ।
डमरः (पुं०) डाँका, लूट, प्रलय ।
डमरुः ( पुं० ) डमरू बाजा ।
डयनम् (नपुं०) उड़ना, "प्रवहण" में देखो ।
डहुः (पुं०) बड़हर वृक्ष वा फल । [ डहूः ]
डालिमः ( पुं० ) अनार ।
डिण्डिमः ( पुं० ) डमरू बाजा ।
डिण्डीरः ( पुं० ) समुद्रफेन ।
डिम्बः (पुं०) डाँका, लूट, प्रलय ।
डिम्भः ( पुं० ) बालक, सूर्य्य ।
डिम्भा (स्त्री) बहुत छोटी लड़की।
डुण्डुभः ( पुं० ) डेड़हा सर्प, दुड़-सुहाँ सर्प ।
डुलिः ( स्त्री ) कछुई ।

—***—

## ( ढ )

ढः (पुं०) ढक्का वा विजय का नगाड़ा, निर्गुण, निर्धन ।
ढक्का ( स्त्री ) ढक्का वा विजय का नगाड़ा ।

—***—

## ( ण )

णः ( पुं० ) सूअर, ज्ञान, निश्चय, निर्णय ।

—***—

## ( त )

तः ( पुं० ) चोर, सूअर की पोंछ।
तक्रम् ( नपुं० ) चतुर्थांश जल देकर मथे हुये दही का मठा ।
तक्षकः (पुं०) एक प्रकार का सर्प, बढ़ई ।
तक्षन् ( पुं० ) ( क्षा ) बढ़ई ।
तट ( त्रि० ) ( टः । टी । टम् ) नदी इत्यादि का तीर ।

तटिनी ( स्त्री ) नदी ।
तडाग (पुं० । नपुं०) (गः । गम्) तलाव ।
तडित् ( स्त्री ) बिजुली ।
तडित्वत् ( पुं० ) ( त्वान् ) मेघ ।
तण्डुलः ( पुं० ) चावल, बाभीरङ्ग ओषधी ।
तण्डुलीयः ( पुं० ) चौराई साग ।
तत ( त्रि० ) ( तः । ता । तम् ) विस्तारयुक्त वा विस्तृत, (नपुं०) वीणा इत्यादि बाजा जो तार से बनता है ।
ततस् (अव्यय) (तः) उस कारण से।
तत् ( अव्यय ) तथा ।
तत्कालः ( पुं० ) वर्तमान काल ।
तत्पर ( त्रि० ) (रः । रा । रम्) तत्पर वा कोई काम में एकाग्र चित्तवाला = ली ।
तत्वम् ( नपुं० ) ठीक वा सत्य, विलम्बित ( ठाह ) नृत्य वाद्य और गीत, साङ्ख्यशास्त्रोक्त प्रकृति इत्यादि २५ तत्व ।
तथा ( अव्यय ) उस प्रकार से ।
तथागतः ( पुं० ) बुद्ध अर्थात् विष्णु का नवाँ अवतार ।
तथ्य (त्रि०) (थ्यः । थ्या । थ्यम्) सच्चा (वचन इत्यादि), (नपुं०) सच्च ( क्रियाविशेषण ) ।
तदा ( अव्यय ) उस समय में ।
तदात्वम् (नपुं०) वर्तमान काल ।
तदानीम् (अव्यय) उस समय में ।
तनयः ( पुं० ) बेटा ।
तनया ( स्त्री ) बेटी ।
तनु (त्रि० ) (नुः । नुः । नु) विरल वा बीहड़, सूक्ष्म वा पतला = ली [ इस अर्थ में स्त्री लिङ्ग में "तन्वी"—ऐसा भी रूप होता है ], ( स्त्री ) वृक्ष की छाल, देह ।
तनुत्रम् ( नपुं० ) योद्धों के पहिनने का कवच ।
तनूः ( स्त्री ) देह ।
तनूकृत (त्रि०) ( तः । ता । तम् ) छोल के पतली की गई वस्तु ।
तनूनपात् ( पुं० ) अग्नि ।
तनूरुहम् ( नपुं० ) रोआँ, पङ्ख ।
तन्तुः ( पुं० ) सूत ।
तन्तुभः ( पुं० ) सरसों दाना । [ तुन्तुभः ]
तन्तुलः (पुं०) बाभीरङ्ग ओषधी ।
तन्तुवायः (पुं०) जोलहा, मकड़ी।
तन्त्रम् (नपुं०) कुटुम्ब का कार्य्य, सिद्धान्त, उत्तम ओषध, प्रधान वा मुख्य, जोलहा, एक प्रकार का शास्त्र, सामग्री, एक प्रकार की वेद की शाखा, ऐसा

हेतु जो दो पदार्थों को सिद्ध करता है ।
तन्त्रकम् ( नपुं० ) कोरा वस्त्र ।
तन्त्रवापः ( पुं० ) जोलहा ।
तन्त्रवायः (पुं०) तथा, मकड़ी जन्तु
तन्त्रिका ( स्त्री ) गुरुच ओषधी ।
तन्त्री (स्त्री) वीणा का तार (कहीं यह शब्द वीणा का भी वाचक है ) ।
तन्द्रवायः ( पुं० ) जोलहा ।
तन्द्रा ( स्त्री ) आलस्य वा अत्यन्त श्रम से इन्द्रियों का असामर्थ्य ।
तन्द्रिः ( स्त्री ) तथा । [ तन्द्री ]
तन्द्री ( स्त्री ) निद्रा, आलस्य ।
तपः (पुं०) बड़ी गरमी का ऋतु अर्थात् जेठ असाढ़ का महीना।
तपनः ( पुं० ) सूर्य्य, एक नरक ।
तपनीयम् (नपुं०) सुवर्ण वा सोना।
तपस् (नपुं०) (पः) चान्द्रायण इत्यादि व्रत, तपस्या, तपोलोक, धर्म
तपस् (पुं०) (पाः) माघ महीना ।
तपस्यः ( पुं० ) फागुन महीना ।
तपस्विन् ( पुं० ) ( स्त्री ) तपस्या करने वाला ।
तपस्विनी ( स्त्री ) तपस्या करने वाली स्त्री, जटामासी एक सुगन्धयुक्त ओषधी ।
तमः ( पुं० ) राहु ।
तमस् (नपुं०) (मः) अन्धकार, राहु ग्रह, तमोगुण, अज्ञान, क्रोध।
तमस्विनी (स्त्री) अंधियारी रात, रात, तमोगुणयुक्त स्त्री ।
तमालः (पुं०) एक प्रकार का वृक्ष।
तमालपत्रम् (नपुं०) मकरिकापत्र।
तमिस्रम् ( नपुं० ) अन्धकार ।
तमिस्रहन् ( पुं० ) (हा) सूर्य्य ।
तमिस्रा ( स्त्री ) अंधियारी रात ।
तमी (स्त्री) अंधियारी रात, रात ।
तमोनुद् ( पुं० ) (त्—द्) चन्द्र, सूर्य्य, अग्नि ।
तमोपहः ( पुं० ) तथा ।
तरक्षः ( पुं० ) तेंदुवा नाम मृग का खाने वाला एक जङ्गली जन्तु, हुंड़ार ।
तरक्षुः ( पुं० ) तथा ।
तरङ्गः ( पुं० ) जल का तरङ्ग वा लहर ।
तरङ्गिणी ( स्त्री ) नदी ।
तरणि (पुं० । स्त्री) ( णिः । णिः ) ( पुं० ) सूर्य, (स्त्री) घिकुआर ओषधी, नौका ।
तरिणी ( स्त्री ) नाव ।
तरपण्यम् ( नपुं० ) पार उतराई का द्रव्य जो मल्लाह लेता है।
तरल ( त्रि० ) (लः । ला । लम्) चञ्चल, ( पुं० ) हार के मध्य

का दाना जिस को "सुमेर" भी कहते हैं, (स्त्री) चञ्चल स्त्री, लपसी ।

तरसम् (नपुं०) माँस ।

तरस् (नपुं०) (रः) वेग वा वेग के सहित गमन, सामर्थ्य ।

तरस्विन् (पुं०) (स्वी) वेगवाला, शूर ।

तरिः (स्त्री) नौका । [तरी]

तरुः (पुं०) पेड़ वा वृक्ष ।

तरुणः (पुं०) जवान पुरुष ।

तरुण (त्रि०) (णः । णी । णम्) नया वा टटका पदार्थ ।

तरुणी (स्त्री) जवान स्त्री । [तलुनी]

तर्कः (पुं०) तर्क वा विचार ।

तर्कंडी (स्त्री) एक प्रकार का करञ्ज वृक्ष ।

तर्कविद्या (स्त्री) न्यायशास्त्र ।

तर्कारी (स्त्री) अरणी वा जाही वा टेकार वृक्ष ।

तर्जनी (स्त्री) हाथ के अंगूठे की पास वाली अंगुली ।

तर्णकः (पुं०) नया वा जवान बैल ।

तर्दूः (पुं०) "दारुहस्तक" में देखो ।

तर्पणम् (नपुं०) पितृयज्ञ, तृप्ति, तृप्त करना ।

तर्मन् (नपुं०) (र्म) यज्ञ के खम्भे का अग्रभाग ।

तर्षः (पुं०) पियास, तृष्णा वा लालसा ।

तल (पुं० । नपुं०) (लः । लम्) किसी वस्तु के नीचे का भाग, स्वरूप, (नपुं०) प्रत्यञ्चा के घात के बचाने के लिये गोह के चमड़े से बना हुवा एक प्रकार का बाहुबन्धन ।

तलिन (त्रि०) (नः । ना । नम्) बीड़र, थोड़ा वा स्वल्प, स्वच्छ वा निर्मल ।

तल्पम् (नपुं०) खटिया, अटारी, पत्नी ।

तल्लजः (पुं०) प्रशस्त वा अच्छा वा प्रशंसा के योग्य ।

तष्ट (त्रि०) (ष्टः । ष्टा । ष्टम्) छील कर पतला किया गया =ई (कोई पदार्थ) ।

तस्करः (पुं०) चोर ।

ताण्डव (पुं० । नपुं०) (वः । वम्) उद्धतनृत्य ।

तातः (पुं०) पिता, गुरु वा बड़ा (पिता बड़ा भाई इत्यादि "तात!" ऐसा कह कर पुकारे जाते हैं) छोटा भाई ।

तात्विक (त्रि०) (कः । की । कम्) ठीक तात्पर्य को जानने वाला =ली, (पुं०) तन्त्र शास्त्र

को जानने वाला, जोलहा ।

तापसः ( पुं० ) तपस्वी वा तपस्या करने वाला ।

तापसतरुः ( पुं० ) इंगुआ वा जीयापूता वृक्ष ।

तापिच्छः ( पुं० ) तमाल वृक्ष ।

तापिञ्जः ( पुं० ) तथा ।

तामरसम् ( नपुं० ) लाल कमल ।

तामलकी ( स्त्री ) भुइं अंवरा ।

तामसी ( स्त्री ) अंधियारी रात ।

तामिस्रः ( पुं० ) एक नरक ।

ताम्बूलम् ( नपुं० ) बीड़ा ।

ताम्बूलवल्ली ( स्त्री ) पान (जिस का बीड़ा लगता है ) ।

ताम्बूली ( स्त्री ) तथा ।

ताम्रम् ( नपुं० ) ताँबा धातु ।

ताम्रकम् ( नपुं० ) तथा ।

ताम्रकर्णी ( स्त्री ) अञ्जन दिग्गज की स्त्री ।

ताम्रकुट्टकः (पुं०) ताँबा का काम बनाने वाला ।

ताम्रचूडः ( पुं० ) मुरगा पक्षी ।

तार ( त्रि० ) ( रः । रा । रम् ) ऊंचा शब्द, ( स्त्री । नपुं० ) नक्षत्र, आँख की पुतली, (पुं०) मोती, सफ़ाई, गोल मोती, गोल और निर्मल मोती से बना हार, जल के पार उतरना, एक वानर का नाम (स्त्री) बौद्धों की एक देवता, बाली की स्त्री, बृहस्पति की स्त्री, (नपुं०) चाँदी धातु ।

तारकजित् (पुं०) स्वामिकार्तिक ।

तारका ( स्त्री ) नक्षत्र वा तरई, आँख की पुतली ।

तारापथः ( पुं० ) आकाश ।

तारुण्यम् ( नपुं० ) जवानी ।

तार्क्ष्यः (पुं०) गरुड़ पक्षी, घोड़ा ।

तार्क्ष्यशैलम् ( नपुं० ) एक प्रकार का नेत्र का अञ्जन ।

ताल ( पुं० । नपुं० ) (लः । लम्) (पुं०) गीत के काल का माप अर्थात् गाने में जो ताल दिया जाता है वह, ताल ( जो बजाया जाता है), ताड़ वृक्ष, मध्यमा अंगुली से ले कर अंगूठे तक का विस्तार, ( नपुं० ) हरताल धातु ।

तालपत्रम् (नपुं०) ताड़ का पत्ता, ताड़ का पङ्खा, कान की तरकी।

तालपर्णी ( स्त्री ) मुरा नाम एक सुगन्धद्रव्य ।

तालमूलिका (स्त्री) मुसरी ओषधी।

तालवृन्तकम् (नपुं०) ताड़ का पङ्खा। [ तालवृन्तम् ]

तालाङ्कः ( पुं० ) बलदेव ( कृष्ण

के भाई )।

ताली ( स्त्री ) थपोड़ी अर्थात् हाथों का शब्द, एक प्रकार का ताड़ वृक्ष, भुंइ अंवरा।

तालु (नपुं०) तालू अर्थात् मुख के भीतर का एक देश।

तावत् (अव्यय) सम्पूर्णता, अवधि, मान वा माप, अवधारण वा निश्चय।

तावत् (त्रि०) ( वान् । वती । वत् ) ओतना = नी।

तिक्त ( त्रि० ) ( क्तः । क्ता । क्तम् ) तीती वस्तु, (पुं०) तीता रस।

तिक्तकः ( पुं० ) परवर तरकारी।

तिक्तशाकः ( पुं० ) वरुण वृक्ष।

तिग्म (त्रि०) (ग्मः। ग्मा। ग्मम्) अत्यन्त गरम वस्तु, ( नपुं० ) अत्यन्त गरम ( क्रियाविशेषण और गुणवाची )।

तितउः (पुं०) चलनी ( जिस से आँटा चाला जाता है )।

तितिक्षा (स्त्री) क्षमा वा सहना।

तितिक्षु ( त्रि० ) ( क्षुः । क्षुः । क्षु ) क्षमावाला = ली।

तित्तिरः ( पुं० ) तितिल पक्षी।

तित्तिरिः ( पुं० ) तथा।

तिथि ( पुं० । स्त्री ) (थिः । थिः) तिथि वा तारीख।

तिनिशः (पुं०) वञ्जुल एक प्रकार का वृक्ष।

तिन्तिडी ( स्त्री ) इमिली वृक्ष। [ तिन्तिली ]

तिन्तिडीकम् (नपुं०) चुक्र वा अमसुल। [ तिन्तिडिकम् ]

तिन्दुकः (पुं०) तेंदू वृक्ष।

तिन्दुकी ( स्त्री ) तथा।

तिमिः (पुं०) एक प्रकार का मत्स्य।

तिमिङ्गिलः ( पुं० ) एक प्रकार का मत्स्य।

तिमिङ्गिलगिलः ( पुं० ) एक प्रकार का मत्स्य।

तिमित ( त्रि० ) (तः । ता । तम्) ओदा = दी।

तिमिरम् ( नपुं० ) अन्धकार।

तिरस् ( अव्यय ) ( रः ) टेढ़ा वा बेंड़ा, गुप्त होना, टेढ़ा होना वा बेंड़ा होना।

तिरस्करिणी ( स्त्री ) कनात वा परदा।

तिरस्कारिणी ( स्त्री ) तथा।

तिरस्क्रिया ( स्त्री ) अनादर।

तिरीटः ( पुं० ) लोध ओषधी।

तिरीटम् (नपुं०) पगड़ी, किरीट ( शिरोभूषण )।

तिरोधानम् (नपुं०) गुप्त होना।

तिरोहित (त्रि०) (तः । ता । तम्)

गुप्त हो गया=ई ।

तिर्यञ्च् (त्रि०) (तिर्य्यङ्। तिरश्ची। तिर्यक्—ग) टेढ़ा चलने वाला=ली, (पुं०) पक्षी ।

तिलक (पुं०। नपुं०) (कः। कम्) माथे का तिलक, (पुं०) एक प्रकार का वृक्ष, शरीर में का काला तिल, (नपुं०) काला नोन, पेट में जल रहने का स्थान ।

तिलकालकः (पुं०) शरीर में का काला तिल ।

तिलपर्णी (स्त्री) रक्त चन्दन ।

तिलपिञ्जः (पुं०) बाँझ तिल ।

तिलपेजः (पुं०) तथा ।

तिलित्सः (पुं०) एक प्रकार का सर्प, गोह ।

तिलोत्तमा (स्त्री) स्वर्ग की एक वेश्या ।

तिल्यम् (नपुं०) तिल का खेत ।

तिल्वः (पुं०) लोध ।

तिष्यः (पुं०) पुष्य नक्षत्र, कलियुग

तिष्यफला (स्त्री) आंवरा ।

तीक्ष्ण (त्रि०) (क्ष्णः। क्ष्णा। क्ष्णम्) अत्यन्त गरम वस्तु, अत्यन्त तीखी वस्तु, (नपुं०) अत्यन्त गरम, अत्यन्त तीखो (ये दोनों अर्थ क्रियाविशेषण और वस्तुधर्म अर्थ में होते हैं), (नपुं०) विष, युद्ध, लोहा ।

तीक्ष्णगन्धकः (पुं०) सहिंजन वृक्ष।

तीरम् (नपुं०) नदी इत्यादि का तीर ।

तीर्थम् (नपुं०) निपान अर्थात् कूप के पास का हौद वा जलाशय, शास्त्र, ऋषिसेवित जल, गुरु ।

तीव्र (त्रि०) (व्रः। व्रा। व्रम्) आधिक्ययुक्त, तीखा वा तेज, (नपुं०) अतिशय ।

तीव्रवेदना (स्त्री) कठोर दुःख ।

तु (अव्यय) किन्तु, फेर, पादपूरण में, निश्चयपूर्वक ज्ञान (एव), भेद ।

तुङ्ग (त्रि०) (ङ्गः। ङ्गा। ङ्गम्) ऊंचा=ची, (पुं०) नागकेसर वृक्ष ।

तुङ्गी (स्त्री) बर्बरा वृक्ष ।

तुच्छ (त्रि०) (च्छः। च्छा। च्छम्) अधम वा नीच, शून्य वा सूनसान, निरर्थक ।

तुण्डम् (नपुं०) मुख ।

तुण्डिकेरी (स्त्री) कुन्दरू तरकारी [तुण्डिकेशी], कपास वा रूई ।

तुण्डिन् (पुं०) (ण्डी) बड़े पेट वाला वा तोंदल ।

तुण्डिभ (त्रि०) (भः। भा। भम्)

बड़े पेटवाला = ली, 'वृहनाभि' में देखो। [ तुन्दिभ ]
तुण्डिल (त्रि०) (लः। ला। लम्) बड़े पेट वाला = ली।
तुत्थम् ( नपुं० ) तुतिया औषधी।
तुत्था (स्त्री) नील, छोटी लाइची।
तुत्थाञ्जनम् ( नपुं० ) तुतिया।
तुन्दम् ( नपुं० ) तोंद।
तुन्दपरिमृजः ( पुं० ) आलसी।
तुन्दिक ( त्रि० ) ( कः। का। कम् ) बड़े पेट वाला = ली।
तुन्दित (त्रि०) (तः। ता। तम्) तथा
तुन्दिन् ( त्रि० ) ( न्दी। न्दिनी। न्दि ) तथा।
तुन्दिभ ( त्रि० ) (भः। भा। भम्) तथा।
तुन्दिल (त्रि०) ( लः। ला। लम् ) तथा, "वृहनाभि" में देखो।
तुन्नः ( पुं० ) तूणी वा तुन्न वृक्ष।
तुन्नवायः (पुं०) रफू करने वाला।
तुभः ( पुं० ) बकरा पशु।
तुमुलम् ( नपुं० ) सङ्ग्राम का परस्पर धक्का, घोर, भयङ्कर।
तुम्बिः ( स्त्री ) तुम्बा। [ तुम्बी ] [ तुम्बा ]
तुम्बुरुः ( पुं० ) एक देवर्षि का नाम, एक देवगायक का नाम।
तुरगः ( पुं० ) घोड़ा।
तुरङ्गः ( पुं० ) तथा।
तुरङ्गमः ( पुं० ) तथा।
तुरङ्गवदनः ( पुं० ) एक देवजाति जिस को "किन्नर" कहते हैं।
तुरायण (त्रि०) (णः। णा। णम्) कोई विषय में आसक्त वा अत्यन्त तत्पर वा सम्बद्ध, (नपुं०) कोई विषय में आसक्ति वा तत्परता वा अत्यन्त लगना।
तुरासाह् (पुं०) (षाट्—षाड्) इन्द्र
तुरुष्कः (पुं०) तुरुक ( एक मुसलमान की जाति ), लोहबान।
तुला ( स्त्री ) तौलने की तराजू, तौल, १०० पल वा ४०० तोला, एक राशि।
तुलाकोटिः ( स्त्री ) स्त्रियों के पैर का एक गहना ( पायजेब पैजनी इत्यादि जो शब्द करता है )। [ तुलाकोटी ]
तुल्य ( त्रि० ) (ल्यः। ल्या। ल्यम्) तुल्य वा सदृश।
तुवर ( त्रि० ) (रः। रा। रम्) कसैला रस वाला = ली, (पुं०) कसैला रस।
तुवरिका (स्त्री) रहर। [तूवरिका]
तुषः (पुं०) बहेड़ा, जव इत्यादि धान्य की भूसी।
तुषारः ( पुं० ) पाला वा बरफ।

तुषिताः, बहुवचनान्त, ( पुं० ) गणदेवता जो कि गिनती में ३६ हैं।

तुहिनम् (नपुं०) पाला वा बरफ।
( पुं० । स्त्री ) ( णः । णी ) बाण का घर वा तरकस, (स्त्री) नील का वृक्ष ।

तूणीरः ( पुं० ) तरकस ।

तूदः ( पुं० ) तूत वृक्ष ।

तूर्ण ( त्रि० ) ( र्णः । र्णा । र्णम् ) जल्दीबाज, ( नपुं० ) जल्दी ।

तूलः ( पुं० ) रूई, तूत वृक्ष ।

तूलमः ( पुं० ) तूत वृक्ष ।

तूलिका ( स्त्री ) तसबीर लिखने की कलम, सलई ।

तूवरः ( पुं० ) समय पर जिस को सींग न जमा हो ऐसा बैल, समय पर जिस को मोछ न जमी हो ऐसा पुरुष ।

तूष्णीक (त्रि०) ( कः । का । कम् ) चुप रहने वाला = ली ।

तूष्णीकम् (अव्यय) चुप वा मौन ।

तूष्णीम् ( अव्यय ) तथा ।

तूष्णींशील (त्रि०) (लः । ला । लम्) चुप रहने वाला = ली ।

तृणम् ( नपुं० ) घास ।

तृणद्रुमः ( पुं० ) ताड़ नरियर खजूर इत्यादि तृणवृक्ष ।

तृणधान्यम् ( नपुं० ) तिन्नी साँवाँ इत्यादि तृण से उत्पन्न हुआ अन्न

तृणध्वजः ( पुं० ) बाँस वृक्ष ।

तृणराजः ( पुं० ) तृणों में राजा अर्थात् ताड़ वृक्ष ।

तृणशून्यम् ( नपुं० ) बेला । [ तृणशूल्यम् ]

तृण्या (स्त्री) तृणों का समूह ।

तृतीयाकृत (त्रि०) (तः । ता । तम्) तीन बेर जोता हुआ खेत इत्यादि ।

तृतीयाप्रकृतिः ( पुं० ) नपुंसक वा हिंजड़ा । [ तृतीयप्रकृतिः ]

तृप्त ( प्तः । प्ता । प्तम् ) सन्तुष्ट हुवा = ई, हर्षित ।

तृप्तिः ( स्त्री ) तृप्ति वा सन्तोष ।

तृष् ( स्त्री ) ( ट्—ड् ) पिपासा वा पियास ।

तृष्णज् (पुं०) ( क्—ग् ) लोभी ।

तृष्णा ( स्त्री ) लालसा, पियास ।

तेजनः (पुं०) छूरी इत्यादि पर सान रखने का पत्थर, बाँस वृक्ष ।

तेजनकः (पुं०) सरहरी एक तृणवृक्ष

तेजनी ( स्त्री ) सुरहारा वा मुर्री ( यह पनच के बड़े काम आती है ) ।

तेजस् ( नपुं० ) ( जः ) प्रभाव, प्रकाश, वीर्य ।

तेजित ( त्रि० ) (तः । ता । तम्) सान रक्खी हुई छूरी इत्यादि।
तेमः ( पुं० ) ओदा होना वा भींगना ।
तेमनम् ( नपुं० ) कढ़ी (एक भोजनवस्तु ) ।
तैजसम् ( नपुं० ) सोना चाँदी इत्यादि आठ प्रकार के धातु ।
तैजसावर्तिनी (स्त्री) सुवर्ण इत्यादि धातु के गलाने की घरिया।
तैत्तिरम् (नपुं०) तितिल पक्षियों का समूह ।
तैलपर्णिकम् (नपुं०) श्वेत शीतल चन्दन ।
तैलपायिका ( स्त्री ) चपरा एक जन्तु ।
तैलम्पाता (स्त्री) पितृदान क्रिया।
तैलीनम् (नपुं०) तिलों का खेत ।
तैषः ( पुं० ) पूस का महीना ।
तोकम् (नपुं०) लड़का वा लड़की।
तोककः ( पुं० ) पपीहा पक्षी ।
तोक्मः ( पुं० ) हरा जव अन्न ।
तोटकम् ( नपुं० ) एक छन्द ।
तोत्रम् (नपुं०) हाथियों के चलाने के लिये ताडनदण्ड, चाबुक ।
तोदनम् ( नपुं० ) चाबुक ।
तोमरः (पुं०) गंड़ासा एक हथियार ।

तोयम् ( नपुं० ) जल ।
तोयपिप्पली ( स्त्री ) जलपीपर ।
तोरण (पुं० । नपुं०) (णः । णम्) द्वार का बाहरी ऊपर का भाग।
तौर्यत्रिकम् (नपुं०) नाचना गाना और बजाना ( तीनों ) ।
त्यक्त ( त्रि० ) ( क्तः । क्ता । क्तम् ) त्याग किया गया = हुई ।
त्यागः ( पुं० ) छोड़ देना, दान ।
त्रपा ( स्त्री ) लज्जा ।
त्रपु ( नपुं० ) राँगा धातु ।
त्रयी ( स्त्री ) 'ऋक्' 'यजुः' 'साम' इन तीनों वेदों का समूह ।
त्रयीतनुः ( पुं० ) सूर्य ।
त्रस ( त्रि० ) ( सः । सा । सम् ) जिस का चलने फिरने का स्वभाव है ।
त्रसरः (पुं०) जोलहा लोग जिस प्रकार से सूत को लपेटते हैं उस क्रिया का नाम । [तसरः]
त्रस्त ( त्रि० ) (स्तः । स्ता । स्तम्) डरा हुवा = हुई, जिस का डरने का स्वभाव है वह ।
त्रस्नु ( त्रि० ) (स्नुः । स्नुः । स्नु) तथा ।
त्राण ( त्रि० ) ( णः । णा । णम् ) रक्षा किया गया = हुई, (नपुं०) रक्षा करना ।

त्रात (त्रि०) (तः । ता । तम्) तथा ।

त्रापुष (त्रि०) (षः । षी । षम्) राँगा से बना हुआ (पात्र इत्यादि)।

त्रायन्ती (स्त्री) 'त्रायमाणा' नाम ओषधी ।

त्रायमाण (त्रि०) (णः । णा । णम्) रक्षा करता = ती, रक्षा किया जाता = ती, 'त्रायमाणा' नाम ओषधी ।

त्रासः (पुं०) भय ।

त्रिकम् (नपुं०) पीठ के बाँसा के नीचे का वह जोड़ जहाँ तीन हाड़ मिले हैं ।

त्रिककुद् (पुं०) (त्—द्) त्रिकूटाचल पर्वत ।

त्रिकटु (नपुं०) सोंठ पीपर मिरिच (यह शब्द मिले हुये इन तीनों का वाचक है) ।

त्रिका (स्त्री) गराड़ी ।

त्रिकूटः (पुं०) त्रिकूटाचल पर्वत ।

त्रिखट्व (स्त्री । नपुं०) (ट्वी । ट्वम्) तीन खटियाओं का समूह ।

त्रिगुणाकृत (त्रि०) (तः । ता । तम्) तीन बेर जोता गया = ई (खेत इत्यादि) ।

त्रितक्ष (स्त्री । नपुं०) (क्षी । क्षम्) तीन बढ़इयों का समूह ।

त्रिदशः (पुं०) देवता ।

त्रिदशालयः (पुं०) स्वर्ग ।

त्रिदिवः (पुं०) तथा ।

त्रिदिवेशः (पुं०) देवता ।

त्रिपथगा (स्त्री) गङ्गा नदी ।

त्रिपुटा (स्त्री) श्वेत "त्रिधारा" ओषधी, लायची ।

त्रिपुटी (स्त्री) श्वेत "त्रिधारा" ओषधी ।

त्रिपुरान्तकः (पुं०) शिव ।

त्रिफला (स्त्री) हर्रा बहेड़ा अंवरा (यह शब्द मिले हुए इन तीनों का वाचक है)। [टफला]

त्रिभण्डी (स्त्री) श्वेत "त्रिधारा" ओषधी ।

त्रियामा (स्त्री) रात्रि ।

त्रिलोचनः (पुं०) शिव ।

त्रिवर्गः (पुं०) अर्थ धर्म और काम इन तीनों का समूह, खेती बजार किला सेतु हस्तिबन्धन खान सेना और कर लेना ये अष्टवर्ग कहलाते हैं—इन का क्षय पालन और वृद्धि (इन को नीति शास्त्र में त्रिवर्ग कहते हैं)

त्रिविक्रमः (पुं०) भगवान् वामन ।

त्रिविष्टपम् (नपुं०) स्वर्ग ।

त्रिवृता (स्त्री) श्वेत "त्रिधारा" ओषधी ।

त्रिवृत् ( स्त्री ) तथा ।
त्रिसन्ध्यम् ( नपुं० ) प्रातः मध्याह्न और सायम् इन तीनों सन्ध्याओं का समूह ।
त्रिसीत्य (त्रि०) (त्यः । त्या । त्यम्) तीन बेर जोता हुआ = ई (खेत इत्यादि ) ।
त्रिस्रोतस् (स्त्री) (ताः) गङ्गा नदी ।
त्रिहल्य (त्रि०) (ल्यः । ल्या । ल्यम्) तीन बेर जोता हुआ = ई (खेत इत्यादि ) ।
त्रिहायणी (स्त्री) तीन बरस की गैया ।
त्रुटिः (स्त्री) आठ परमाणुओं का समूह, छोटी लायची, एक काल का परिमाण, संशय, लेश, हानि वा नुकसान । [ त्रुटी ]
त्रेता ( स्त्री ) एक युग का नाम, "अग्निचय" में देखो ।
त्रोटिः (स्त्री) चोंच । [ त्रोटी ]
त्र्यब्दा (स्त्री) तीन बरस की गैया।
त्र्यम्बकः ( पुं० ) शिव ।
त्र्यम्बकसखः ( पुं० ) कुवेर ।
त्र्यूषणम् (नपुं०) सोंठ पीपर मिरिच (यह शब्द मिले हुए इन तीनों का वाचक है ) ।
त्व ( त्रि० ) ( त्वः । त्वा । त्वम् ) अन्य वा दूसरा ी
त्वक्क्षीरी (स्त्री) 'वंशलोचन' ओषधी ।
त्वक्पत्रम् ( नपुं० ) 'तज' एक सुगन्धद्रव्य ।
त्वक्सारः (पुं०) बाँस ।
त्वचम् ( नपुं० ) 'तज' एक सुगन्ध द्रव्य ।
त्वचिसारः ( पुं० ) बाँस वृक्ष ।
त्वच् (स्त्री) (क्—ग्) त्वगिन्द्रिय जिससे स्पर्श जाना जाता है, खाल, वृक्ष की छाल ।
त्वरा ( स्त्री ) जल्दी ।
त्वरित (त्रि०) ( तः । ता । तम् ) जल्दीबाज, (नपुं०) जल्दी ।
त्वष्ट (त्रि०) (ष्टः । ष्टा । ष्टम्) छील कर पतला किया गया = ई ।
त्वष्टृ (पुं०) (ष्टा) देवतों का कारीगर अर्थात् विश्वकर्मा, १२ सूर्यों में से एक सूर्य का नाम, बढ़ई।
त्विषाम्पतिः ( पुं० ) सूर्य्य ।
त्विष् ( स्त्री ) ( ट्—ड् ) शोभा, वचन, रुचि वा प्रभा, कान्ति ।
त्सरुः ( पुं० ) तरवार की मूठ ।

## ( थ )

थः (पुं०) पर्वत, भीति की रक्षा ।

-***-

## ( द )

दः (पुं०) मेघ, पत्नी, काटना, देना, दाता ।

दक्ष (त्रि०) (क्षः । क्षा । क्षम्) चतुर, (पुं०) दक्ष प्रजापति।

दक्षिण (त्रि०) (णः । णा । णम् । चतुर, सूधा=धी, दक्षिना=नी, (स्त्री) दक्षिणा (जो यज्ञादि क्रियासमाप्ति में ब्राह्मणों को दी जाती है), दक्षिण दिशा ।

दक्षिणस्थ (त्रि०) (स्थः । स्था । स्थम्) दक्षिनी ओर रहनेवाला =ली, (पुं०) सारथी ।

दक्षिणा (अव्यय) दक्षिण दिशा वा देश ।

दक्षिणाग्निः (पुं०) एक प्रकार का यज्ञ का अग्नि ।

दक्षिणापतिः (पुं०) यमराज ।

दक्षिणायनम् (नपुं०) सूर्य का दक्षिण दिशा में गमन ।

दक्षिणार्ह (त्रि०) (र्हः । र्हा । र्हम्) दक्षिणा देने के योग्य (ब्राह्मणादि) ।

दक्षिणीय (त्रि०) (यः । या । यम्) तथा ।

दक्षिणेर्मन् (पुं०) (र्मा) वह मृग जिस के दक्षिनी ओर बहेलिया ने घाव किया है ।

दक्षिण्य (त्रि०) (ण्यः । ण्या । ण्यम्) दक्षिणा देने के योग्य (ब्राह्मणादि) । [दाक्षिण्य]

दग्ध (त्रि०) (ग्धः । ग्धा । ग्धम्) जलाया गया =ई ।

दग्धिका (स्त्री) जला भात ।

दण्डः (पुं०) डण्डा वा लाठी, निग्रह वा सज़ा, एक सूर्य का पार्श्ववर्ती, बेंड़ी खड़ी की हुई सेना, इन्द्रियों का निग्रह वा दमन, एक प्रकार का माप वा नपुवा वा बटखरा वा गज, सेना, बहुत बड़ा, घोड़ा, कोना, मथने का दण्ड, अभिमान ।

दण्डधरः (पुं०) यमराज ।

दण्डनीतिः (स्त्री) दण्डशास्त्र, अर्थशास्त्र अर्थात् भूमि इत्यादि के ज्ञान का शास्त्र ।

दण्डविष्कम्भः (पुं०) मथनदण्ड का खम्भा ।

दण्डाहतम् (नपुं०) दण्ड से मथा हुवा गोरस ।
दद्रुघ्नः (पुं०) चकवड़ ओषधीवृक्ष । [ दद्रूघ्नः ]
दद्रुण ( त्रि० ) (णः । णा । णम्) जिस को दाद भई है वह । [ दद्रूणः ] [दर्द्रुणः] [दद्रूणः]
दद्रुरोगिन् (त्रि०) (गी । गिणी । गि) तथा ।
दद्रूः ( पुं० ) दाद रोग ।
दधि ( नपुं० ) दही ।
दधित्थः ( पुं० ) कद्दत वृक्ष ।
दधिफलः ( पुं० ) तथा ।
दधिमण्डोदः (पुं०) दही का समुद्र।
दनुः ( स्त्री ) असुरों की माता ।
दनुजः ( पुं० ) असुर वा दानव ।
दन्तः ( पुं० ) दाँत ।
दन्तकः ( पुं० ) पर्वत में तिर्य्यक्प्रदेश से निकले हुये शूल के समान पत्थर ।
दन्तधावनः ( पुं० ) दतुवन, खैर (एक पान का मसाला ) ।
दन्तभागः (पुं०) दाँत का हिस्सा, हाथियों के दाँत का अग्रभाग।
दन्तशठ ( पुं० । स्त्री ) (ठः । ठा) ( पुं० ) जम्भीरी नीबू, कद्दत वृक्ष, ( स्त्री ) लोनियाँ भाजी ।
दन्तावलः ( पुं० ) हाथी ।
दन्तिका (स्त्री) वज्रदन्ती ओषधी।
दन्तिजा ( स्त्री ) तथा ।
दन्तिन् ( पुं० ) ( न्ती ) हाथी ।
दन्दशूकः ( पुं० ) सर्प ।
दभ्र ( त्रि० ) ( भ्रः । भ्रा । भ्रम् ) थोड़ा = ड़ी, सूक्ष्म वस्तु ।
दमः ( पुं० ) दण्ड वा सज़ा, इन्द्रियों का रोकना ।
दमथः (पुं०) इन्द्रियों का रोकना।
दमित ( त्रि० ) ( तः । ता । तम् ) दबाया हुआ = ई, जितेन्द्रिय ।
दमुनस् ( पुं० ) ( नाः ) अग्नि ।
दम्पती, द्विवचन, (पुं०) स्त्री पुरुष वा पत्नी और पति का जोड़ा ।
दम्भः ( पुं० ) अहङ्कार ।
दम्भोलिः ( पुं० ) वज्र ।
दम्य (त्रि०) (म्यः । म्या । म्यम्) दमन करने वा दबाने के योग्य, "वत्सतर" में देखो ।
दया ( स्त्री ) कृपा ।
दयाल ( त्रि० ) (लः । ला । लम्) दयायुक्त ।
दयालु (त्रि०) (लुः । लुः । लु)तथा।
दयित ( त्रि० ) ( तः । ता । तम् ) प्यारा = री ।
दर ( पुं० । नपुं० ) (रः । रम्) भय, गड़हा, ( नपुं० ) थोड़ा वा सूक्ष्म ।

दरत् (स्त्री) म्लेच्छ जाति, हृदय, नदी इत्यादि का तीर ।
दरम् ( अव्यय) थोड़ा वा सूक्ष्म ।
दरिद्र ( त्रि० ) ( द्रः । द्रा । द्रम् ) दरिद्र वा गरीब वा निर्धन ।
दरी ( स्त्री ) पर्वत की कन्दरा ।
दर्दुरः ( पुं० ) मेंढक वा मेंढुका, एक पर्वत ।
दर्पः ( पुं० ) अभिमान ।
दर्पकः ( पुं० ) कामदेव, घमण्ड करने वाला ।
दर्पणः ( पुं० ) दर्पण वा ऐना ।
दर्भः ( पुं० ) कुश, ग्रन्थ ।
दर्विः ( स्त्री ) कलछुल । [ दर्वी ]
दर्विका ( स्त्री ) गोभी तरकारी ।
दर्वीकरः ( पुं० ) सर्प ।
दर्शः ( पुं० ) अमावास्या तिथि, अमावास्या का यज्ञ ।
दर्शकः ( पुं० ) देखने वाला, देखलाने वाला, द्वारपालक ।
दर्शनम् ( नपुं० ) देखना, देखलाना, शास्त्र ।
दलम् ( नपुं० ) पत्ता, टुकड़ा ।
दवः ( पुं० ) बन, बन की आग ।
दविष्ठ ( त्रि० ) ( ष्ठः । ष्ठा । ष्ठम् ) अत्यन्त दूरवाला = ली ।
दवीयस् (त्रि०) (यान् । यसी । यः) तथा ।
दशनः ( पुं० ) दाँत ।
दशनवासस् (नपुं०) (सः) ओंठ ।
दशपुरम् ( नपुं० ) मोथा घास । [ दशपूरम् ] [ दाशपुरम् ] [ दाशपूरम् ]
दशबलः (पुं०) बुद्ध अर्थात् विष्णु का नवाँ अवतार ।
दशम ( त्रि० ) (मः । मी । मम्) दसवाँ = वीं, ( स्त्री ) दशमी एक तिथि ।
दशमिन् ( त्रि० ) ( मी । मिनी । मि) अतिवृद्ध ।
दशमीस्थ ( त्रि० ) (स्थः । स्था । स्थम्) अतिवृद्ध, जिस की प्रीति नष्ट हो गई है ।
दशा ( स्त्री ) अवस्था ( लड़काई जवानी इत्यादि ) ।
दशाः, बहुवचनान्त (स्त्री) वस्त्र का दोनों अन्त वा अंचला ।
दस्युः ( पुं० ) चोर, शत्रु ।
दस्रौ, द्विवचन, ( पुं० ) अश्विनीकुमार ।
दहनः ( पुं० ) अग्नि ।
दाक्षायणी ( स्त्री ) पार्वती ।
दाक्षायण्यः, बहुवचन, ( स्त्री ) अश्विनी इत्यादि २७ नक्षत्र ।
दाक्षाय्यः ( पुं० ) गिद्ध पक्षी ।
दाडिमः (त्रि०) (मः । मी । मम्)

अनार। [ दालिम ]
दाडिमपुष्पकः (पुं०) रोहित वृक्ष।
दाडिम्बः ( पुं० ) अनार।
दाण्डपाता ( स्त्री ) फागुन की पौर्णमासी ( होली )।
दात ( त्रि० ) ( तः । ता । तम् ) खण्डित वा काटा हुआ = ई ।
दात्यूहः (पुं०) जलकौवा । [दात्यौहः]
दात्रम् (नपु०) अन्न लवने का हंसुवा
दानम् ( नपुं० ) दान, हाथियों का मदजल ।
दानवः ( पुं० ) असुर ।
दानवारिः ( पुं० ) देवता ।
दानशौण्ड ( त्रि० ) (ण्डः । ण्डा । ण्डम्) दान देने में शूर ।
दान्त (त्रि०) ( न्तः । न्ता । न्तम् ) जितेन्द्रिय, तपस्यादि क्लेश से न घबराने वाला = ली, दबाया हुवा = ई, दाँत से बनी वस्तु ( चूड़ा ककही इत्यादि )।
दान्तिः (स्त्री) इन्द्रियों को वश में लाना, दबाना ।
दापित ( त्रि० ) (तः । ता । तम्) जिस से धन इत्यादि दिलवाया गया वह, दिलवाया गया = ई, धन इत्यादि दिलाने वाला = ली ।
दामनी (स्त्री) डोरी, "पशुरज्जू" में देखो ।
दामन् ( नपुं० ) ( म ) डोरी ।
दामा ( स्त्री ) तथा ।
दामोदरः ( पुं० ) विष्णु ।
दाम्भिकः (पुं०) लोगों के प्रसन्न करने के लिये धर्मकार्य्य करने वाला, मायावी ।
दायादः (पुं०) पुत्र, ज्ञाति वा बिरादरी ।
दायित ( त्रि० ) (तः । ता । तम्) जिस से धन इत्यादि दिलवाया गया वह, दिलवाई गई वस्तु ।
दारक(त्रि०) (रकः । रिका । रकम्) फाड़नेवाला = ली, (पुं०) लड़का, ( स्त्री ) लड़की ।
दारदः (पुं०) दरद देश का विष।
दारा ( स्त्री ) विवाहिता स्त्री ।
दाराः, बहुवचन, ( पुं० ) तथा ।
दारित ( त्रि० ) (तः । ता । तम्) फाड़ा गया = ई ।
दारु ( पुं० । नपुं० ) ( रुः । रु ) लकड़ी, ( नपुं० ) देवदार ।
दारुकः (पुं०) कृष्ण का सारथि ।
दारुण ( त्रि० ) (णः । णा । णम्) भयानक वा जिस से भय उत्पन्न हो, कठोर, ( नपुं० ) भयानक रस ।

दारुहरिद्रा ( स्त्री ) दारुहरदी ।
दारुहस्तकः ( पुं० ) डब्बू ( भात परोसने का एक पात्र ) ।
दार्वाघाटः (पुं०) काठफोड़वा पक्षी ।
दार्विका ( स्त्री ) "तार्च्यशैल" में देखो, गोभी तरकारी ।
दार्वी ( स्त्री ) दारुहरदी ।
दावः (पुं०) वन, वनाग्नि ।
दाविक ( त्रि० ) (कः । का—की । कम् ) देविका नदी से उत्पन्न वस्तु ।
दाशः ( पुं० ) दास वा नौकर, मल्लाह ।
दाशपूरम् ( नपुं० ) मोथा घास ।
दासः ( पुं० ) दास वा नौकर, मल्लाह ।
दासी ( स्त्री ) लौंड़ी, नीले फूल-वाली कठसरैया ।
दासीसभम् ( नपुं० ) दासियों का समूह, दासियों की शाला ।
दासेयः ( पुं० ) दास वा नौकर ।
दासेरः ( पुं० ) तथा ।
दासेरकः ( पुं० ) ऊंट ।
दासेरयुवन् ( पुं० ) (वा ) तथा ।
दिगम्बरः ( पुं० ) नङ्गा ।
दिग्गजः ( पुं० ) दिशा का हाथी ( ऐरावत, पुण्डरीक, वामन, कुमुद, अञ्जन, पुष्पदन्त, सार्व-भौम, सुप्रतीक—ये क्रम से पूर्वादि ८ दिशाओं के ८ दिग्गज हैं ।
दिग्ध (त्रि०) ( ग्धः । ग्धा । ग्धम् ) लेपित (धूली इत्यादि से), (पुं०) जहर में बुताया हुवा बाण ।
दित ( त्रि० ) ( तः । ता । तम् ) खण्डित वा काटा = टी ।
दितिः ( स्त्री ) असुरों की माता ।
दितिसुतः ( पुं० ) असुर ।
दिधिषुः ( पुं० ) दिधिषू का पति । [ दिधिषूः ]
दिधिषूः ( स्त्री ) वह स्त्री जो कि पहिले एक की स्त्री होकर फेर दूसरे की स्त्री हो । [ दिधषुः ]
दिनम् (नपुं०) दिन वा दिवस ।
दिनमणिः ( पुं० ) सूर्य्य ।
दिव ( पुं० । नपुं० ) (वः । वम्) (पुं०) चास पक्षी, (नपुं०) स्वर्ग
दिवस (पुं० । नपुं०) (सः । सम्) दिन ।
दिवस्पतिः ( पुं० ) इन्द्र ।
दिवस्पृथिव्यौ, द्विवचनान्त (स्त्री) आकाश और पृथिवी ।
दिवा (अव्यय) दिन ।
दिवाकरः ( पुं० ) सूर्य्य ।
दिवाकीर्तिः ( पुं० ) चण्डाल वा डोम, हज्जाम ।

दिवान्धः ( पुं॰ ) उल्लू पक्षी ।
दिवाभीतः ( पुं॰ ) तथा ।
दिविषद् (पुं॰) (त्—द्) देवता ।
दिवौकस् (पुं॰) (काः) तथा, पक्षी।
दिव् (स्त्री) (द्यौः) आकाश, स्वर्ग ।
दिव्योपपादुक ( त्रि॰ ) (कः । का । कम्) अकस्मात् जो स्वर्ग में उत्पन्न भया अर्थात् देवता ।
दिश् ( स्त्री ) ( क्—ग् ) दिशा ।
दिश्य (त्रि॰) (श्यः । श्या । श्यम्) दिशा में उत्पन्न हुई वस्तु ।
दिष्ट ( पुं॰ । नपुं॰ ) ( ष्टः । ष्टम् ) (पुं॰) काल वा समय, (नपुं॰) भाग्य वा पूर्वजन्मकृत शुभ वा अशुभ कर्म ।
दिष्टान्तः ( पुं॰ ) मरण ।
दिष्ट्या ( अव्यय ) आनन्द ।
दीक्षित ( त्रि॰ ) (तः । ता । तम्) यागादि क्रिया में जिस ने दीक्षा वा नियम लिया है ।
दीदिविः ( पुं॰ ) भात ।
दीधितिः ( स्त्री ) किरण ।
दीन ( त्रि॰ ) ( नः । ना । नम् ) दरिद्र ।
दीनारः ( पुं॰ ) एक तरह की मोहर ।
दीपः ( पुं॰ ) दीया ।
दीपकः ( पुं॰ ) तथा, अजमोदा ओषधी, मोर की चोटी । [दीप्यकः] [ दीप्यः ]
दीप्तिः ( स्त्री ) प्रकाश ।
दीप्यः ( पुं॰ ) मोर की चोटी, दीया, अजमोदा ओषधी ।
दीर्घ ( त्रि॰ ) ( र्घः । र्घा । र्घम् ) लम्बा = म्बी ।
दीर्घकोशिका ( स्त्री ) एक प्रकार का जलजन्तु ।
दीर्घदर्शिन् (त्रि॰) (र्शी । र्शिनी । र्शि ) बहुत दिन जीने वाला = ली, पण्डित, (पुं॰) गिद्ध पक्षी ।
दीर्घपृष्ठः ( पुं॰ ) सर्प ।
दीर्घवृन्तः (पुं॰) सोनापाढ़ा लकड़ी।
दीर्घसूत्र ( त्रि॰ ) (त्रः । त्रा । त्रम्) थोड़े समय में करने के योग्य जो काम है उस में बहुत देर लगानेवाला = ली ।
दीर्घिका ( स्त्री ) बावली एक जलाशय ।
दुकूलम् (नपुं॰) रेशम का कपड़ा।
दुग्ध ( त्रि॰ ) (ग्धः । ग्धा । ग्धम्) दूहा गया = ई, ( नपुं॰ ) दूध ।
दुग्धिका ( स्त्री ) दुधिया घास ।
दुद्रुमः ( पुं॰ ) हरा प्याज ।
दुन्दुभि ( पुं॰ । स्त्री ) (भिः । भिः -भी) (पुं॰) नगाड़ा, (स्त्री) लड़कों का एक प्रकार का खिलौना ।

दुरध्वः ( पुं० ) ख़राब रस्ता ।
दुरालभा ( स्त्री ) जवासा वा हिं-
गुवा एक काँटेदार वृक्ष ।
दुरितम् (नपुं० ) पाप ।
दुरेषणा ( स्त्री ) शाप ।
दुरोदर (पुं० । नपुं०) (रः । रम्)
( पुं० ) जुआरी, दॉव ( जूआ
में जो द्रव्य लगाया जाताहै ),
( नपुं० ) जूआ ।
दुःखम् ( नपुं० ) दुःख ।
दुर्गम् ( नपुं० ) किला ।
दुर्गत ( त्रि० ) ( तः । ता । तम् )
दरिद्र वा निर्धन वा ग़रीब ।
दुर्गतिः ( स्त्री ) नरक ।
दुर्गन्ध (त्रि०) (न्धः । न्धा । न्धम्)
खराब गन्ध वाला = ली ।
दुर्गसञ्चरः (पुं०) कठिन रास्ता,
किला इत्यादि दुर्गम स्थान
में प्रवेश करना ।
दुर्गसञ्चारः ( पुं० ) तथा ।
दुर्गा ( स्त्री ) पार्वती ।
दुर्जनः ( पुं० ) दुष्ट जन ।
दुर्दिनम् ( नपुं० ) मेघों के घटा
से छाया हुवा दिन ।
दुर्नामकम् (नपुं०) बवासीर रोग।
दुर्नामन् ( पुं० ) (मा) एक जल-
जन्तु ।
दुर्बल ( त्रि० ) ( लः । ला । लम् )
बलरहित वा दुबला = ली ।
दुर्मनस् ( त्रि० ) (नाः । नाः । न.)
जिस का चित्त व्याकुल वा घ-
बड़ाया है ।
दुर्मुख ( त्रि० ) (खः । खा । खम्)
बोलने में आगे पीछे का वि-
चार न करनेवाला = ली ।
दुर्वर्णम् (नपुं०) चाँदी धातु, निन्दा
दुर्विध (त्रि०) (धः । धा । धम्) दरिद्र
दुर्हृद् ( त्रि० ) ( त्—द् । त्—द् ।
त्—द्) दुष्ट हृदय वाला = ली,
( पुं० ) शत्रु ।
दुलिः ( स्त्री ) कछुई जलजन्तु ।
दुश्च्यवनः ( पुं० ) इन्द्र ।
दुष्कृतम् ( नपुं० ) पाप ।
दुष्ठु ( अव्यय ) निन्दा अर्थ में ।
दुष्पत्रः (पुं०) चोर नामक गन्ध-
द्रव्य ।
दुष्प्रधर्षिणी (स्त्री) बनैला भयटा ।
दुष्षमम् ( नपुं० । अव्यय ) निन्द्य
दुस्पर्श ( त्रि० ) (र्शः । र्शा । र्शम्)
दुःख से छूने के योग्य, ( पुं० )
जवासा वा हिंगुआ एक काँटे-
दार वृक्ष, (स्त्री) भटकटैया ।
दुहितृ (स्त्री ) ( ता ) लड़की ।
दूतः ( पुं० ) दूत वा हलकारा ।
दूति ( स्त्री ) ( तिः—ती ) ख़बर
पहुंचाने वाली ।

दूत्यम् ( नपुं० ) दूतपन ।
दून ( त्रि० ) ( नः । ना । नम् ) सन्तापित वा पीडित वा दुःखित
दूर ( त्रि० ) ( रः । रा । रम् ) दूरवाला = ली ।
दूरदर्शिन् ( त्रि० ) ( र्शी । र्शिनी । र्शि ) पण्डित, वृद्ध, दूर तक दृष्टि फैलानेवाला = ली, ( पुं० ) गिद्ध पक्षी ।
दूर्वा ( स्त्री ) दूब एक घास ।
दूषिका ( स्त्री ) नेत्र का मल वा कीचड़ ।
दूष्यम् ( नपुं० ) कपड़े का घर वा तम्बू । [ दूश्यम् ]
दूष्या ( स्त्री ) हाथियों के शरीर के बीच में बाँधने के लिये चमड़े की डोरी ।
दृढ ( त्रि० ) ( ढः । ढा । ढम् ) कठोर, बलवान्, मोटा = टी, ( नपुं० ) अत्यन्त ।
दृढसन्धि ( त्रि० ) ( न्धिः । न्धिः । न्धि ) जिस का सन्धान वा उद्योग दृढ है ।
दृतिः ( स्त्री ) मसक ।
दृब्ध ( त्रि० ) ( ब्धः । ब्धा । ब्धम् ) गूथा हुआ = ई ।
दृश् ( त्रि० ) ( क्—ग् । क्—ग् । क्—ग् ) ज्ञानवाला = ली, ( स्त्री ) नेत्र, दृष्टि ।
दृषद् ( स्त्री ) ( त्—द् ) पत्थर ।
दृष्ट ( त्रि० ) ( ष्टः । ष्टा । ष्टम् ) देखा गया = ई, ( नपुं० ) अपनी और शत्रु की सेना से उत्पन्न हुआ भय ।
दृष्टरजस् ( स्त्री ) ( जाः ) पहिले पहिल कपड़े से भई स्त्री ।
दृष्टान्त ( त्रि० ) ( न्तः । न्ता । न्तम् ) जिस का अन्त देखा गया वह, ( पुं० ) शास्त्र, उदाहरण ।
दृष्टिः ( स्त्री ) नेत्र, देखना, ज्ञान
देवः ( पुं० ) देवता, राजा ( नाट्य में ), मेघ ।
देवकीनन्दनः ( पुं० ) कृष्ण भगवान्
देवकुसुमम् ( नपुं० ) लवंग ( एक वृक्ष ) ।
देवखातम् ( नपुं० ) बिना बनाया पर्वत का बिल ।
देवखातकः ( पुं० ) बिना बनाया जलाशय ( झील इत्यादि ) ।
देवच्छन्दः ( पुं० ) सौरह लड़ का मोती का हार ।
देवजग्धकः ( पुं० ) रोहिसनामक घास ।
देवता ( स्त्री ) देवता ।
देवताडः ( पुं० ) बन्दाल एक ओषधीवृक्ष ।

देवदारु ( नपुं० ) देवदार वृक्ष ।
देवत्वम् ( नपुं० ) देव का धर्म अर्थात् 'सिफ़त'। [ देवभूयम् ] [ देवसायुज्यम् ]
देवद्युश् ( त्रि० ) द्युङ् । द्रीची । द्युक्—ग) देवतों की पूजा करने वाला = ली वा देवतों को प्राप्त करने वाला = ली ।
देवनः ( पुं० ) जूवा खेलने वाला, पासा ।
देवनम् (नपुं०) क्रीड़ा, व्यवहार, जीतने की इच्छा ।
देवन् ( पुं० ) ( वा ) देवर (स्त्री के पति का भाई) ।
देवभूयम् ( नपुं० ) देव का धर्म ।
देवमातृकः (पुं०) वह देश जिसमें मेघ की वृष्टि से अन्न उत्पन्न होता है ।
देवयज्ञः ( पुं० ) होम ।
देवरः (पुं०) देवर ( स्त्री के पति का भाई ) ।
देवलः ( पुं० ) देवपूजा से अपनी जीविका करने वाला, एक देवर्षि का नाम ।
देववल्लभः (पुं०) पुन्नाग वृक्ष, देवतों का प्रिय, मूर्ख ।
देवशिल्पिन् ( पुं० ) ( ल्पी ) विश्वकर्मा ।
देवाजीवः ( पुं० ) देवपूजा से अपनी जीविका करने वाला । [ देवाजीविन्—( वी ) ]
देवी (स्त्री) देवता की स्त्री, (नाट्य में) पटरानी, अस्वरक ओषधी, मुरहारा वा मुर्रा एक लतावृक्ष ।
देवृ (पुं०) ( वा ) देवर ( स्त्री के पति का भाई ) ।
देशः ( पुं० ) देश, स्थान ।
देशरूपम् (नपुं०) न्याय वा नीति वा व्यवस्था वा आईन ।
देशिकः (पुं०) देशवासी, गुरु ।
देह ( पुं० । नपुं० ) (हः । हम्) देह वा शरीर ।
देहलि (स्त्री) (लिः—ली) डेहरी ।
दैतेयः ( पुं० ) असुर ।
दैत्यः ( पुं० ) तथा ।
दैत्यगुरुः ( पुं० ) शुक्र ।
दैत्या (स्त्री) मुरा नाम गन्धद्रव्य ।
दैत्यारिः ( पुं० ) विष्णु ।
दैन्यम् ( नपुं० ) दीनता ।
दैर्घ्यम् ( नपुं० ) लम्बाई ।
दैवम् (नपुं०) भाग्य वा पूर्व जन्म में किये अच्छे बुरे कर्म, देवतों का समूह, अंगुलियों के अग्रभाग में का तीर्थ ।
दैवज्ञः ( पुं० ) ज्योतिषी ।
दैवज्ञा (स्त्री) 'विप्रश्निका' में देखो

दैवत ( पुं० । नपुं० ) (तः । तम्) देवता ।
दोला ( स्त्री ) हिंडोला, नील, डोली । [ दोली ]
दोषज्ञः ( पुं० ) पण्डित ।
दोषा ( स्त्री अव्यय ) ( स्त्री ) बाँह वा भुजा, (अव्यय) रात्रि।
दोषैकदृश् ( पुं० ) (क्—ग्) गुण को छोड़ केवल दोष का देखने वाला ।
दोष् ( पुं० । नपुं० ) (ोः । दोः) बाँह वा भुजा ।
दोहदम् ( नपुं० ) इच्छा, गर्भ, गर्भवती स्त्री की इच्छा ।
दोहदवती ( स्त्री ) गर्भवती स्त्री, "श्रद्धालु" का अर्थ स्त्रीलिङ्ग में देखो ।
दौत्यम् ( नपुं० ) दूतपन ।
दंशः ( पुं० ) डंस ( एक बन की माछी ), काटना ।
दंशनम् (नपुं०) काटना, कवच ।
दंशित ( त्रि० ) (तः । ता । तम्) काटा गया = ई, कटवाया गया = ई, (पुं०) कवचधारी ।
दंशिन् ( त्रि० ) (शी । शिनी । शि) काटने वाला = ली ।
दंशी (स्त्री) छोटा डंस वा छोटी एक बन की माछी ।
दंष्ट्रिन् ( पुं० ) ( ष्ट्री ) सूअर पशु।
द्यावापृथिव्यौ, द्विवचन, ( स्त्री ) आकाश और भूमि ।
द्यावाभूमी, द्विवचन, ( स्त्री) तथा ।
द्युतिः ( स्त्री ) शोभा, प्रभा ।
द्युमणिः ( पुं० ) सूर्य्य ।
द्युम्नम् ( नपुं० ) धन ।
द्यूत ( पुं० । नपुं० ) (तः । तम्) जूआ ।
द्यूतकारः (पुं०) जुआरी "सभिक" में देखो ।
द्यूतकारकः ( पुं० ) तथा ।
द्यूतकृत् ( पुं० ) जुआरी ।
द्यो ( स्त्री ) (द्यौः) आकाश, स्वर्ग ।
द्योतः ( पुं० ) प्रकाश, सूर्य्य का घाम ।
द्रप्स (पुं० । नपुं०) (प्सः । प्सम्) पतला दही ।
द्रप्स्य (पुं० । नपुं०) (प्स्यः । प्स्यम्) तथा ।
द्रवः (पुं०) पतला वस्तु, (जैसा पानी इत्यादि), भागना, क्रीडा ।
द्रवत् (त्रि०) (न् । न्ती । त्) पतली वस्तु, (स्त्री) नदी, मूसाकर्णी ओषधी ।
द्रविणम् ( नपुं० ) धन, सामर्थ्य ।
द्रव्यम् (नपुं०) धन, भव्य अर्थात् सुन्दर और स्थिर, पृथ्वी जल

इत्यादि ८ द्रव्य जो न्याय शास्त्र में कहे हैं, लिङ्ग सङ्ख्या और कारक के साथ जिस का सम्बन्ध हो वह (जैसा व्याकरण में लिखा है)।

द्राक् ( अव्यय ) जल्दी ।

द्राचा (स्त्री) दाख वा मुनक्का मेवा

द्राघिष्ठ ( त्रि० ) ( ष्ठः । ष्ठा । ष्ठम् ) अत्यन्त लम्बा = लम्बी ।

द्राविडकः ( पुं० ) कचूर ।

द्रुः ( पुं० ) वृक्ष ।

द्रुकिलिमम् ( नपुं० ) देवदार वृक्ष।

द्रुघणः ( पुं० ) मुद्गर ।

द्रुणः ( पुं० ) बिच्छी एक जन्तु ।

द्रुणी (स्त्री) गोजर, ककुई, डोंगी।

द्रुत ( त्रि० ) ( तः । ता । तम् ) जल्दीबाज़, पघिलाया गया = ई ( घृत इत्यादि ), पिघल गया = ई ( घृत इत्यादि ), (नपुं०) चलता नृत्य वाद्य और गीत, जल्दी ।

द्रुमः ( पुं० ) वृक्ष ।

द्रुमामयः ( पुं० ) मझावर रङ्ग ।

द्रुमोत्पलः ( पुं० ) काठचम्पा पुष्प-वृक्ष ।

द्रुवयम् ( नपुं० ) मान वा माप ( सेर छटङ्की पौवा इत्यादि ) ।

द्रुहिणः ( पुं० ) ब्रह्मा ।

द्रोणः (पुं०) दोना, तौल में आधा मन, बिच्छी जन्तु, कौवा, अश्वत्थामा के पिता का नाम ।

द्रोणकाकः ( पुं० ) डोमकौवा ।

द्रोणक्षीरा ( स्त्री ) आध मन दूध देनेवाली गैया ।

द्रोणदुग्धा ( स्त्री ) तथा ।

द्रोणी (स्त्री) काठ की नाव, झील

द्रोहचिन्तनम् (नपुं०) वैर करना।

द्रौणिक (त्रि०) (कः । की । कम्) आध मन अन्न बोने के योग्य ( खेत इत्यादि )।

द्वन्द्वम् ( नपुं० ) स्त्री पुरुष का जोड़ा, कलह, दो विरोधियों का जोड़ा (जैसा ठण्ढा और गरम, सुख और दुःख इत्यादि)।

द्वयातिगः ( पुं० ) सत्वगुणप्रधान वा रजोगुण और तमोगुण से रहित ( जैसे व्यास इत्यादि )।

द्वादशाङ्गुलः ( पुं० ) नाप में एक बित्ता वा बित्तस्त ।

द्वादशात्मन् (पुं०) (त्मा) सूर्य्य।

द्वापरः ( पुं० ) संशय वा सन्देह, 'द्वापर' युग ।

द्वारम् (नपुं०) द्वार वा दरवाज़ा।

द्वारपालः ( पुं० ) डेउढ़ीदार ।

द्वार् ( स्त्री ) ( द्वाः ) द्वार वा दरवाज़ा ।

द्वास्थः ( पुं० ) डेउढ़ीदार।
द्वास्थितः ( पुं० ) तथा।
द्विगुणाकृत ( त्रि० ) ( तः। ता। तम् ) दो बेर जोता गया = ई ( खेत इत्यादि )।
द्विजः (पुं०) ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, पक्षी, दाँत।
द्विजराजः ( पुं० ) चन्द्रमा।
द्विजा ( स्त्री ) रेणुकबीज एक सुगन्धद्रव्य।
द्विजातिः (पुं०) ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य।
द्विजिह्वः ( पुं० ) सर्प, चुगलखोर।
द्वितीय (त्रि०) ( यः। या। यम् ) दूसरा = री, (स्त्री) विवाहिता स्त्री, द्वितीया तिथि।
द्वितीयाकृत ( त्रि० ) ( तः। ता। तम् ) दो बेर जोता गया = ई ( खेत इत्यादि )।
द्विपः ( पुं० ) हाथी।
द्विपाद्यः (पुं०) अपराधी को शास्त्र में लिखे हुए दण्ड से दूना दण्ड।
द्विरदः ( पुं० ) हाथी।
द्विरसनः ( पुं० ) सर्प।
द्विरेफः ( पुं० ) भंवरा।
द्विष् ( पुं० ) ( ट्—ड् ) शत्रु।
द्विषत् ( पुं० ) ( न् ) शत्रु।
द्विष्ट ( त्रि० ) ( ष्टः। ष्टा। ष्टम् ) द्वेष वा वैर किया गया = ई, ( नपुं० ) ताँबा धातु।
द्विसीत्य (त्रि०) (त्यः। त्या। त्यम्) दो बेर जोता गया = ई (खेत इत्यादि)।
द्विहल्य (त्रि०) (ल्यः। ल्या। ल्यम्) तथा।
द्विहायनी ( स्त्री ) दो बरस की गैया।
द्वीप (पुं०। नपुं०)(पः।पम्) टापू।
द्वीपवती ( स्त्री ) नदी।
द्वीपिन् (पुं०) (पी) व्याघ्र वा बाघ।
द्वेषणः ( पुं० ) शत्रु वा वैर करने वाला।
द्वेष्य (त्रि०) (ष्यः। ष्या। ष्यम्) वैर करने के योग्य।
द्वैधम् ( नपुं० ) दुबधा।
द्वैपः ( पुं० ) बाघ के चमड़े से घेरा हुवा रथ।
द्वैपायनः ( पुं० ) व्यास ऋषि।
द्वैमातुरः ( पुं० ) गणेश।
द्व्यष्टम् ( नपुं० ) ताँबा धातु।

—***—

## ( ध )

धा ( पुं॰ । नपुं॰ ) ( धः । धम् ) ( पुं॰ ) धनी, ब्रह्मा, मनु, ( नपुं॰ ) धन ।

धटः ( पुं॰ ) तराजू, शपथ ।

धटी ( स्त्री ) कपड़े का टुकड़ा ।

धत्तूरः (पुं॰) धतूरा वृक्ष। [धुस्तूरः] [ धुस्तुरः ] [ धूस्तूरः ] [धुत्तूरः]

धनम् ( नपुं॰ ) धन ।

धनञ्जयः ( पुं॰ ) अग्नि, अर्जुन एक पाण्डव ।

धनद ( त्रि॰ ) ( दः । दा । दम् ) धन देनेवाला = ली, ( पुं॰ ) कुबेर ।

धनहरी ( स्त्री ) चोरा नाम गन्धद्रव्य ।

धनाधिपः ( पुं॰ ) कुबेर, धन का स्वामी ।

धनिन् (त्रि॰) (नी । निनी । नी) धनवाला = ली ।

धनिष्ठा ( स्त्री ) एक नक्षत्र ।

धनीयकम् ( नपुं॰ ) धनियाँ लता-वृक्ष ।

धनुः ( पुं॰ ) धनुष, मेष इत्यादि १२ राशियों में की एक राशि ( धन ), प्यारमेवा ।

धनुष् ( नपुं॰ ) ( नुः ) तथा ।

धनुर्द्धरः ( पुं॰ ) धनुष् का धारण करने वाला ।

धनुःपटः ( पुं॰ ) प्यारमेवा ।

धनुर्यासः ( पुं॰ ) जवासा वा हिंगुवा ।

धनुष्मत् ( पुं॰ ) ( ष्मान् ) धनुष् का धारण करने वाला ।

धन्य ( त्रि॰ ) (न्यः । न्या । न्यम्) पूज्य, भाग्यवान्, ( नपुं॰ ) धनियाँ ।

धन्याकम् (नपुं॰) धनियाँ ।

धन्वम् ( नपुं॰ ) धनुष् ।

धन्वन् (पुं॰ । नपुं॰) ( न्वा । न्व ) ( पुं॰ ) निर्जल देश वा मारवाड़ देश, ( नपुं॰ ) धनुष् ।

धन्वयासः ( पुं॰ ) जवासा वा हिंगुवा ।

धन्विन् ( पुं॰ ) (न्वी) "धनुष्मत्" में देखो

धमनः ( पुं॰ ) पानी इत्यादि का नल, आग सुलगाने वाला ।

धमनिः ( स्त्री ) शरीर की नाड़ी वा नस ।

धमनी (स्त्री) तथा, मालकंगुनी ।

धम्मिल्लः (पुं॰) मोतियों के माला से बंधा हुआ केशों का समूह ।

धरः ( पुं॰ ) पर्वत ।

धरणिः ( स्त्री ) भूमि ।

धरा ( स्त्री ) तथा ।
धरित्री ( स्त्री ) तथा ।
धर्म ( पुं० । नपुं० ) (र्मः । र्मम्) पुण्य, न्याय वा नीति, आचार, (पुं०) यमराज, स्वभाव, सोमलता के रस का पीने वाला ।
धर्मध्वजिन् ( पुं० ) ( जी ) झूठे धर्म का देखाने वाला अर्थात् जीविका के लिये जटा इत्यादि धारण करने वाला ।
धर्मपत्तनम ( नपुं० ) धर्म के लिये वा धर्मयुक्त नगर, मिरिच ।
धर्मराजः ( पुं० ) यमराज, बुद्ध अर्थात् विष्णु का नवाँ अवतार ।
धर्मसंहिता ( स्त्री ) धर्मशास्त्र ।
धर्षिणी ( स्त्री ) कुलटा वा खानगी स्त्री । [ धर्षणी ]
धवः ( पुं० ) स्त्री का पति, एक वृक्ष, पुरुष ।
धवल ( त्रि० ) (लः । ला । लम्) सफेद वस्तु, (पुं०) सफेद रङ्ग ।
धवला (स्त्री) श्वेत गैया । [धवली]
धवित्रम् ( नपुं० ) आग सुलगाने के लिये मृगचर्म से बना हुआ पंखा । [ धुवित्रम् ]
धातकी ( स्त्री ) धव वृक्ष ।
धातुः ( पुं० ) कफ वात पित्त, पेट में अन्न जाय कर के जो रस बन जाता है वह और रक्त इत्यादि, पञ्च महाभूत (पृथ्वी जल इत्यादि), पाँचो महाभूत के गुण ( रूप रस गन्ध इत्यादि ), इन्द्रिय, पत्थर का विकार (सिलाजीत इत्यादि ), वर्णात्मक शब्द का कारण ("भू" सत्तायाम् इत्यादि ) ।
धातुपुष्पिका ( स्त्री ) धव वृक्ष ।
धातृ ( पुं० ) ( ता ) ब्रह्मा ।
धातृपुष्पिका ( स्त्री ) धव वृक्ष ।
धात्री (स्त्री) माता, अंवरा, पृथ्वी, उपमाता अर्थात् दूध पिलाने वाली धाय ।
धाना (स्त्री) भूंजा जव वा बहुरी।
धानुष्कः ( पुं० ) धनुष् का धारण करने वाला ।
धान्यम् (नपुं०) जव इत्यादि अन्न, धान ।
धान्यकम् ( नपुं० ) धनियाँ ।
धान्याकम् ( नपुं० ) तथा ।
धान्याम्लम् ( नपुं० ) काँजी ।
धामनिधिः ( पुं० ) सूर्य्य ।
धामन् ( नपुं० ) ( म ) घर, देह, प्रभा वा प्रकाश, प्रभाव ।
धामार्गवः ( पुं० ) रामतरोई तरकारी, चिचिड़ा तरकारी ।
धाय्या (स्त्री) 'सामिधेनी' में देखो।

धारणा (स्त्री) मर्यादा, पकड़ना ।
धारा (स्त्री) जल का प्रवाह, तरवार की धार, 'आस्कन्दित' 'धौरितक' 'रेचित' 'वल्गित' और 'प्लुत' इन पाँच प्रकार की घोड़ों की चालों को 'धारा' कहते हैं ।
धाराधरः (पुं०) मेघ ।
धारासम्पातः (पुं०) महावृष्टि ।
धार्तराष्ट्रः (पुं०) धृतराष्ट्र राजा के पुत्र (दुर्य्योधन इत्यादि), बत्तक पक्षी ।
धावनि (स्त्री) (निः—नी) पिठवन ओषधी ।
धिक् (अव्यय) ग्लानि देना वा धिक्कारना, निन्दा ।
धिक्कृत (त्रि०) (तः । ता । तम्) धिक्कार दिया गया = हुं ।
धिषणः (पुं०) बृहस्पति ।
धिषणा (स्त्री) बुद्धि ।
धिष्ण्यम् (नपुं०) स्थान, गृह, नक्षत्र, अग्नि ।
धीः (स्त्री) बुद्धि ।
धीन्द्रियम् (नपुं०) मन इत्यादि ६ ज्ञानेन्द्रिय ।
धीमत् (त्रि०) (मान् । मती । मत्) बुद्धिमान्, पण्डित ।
धीर (त्रि०) (रः । रा । रम्) धीर वा धैर्य्यवान्, (पुं०) पण्डित, (नपुं०) केसर ।
धीवरः (पुं०) मल्लाह ।
धीशक्तिः (स्त्री) बुद्धि का सामर्थ्य ।
धीसचिवः (पुं०) राजा का मन्त्री ।
धुनी (स्त्री) नदी ।
धुरन्धरः (पुं०) बोझा ढोने वाला ।
धुरीणः (पुं०) तथा ।
धुर् (स्त्री) (धूः) रथ की धुरी, बोझा ।
धुर्य्यः (पुं०) बोझा ढोने वाला, घोड़ा ।
धूत (त्रि०) (तः । ता । तम्) त्याग किया गया = हुं, कंपाया गया = हुं ।
धूपायित (त्रि०) (तः । ता । तम्) सन्ताप दिया गया = हुं, धूप दिया गया = हुं ।
धूपित (त्रि०) (तः । ता । तम्) तथा ।
धूमकेतुः (पुं०) एक उत्पातग्रह, अग्नि ।
धूमयोनिः (पुं०) मेघ, अग्नि ।
धूमल (त्रि०) (लः । ला । लम्) काला मिश्रित लाल रङ्ग वाला = ली, (पुं०) काला मिश्रित लाल रङ्ग ।
धूम्या (स्त्री) धूंओं का समूह ।

धम्याटः (पुं०) मस्तकचूड़ पक्षी।
धूम्र (त्रि०) (म्रः। म्रा। म्रम्) "धमल" में देखो।
धूर्जटिः (पुं०) शिव।
धूर्तः (पुं०) धूर्त वा ठगने वाला [धार्तः], धतूरा वृक्ष, जुआरी।
धूर्वह (त्रि०) (हः। हा। हम्) बोझा ढोने वाला = ली।
धूलि (स्त्री) (लिः—ली) धूर।
धूसर (त्रि०) (रः। रा। रम्) थोड़ा पाण्डु रङ्ग वाली वस्तु, मटमैला = ली, (पुं०) थोड़ा पाण्डु (अधिक सपेदी लिये पीला) रङ्ग।
धृतिः (स्त्री) धीरता, पकड़ना।
धृष्ट (त्रि०) (ष्टः। ष्टा। ष्टम्) ढीठा = ठी।
धृष्णज् (त्रि०) (क्—ग्। क्—ग्। क्—ग्) तथा।
धृष्णु (त्रि०) (ष्णुः। ष्णुः। ष्णु) तथा।
धेनुः (स्त्री) नये बियान वाली गैया
धेनुका (स्त्री) तथा, हथिनी।
धेनुष्या (स्त्री) गीरों रक्खी हुई गैया।
धैनुकम (नपुं०) धेनुओं का समूह
धैवतः (पुं०) एक स्वर (जैसा घोड़ा बोलता है)।
धोरणम् (नपुं०) वाहन वा सवारी।
धौरितम् (नपुं०) घोड़ों की तुकी चाल।
धौरितकम् (नपुं०) तथा।
धौरेयः (पुं०) घोड़ा, बोझा ढोने वाला।
ध्यामम् (नपुं०) रोहिस घास।
ध्रुव (त्रि०) (वः। वा। वम्) निश्चल वा स्थिर, (पुं०) ध्रुव एक तारा, ठूंठा वृक्ष, एक स्रुवा जिस से होम किया जाता है, (स्त्री) शालपर्णी ओषधी, (नपुं०) निश्चय (क्रियाविशेषण)।
ध्वज (त्रि०) (जः। जा। जम्) ध्वजा वा पताका।
ध्वजिनी (स्त्री) सेना।
ध्वनिः (पुं०) शब्द।
ध्वनितम् (नपुं०) मेघ का गर्जना, शब्द।
ध्वस्त (त्रि०) (स्तः। स्ता। स्तम्) च्युत हो गया वा गिर गया।
ध्वाङ्क्षः (पुं०) कौवा, मत्स्य का पकड़नेवाला पक्षी (बकुला इत्यादि)।
ध्वानः (पुं०) शब्द।
ध्वान्तम् (नपुं०) अन्धकार।

# ( न )

न ( अव्यय ) नहीं ।
नः ( पुं० ) नेता वा रक्षक, नाव, सुगत वा एक नास्तिकों की देवता, बुद्धि, स्तुति, वृक्ष, स्वागतप्रश्न, बन्धु वा नातेदार, सूर्य्य
नकुलः ( पुं० ) नेउर जन्तु ।
नकुलेष्टा ( स्त्री ) रासन वृक्ष ।
नक्तः ( पुं० ) करञ्ज वृक्ष ।
नक्तम् ( नपुं० । अव्यय ) रात्रि ।
नक्तकः ( पुं० ) पुराने वस्त्र का टुकड़ा वा चिथड़ा ।
नक्तमालः ( पुं० ) करञ्ज वृक्ष ।
नक्रः ( पुं० ) नाक (जलजन्तु) ।
नक्षत्रम् (नपुं०) नक्षत्र वा तारा ।
नक्षत्रमाला ( स्त्री ) नक्षत्र वा तारों की पङ्क्ति, सत्ताइस मोतियों से बनी हुई एक लड़ की माला ।
नक्षत्रेशः ( पुं० ) चन्द्रमा ।
नख ( पुं० । नपुं० )(खः । खम्) हाथ का नख, ( नपुं० ) नख नामक एक सुगन्धद्रव्य ।
नखर (पुं० । नपुं०) ( रः । रम् ) हाथ का नख ।
नखिन् ( पुं० ) ( खी ) बड़े २ नख वाले हिंसक जन्तु ( व्याघ्र इत्यादि ), नख नाम गन्धद्रव्य ।
नगः ( पुं० ) पर्वत, वृक्ष ।
नगरम् (नपुं०) नगर, राजधानी।
नगरी ( स्त्री ) तथा ।
नगौकस् ( पुं० ) ( काः ) पक्षी ।
नग्न (त्रि०) (ग्नः । ग्ना । ग्नम्) नङ्गा = ङ्गी ।
नग्नहूः (पुं०) "किण्व" में देखो ।
नग्निका (स्त्री) रजोधर्मरहित स्त्री
नटः ( पुं० ) नट वा नाचनेवाला, सोनापाढ़ा एक लकड़ी ।
नटनम् ( नपुं० ) नाचना ।
नटी (स्त्री) नट की स्त्री, नाचनेवाली, माल्कंगुनी ओषधी ।
नडः ( पुं० ) नरकट एक वृक्ष । [ नलः ]
नड्या (स्त्री) नरकट का समूह ।
नड्वत् (त्रि०) (ड्वान् । ड्वती । ड्वत् ) जिस स्थान में नरकट बहुत हों।
नड्वल ( त्रि० ) ( लः । ला । लम् ) तथा।
नत ( त्रि० ) ( तः । ता । तम् ) झुका = की, टेढ़ा = ढ़ी, नीचा = ची ।
नतनासिक ( त्रि० ) (कः । का । कम्) चिपटी नाक वाला = ली।
नदः (पुं०) नद (शोणभद्र इत्यादि)

नदी (स्त्री) नदी ।
नदीमातृक (त्रि०) (कः । का । कम्) वह देश जिस में नदी के पानी से अन्न उत्पन्न होते हैं ।
नदीसर्जः (पुं०) अर्जुन वृक्ष ।
नध्री (स्त्री) चमड़े की डोरी ।
ननन्दृ (स्त्री) (न्दा) स्त्री के पति की बहिन वा ननंद ।
ननान्दृ (स्त्री) (न्दा) तथा ।
ननु (अव्यय) प्रश्न, निश्चय, बिनती, विरोध, सम्बोधन ।
नन्दकः (पुं०) विष्णु का खड्ग ।
नन्दनम् (नपुं०) इन्द्र का बगीचा।
नन्दिकः (पुं०) शिव का एक गण।
नन्दिकेश्वरः (पुं०) तथा ।
नन्दिन् (पुं०) (न्दी) तथा, राजा इत्यादि अमीरों का एक प्रकार का घर ।
नन्दिवृक्षः (पुं०) तूणी वृक्ष ।
नन्दीवर्तः (पुं०) एक मछली ।
नन्द्यावर्तः (पुं०) राजा इत्यादि अमीरों का एक प्रकार का घर।
नपुंसकः (पुं०) नपुंसक वा नामर्द।
नप्त्री (स्त्री) पुत्र वा पुत्री की लड़की ।
नप्तृ (पुं०) (प्ता) पुत्र वा पुत्री का लड़का ।
नभस् (पुं० । नपुं०) (भाः । भः) (पुं०) श्रावण महीना, (नपुं०) आकाश ।
नभसङ्गमः (पुं०) पक्षी ।
नभस्यः (पुं०) भादों महीना ।
नभस्वत् (पुं०) (स्वान्) पवान, वायु।
नमसित (त्रि०) (तः । ता । तम्) पूजित ।
नमस (अव्यय) (मः) नमस्कार, नम्रता ।
नमस्कारिन् (पुं०) (री) नमस्कार करनेवाला, लजालू वृक्ष।
नमस्या (स्त्री) नमस्कार, पूजा।
नमस्यित (त्रि०) (तः । ता । तम्) पूजित ।
नमुचिसूदनः (पुं०) इन्द्र ।
नयः (पुं०) नीति वा व्यवस्था, ले जाना वा पहुंचाना ।
नयनम् (नपुं०) आँख, लेजाना वा पहुंचाना ।
नरः (पुं०) मनुष्य, खूंटा ।
नरकः (पुं०) नरक, दुर्गति ।
नरकान्तकः (पुं०) विष्णु ।
नरवाहनः (पुं०) कुबेर ।
नर्तक (त्रि०) (कः । की । कम्) नाचनेवाला = ली ।
नर्तनम् (नपुं०) नाचना ।
नर्मदा (स्त्री) रेवा नदी ।
नर्मन् (नपुं०) (र्म) क्रीड़ा वा

निहार।

नलकूवरः (पुं०) कुवेर का पुत्र।

नलदम् (नपुं०) खस (एक घास)

नलमीनः (पुं०) नरकट के बन की मछली।

नलिनम् (नपुं०) कमल।

नलिनी (स्त्री) कमलिनी।

नली (स्त्री) मालकंगुनी।

नल्वः (पुं०) ४०० हाथ, ४०० बित्ता

नव (त्रि०) (वः। वा। वम्) नया = ई।

नवनीतम (नपुं०) मक्खन।

नवमालिका (स्त्री) नेवारी वृक्ष।

नवसूतिका (स्त्री) नई बियानी गैया।

नवीन (त्रि०) (नः। ना। नम्) नया = ई।

नवोद्धृतम् (नपुं०) मक्खन।

नव्य (त्रि०) (व्यः। व्या व्यम) नया = ई।

नश्वर (त्रि०) (रः। री। रम्) नाश होने वाला = ली।

नष्ट (त्रि०) (ष्टः। ष्टा। ष्टम्) नष्ट हो गया = ई, अदृश्य वा गुप्त हो गया = ई।

नष्टचेष्टता (स्त्री) मूर्छा।

नष्टाग्नि (पुं०) जिस के अग्नि-होत्र का अग्नि बुत गया वह।

नस्तितः (पुं०) नाथा गया (बैल इत्यादि)।

नस्योतः (पुं०) तथा। [नस्तोतः]

नहि (अव्यय) नहीं।

नाकः (पुं०) आकाश, स्वर्ग।

नाकुः (पुं०) विम्मौट अर्थात् चिउंटी इत्यादि कों की बनाई हुई मट्टी की ढेर।

नाकुली (स्त्री) रासन वृक्ष।

नाग (पुं०। नपुं०) (गः। गम्) (पुं०) हाथी, एक प्रकार का सर्प, नागकेसर, बीड़ा का पान, हस्तिनापुर, मोथा घास, श्रेष्ठ, (नपुं०) सीसा धातु।

नागकेसरः (पुं०) नागकेसर वा नागचम्पा पुष्पवृक्ष।

नागजिह्विका (स्त्री) मैनसिल धातु।

नागबला (स्त्री) ककही वृक्ष।

नागर (त्रि०) (रः। री। रम्) चतुर, नगरवासी, (नपुं०) सोंठ, नागरमोथा।

नागरङ्गः (पुं०) नारङ्गी वृक्ष।

नागलोकः (पुं०) पाताल।

नागवल्ली (स्त्री) बीड़ा का पान।

नागसम्भवम् (नपुं०) सेंदुर।

नागान्तकः (पुं०) गरुड़ पक्षी।

नाट्यम् (नपुं०) नाचना, ना-

चना गाना बजाना (यह शब्द मिले हुये इन तीनों का वाचक है)।

नाडिकेरः (पुं०) नरियर वृक्ष।

नाडिन्धमः (पुं०) सोनार।

नाडी (स्त्री) नाड़ी अर्थात् वात पित्त कफ इत्यादि के विकार को जनाने वाली नस, ६ क्षण, जव इत्यादि वृक्ष की डार।

नाडीव्रणः (पुं०) नासूर अर्थात् जो घाव सदा बहा करता है।

नाथवत (त्रि०) (वान्। वती। वत्) पराधीन।

नादः (पुं०) शब्द।

नादेय (त्रि०)(यः। यी। यम्) नदी से उत्पन्न (जल इत्यादि), (स्त्री) अरणी वा जाही वा टेकार, 'भूमिजम्बू' एक कन्द।

नाना (अव्यय) अनेक, दोनों, मना करना।

नान्दी (स्त्री) एक स्तुतिवचनरूप मंगलाचरण (जिसको नाटक के प्रारम्भ में नट वा सूत्रधार पढ़ते हैं)।

नान्दीकरः (पुं०) नान्दी पढ़ने वाला।

नान्दीवादिन् (पुं०) (दी) तथा।

नापितः (पुं०) हज्जाम।

नाभि (पुं०। स्त्री) (भिः। भिः) नाभि अर्थात् ढोंढ़ी, (पुं०) क्षत्रिय, मुख्य राजा, रथ के चक्र का मध्य, (स्त्री) कस्तूरी।

नाभिजन्मन् (पुं०) (न्मा) ब्रह्मा।

नाम (अव्यय) प्रसिद्धि, कोई प्रकार से, क्रोध, द्वेष के सहित अङ्गीकार, निन्दा।

नामधेयम् (नपुं०) नाम।

नामन् (नपुं०) (म) तथा।

नायः (पुं०) नीति।

नायकः (पुं०) स्वामी, अध्यक्ष, माला के मध्य का मणि वा सुमेर।

नारकः (पुं०) नरक में पड़ा प्राणी, नरक।

नारदः (पुं०) नारद ऋषि।

नाराचः (पुं०) लोहे का बाण।

नाराची (स्त्री) तौलने का काँटा।

नारायणः (पुं०) विष्णु।

नारायणी (स्त्री) महालक्ष्मी, सतावर औषधी।

नारिकेलः (पुं०) नरियर वृक्ष। [नारिकेरः] [नालिकेरः] [नारीकेलः] [नारिकेलिः (स्त्री)] [नारीकेली (स्त्री)]

नारी (स्त्री) स्त्री।

नाल (पुं०। नपुं०) (लः। लम्) क-

मल इत्यादि का उपठा, (नपुं०) जव इत्यादि की डार ।
नाविकः (पुं०) नाव चलाने वाला वा पतवार पकड़ने वाला ।
नाव्य (त्रि०) (व्यः । व्या । व्यम्) नाव से पार उतरने के योग्य (नदी इत्यादि) ।
नाशः (पुं०) नाश ।
नासत्यौ, द्विवचन, (पुं०) अश्विनीकुमार ।
नासा (स्त्री) नाक । [नसा] [नस्या]
नासादारु (नपुं०) द्वार के ऊपर भीत का आधारकाष्ठ ।
नासिका (स्त्री) नाक ।
नास्तिकः (पुं०) नास्तिक ।
नास्तिकता (स्त्री) परलोक को न मानना ।
निकट (त्रि०) (टः । टा । टम्) पास की वस्तु ।
निकरः (पुं०) समूह ।
निकर्षणः (पुं०) पुर इत्यादि में गृह इत्यादि के लिये नापा हुवा स्थान ।
निकषः (पुं०) कसौटी ।
निकषा (अव्यय) समीप ।
निकषात्मजः (पुं०) राक्षस ।
निकामम् (नपुं० । अव्यय) यथेष्ट वा यथेप्सित वा इच्छा के सदृश, अत्यन्त ।
निकायः (पुं०) समूह ।
निकाय्यः (पुं०) घर ।
निकारः (पुं०) अपकार वा बुराई, "उत्कार" में देखो ।
निकारणम् (नपुं०) मार डालना ।
निकुञ्चकः (पुं०) एक नपुवा जो कुडव के $\frac{1}{4}$ के तुल्य है वा मूठ ।
निकुञ्ज (पुं० । नपुं०) (ञ्जः । ञ्जम्) लता का घर ।
निकुम्भः (पुं०) वज्रदन्ती वृक्ष, एक राक्षस का नाम ।
निकुरम्बम् (नपुं०) समूह ।
निकृत (त्रि०) (तः । ता । तम्) बहुत धिक्कारा गया = ई, कुटिल हृदय वाला = ली ।
निकृतिः (स्त्री) धूर्तता ।
निकृष्ट (त्रि०) (ष्टः । ष्टा । ष्टम्) अधम वा नीच ।
निकेतनम् (नपुं०) घर ।
निकोचकः (पुं०) ढेरा वृक्ष ।
निकोठकः (पुं०) तथा ।
निक्वणः (पुं०) भूषण का शब्द ।
निक्वाणः (पुं०) तथा ।
निखिल (त्रि०) (लः । ला । लम्) सम्पूर्ण वा सब ।

निगड ( पुं० । नपुं० ) ( डः डम ) बेड़ी जो अपराधी के पैर में डाली जाती है ।
निगदः ( पुं० ) कथन ।
निगमः ( पुं० ) वेद, नगर, राजधानी, बनियाँ, वाणिज्य वा बनियई ।
निगादः ( पुं० ) कथन ।
निगारः ( पुं० ) निगलना ।
निगालः ( पुं० ) घोड़ों के हंसुली ( अङ्ग ) और गले के बीच का भाग अर्थात् घण्टा जहाँ बाँधा जाता है उसके समीप का स्थान ।
निग्रहः ( पुं० ) दण्ड ।
निघः (पुं०) सब तरफ से समान अर्थात् बराबर चढ़ाव उतार ( वृक्षादि ), वृत्त, गेंद ।
निघसः ( पुं० ) भोजन ।
निघासः ( पुं० ) तथा ।
निघ्न ( त्रि० ) ( घ्नः । घ्ना । घ्नम् ) अधीन वा परतन्त्र ।
निचुलः ( पुं० ) स्थल का बेंत, समुद्रफल ।
निचोलः ( पुं० ) "प्रच्छदपट" में देखो । [ निचुलः ]
निज ( त्रि० ) ( जः । जा । जम् ) स्वकीय वा अपना = नी, नित्य ( कोई वस्तु ) ।
नितम्ब. (पुं०) स्त्री के कमर का पिछला हिस्सा वा चूतड़, पर्वत का मध्यभाग ।
नितम्बिनी ( स्त्री ) सुन्दर "नितम्ब"वाली स्त्री ।
नितान्त ( त्रि० ) ( न्तः । न्ता । न्तम् ) अतिशयित वस्तु, (नपुं०) अतिशय ।
नित्य (त्रि०) ( त्यः । त्या । त्यम् ) नित्यपदार्थ ( जैसा सन्ध्योपासनादि ), ( नपुं० ) निरन्तर वा हरदम ।
निदाघः ( पुं० ) जेठ और असाढ़ का ऋतु (ग्रीष्म), पसीना, पसीना का कारण गरमी वा ताप
निदानम ( नपुं० ) मुख्य कारण वा हेतु ।
निदिग्ध ( त्रि० ) ( ग्धः । ग्धा । ग्धम ) समृद्ध वा सम्पन्न वा आढ्य वा धनी ।
निदिग्धिका (स्त्री) भटकटैया लता
निदेशः ( पुं० ) आज्ञा वा हुक्म ।
निद्रा ( स्त्री ) नींद वा सूतना ।
निद्राण (त्रि०) (णः । णा । णम्) सूत गया = ई ।
निद्रालु ( त्रि० ) (लुः । लुः । लु) जिस का सूतने का स्वभाव है ।
निद्रित (त्रि०) (तः । ता । तम्)

सूतगाथा = है ।

निधन (पुं० । नपुं०) (नः । नम्) नाश, (पुं०) ब्रह्मा, (नपुं०)

निधिः (पुं०) निधि वा खज़ाना।

निधुवनम् (नपुं०) स्त्री पुरुष का संयोग वा मैथुन ।

निध्यानम् (नपुं०) देखना, सोचना ।

निध्रम् (नपुं०) खपड़ा वा छान्ही की ओरी । [नीध्रम्]

निनदः (पुं०) शब्द ।

निनादः (पुं०) तथा ।

निन्दा (स्त्री) निन्दा ।

निप (पुं० । नपुं०) (पः । पम्) पानी का घड़ा ।

निपठः (पुं०) पढ़ना ।

निपाठः (पुं०) तथा ।

निपातनम् (नपुं०) गिरा देना ।

निपानम् (नपुं०) कूवाँ के पास का

निपुण (त्रि०) (णः । णा । णम्) चतुर ।

निबन्धः (पुं०) एक प्रकार का रोग जिस से मल और मूत्र का रोध होता है ।

निबन्धनम् (नपुं०) कारण वा हेतु, वीणा में जहाँ तार बाँधा जाता है उसके ऊपर का भाग।

निबर्हणम् (नपुं०) मार डालना।

निभ (त्रि०) (भः । भा । भम्) "प्रतीकाश" में देखो ।

निभृत (त्रि०) (तः । ता । तम्) छिपा हुवा = है, नम्रतायुक्त ।

निमयः (पुं०) किसी वस्तु से किसी वस्तु का बदल बदल करना ।

निमित्तम् (नपुं०) हेतु, चिह्न ।

निमेषः (पुं०) पलक भाँजना ।

निम्न (त्रि०) (म्नः । म्ना । म्नम्) गहिरा वा नीचा ।

निम्नगा (स्त्री) नदी ।

निम्बः (पुं०) नीम वृक्ष ।

निम्बतरुः (पुं०) बकाइन वृक्ष, नीम वृक्ष ।

नियतिः (स्त्री) नियम, भाग्य ।

नियन्तृ (पुं०) (न्ता) सारथी, अध्यक्ष वा स्वामी ।

नियमः (पुं०) जो कर्म वा क्रिया शरीर के बाह्य वस्तु से साध्य हो (वह पाँच प्रकार का है,— शौच वा सफाई, सन्तोष, तपस्या, स्वाध्याय, ईश्वरप्रणिधान [ईश्वर में चित्त लगाना]), अङ्गीकार, व्रत ।

नियामकः (पुं०) बड़ी नाव का चलाने वाला, अध्यक्ष वा सरदार

नियुतम् ( नपुं० ) एक लाख ।

नियुद्धम् ( नपुं० ) बाहुयुद्ध अर्थात् कुस्ती ।

नियोज्य ( त्रि० ) ( ज्यः । ज्या । ज्यम् ) दास वा नौकर ।

निरन्तर (त्रि०) ( रः । रा । रम् ) निरन्तर वा गझिन वस्तु, नित्य वा हरदम (क्रियाविशेषण में)।

निरयः ( पुं० ) नरक वा दुर्गति ।

निरर्गल (त्रि०) (लः । ला । लम्) बन्धनरहित ।

निरर्थक (त्रि०) (कः । का । कम्) व्यर्थ वा निष्प्रयोजन ।

निरवग्रह (त्रि०) (हः । हा । हम्) स्वतन्त्र ।

निरसनम् ( नपुं० ) निराकरण करना वा नकारना वा अङ्गीकार न करना, थूकना ।

निरस्त (त्रि०) ( स्तः स्ता । स्तम् ) "प्रत्यादिष्ट" में देखो, चलाया गया वा फेंका गया = है ( बाण इत्यादि ), थूका गया = है, ( नपुं० ) जल्दी बोलना ।

निराकरिष्णु (त्रि०) (ष्णुः । ष्णुः । ष्णु ) निषेध वा मना करने वाला = ली वा नकारने वाला = ली ।

निराकृत (त्रि०) ( तः । ता । तम् ) "प्रत्यादिष्ट" में देखो ।

निराकृतिः ( पुं० । स्त्री ) ( तिः । तिः ) ( पुं० ) अपने शाखा के वेद के अध्ययन से रहित, (स्त्री) निराकरण करना वा नकारना वा अङ्गीकार न करना ।

निरामय ( त्रि० ) ( यः । या । यम् ) रोगरहित ।

निरीशम् ( नपुं० ) फार अर्थात् हल के नीचे का काठ जिसमें लोहा लगा रहता है । [ निरीषम् ]

निरुक्तम् ( नपुं० ) एक वेदाङ्ग, व्याख्या वा टीका ।

निरोधः (पुं०) दण्ड ।

निर् ( अव्यय ) निश्चय, निषेध ।

निर्ऋतिः (पुं०। स्त्री )(तिः । तिः) (पुं०) नैर्ऋत्य कोण का स्वामी (दिक्पाल), ( स्त्री ) दारिद्र्य ।

निर्गुण्डी ( स्त्री ) म्योड़ी वृक्ष, नेवारी पुष्पवृक्ष । [ निर्गुण्टी ]

निर्ग्रन्थनम् ( नपुं० ) वध अर्थात् मार डालना ।

निर्घोषः ( पुं० ) शब्द ।

निर्जरः ( पुं० ) देवता ।

निर्झरः (पुं०) झरना, प्रवाह ।

निर्झरिणी ( स्त्री ) नदी ।

निर्णयः ( पुं० ) निश्चय ।

निर्णिक्त (त्रि०) (क्तः । क्ता । क्तम्) धोया गया वा मलरहित किया गया = हूं ।

निर्णेजकः (पुं०) धोबी ।

निर्देशः (पुं०) आज्ञा वा हुक्म । [ निदेशः ]

निर्भर (त्रि०) (रः । रा । रम्) अतिशयित वा उत्कृष्ट वा श्रेष्ठ, (नपुं०) अतिशय ।

निर्मद (त्रि०) (दः । दा । दम) अहङ्काररहित, (पुं०) वह हाथी जिस का मदजल निकल गया है ।

निर्मुक्त (त्रि०) (क्तः । क्ता । क्तम) बन्धन से छूट गया = हूं, (पुं०) वह सर्प जिस ने केचुल छोड़ दी है ।

निर्मोकः (पुं०) सर्पादिक की केंचुल।

निर्याणम् (नपुं०) निकल जाना, हाथी के आँखों के कोने ।

निर्यातनम (नपुं०) वैर का बदला लेना, दान, जिसकी धरोहर हो उसको वह दे देना ।

निर्यासः (पुं०) काढ़ा, गोंद ।

निर्वपणम् (नपुं०) दान ।

निर्वर्णनम् (नपुं०) देखना वा निगाह करना ।

निर्वहणम् (नपुं०) नाट्य में मुखादि ५ सन्धियों में का पाँचवाँ सन्धि, निर्वाह का होना वा करना

निर्वाण (पुं० । नपुं०) (णः । णम्) (पुं०) निर्मुक्त भया (मुनि), ठण्ढा भया (अग्नि), पानी में डूबा (हाथी), (नपुं०) मोक्ष ।

निर्वात (त्रि०) (तः । ता । तम्) वायुरहित स्थल, (पुं०) वह वायु जो निकल गया है ।

निर्वादः (पुं०) निन्दा, निश्चित वाद ।

निर्वापणम् (नपुं०) मार डालना।

निर्वार्य (त्रि०) (र्यः । र्या । र्यम) सत्वसम्पत्ति से युक्त हो कर कार्य करनेवाला (सत्व—दुःख में भी मन का न डगना) । [ निर्वार्य ]

निर्वासनम् (नपुं०) निकाल देना, मार डालना ।

निर्वृत्त (त्रि०) (त्तः । त्ता । त्तम्) सिद्ध भया हूं वा पूरा हुवा = हूं ।

निर्वेशः (पुं०) उपभोग, मजदूरी।

निर्व्यथनम (नपुं०) छिद्र, अत्यन्त पीड़ा ।

निर्व्यूहः (पुं०) खूंटी, शिरोवेष्टन (पगड़ी सिरपेंच इत्यादि),

द्वार, कादा ।
निर्झरः (पुं०) धंसे हुये वाण इत्यादि का निकालना ।
निर्झारिन् (पुं०) (री) दूर तक जाने वाला गन्ध ।
निर्ह्रादः (पुं०) शब्द ।
निलयः (पुं०) घर ।
निवहः (पुं०) समूह ।
निवात (त्रि०) (तः । ता । तम्) वायुरहित स्थान, (पुं०) निवास, शस्त्रों से अभेद्य कवच ।
निवापः (पुं०) सपिण्डदान के बाद पितृ के उद्देश से दान ।
निवीत (त्रि०) (तः । ता । तम्) वस्त्र से लपेटा=टी (नपुं०) माला की नाईं पहिरी हुई जनेऊ ।
निवृत (त्रि०) (तः । ता । तम्) चारो ओर से घेरा=री ।
निवेशः (पुं०) आगन्तुक सैन्य के रहने का स्थान, टिकान ।
निशा (स्त्री) रात्रि, हरदी ।
निशाख्या (स्त्री) तथा ।
निशाटनः (पुं०) उल्लू पक्षी राक्षस ।
निशात (त्रि०) (तः । ता । तम्) सान रक्खा हुआ=ई (छूरी इत्यादि शस्त्र) । [निशित]
निशान्तम् (नपुं०) घर ।
निशापतिः (पुं०) चन्द्रमा ।
निशारणम् (नपुं०) मार डालना।
निशाह्वा (स्त्री) हरदी ।
निशित (त्रि०) (तः । ता तम्) "निशात" में देखो ।
निशीथः (पुं०) आधीरात ।
निशीथिनी (स्त्री) रात्रि ।
निश्चयः (पुं०) निश्चय ।
निश्शलाक (त्रि०) (कः । का । कम्) एकान्त स्थान ।
निश्शेष (त्रि०) (षः । षा । षम्) समग्र वा सम्पूर्ण ।
निश्शोध्य (त्रि०) (ध्यः । ध्या । ध्यम्) मलरहित करने के योग्य मलरहित किई वस्तु ।
निश्श्रेणिः (स्त्री) काठ इत्यादि की मोढ़ी । [निश्श्रेणिका]
निश्श्रेयसम् (नपुं०) मोक्ष वा मुक्ति ।
निषङ्गः (पुं०) तरकस अर्थात् बाण का घर ।
निषङ्गिन (पुं०) (ङ्गी) तरकस वाला वा धनुर्द्धर ।
निषद्या (स्त्री) हाट वा बाज़ार।
निषद्वरः (पुं०) चहला वा कीचड़।
निषधः (पुं०) एक पर्वत, एक देश।
निषादः (पुं०) सात स्वरों में से

एक स्वर (जैसा हाथी बोलता है), चण्डाल के सदृश एक नीच जाति ।

निषादिन् (पुं०) (दी) हाथीवान् ।

निषूदन (त्रि०) (नः । नी । नम्) मारने वाला = ली, (नपुं०) मार डालना । [ निसूदन ]

निष्कः (पुं०) सोना, गले का एक प्रकार का गहना, पल भर सोना, एक प्रकार का रुपया (जो कि १६ चवन्नी भर होता है और पूर्व काल में चलता था), १०८ कर्ष भर सोना (८० घुंघुची का एक कर्ष और ४ कर्ष का एक पल होता है)।

निष्कला (स्त्री) वह स्त्री जिस का रजोधर्म्म नष्ट हो गया है। [ निष्कली ]

निष्कासित (त्रि०) (तः । ता । तम्) निकाला गया = ई ।

निष्कुटः (पुं०) घर का उपवन अर्थात् नजरबाग ।

निष्कुटि (स्त्री) (टिः—टी) इलायची ।

निष्कुहः (पुं०) "कोटर" में देखो।

निष्क्रमः (पुं०) बुद्धि का सामर्थ्य, निकलना ।

निष्क्रामित (त्रि०) (तः । ता । तम्) निकाला गया = ई ।

निष्ठा (स्त्री) नाट्य का पञ्चम सन्धि, सिद्धि, अदर्शन वा न देख पड़ना, प्रध्वंस वा नाश, स्थिति।

निष्ठानम् (नपुं०) कढ़ी, खखारना वा ठनकाना ।

निष्ठीवनम् (नपुं०) थूकना ।

निष्ठुर (त्रि०) (रः । रा । रम्) कठोर ।

निष्ठेवः (पुं०) थूकना ।

निष्ठेवनम् (नपुं०) तथा ।

निष्ठ्यूत (त्रि०) (तः । ता । तम्) थूक दिया गया = ई, प्रेरित, फेंक दिया गया = ई ।

निष्ठ्यूतिः (स्त्री) थूकना, प्रेरणा, फेंकना ।

निष्णात (त्रि०) (तः । ता । तम्) निपुण वा कुशल वा चतुर ।

निष्पक्व (त्रि०) (क्वः । क्वा । क्वम्) अच्छी तरह से पकाया गया (काढ़ा इत्यादि)।

निष्पन्न (त्रि०) (न्नः । न्ना । न्नम्) सिद्ध भया = ई ।

निष्पावः (पुं०) धान इत्यादि अन्नों को पछोड़ने इत्यादि से साफ करना ।

निष्प्रभ (त्रि०) (भः । भा । भम्) प्रकाशहीन ।

निष्प्रवाणि ( त्रि० ) ( णिः । णिः । णि ) कोरा कपड़ा ।

निष्षमम ( नपुं० ) निन्द्य ( क्रियाविशेषण में ) ।

निसर्गः ( पुं० ) स्वभाव ।

निसृष्ट ( त्रि० ) ( ष्टः । ष्टा । ष्टम् ) त्याग किया गया = ई, फेंका गया = ई ।

निस्तर्हणम् (नपुं०) मार डालना ।

निस्तल (त्रि०) (लः । ला । लम् ) गोल वस्तु ।

निस्त्रिंशः ( पुं० ) तलवार ।

निस्रावः ( पुं० ) भात का माँड़ ।

निस्वनः ( पुं० ) शब्द ।

निस्वानः ( पुं० ) तथा ।

निस्सरणम् ( नपुं० ) निकलने पैठने का मार्ग, निकलना ।

निस्स्व ( त्रि० ) ( स्वः । स्वा । स्वम् ) दरिद्र ।

निहननम् (नपुं०) मार डालना ।

निहाका ( स्त्री ) गोह जन्तु ।

निहिंसनम् (नपुं०) मार डालना ।

निहीन (त्रि०) (नः । ना । नम् ) नीच वा अधम ।

निह्नवः ( पुं० ) अविश्वास, झूठ बोलना, छूतपन ।

नीकाशः ( पुं० ) "प्रतीकाश" में

नीच ( त्रि० ) ( चः । चा । चम् ) नीच वा अधम, नीचा स्थान, नाटा = टी ।

नीचैस् ( अव्यय ) ( चैः ) थोड़ा, धीरे, निचाई, नीचा ।

नीड (पुं० । नपुं०) (डः । डम् ) खोंता वा पक्षियों का घर ।

नीडोद्भवः ( पुं० ) पक्षी ।

नीध्रम् (नपुं०) "निध्र" में देखो ।

नीपः ( पुं० ) कदम वृक्ष ।

नीरम् ( नपुं० ) जल ।

नील ( त्रि० ) ( लः । ला । लम् ) काले रङ्ग की वस्तु, ( पुं० ) काला रङ्ग, एक निधि ।

नीलकण्ठः (पुं०) शिव, एक पक्षी, मोर पक्षी ।

नीलङ्गुः ( पुं० ) "क्रमि" में देखो ।

नीललोहितः ( पुं० ) शिव ।

नीला ( स्त्री ) मक्खी ।

नीलाम्बर ( त्रि० ) ( रः । रा । रम् ) काले कपड़े वाला = ली, (पुं०) बलदेव (कृष्ण के भाई), ( नपुं० ) काला कपड़ा ।

नीलाम्बुजन्मन् ( नपुं० ) ( न्म ) नील कमल ।

नीलिका ( स्त्री ) नेवारी पुष्पवृक्ष ।

नीलिनी ( स्त्री ) नील ।

नीली ( स्त्री ) तथा, काली गैया ।

नीत्राकः (पु०) धन धान्य इत्यादि वस्तुओं में आदर की अधिकाई ।

नीवारः (पुं०) तिन्नी का चावल ।

नीवि (स्त्री) (विः—वी) स्त्रियों की फुफती अर्थात् वस्त्र का आगे का बन्धन जो नाभी के पास बंधा रहता है, मूलधन ।

नीवृत् (पुं०) जनों के रहने का स्थान वा देश ।

नीशारः (पुं०) ओढ़ने की रजाई ।

नीहारः (पुं०) हिम वा पाला, कुहिरा वा कुहेसा ।

नु (अव्यय) प्रश्न, विकल्प ।

नुतिः (स्त्री) स्तुति ।

नुत्त (त्रि०) (त्तः । त्ता । त्तम्) प्रेरित ।

नुन्न (त्रि०) (न्नः । न्ना । न्नम्) तथा

नूतन (त्रि०) (नः । ना । नम्) नया = ई ।

नूत्न (त्रि०) (त्नः । त्ना । त्नम्) तथा ।

नूदः (पुं०) तूत वृक्ष ।

नूनम् (अव्यय) तर्क, किसी बात का निश्चय ।

नूपुर (पुं० । नपुं०) (रः । रम्) "मञ्जीर" में देखो ।

नृ (पुं०) (ना) मनुष्यजाति में पुरुष वा जातिमात्र में पुरुष ।

नृत्यम् (नपुं०) नाच, नाचना गाना बजाना (यह शब्द मिले हुए इन तीनों का वाचक है)

नृपः (पुं०) राजा ।

नृपलक्ष्मन् (नपुं०) (क्ष्म) राजा का छत्र ।

नृपसभम् (नपुं०) राजा की सभा।

नृशंस (त्रि०) (सः । सा । सम्) घातकरने वाला = ली, क्रूर वा दुष्ट, परद्रोह करने वाला = ली

नृसेनम् (नपुं०) मनुष्यों की सेना [नृसेना]

नेतृ (पुं०) (ता) पहुंचाने वाला, प्रभु वा स्वामी ।

नेत्रम् (नपुं०) आँख, चीन का कपड़ा, जटा ।

नेत्राम्बु (नपुं०) आँसू ।

नेदिष्ठ (त्रि०) (ष्ठः । ष्ठा । ष्ठम्) अत्यन्त पास वाला = ली ।

नेपथ्यम् (नपुं०) "आकल्प" में देखो, नाटक में सवाँगों के बनने का स्थान जो पर्दों से ढंका रहता है ।

नेमि (पुं० । स्त्री) (मिः । मिः—मी) गराड़ी, रथ के पहिए का वह भाग जो कि भूमि को छूता है, बस्तुल एक प्रकार का वृक्ष ।

नैकभेद (त्रि०) (दः । दा । दम्)

अद्भुत प्रकार की वस्तु।

नैगम (त्रि०) (मः। मी। मम्) वेदसम्बन्धि वस्तु, नगर का रहने वाला = ली, (पुं०) बनियाँ, उपनिषत्।

नैचिकी (स्त्री) उत्तम गैया। [निचिकी]

नैपाली (स्त्री) नेपाल की मैनसिल

नैमेयः (पुं०) किसी वस्तु का अदला बदला।

नैयग्रोधम् (नपुं०) बड़ वृक्ष का फल।

नैयायिकः (पुं०) न्यायशास्त्र का जानने वाला।

नैर्ऋतः (पुं०) राक्षस, नैर्ऋत्य कोण का स्वामी (दिक्पाल)।

नैर्ऋतीपतिः (पुं०) नैर्ऋत्य कोण का स्वामी (दिक्पाल)।

नैष्किकः (पुं०) चाँदी का अध्यक्ष वा स्वामी।

नैस्त्रिंशिकः (पुं०) खड्गधारी।

नो (अव्यय) नहीं।

नौः (स्त्री) नाव।

नौकादण्डः (पुं०) नाव खेवने का डाँड़ा।

न्यक् (अव्यय) धिक्कार, ह्रस्व वा नाटा।

न्यक्ष (त्रि०) (क्षः। क्षा। क्षम्) निकृष्ट वा नीच, (नपुं०) असम्पूर्णता।

न्यग्रोधः (पुं०) बड़ वृक्ष, अंकवार।

न्यग्रोधी (स्त्री) मूसाकर्णी ओषधी।

न्यङ्कुः (पुं०) एक प्रकार का मृग।

न्यञ्च् (त्रि०) (न्यङ्। नीची। न्यक्) ह्रस्व वा नाटा = टी, अधोमुख, (नपुं०) यज्ञ में एक पात्र।

न्यस्त (त्रि०) (स्तः। स्ता। स्तम्) त्याग किया गया = ई, फेंका गया = ई।

न्यादः (पुं०) भोजन।

न्यायः (पुं०) नीति वा न्याय।

न्याय्य (त्रि०) (य्यः। य्या। य्यम्) न्याय के सदृश वा न्याय के अनुसार।

न्यासः (पुं०) धरोहर रखना, स्थापन करना।

न्युब्ज (त्रि०) (ब्जः। ब्जा। ब्जम्) वह प्राणी जिसकी कमर रोग से लचक गई और उसी कारण मुह नीचे हो गया हो।

न्यूङ्खः (पुं०) अच्छे प्रकार से, मनोहर, सामवेद के ६ प्रकार के ओङ्कार। [न्युङ्खः]

न्यून (त्रि०) (नः। ना। नम्) थोड़ा = ड़ी, निन्दनीय।

# ( प )

पः ( पुं० ) कुबेर, पश्चिम, वायु, पीना, पीनेवाला ।

पक्कण ( पुं० । नपुं०) (णः । णम्) भिल्लों का गाँव ।

पक्व ( त्रि० ) ( क्वः । क्वा । क्वम् ) पका हुआ ( फल इत्यादि ), पकाया गया = ईं, वह वस्तु जो कि नाश होने पर है ।

पक्षः (पुं०) पक्षियों का पङ्ख, आधा महीना, सहाय, शरीर की अलग बगल की पंसुली, घर, साध्य वा साधने के योग्य वस्तु, विरोध वा वैर, बल, मित्र, चूल्हा का छेद, बड़ा हाथी, निकट, ( यह शब्द जब केश शब्द के आगे रहता है तब इसका अर्थ समूह होता है, जैसे,—केशपक्षः—बालों का समूह ) ।

पक्षक (पुं० । नपुं०) ( कः । कम् ) खिड़की, शरीर के दोनों पाँजर।

पक्षतिः (स्त्री) पड़िवा तिथि, पङ्ख की जड़ अर्थात् जहाँ पङ्ख लगा रहता है ।

पक्षद्वारम् ( नपुं० ) खिड़की ।

पक्षभागः (पुं०) हाथियों के पाँजर ।

पक्षान्तः (पुं०) पौर्णिमा वा अमावास्या तिथि, पक्ष का अन्त ।

पक्षिणी ( स्त्री ) पक्षी की स्त्री, वर्तमान और आने वाले दिन से संयुक्त रात्रि ।

पक्षिन् (पुं०) (क्षी) चिड़िया ।

पक्ष्मन् ( नपुं० ) ( क्ष्म ) आँख की पपनी, केसर, सूत इत्यादि का अत्यन्त सूक्ष्म भाग ।

पङ्क ( पुं० । नपुं० ) ( ङ्कः । ङ्कम् ) चहला वा कीचड़, पाप ।

पङ्किल ( त्रि० ) (लः । ला । लम्) चहला वा कीचड़ से भरा हुआ स्थान ।

पङ्केरुहम् ( नपुं० ) कमल ।

पङ्क्तिः ( स्त्री ) पाँती, समूह दस ( सङ्ख्या ), दस अक्षर के पाद का छन्द ।

पङ्गु ( त्रि० ) ( ङ्गुः । ङ्गुः । ङ्गु ) पङ्गुल वा जङ्घारहित ।

पचम्पचा ( स्त्री ) दारुहरदी ।

पचम्बचा ( स्त्री ) तथा ।

पचा ( स्त्री ) पकावना ।

पञ्चजनः ( पुं० ) पुरुष ( मनुष्य जाति में ) ।

पञ्चता ( स्त्री ) मरण ।

पञ्चत्वम् ( नपुं० ) तथा ।

पञ्चनखः ( पुं० ) सिंह ।

पञ्चन्, बहुवचन (त्रि०) (ञ्च । ञ्च । ञ्च) पाँच (कोई वस्तु), (नपुं०) पाँच (सङ्ख्या)।
पञ्चम (त्रि०) (मः । मी । मम्) पाँचवाँ=वीँ, (पुं०) पञ्चम स्वर (जैसा वसन्त में कोकिल बोलता है), (स्त्री) पञ्चमी तिथि
पञ्चशरः (पुं०) कामदेव।
पञ्चशाखः (पुं०) हाथ।
पञ्चाङ्गुलः (पुं०) रेंड़ वृक्ष।
पञ्चास्यः (पुं०) सिंह (एक वनपशु)
पञ्जिका (स्त्री) सम्पूर्ण पदों की व्याख्या।
पट (पुं० । नपुं०) (टः । टम्) वस्त्र, (पुं०) प्यारमेवा वा चिरौंजी का वृक्ष।
पटकुटी (स्त्री) वस्त्र का घर वा तम्बू।
पटच्चरम् (नपुं०) जीर्ण वा पुराना वस्त्र।
पटल (स्त्री । नपुं०) (ली । लम्) समूह, (नपुं०) खपड़ा वा छान्ही, एक नेत्ररोग।
पटलप्रान्तम् (नपुं०) खपड़ा वा छान्ही की ओरी।
पटवासकः (पुं०) बुक्का।
पटह (पुं० । नपुं०) (हः । हम्) युद्ध का नगाड़ा।
पटु (त्रि०) (टुः । ट्वी—टुः । टु) समर्थ, चतुर, आलस्यरहित वा फुरतीला, बुद्धिमान्, नीरोग, (पुं०) परवर तरकारी।
पटुपर्णी (स्त्री) मकोय वृक्ष।
पटोलः (पुं०) परवर तरकारी।
पटोलिका (स्त्री) चिचिड़ा तरकारी।
पट्टः (पुं०) पीढ़ा, चौमोहानी, पट्टी, सील, राजशासनविशेष।
पट्टिकाख्यः (पुं०) लाल लोध।
पट्टिन् (पुं०) (ट्टी) तथा।
पट्टिशः (पुं०) पटा (एक हथियार)।
पणः (पुं०) कर्ष भर ताँबा अर्थात् पैसा, मजूरी वा तलब, जूआ, दाँव (जो कि जूआ में लगाया जाता है), मूल्य वा दाम।
पणव (पुं० । स्त्री) (वः । वा) ढोलक बाजा।
पणायित (त्रि०) (तः । ता । तम्) व्यवहार में लाया गया=ई, कहा गया=ई वा स्तुति किया गया=ई। [पनायित]
पणित (त्रि०) (तः । ता । तम्) तथा। [पनित]
पणितव्य (त्रि०) (व्यः । व्या । व्यम्) बेचने के योग्य।

पण्डः (पुं०) नपुंसक वा हिंजड़ा।
पण्डा (स्त्री) भले बुरे का विचार करने वाली बुद्धि।
पण्डितः (पुं०) पण्डित।
पण्डितम्मन्य (त्रि०) (न्यः। न्या। न्यम्) अपने को पण्डित समझने वाला = लो।
पण्य (त्रि०) (ण्यः। ण्या। ण्यम्) बेंचने के योग्य।
पण्यवीथिका (स्त्री) बाज़ार की रस्ता।
पण्या (स्त्री) मालकंगुनी ओषधी।
पण्याजीवः (पुं०) बनियाँ।
पतगः (पुं०) पक्षी।
पतङ्गः (पुं०) पखियारी (एक प्रकार के कीड़े जो उड़कर दीया में गिरते हैं), पक्षी, सूर्य्य।
पतङ्गिका (स्त्री) एक प्रकार की छोटी मधुमक्खी।
पतत् (त्रि०) (तन्। न्ती। त्) गिरता हुआ, (पुं०) पक्षी।
पतत्रम् (नपुं०) पक्षियों का पङ्ख।
पतत्त्रिः (पुं०) पक्षी।
पतत्त्रिन् (पुं०) (त्री) पक्षी, बाण।
पतद्ग्रहः (पुं०) पिकदानी।
पतयालु (त्रि०) (लुः। लुः। लु) जिसका गिरने का स्वभाव है।
पताका (स्त्री) पताका वा ध्वजा।
पताकिन् (पुं०) (की) पताका वाला।
पतिः (पुं०) स्वामी।
पतिवत्नी (स्त्री) जिसका पति जीता है ऐसी स्त्री।
पतिव्रता (स्त्री) पतिव्रता स्त्री।
पतिंवरा (स्त्री) वह कन्या जो अपनी इच्छा से पति को वरे।
पत्तनम् (नपुं०) नगर वा पुर।
पत्तिः (पुं०। स्त्री) (त्तिः। त्तिः) (पुं०) पैदल, (स्त्री) गमन वा चलना, वह सेना जिसमें १ हाथी १ रथ ३ घोड़े और ५ पैदल रहते हैं।
पत्नी (स्त्री) विवाहिता स्त्री।
पत्रम् (नपुं०) पत्ता, पङ्ख, सवारी (घोड़ा हाथी इत्यादि)।
पत्रपरशुः (पुं०) "व्रश्चन" में देखो।
पत्रपाश्या (स्त्री) बन्दी बेना इत्यादि ललाट का भूषण।
पत्ररथः (पुं०) पक्षी।
पत्रलेखा (स्त्री) स्त्रियों के स्तन पर वा गाल पर कस्तूरी चन्दन इत्यादि से की हुई चित्रकारी।
पत्राङ्गम् (नपुं०) रक्त चन्दन, रक्तसार (रक्त चन्दन के सदृश एक लकड़ी)।

पत्राङ्गुलिः ( स्त्री ) "पत्रलेखा" में देखो ।

पत्रिन् ( पुं० ) (त्री) पत्ती, बाज पत्ती, बाण ।

पत्रोर्णं (पुं० । नपुं०) (र्णः । र्णम्) धोये रेसम का कपड़ा, ( पुं० ) सोनापाढ़ा ।

पथिकः (पुं०) राह चलने वाला ।

पथिन् ( पुं० ) ( न्थाः ) मार्ग वा रास्ता ।

पथ्या ( स्त्री ) हरैं ।

पदः ( पुं० ) पैर, पहिला दाँत ।

पदम् ( नपुं० ) व्यवसाय, रक्षा, स्थान, चिह्न, चरण, वस्तु ।

पदगः ( पुं० ) पैदल ।

पदवी ( स्त्री ) रस्ता ।

पदाजिः ( पुं० ) पैदल ।

पदातः ( पुं० ) तथा ।

पदातिः ( पुं० ) तथा ।

पदातिकः ( पुं० ) तथा ।

पदिकः ( पुं० ) तथा ।

पद् ( पुं० ) ( त्—द् ) पैर वा चरण, पहिला दाँत ।

पद्गः ( पुं० ) पैदल ।

पद्धतिः ( स्त्री ) पगडण्डी ।

पद्म ( पुं० । नपुं० ) ( द्मः । द्मम् ) कमल, ( पुं० ) एक निधि ।

पद्मकम् (नपुं०) हाथियों के देह पर के लाल २ विन्दु जो कि जवानी में उत्पन्न होते हैं ।

पद्मचारिणी ( स्त्री ) माक अन्न ।

पद्मनाभः ( पुं० ) विष्णु ।

पद्मपत्रम् ( नपुं० ) पुष्करमूल वा कमल की जड़ ।

पद्मरागः ( पुं० ) लाल (एक मणि) ।

पद्मवर्णम् ( नपुं० ) पुष्करमूल वा कमल की जड़ ।

पद्मा ( स्त्री ) लक्ष्मी, ब्रह्मदण्डी ओषधी, माक अन्न ।

पद्माकरः ( पुं० ) वह जलाशय जिस में कमल लगे हैं ।

पद्माक्षः ( पुं० ) सूर्य्य ।

पद्माटः ( पुं० ) चकवड़ ओषधी ।

पद्मालया ( स्त्री ) लक्ष्मी ।

पद्मिनी (स्त्री) कमलिनी, पद्मिनी ( स्त्रीविशेष ) ।

पद्मिन् ( पुं० ) ( द्मी ) हाथी ।

पद्यम् ( नपुं० ) श्लोक ।

पद्या ( स्त्री ) मार्ग वा रस्ता ।

पनसः ( पुं० ) कटहर तरकारी । [ पणसः ]

पनायित ( त्रि० ) (तः । ता । तम्) "पणायित" में देखो ।

पनित ( त्रि० ) ( तः । ता । तम्) तथा ।

पन्न ( त्रि० ) ( न्नः । न्ना । न्नम् )

च्युत वा गिर पड़ा = डी।
पन्नगः ( पुं० ) सर्प।
पन्नगाशनः ( पुं० ) गरुड़ पक्षी।
पयस् ( नपुं० ) (यः) पानी, दूध।
पयस्य (त्रि०) (स्यः। स्या। स्यम्) दूध से बनी वस्तु (घी दही इत्यादि)।
पयोधरः ( पुं० ) स्तन, मेघ।
पर ( त्रि० ) ( रः। रा। रम् ) पराया = यी ( वस्तु ), अन्य वा दूसरा = री, दूर, उत्तम वा श्रेष्ठ, ( पुं० ) शत्रु, ( नपुं० ) केवल, अनन्तर।
परजात ( त्रि० ) (तः। ता। तम्) अन्य से वा शत्रु से पैदा भया = ई।
परतन्त्र (त्रि०) (न्त्रः। न्त्रा। न्त्रम्) पराधीन।
परपिण्डाद ( त्रि० ) ( दः। दा। दम् ) दूसरे के अन्न से जीने वाला = ली।
परभृत ( त्रि० ) (तः। ता। तम्) अन्य वा दूसरे से पाला गया, = ई ( पुं०। स्त्री ) कोकिल पक्षी।
परभृत् ( पुं० ) कोकिल पक्षी, अन्य वा दूसरे का पालने वाला।
परम ( त्रि० ) ( मः। मा। मम् ) उत्कृष्ट वा उत्तम, ( नपुं० ) अङ्गीकार वा हामी भरना।
परमम् ( अव्यय ) अङ्गीकार वा हामी भरना।
परमान्नम् (नपुं०) खीर वा जाउर।
परमेष्ठिन् ( पुं० ) ( ष्ठी ) ब्रह्मा।
परम्पराकम् ( नपुं० ) यज्ञ के पशु को मारना।
परवत् (त्रि०) (वान्। वती। वत्) पराधीन वा परवश वा परतन्त्र।
परशुः ( पुं० ) कुल्हाड़ी।
परश्वधः (पुं०) तथा। [परस्वधः]
परश्वस् ( अव्यय ) ( श्वः ) परसों ( आने वाला )।
परश्शत, बहुवचन ( त्रि० ) (ताः। ता। तम् ) जिन की सङ्ख्या १०० से अधिक है।
परस्परपराहत ( त्रि० ) (तः। ता। तम् ) विरुद्ध बोलना ( जैसे,— 'मेरी माता वन्ध्या' इत्यादि )।
परस्सहस्र ( त्रि० ) ( स्राः। स्राः। स्राणि) जिन की संख्या १००० से अधिक है।
पराक्रमः ( पुं० ) पराक्रम वा शूरता, उद्योग।
परागः (पुं०) धूल, पुष्पधूली, स्नान का मसाला।
पराङ्मुख (त्रि०) (खः। खी। खम्)

जिस ने पीछे मुख फेर लिया है

पराचित (त्रि०) (तः । ता । तम्) दूसरे से बढ़ाया वा पाला गया = हुं ।

पराचीन (त्रि०) (नः । ना । नम्) जिस ने पीछे मुख फेर लिया है

पराजयः (पुं०) पराजय वा हार ।

पराजित (त्रि०) (तः । ता । तम्) जीता गया = हुं वा हराया गया = हुं, दूसरे से बढ़ाया गया = हुं ।

पराधीन (त्रि०) (नः । ना । नम्) पराधीन वा परवश वा परतन्त्र।

परान्न (त्रि०) (न्नः । न्ना । न्नम्) दूसरे के अन्न से जीने वाला = ली

पराभूत (त्रि०) (तः । ता । तम्) जीता गया = हुं ।

परायण (त्रि०) (णः । णा । णम्) तत्पर वा आसक्त, (नपुं०) तत्परता वा आसक्ति ।

परारि (अव्यय) वर्तमान वर्ष के पूर्व का तृतीय वर्ष जिस को 'परियार' कहते हैं ।

परार्द्ध्य (त्रि०) (र्द्ध्यः । र्द्ध्या । र्द्ध्यम्) अति श्रेष्ठ वा अति उत्तम, प्रधान वा मुख्य, (नपुं०) सङ्ख्या अर्थात् अन्तिम सङ्ख्या । (१००००००००००००००००)

परासनम् (नपुं०) मार डालना।

परासु (त्रि०) (सुः । सुः । सु) मर गया = हुं ।

परास्कन्दिन् (पुं०) (न्दी) चोर।

परि, उपसर्ग (अव्यय) चारो ओर से (इस का प्रयोग धातु के सङ्ग में होता है)।

परिकरः (पुं०) समूह, विवेक, आरम्भ, कमरबन्ध, खटिया, परिवार वा कुटुम्ब ।

परिकर्मन् (नपुं०) (र्म) केसर इत्यादि से शरीर का संस्कार वा उबटना ।

परिक्रमः (पुं०) प्रदक्षिणा करना, पैर से चलना ।

परिक्रिया (स्त्री) परिजनादिकों से घेरा जाना ।

परिक्षिप्त (त्रि०) (प्तः । प्ता । प्तम्) घेरा हुवा = हुं ।

परिखा (स्त्री) किला के चारो ओर की खाँईं ।

परिग्रहः (पुं०) पत्नी, परिवार, अङ्गीकार, वृक्षादि की जड़, शाप ।

परिघः (पुं०) बेंवड़ा, चारो ओर से मारना, एक प्रकार का योग, लोहाँगी ।

परिघातनः (पुं०) लोहाँगी ।

परिचयः ( पुं० ) परिचय वा जानपहिचान ।

परिचरः ( पुं० ) "परिधिस्थ" में देखो ।

परिचर्या (स्त्री) उपासना वा सेवा ।

परिचाय्यः ( पुं० ) यज्ञ में अग्नि का कोई एक स्थानविशेष, उस स्थान पर का अग्नि ।

परिचारकः (पुं०) दास वा टहलुवा ।

परिजनः ( पुं० ) नौकर चाकर इत्यादि आत्मसम्बन्धी जन ।

परिझङ्कारः ( पुं० ) चारो ओर से 'झन्' 'झन्' ऐसा शब्द का होना ।

परिणत ( त्रि० ) (तः । ता । तम्) पक गया = ई ।

परिणयः ( पुं० ) विवाह ।

परिणामः ( पुं० ) किसी वस्तु का बदल कर दूसरा हो जाना (जैसा दूध वा दही का परिणाम मक्खन) ।

परिणायः (पुं०) गोटियों का इधर उधर चलाना ।

परिणाहः (पुं०) विशालता वा बड़ाई, वस्त्र इत्यादि का पनहाँ ।

परितस् (अव्यय) (तः) चारो ओर

परित्राणम् ( नपुं० ) रक्षा ।

परिदानम् ( नपुं० ) कोई वस्तु का अदल बदल करना ।

परिदेवनम् (नपुं०) पछतावा का बोलना वा कलपना ।

परिधानम् (नपुं०) धोती इत्यादि नाभी के नीचे पहिरने का वस्त्र ।

परिधिः ( पुं० ) वृत्त की परिधि वा गोलाई, सूर्य्य वा चन्द्र के चारो ओर का मण्डल, पलाश इत्यादि यज्ञ के वृक्षों की शाखा

परिधिस्थः ( पुं० ) सेनारक्षक के चारो ओर घूमने वाला ।

परिपणः ( पुं० ) मूल धन ।

परिपन्थिन् ( पुं० ) ( न्थी ) शत्रु ।

परिपाटी ( स्त्री ) क्रम ।

परिपूर्णता ( स्त्री ) परिपूर्णता ।

परिपेलवम् ( नपुं० ) मोथा घास ।

परिप्लव ( त्रि० ) ( वः । वा । वम् ) चञ्चल वा अस्थिर ।

परिबर्हः ( पुं० ) राजा का छत्र चवंर इत्यादि चिह्न, सामग्री ।

परिभवः ( पुं० ) तिरस्कार वा अनादर ।

परिभावः ( पुं० ) तथा ।

परिभाषणम् ( नपुं० ) ठट्ठा करना, निन्दा के सहित तिरस्कार करना वा धिक्कारना ।

परिभूत ( त्रि० ) (तः । ता । तम्)

अनादर किया गया वा अपमान किया गया = ई ।

परिमलः ( पुं॰ ) मर्दन से उत्पन्न भया मनोहर गन्ध, केसर इत्यादि का मर्दन ।

परिरम्भः ( पुं॰ ) आलिङ्गन । [ परीरम्भः ]

परिवर्जनम् (नपुं॰) मार डालना ।

परिवर्तः ( पुं॰ ) अदल बदल करना वा उलट पलट करना । [ परीवर्तः ]

परिवादः (पुं॰) लोकापवाद, निन्दा। [ परीवादः ]

परिवादिनी (स्त्री) सात तार की वीणा ।

परिवापित (त्रि॰) (तः । ता । तम्) मुण्डित, मुड़ाया गया = ई ।

परिवाहः (पुं॰) जल का प्रवाह । [ परीवाहः ]

परिवित्तिः (पुं॰) "परिवेत्ता" का बड़ा भाई ।

परिवृढः ( पुं॰ ) स्वामी ।

परिवेत्तृ ( पुं॰ ) ( त्ता ) जेठे भाई के विवाह भये बिना वा उस के अग्निहोत्र लिये बिना अपना विवाह अथवा अग्निहोत्र करलेने वाला छोटा भाई ।

परिवेशः (पुं॰) सूर्य्य वा चन्द्र के चारो ओर का मण्डल ।

परिक्षेपः ( पुं॰ ) तथा ।

परिव्याधः ( पुं॰ ) काठचम्पा (एक पुष्पवृक्ष), पानी में का बेंत ।

परिव्राज् (पुं॰) (ट्—ड्) सन्यासी।

परिव्राजकः ( पुं॰ ) तथा ।

परिषद् ( स्त्री ) ( त्—द् ) सभा।

परिष्कन्दः (पुं॰) दूसरे से बढ़ाया गया वा पालागया ।

परिष्कन्नः ( पुं॰ ) तथा ।

परिष्कारः ( पुं॰ ) साफ़ करना, सिंगारना ।

परिष्कृत (त्रि॰) (तः । ता । तम्) भूषित वा सिंगारा हुवा = ई, साफ़ कियागया = ई ।

परिष्यन्दः ( पुं॰ ) माला इत्यादि की रचना ।

परिष्वङ्गः ( पुं॰ ) आलिङ्गन ।

परिसरः ( पुं॰ ) नदी इत्यादि के समीप की भूमि, समीप की भूमि ।

परिसर्पः ( पुं॰ ) परिजनादिकों से घेरा जाना ।

परिसर्या ( स्त्री ) चारो ओर से गमन ।

परिसारः (पुं॰) तथा । [परीसारः]

परिस्कन्दः (पुं॰) "परिष्कन्द" में देखो ।

परिस्कन्नः ( पुं० ) तथा ।

परिस्कारः ( पुं० ) "परिष्कार" में देखो ।

परिस्तोमः ( पुं० ) हाथी पर का बिछौना ।

परिस्पन्दः ( पुं० ) माला इत्यादि की रचना ।

परिस्रुत ( त्रि० ) (तः । ता । तम्) चारो ओर से बहा = ही, ( स्त्री ) मदिरा वा मद्य ।

परिस्रुत् (स्त्री) मदिरा वा मद्य ।

परिहासः ( पुं० ) ठट्ठा करना, क्रीड़ा ।

परीक्षकः (पुं०) परीक्षा करने वाला, निगहबानी करने वाला ।

परीभावः ( पुं० ) "परिभव" में देखो ।

परीवर्तः (पुं०) "परिवर्त" में देखो।

परीवादः ( पुं० ) "परिवाद" में देखो ।

परीवापः ( पुं० ) तम्बू कनात इत्यादि सामग्री, बीज का बोना, थाला ।

परीवारः ( पुं० ) कुटुम्ब, तरवार इत्यादि की म्यान, लावलश्कर।

परीवाहः ( पुं० ) बहुत बढ़े जल के निकलने की राह, बहुत जल का चारो ओर से बहना ।

परीष्टिः ( स्त्री ) श्राद्ध में ब्राह्मणों की भक्तिपूर्वक शुश्रूषा करना।

परीसारः ( पुं० ) "परिसार" में देखो ।

परीहासः ( पुं० ) "परिहास" में देखो ।

परुत् (अव्यय) गतवर्ष अर्थात् परसाल ।

परुष ( त्रि० ) ( षः । षा । षम् ) कठोर, (नपुं०) कर्कश बोलना ।

परुष् ( नपुं० ) ( रुः ) बाँस इत्यादि की गाँठ वा पोर ।

परेत ( त्रि० ) ( तः । ता । तम् ) परलोक को गया वा मर गया = हुई ।

परेतराज् ( पुं० ) ( ट्—ड् ) यमराज ।

परेद्यवि ( अव्यय ) परदिन अर्थात् आने वाला दिन वा कल्ह ।

परेष्टुका (स्त्री) बहुत ब्याने वाली गैया ।

परैधित ( त्रि० ) (तः । ता । तम्) दूसरे से बढ़ाया गया = हुई वा दूसरे से पाला गया = हुई ।

परोष्णी (स्त्री) चपरा (एक जन्तु)। [ परोष्टी ]

पर्कटिः ( स्त्री ) पाकर वृक्ष ।

पर्कटी ( स्त्री ) तथा ।

पर्जनी ( स्त्री ) दारुहरदी ।
पर्जन्यः (पुं०) मेघ, इन्द्र, गरजने वाला मेघ ।
पर्ण ( पुं० । नपुं० ) (र्णः । र्णम्) ( पुं० ) पलाश वृक्ष, ( नपुं० ) पत्ता ।
पर्णशाला ( स्त्री ) पत्तों से छाया हुवा घर वा कुटी ।
पर्णासः (पुं०) कठसरैया पुष्पवृक्ष ।
पर्यङ्कः ( पुं० ) पलंग वा खटिया, कमरबन्ध ।
पर्यटनम् ( नपुं० ) घूमना वा फिरना ।
पर्ययः ( पुं० ) क्रम का उल्लङ्घन, अतिक्रमण ।
पर्यवस्था ( स्त्री ) विरोध ।
पर्याप्तम् ( नपुं० ) यथेष्ट वा इच्छा के सदृश, पूर्णता, बस ।
पर्याप्तिः ( स्त्री ) पूर्णता, मारने के लिए जो तयार है उस का रोकना ।
पर्यायः ( पुं० ) अवसर, क्रम, एक ही अर्थ के कई एक शब्द परस्पर के पर्याय कहलाते हैं (जैसा चन्द्र इन्दु विधु इत्यादि ) ।
पर्युदञ्चनम् (नपुं०) ऋण वा कर्ज़ ।
पर्येषणा ( स्त्री ) श्राद्ध में ब्राह्मण की भक्तिपूर्वक शुश्रूषा, धर्म इत्यादि का खोजना ।
पर्वतः (पुं०) पहाड़, एक ऋषि का नाम ।
पर्वन् ( नपुं० ) ( र्व ) प्रतिपदा और पञ्चदशी (पौर्णिमा और अमावस्या) का अन्तर, बाँस इत्यादि की गाँठ, तिथिभेद ( अष्टमी अमावास्या इत्यादि ), उत्सव, ग्रन्थ का अध्याय ।
पर्शुका ( स्त्री ) पाँजर वा पंसुरी की हड्डी ।
पर्शूः ( स्त्री ) तथा ।
पलम् ( नपुं० ) एक दण्ड ( २४ मिनिट काल ) का आठवाँ हिस्सा, ६४ मासा, मांस, उंचाई का नाप ।
पलगण्डः ( पुं० ) लीपनेवाला ।
पलङ्कषा ( स्त्री ) गोखरू ओषधी ।
पललम् ( नपुं० ) मांस ।
पलाण्डुः (पुं०) प्याज (एक कन्द) ।
पलाल (पुं० । नपुं०) (लः । लम्) पुआरा ।
पलाश (पुं० । नपुं०) (शः । शम्) (पुं०) पलाश वृक्ष, आँबाहरदी, राक्षस, ( नपुं० ) पत्ता ।
पलाशिन् ( पुं० ) ( शी ) वृक्ष ।
पलिक्नी ( स्त्री ) बुड्ढी स्त्री ।
पलितम् ( नपुं० ) बुढ़ाई से उत्पन्न

हुई शरीर पर की सफेदी ।
पल्यङ्कः (पुं०) पलंग वा खटिया ।
पल्लव (पुं० । नपुं० ) (वः । वम्) वृक्ष का नया पत्ता ।
पल्वलम् ( नपुं० ) छोटा सरोवर।
पवः ( पुं० ) धान्य इत्यादि को पछोड़ कर साफ करना ।
पवन ( पुं० । नपुं० ) (नः । नम्) ( पुं० ) वायु, ( नपुं० ) "पव" में देखो ।
पवनाशनः ( पुं० ) सर्प ।
पवमानः ( पुं० ) वायु ।
पविः ( पुं० ) वज्र ।
पवित्र ( त्रि० ) ( त्रः । त्रा । त्रम् ) पवित्र वा शुद्ध, ( नपुं० ) कुश, कच्चे पाँच सूत से बटा हुआ डोरा जो कुलदेवी को चढ़ाया जाता है ।
पवित्रकम् ( नपुं० ) सन से बना हुआ जाल ।
पशुः ( पुं० ) जानवर, प्राणी ।
पशुपतिः (पुं०) शिव ।
पशुरज्जुः ( स्त्री ) वह डोरी जिस में अनेक पशु बाँधे जायं ।
पश्चात् ( अव्यय ) पीछे, पिछला, पश्चिम दिशा ।
पश्चात्तापः ( पुं० ) पछतावा ।
पश्चिम ( त्रि० ) (मः । मा । मम्) पिछला = ली, ( पुं० ) पश्चिम देश, ( स्त्री ) पश्चिम दिशा ।
पष्ठौही ( स्त्री ) प्रथम गर्भ धारण करने वाली गैया ।
पस्त्यम् ( नपुं० ) घर ।
पाकः ( पुं० ) रसोई, पकना, लड़का, एक दैत्य का नाम ।
पाकलम् ( नपुं० ) कुट्ट ओषधी ।
पाकशासनः ( पुं० ) इन्द्र ।
पाकशासनिः (पुं०) इन्द्र का बेटा।
पाकस्थानम् ( नपुं० ) रसोई का घर ।
पाक्य (पुं० । नपुं०) (क्यः । क्यम्) ( पुं० ) जवाखार, ( नपुं० ) खारीनोन ।
पाखण्डः (पुं०) झूठे मत पर आरूढ़ होना, "सर्वलिङ्गी" में देखो । [ पाषण्डः ]
पाचक ( त्रि० ) ( चकः । चिका । चकम्) रसोई करने वाला = ली ।
पाञ्चजन्यः (पुं०) विष्णु का शङ्ख ।
पाञ्चालिका (स्त्री) वस्त्र वा हाथीदाँत से बनाई हुई पुतली ।
पाट् (अव्यय) हे ! ( सम्बोधन में बोला जाता है ) ।
पाटच्चरः ( पुं० ) चोर ।
पाटल ( त्रि० ) (लः । ला । लम्)

गुलाबी रङ्ग वाला = ली, (पुं०) गुलाबी रङ्ग, धान, (स्त्री)पॉडर, (पुं० । स्त्री) गुलाब का फूल ।

पाटलि (पुं० । स्त्री) (लिः । लिः—ली) पाँडर, (लिः) एक तरह की लोध, (पुं०) धान ।

पाठः (पुं०) पढ़ना ।

पाठा (स्त्री) एक प्रकार का सोनापाढ़ा ।

पाठिन् (पुं०) (ठी) चीता (एक लकड़ी) ।

पाठीनः (पुं०) पहिना (एक मछली) ।

पाणिः (पुं०) हाथ ।

पाणिगृहीती (स्त्री) विवाहिता स्त्री ।

पाणिघः (पुं०) हाथ से ताल बजाने वाला ।

पाणिपीडनम् (नपुं०) विवाह ।

पाणिवादः (पुं०) हाथ से ताल बजाने वाला ।

पाण्डर (त्रि०) (रः । रा । रम्) श्वेत रङ्ग वाला, (पुं०) श्वेतरङ्ग।

पाण्डु (त्रि०) (ण्डुः । ण्डुः । ण्डु) अधिक सफ़ेदी लिये पीला रङ्ग वाला = ली, (पुं०) अधिक सफ़ेदी लिये पीला रङ्ग ।

पाण्डुकम्बलिन् (पुं०) (ली) श्वेत कम्बल से घेरा हुआ रथ ।

पाण्डुर (त्रि०) (रः । रा । रम्) "पाण्डु" में देखो ।

पातकम् (नपुं०) पाप ।

पातालम् (नपुं०) पाताल, बड़वानल ।

पातुक (त्रि०) (कः । का । कम्) जिस का गिरने का स्वभाव है।

पात्र (त्रि०) (त्रः । त्री । त्रम्) बरतन, (नपुं०) नदी इत्यादि का पाट, योग्य, पत्ता, राजा का मन्त्री, यज्ञ का पात्र, सवाँग (नाटक का) ।

पात्रीवम् (नपुं०) एक प्रकार का यज्ञपात्र ।

पाथस् (नपुं०) (थः) जल ।

पादः (पुं०) चरण, चतुर्थांश वा चौथाई, बड़े पर्वत के अगल बगल वाले छोटे २ पर्वत, किरण

पादकटकः (पुं०) पैर का कड़ा (गहना), "मञ्जीर" में देखो ।

पादग्रहणम् (नपुं०) "अभिवादन" में देखो ।

पादपः (पुं०) वृक्ष ।

पादबन्धनम् (नपुं०) गैया भैंस इत्यादि पशुरूप धन ।

पादवल्मीकम् (नपुं०) "श्लीपद" में देखो ।

पादस्फोटः ( पुं० ) बेवाय रोग ( पैर में होता है )।

पादाङ्गदम् ( नपुं० ) "मञ्जीर" में देखो ।

पादातः ( पुं० ) पैदल ।

पादातम् ( नपुं० ) पैदलों का समूह।

पादातिकः ( पुं० ) पैदल ।

पादुका ( स्त्री ) जूता, खड़ाऊं ।

पादूः ( स्त्री ) तथा ।

पादूकृत् (पुं०) जूता बनानेवाला।

पाद्य ( त्रि० ) ( द्यः । द्या । द्यम् ) वह वस्तु जो कि चरण के पूजा के लिये है ( जल इत्यादि ) ।

पानगोष्ठिका ( स्त्री ) मद्य पीने वालों की सभा ।

पानीयम् ( नपुं० ) जल ।

पानीयशालिका ( स्त्री ) पौसरा अर्थात् पानी का घर ।

पान्थः ( पुं० ) राह चलने वाला ।

पाप ( त्रि० ) ( पः । पा । पम् ) द्रोह करने वाला = ली, पाप-युक्त, ( नपुं० ) पाप ।

पापचेली ( स्त्री ) सोनापाढ़ा ।

पाप्मन् (त्रि०) (प्मा । प्मा । प्म) पापयुक्त, ( नपुं० ) पाप ।

पामन ( त्रि० ) ( नः । ना । नम्) ओदी खजुली वाला = ली ।

पामन् (स्त्री) ( मा ) ओदी खजुली रोग ।

पामर ( त्रि० ) ( रः । रा । रम् ) अधम वा नीच ।

पामा (स्त्री) ओदी खजुली रोग ।

पायस (पुं० । नपुं०) (सः । सम्) ( पुं० ) "श्रीवास" में देखो, (नपुं०) खीर वा जाउर ।

पायुः ( पुं० ) दिसा की राह वा मलेन्द्रिय ।

पाय्यम् ( नपुं० ) मान वा नाप वा माप वा नपुवा ।

पारम् ( नपुं० ) नदी इत्यादि का पार ।

पारत (पुं० । नपुं०) ( तः । तम् ) पारा धातु ।

पारदः ( पुं० ) तथा ।

पारशवः (पुं०) ब्राह्मण से शूद्रा स्त्री में उत्पन्न, एक प्रकार का शस्त्र ।

पारश्वधिकः ( पुं० ) परशु शस्त्र का धारण करने वाला ।

पारसीकः ( पुं० ) पारस देश का घोड़ा ।

पारस्त्रैणेयः (पुं०) परस्त्री का पुत्र।

पारायणम् ( नपुं० ) कोई ग्रन्थ का पाठ करना, सम्पूर्णता ।

पारावतः ( पुं० ) कबूतर वा परेवा पक्षी ।

पारावताङ्घ्रि ( स्त्री ) (ङ्घ्रिः—ङ्घ्री) मालकंगुनी ।

पारावारः ( पुं० ) समुद्र ।

पारावारम् ( नपुं० ) नदी इत्यादि के दोनों तट ।

पाराशरिन् ( पुं० ) सन्न्यासी ।

पाराशर्य्यः ( पुं० ) कृष्णद्वैपायन व्यास ।

पारिकाङ्क्षिन् ( पुं० ) ( क्षी ) तपस्वी ।

पारिजातः (पुं०) हरसिंगार वृक्ष ।

पारिजातकः ( पुं० ) तथा, बकाइन वृक्ष ।

पारितथ्या ( स्त्री ) चोटी का गहना (मंद राखड़ी इत्यादि) ।

पारिप्लव (त्रि०) ( वः । वा । वम् ) चञ्चल ।

पारिभद्रः ( पुं० ) बकाइन वृक्ष, नीम का पेड़, मंदार, देवदारु ।

पारिभद्रकः ( पुं० ) देवदारु ।

पारिभाव्यम् ( पुं० ) कुष्ट ओषधी।

पारियात्रकः ( पुं० ) एक पर्वत ।

पारियात्रिकः ( पुं० ) तथा ।

पारिषदः ( पुं० ) शिव के अनुचर।

पारिहार्यः ( पुं० ) "आवापक" में देखो ।

पारी ( स्त्री ) हाथी के पैर की डोरी, बरतन ।

पारुष्यम् (नपुं० ) कड़ाई वा कठोरता, अप्रिय वचन ।

पार्थिवः ( पुं० ) राजा ।

पार्वती ( स्त्री ) शिव की पत्नी ।

पार्वतीनन्दनः ( पुं० ) स्वामिकार्तिक, गणेश ।

पार्श्व (पुं० । नपुं०) (र्श्वः । र्श्वम्) पर्शू अर्थात् पाँजर की हड्डियों का समूह, पाँजर, पास ।

पार्ष्णि (पुं० । स्त्री) (र्ष्णिः । र्ष्णिः—र्ष्णी) एड़ी अर्थात् पैर के पीछे का भाग ।

पार्ष्णिग्राहः ( पुं० ) राजा के युद्ध यात्रा में पीछे से उस के गढ़ मे अमल कर लेनेवाला राजा, योद्धा को पीछे से रक्षा करने वाला ।

पालघ्नः (पुं०) एक जलोत्पन्न तृण ।

पालङ्की ( स्त्री ) पालकी साग, कुंदुरू तरकारी ।

पालाश (त्रि०) ( शः । शी । शम् ) हरा रङ्ग वाला = की, ( पुं० ) हरा रङ्ग ।

पालि ( स्त्री ) ( लिः—ली ) खड्ग इत्यादि का टोंका, कोना, धारा, चिह्न, पङ्क्ति ।

पालिन्दी ( स्त्री ) श्याम तिधारा ओषधी ।

पालिन्धी ( स्त्री ) तथा ।

पावकः ( पुं० ) अग्नि ।

पाशः ( पुं० ) फन्दा, ( यह शब्द जब 'केश'वाचक शब्द के आगे रहता है तब इस का अर्थ समूह होता है, जैसे,—केशपाशः—बालों का समूह ) ।

पाशकः ( पुं० ) पासा ।

पाशिन् ( पुं० ) (शी) फाँसीवाला, वरुण ( जलदेवता ) ।

पाशुपत ( त्रि० ) (तः । ती । तम् ) पशुपतिमतावलम्बी, (पुं०) गुम्मा साग, (नपुं०) पाशुपतास्त्र ।

पाशुपाल्यम् ( नपुं० ) गैया की रक्षा इत्यादि वैश्यवृत्ति ।

पाश्चात्य (त्रि०) (त्यः । त्या । त्यम्) पश्चिम देशवासी, पिछला = ली।

पाश्या (स्त्री) फाँसियों का समूह।

पाषाणः ( पुं० ) पत्थर ।

पाषाणदारणः ( पुं० ) सङ्गतराश अर्थात् पत्थर फोड़ने वाला, पत्थर फोड़ने की टाँकी ।

पांशुः ( पुं० ) धूल, व्यभिचार अर्थात् पर पुरुष से स्त्री का वा परस्त्री से पुरुष का सम्भोग करना । [ पांसुः ]

पांशुला (स्त्री) "इत्वरी" में देखो। [ पांसुला ]

पिकः ( पुं० ) कोकिल पक्षी ।

पिङ्ग ( त्रि० ) ( ङ्गः । ङ्गा । ङ्गम् ) दीया के टेम के ऐसा रङ्ग वाला = ली, ( पुं० ) दीया के टेम के ऐसा रङ्ग ।

पिङ्गल ( त्रि० ) (लः । ला । लम्) पिशङ्ग रङ्ग से कुछ अधिक पीले रङ्ग वाला = ली, (पुं०) पिशङ्ग रङ्ग से कुछ अधिक पीला रङ्ग, एक सूर्य का पार्श्ववर्ती, (स्त्री) वामन दिग्गज की स्त्री ।

पिचण्डः ( पुं० ) पेट । [पिचिण्डः]

पिचण्डिल ( त्रि० ) ( लः । ला । लम् ) बड़े पेट वाला वा तोंदैला = ली । [ पिचिण्डिल ]

पिचिण्डः ( पुं० ) पेट ।

पिचुः ( स्त्री ) रुई वा कपास ।

पिचुमन्दः ( पुं० ) नीम का वृक्ष ।

पिचुमर्दः ( पुं० ) तथा ।

पिचुलः ( पुं० ) झाऊ वृक्ष ।

पिच्च ( त्रि० ) ( च्चः । च्चा । च्चम् ) पिचटा = टी वा चिपटा = टी।

पिच्चटम् ( नपुं० ) राँगा धातु ।

पिच्छम् ( नपुं० ) मोर की पोंछ।

पिच्छा ( स्त्री ) सेमर की गोंद, भात इत्यादि का माँड़ ।

पिच्छिल (त्रि०) (लः । ला । लम्) चिकना = नी, माँड़युक्त व्यञ्जन,

(स्त्री) सेमर वृक्ष, सीसो वृक्ष, (नपुं०) पतली दही वा मठा।

पिङ्गः ( पुं० ) मारडालना ।

पिञ्जर (पुं० । नपुं०) ( रः । रम् ) पिंजड़ा, (पुं० ) एक प्रकार का घोड़ा, (नपुं०) हरताल, सोना ।

पिञ्जलः ( पुं० ) वह सेना जिस में बहुत आदमियों की भीड़ से कसमस होय ।

पिञ्जूलः ( पुं० ) दीया का मल ।

पिञ्जूषः ( पुं० ) खूंट अर्थात् कान का मल

पिटः ( पुं० ) झाँपी ।

पिटकः (पुं०) पेटारा वा सन्दूक, फोड़ा ।

पिटका ( स्त्री ) फोड़ा ।

पिठर ( पुं० । नपुं० ) (रः । रम्) (पुं०) "उखा" में देखो, (नपुं०) मोथा घास, मन्थनदण्ड वा मथनिया ।

पिण्ड (पुं० । नपुं०) (ण्डः । ण्डम्) ( पुं० ) झाँपी, कोई वस्तु का गोला, गन्धरस, (नपुं०) लोहा।

पिण्डकः ( पुं० ) लोहबान एक गन्धवस्तु ।

पिण्डिका ( स्त्री ) गोला, पहिया के काठ का आधारभूत मण्डलाकार चक्र का मध्यभाग ।

पिण्डीतकः ( पुं० ) मथनफल का वृक्ष ।

पिण्डी (स्त्री) "पिण्डिका" में देखो।

पिण्याकः ( पुं० ) सिहुक एक प्रकार का पदार्थ, तिल की खरी ।

पितरौ, ऋकारान्त, द्विवचन, (पुं०) माता पिता ।

पितामहः ( पुं० ) दादा अर्थात् पिता का पिता, ब्रह्मा ।

पितृ (पुं०) (ता) बाप ।

पितृपतिः ( पुं० ) यमराज ।

पितृप्रसूः (स्त्री) पिता की माता अर्थात् दादी, सन्ध्या का समय।

पितृयज्ञः ( पुं० ) अन्न जल से पितरों को तृप्त वा सन्तुष्ट करना।

पितृवनम् ( नपुं० ) श्मशान ।

पितृव्यः ( पुं० ) पिता का भाई अर्थात् चाचा ।

पित्तम् ( नपुं० ) पित्त एक शरीर का धातु ।

पित्र्य (त्रि०) ( त्र्यः । त्र्या । त्र्यम् ) पितासम्बन्धी ( अधिकार वा राज्य जो परम्परा से चला आया है ), अङ्गुष्ठ और तर्जनी के बीच का तीर्थ ।

पित्सत् ( पुं० ) ( न् ) पक्षी ।

पिधानम् (नपुं०) ढाँपना, ढपना, गुप्त होना ।

पिनद्ध (पुं॰) कवच पहिने हुए योद्धा

पिनाक (पुं॰ । नपुं॰) (कः । कम्) शिव का धनुष्, शूल ।

पिनाकिन् (पुं॰) (की) शिव ।

पिपासा (स्त्री) प्यास वा तृषा ।

पिपीलिका (स्त्री) चिउंटी ।

पिप्पलः (पुं॰) पीपल वृक्ष ।

पिप्पलि (स्त्री) (लिः—ली) पीपर ओषधी ।

पिप्पलीमूलम् (नपुं॰) पिपरामूल ।

पिप्लुः (पुं॰) "कालक" में देखो ।

पियालः (पुं॰) प्यारमेवा ।

पियालकः (पुं॰) तथा ।

पिल्ल (त्रि॰) (ल्लः । ल्ली । ल्लम्) "क्लिन्नाक्ष" में देखो ।

पिशङ्ग (त्रि॰) (ङ्गः । ङ्गी । ङ्गम्) कमल के पराग के सदृश रङ्ग वाला = ली, (पुं॰) कमल के पराग के सदृश रङ्ग ।

पिशाचः (पुं॰) प्रेत वा एक देवयोनि ।

पिशितम् (नपुं॰) मांस ।

पिशुन (त्रि॰) (नः । ना । नम्) सूचक वा चुगलखोर, खल, (स्त्री) असवरक, (नपुं॰) केसर ।

पिष्टकः (पुं॰) एक तरह की पूड़ी जो चावल के पिसान से बनती हैं जिस को बारगा कहते हैं ।

पिष्टपचनम् (नपुं॰) आँटे के वस्तु के पकाने का बरतन (तावा कड़ाही इत्यादि) ।

पिष्टातः (पुं॰) बुक्का ।

पीठ (त्रि॰) (ठः । ठी । ठम्) पीढ़ा ।

पीडनम् (नपुं॰) दबाना, निचोड़ना, उपद्रव वा पीड़ा देना ।

पीडा (स्त्री) पीड़ा ।

पीत (त्रि॰) (तः । ता । तम्) पीला = ली, (पुं॰) पीला रङ्ग, (स्त्री) हरदी ।

पीतदारु (नपुं॰) देवदार वृक्ष ।

पीतद्रुः (पुं॰) सरला वा सरल देवदार, दारुहरदी ।

पीतन (पुं॰ । नपुं॰) (नः । नम्) (पुं॰) अमड़ा वृक्ष, (नपुं॰) केसर, हरताल ।

पीतसारकः (पुं॰) विजयसार एक लकड़ी ।

पीतसालकः (पुं॰) तथा ।

पीताम्बरः (पुं॰) विष्णु ।

पीतिः (पुं॰) घोड़ा ।

पीन (त्रि॰) (नः । ना । नम्) मोटा = टी ।

पीनसः (पुं॰) "प्रतिश्याय" में देखो ।

पीनोध्नी (स्त्री) मोटे २ स्तन वाली गाय ।

पीयूषः (पुं०) नई ब्यानी गैया के सात दिन तक का दूध (कोई कहते हैं कि पकाये हुये उस दूध का यह नाम है) । [पेयूषः]

पीयूषम् (नपुं०) अमृत ।

पीलुः (पुं०) अखरोट मेवा, हाथी, बाण, फूल ।

पीलुपर्णी (स्त्री) मुरहारा वा मुर्रा, कुन्द्रू तरकारी ।

पीवन् (त्रि०) (वा । वा । व) मोटा = टी ।

पीवर (त्रि०) (रः । रा—री । रम्) मोटा = टी ।

पीव्र (पुं०) (वा) मोटा वा तयार ।

पुक्कसः (पुं०) चण्डाल वा डोम ।

पुङ्खः (पुं०) बाण की पोंछ ।

पुङ्गवः (पुं०) (पूर्वपदसहित इस का प्रयोग होता है) यह पद पूर्व पदार्थ की श्रेष्ठता को सूचित करता है जैसा—"ब्राह्मणपुङ्गवः"—ब्राह्मणों में श्रेष्ठ ।

पुच्छ (पुं० । नपुं०) (च्छः । च्छम्) पोंछ ।

पुञ्जः (पुं०) समूह ।

पुट (त्रि०) (टः । टी । टम्) दोना ।

पुटभेदः (पुं०) नाद वा भंवर (जो पानी में पड़ती है) ।

पुटभेदनम् (नपुं०) नगर ।

पुण्डरीक (पुं० । नपुं०) (कः । कम्) (पुं०) अग्निकोण का दिग्गज, सिंह, व्याघ्र, अग्नि, (नपुं०) श्वेत कमल ।

पुण्डरीकाक्षः (पुं०) विष्णु ।

पुण्डर्यम् (नपुं०) पुण्डरीय एक ओषधीवृक्ष ।

पुण्ड्रः (पुं०) पौंढ़ा । [पौण्ड्रः]

पुण्ड्रकः (पुं०) एक तरह का कुन्द जो वसन्त में फूलता है ।

पुण्य (त्रि०) (ण्यः । ण्या । ण्यम्) पुण्यवान्, मनोहर, (नपुं०) धर्म

पुण्यकम् (नपुं०) चान्द्रायणादि व्रत ।

पुण्यजनः (पुं०) राक्षस, यक्ष ।

पुण्यजनेश्वरः (पुं०) कुबेर ।

पुण्यभूमिः (पुं०) आर्यावर्त्त अर्थात् विन्ध्य और हिमालय का मध्य देश ।

पुण्यवत् (त्रि०) (वान् । वती । वत्) भाग्यवान् ।

पुत्तिका (स्त्री) एक छोटी मधुमक्खी ।

पुत्रः (पुं०) बेटा ।

पुत्री (स्त्री) बेटी ।

पुत्रौ, द्विवचन (पुं०) बेटा और बेटी ।

पुन्नल (त्रि०) (लः । ला । लम्) सुन्दर आकार वाला = ली,

(पुं०) आत्मा, देह।
पुनर् (अव्यय) (नः) फेर, भेद, अवधारण वा निश्चय।
पुनर्नवः (पुं०) नख।
पुनर्नवा (स्त्री) गदहपूर्णा ओषधी।
पुनर्भवः (पुं०) नख।
पुनर्भूः (पुं०। स्त्री) (भूः। भूः) "दिधिषू" में देखो।
पुन्ध्वजः (पुं०) मूसा जन्तु।
पुन्नागः (पुं०) नागकेसर वृक्ष।
पुर (पुं० नपुं०) (रः रम्) (पुं०) गुग्गुल वृक्ष, (नपुं०) घर, नगर, शरीर।
पुरतस् (अव्यय) (तः) अगाड़ी वा आगे।
पुरन्दरः (पुं०) इन्द्र।
पुरन्ध्रि (स्त्री) (न्ध्रिः—न्ध्री) पति पुत्र वाली स्त्री।
पुरस् (अव्यय) (रः) अगाड़ी, पूर्व दिशा।
पुरस्कृत (त्रि०) (तः। ता। तम्) पूजित, शत्रु से अगाड़ी किया गया = ई, अगाड़ी किया गया = ई।
पुरस्तात् (अव्यय) अगाड़ी।
पुरस्सर (त्रि०) (रः। रा। रम्) आगे चलने वाला = ली।
पुरा (अव्यय) पूर्व काल, निरन्तर, बीत गया, निकट होने वाला, पूर्वदिशा, प्रथम, अगाड़ी
पुराण (त्रि०) (णः। णी। णम्) पुराना = नी, (नपुं०) मात्स्यादि पुराण।
पुराणपुरुषः (पुं०) विष्णु।
पुरातन (त्रि०) (नः। नी। नम्) पुराना = नी।
पुरावृत्तम् (नपुं०) पुरानी बात वा इतिहास, भारत इत्यादि इतिहास।
पुरी (स्त्री) नगरी।
पुरीतत् (नपुं०) अंतड़ी वा एक नाड़ी जो पेट में है।
पुरीषम् (नपुं०) विष्ठा।
पुरु (त्रि०) (रुः। रुः। रु) बहुत, बड़ा = ड़ी।
पुरुषः (पुं०) पुरुष वा नर, आत्मा, नागकेसर वृक्ष, मनुष्य।
पुरुषोत्तमः (पुं०) विष्णु, पुरुषों में उत्तम।
पुरुह (त्रि०) (हः। हा। हम्) बहुत, बड़ा = ड़ी।
पुरुहू (त्रि०) (हूः। हूः। हु) तथा।
पुरुहूतः (पुं०) इन्द्र।
पुरोग (त्रि०) (गः। गा। गम्) अग्रगामी, अग्रगण्य।
पुरोगम (त्रि०) (मः। मा। मम्) तथा

पुरोगामिन् (त्रि०) (मी । मिनी । मि) तथा ।
पुरोडाशः ( पुं० ) खपड़े पर भूंजा हुवा आटा का गोला ।
पुरोधस् ( पुं० ) (धाः) पुरोहित ।
पुरोभागिन् (त्रि०) (गी । गिनी । गि) केवल दोष का देखने वाला = ली ।
पुरोहितः ( पुं० ) पुरोहित ।
पुर् ( स्त्री ) ( पूः ) नगर ।
पुलस्त्यः (पुं०) एक ऋषि का नाम ।
पुलहः (पुं०) एक ऋषि का नाम ।
पुलाकः ( पुं० ) धान की भूसी, सङ्क्षेप, भात का सीत ।
पुलिनम् ( नपुं० ) नदी इत्यादि का तट जो टटका निकला है ।
पुलिन्दः ( पुं० ) एक प्रकार के म्लेच्छ मनुष्य जो पर्वतों पर रहते हैं ।
पुलोमजा ( स्त्री ) इन्द्राणी ।
पुषित ( त्रि० ) ( तः । ता । तम् ) पुष्ट, पोषा गया = ई ।
पुष्कर ( पुं० । नपुं० ) (रः । रम् ) ( पुं० ) तलाव, ( नपुं० ) कमल, आकाश, जल, पुष्करमूल, हाथी के सूंड़ का अग्रभाग, बाजा का मुख ।
पुष्कराह्वः ( पुं० ) सहरस पक्षी ।
पुष्करिणी ( स्त्री ) पोखरी ।
पुष्कल ( त्रि० ) (लः । ला । लम्) बहुत, अत्यन्त सुन्दर ।
पुष्ट ( त्रि० ) (ष्टः । ष्टा । ष्टम्) पुष्ट, पोषा गया = ई ।
पुष्पम ( नपुं० ) फूल, स्त्री का रज अर्थात् प्रति मास में बहने वाला रुधिर, कुरोहा वृक्ष ।
पुष्पकम् ( नपुं० ) कुबेर का विमान, "कुसुमाञ्जन" में देखो ।
पुष्पकेतुः ( पुं० ) "कुसुमाञ्जन" में देखो ।
पुष्पदन्तः (पुं०) वायुकोण का दिग्गज, महिमन् स्तोत्र का कर्त्ता ।
पुष्पधन्वन् (पुं०) (न्वा) कामदेव ।
पुष्पफलः ( पुं० ) कइत वृक्ष ।
पुष्परथः ( पुं० ) हवा खाने का रथ । [ पुष्यरथः ] ।
पुष्पलिह ( पुं० ) (ट्—ड्) भंवरा ।
पुष्पवती ( स्त्री ) रजस्वला स्त्री ।
पुष्पवत्,द्विवचन, ( पुं० ) ( न्तौ ) चन्द्र और सूर्य ।
पुष्पसमयः ( पुं० ) वसन्त ऋतु ।
पुष्पाह्वः ( पुं० ) स्त्री का रज ।
पुष्यः (पुं०) एक नक्षत्र का नाम ।
पुष्यरथः (पुं०) हवा खाने का रथ
पुस्तम् ( नपुं० ) मृत्तिका आदि से पुतली इत्यादि का बनाना ।

पुंश्चली (स्त्री) कुलटा वा खानगी ।
पुंस् (पुं०) (पुमान्) पुरुष वानर ।
पूगः ( पुं० ) सुपारी वृक्ष वा फल, समूह ।
पूजनम् ( नपुं० ) पूजा करना ।
पूजा ( स्त्री ) पूजा वा बड़ों का आदर करना ।
पूजित (त्रि०) (तः । ता । तम्) पूजित वा आदर किया गया = ई।
पूज्य (त्रि०) (ज्यः । ज्या । ज्यम्) पूजा करने के वा आदर करने के योग्य, ( पुं० ) ससुर ।
पूत ( त्रि० ) ( तः । ता । तम् ) पवित्र, ओसाय कर के साफ किया गया ( अन्न ) ।
पूतना ( स्त्री ) एक राक्षसी का नाम, हरैं ।
पूतिकः ( पुं० ) कंटैला करञ्ज । [ पूतीकः ]
पूतिकरजः ( पुं० ) तथा । [ पूतीकरजः ] [ पूतीकरञ्जः ]
पूतिकाष्ठम् ( नपुं० ) सरला वा सरलदेवदार, देवदार ।
पूतिगन्धि (त्रि०) ( न्धिः । न्धिः । न्धि) दुर्गन्धवस्तु, (पुं०) दुर्गन्ध ।
पूतिफली ( स्त्री ) बकुची ओषधी ।
पूपः ( पुं० ) चावल की पूड़ी वा बारगा ।
पूरः ( पुं० ) जल का प्रवाह ।
पूरण ( त्रि० ) ( णः । णी । णम् ) पूरा करने वाला = ली, (स्त्री) सेमर वृक्ष ।
पूरित ( त्रि० ) ( तः । ता । तम् ) भरा गया = ई, भरगया = ई ।
पूरुषः ( पुं० ) पुरुष वा नर ।
पूर्ण ( त्रि० ) ( र्णः । र्णा । र्णम् ) भर गया = ई, समग्र वा पूरा हुआ = ई । [ पूर्त ]
पूर्णिमा ( स्त्री ) पूर्णमासी तिथि ।
पूर्तम् ( नपुं० ) धर्म के लिये खुदवाया हुआ कूँवाँ तालाव बावली इत्यादि ।
पूर्व ( त्रि० ) ( र्वः । र्वा । र्वम् ) पहिला = ली, ( पुं०, बहुवचन—पूर्वे ), पूर्व पुरुष अर्थात् पुरुखा, ( पुं० ) ब्रह्मा, ( स्त्री ) पूर्वदिशा, ( नपुं० ) पहिले ( क्रियाविशेषण )
पूर्वज ( त्रि० ) ( जः । जा । जम् ) पहिले उत्पन्न भया = ई, (पुं०) बड़ा भाई, पूर्व पुरुष अर्थात् बाप दादा इत्यादि पुरुखा, ( स्त्री ) बड़ी बहिन ।
पूर्वदेवः ( पुं० ) असुर ।
पूर्वपक्षः ( पुं० ) शुक्ल पक्ष वा उंजाला पाख, शङ्का वा सन्देह ।

पूर्वपर्वतः (पुं०) उदयाचल पर्वत ।
पूर्वेद्युस् ( अव्यय ) ( द्युः ) काल ( जो बीत गया ) ।
पूषन् ( पुं० ) ( षा ) सूर्य ।
पृक्का ( स्त्री ) असवरक ओषधी ।
पृक्तिः (स्त्री) स्पर्श करना वा छूना।
पृच्छा ( स्त्री ) पूछना ।
पृतना ( स्त्री ) सेना, वह सेना जिस में २४३ हाथी २४३ रथ ७२९ घोड़े और १२१५ पैदल रहती हैं ।
पृथक् ( अव्यय ) जुदा, बिना ।
पृथक्पर्णी ( स्त्री ) पिठवन ओषधी।
पृथग्जनः ( पुं० ) नीच वा अधम, मूर्ख ।
पृथग्विध (त्रि०) (धः । धा । धम् ) दूसरे प्रकार का = की, नाना रूप वाला ।
पृथिवी ( स्त्री ) भूमि, एक छन्द का नाम ।
पृथु ( त्रि० ) (थुः । थ्वी—थुः । थु) विस्तीर्ण वा बड़ा = ड़ी, (पुं०) एक राजा का नाम, ( स्त्री ) काली जीरी, हींग का वृक्ष ।
पृथुकः (पुं०) चिउड़ा (अन्न), लड़का
पृथुरोमन् (पुं०) (मा) एक मछली
पृथुल ( त्रि० ) ( लः । ला । लम् ) विस्तीर्ण वा बड़ा = ड़ी ।
पृथ्वी ( स्त्री ) भूमि, एक छन्द का नाम, कालीजीरी, हींग का वृक्ष
पृथ्वीका ( स्त्री ) बड़ी लाइची ।
पृदाकुः (पुं०) सर्प, बिच्छी, बाघ, चीता ।
पृश्निः ( स्त्री ) किरण, छोटे शरीर वाली, छोटा वा थोड़ा । [ पृष्णिः ]
पृश्निपर्णी (स्त्री) पिठवन ओषधी।
पृषतः ( पुं० ) जल का कण, एक तरह का मृग जिस के शरीर पर बूंद बूंद सा रहता है ।
पृषत् ( नपुं० ) जल का कण ।
पृषत्कः ( पुं० ) बाण ।
पृषदश्वः ( पुं० ) वायु ।
पृषदाज्यम् ( नपुं० ) दही से मिला घी ।
पृषातकम् ( नपुं० ) तथा ।
पृष्ठम् ( नपुं० ) पीठ ।
पृष्ठ्य (पुं० । नपुं०) (ष्ठ्यः । ष्ठ्यम्) (पुं०) बोझा ढोने वाला घोड़ा, ( नपुं० ) पीठों का समूह ।
पेचकः ( पुं० ) उल्लू पक्षी, हाथी के पुरीषद्वार का आच्छादक मांस ।
पेट ( त्रि० ) ( टः । टी । टम् ) पेटारा वा सन्दूक ।
पेटकः ( पुं० ) पेटारा वा सन्दूक,

झुण्ड वा समूह ।
पेटा ( स्त्री ) पेटारा वा सन्दूक ।
पेडा ( स्त्री ) तथा ।
पेलव (त्रि०) ( वः । वा । वम् ) सुन्दर, कोमल, विरल वा बीड़र।
पेशल ( त्रि० ) ( लः । ला । लम् ) चतुर, मनोहर।
पेशि (स्त्री) ( शिः—शी ) अण्डा, थैली ।
पैठर (त्रि०) ( रः । री । रम् ) बटलोहिया में पकाया हुआ अन्न।
पैतृष्वसेयः (पुं०) फूआ का लड़का
पैतृष्वस्रीयः ( पुं० ) तथा ।
पोटगलः (पुं०) नरकट, काश तृण
पोटा ( स्त्री ) वह स्त्री जिस के दाढ़ी मूछ के बाल निकले हों।
पोतः ( पुं० ) नौका, लड़का ।
पोतवणिज् ( पुं० ) (क्—ग् ) जहाजी सौदागर ।
पोतवाहः ( पुं० ) नाव का चलाने वाला अर्थात् मल्लाह ।
पोताधानम् ( नपुं० ) छोटे अण्डे की मछलियों का झुण्ड ।
पोत्रम् ( नपुं० ) शूकर का मुख, हल का अग्रभाग ।
पोत्रिन् ( पुं० ) ( त्री ) शूकर ।
पोष्टृ ( त्रि० ) ( ष्टा । ष्ट्री । ष्टृ ) पालन करने वाला = ली ।
पौण्डर्यम् ( नपुं० ) पुण्डरीय वृक्ष ।
पौत्तिकम् ( नपुं० ) मक्खी का सहद ।
पौत्रः ( पुं० ) पुत्र वा पुत्री का लड़का ।
पौत्री (स्त्री) पुत्र वा पुत्री की लड़की
पौर ( त्रि० ) ( रः । री । रम् ) पुरवासी, (नपुं०) रोहिस घास ।
पौरस्त्य ( त्रि० ) ( स्त्यः । स्त्या । स्त्यम् ) पूर्वदिशा वाला = ली, पहिला = ली ।
पौरुष ( त्रि० ) ( षः । षा—षी । षम्) पोरसा भर गहिरा = री, ( नपुं० ) पौरुष वा पुरुष का धर्म ।
पौरोगवः ( पुं० ) रसोई के घर का अध्यक्ष वा स्वामी ।
पौर्णमासः (पुं०) पौर्णिमा में विहित याग वा यज्ञ ।
पौर्णमासी (स्त्री) पूर्णमासी तिथि।
पौर्णिमा ( स्त्री ) तथा ।
पौलस्त्यः ( पुं० ) कुवेर, रावण ( एक राक्षस ) ।
पौलि (पुं० । स्त्री) (लिः । लि—ली ) हरे वा घृतादि में भूंजे हुए जव इत्यादि से बनाया गया पक्वान्न ( रोटी इत्यादि ) ( कोई कहते हैं कि यह भूंजे हरे जव

इत्यादि का भी नाम है ) ।
: ( पुं० ) पूस महीना ।
प्याट् (अव्यय) हे ! ( सम्बोधन में बोला जाता है ) ।
प्रकम्पनः ( पुं० ) महावायु ।
प्रकर्षः (पुं०) उत्कृष्टता वा बड़ाई।
प्रकाण्ड ( पुं० । नपुं० ) ( ण्डः । ण्डम् ) जड़ से ले शाखा तक का वृक्ष का भाग, ( नपुं० ) प्रशस्त वा प्रशंसा के लायक ।
प्रकामम् ( पुं० ) यथेष्ट वा इच्छा के अनुरूप ।
प्रकारः ( पुं० ) भेद वा तरह, तुल्यता ।
प्रकारक ( त्रि० ) ( रकः । रिका । रकम् ) उत्कृष्ट वा उत्तम कार्य करने वाला = ली ।
प्रकाशः (पुं०) अति प्रसिद्ध, वाम, उंजाला ।
प्रकीर्णकम् (नपुं०) चामर वा चंवर
प्रकीर्यः (पुं०) कंटैला करञ्ज वृक्ष ।
प्रकृति. ( स्त्री ) स्वभाव, स्त्री वा पुरुष का मूत्रद्वार, कारण वा हेतु, प्रधान तत्व जो साङ्ख्य शास्त्र में कहा है, मन्त्री ।
प्रकृतयः, बहुवचन, (स्त्री) स्वामी अमात्य इत्यादि राज्य के आठ अङ्ग ( "राज्याङ्ग" में देखो ) ।

प्रकोष्ठः ( पुं० ) बाँह के केहुनी के नीचे का भाग ।
प्रक्रमः ( पुं० ) प्रारम्भ ।
प्रक्रिया ( स्त्री ) राजों का छत्रधारण इत्यादि व्यापार ( कोई "व्यवस्था का स्थापन करना" कहते हैं साधन करना ।
प्रक्वणः ( पुं० ) वीणा का शब्द ।
प्रक्वाणः ( पुं० ) तथा ।
प्रक्ष्वेडनः ( पुं० ) लोहे का बाण। [ पृक्ष्वेदनः ]
प्रगण्डः ( पुं० ) बाँह का केहुनी के ऊपर का भाग ।
प्रगतजानुक ( त्रि० ) ( कः । का । कम् ) वात इत्यादि रोग से जिस की जङ्घा बहुत दूर दूर हो गई हों ।
प्रगल्भ ( त्रि० ) ( ल्भः । ल्भा । ल्भम् ) ढीठा = ठी, तीव्र वा तीखी बुद्धि वाला = ली ।
प्रगाढ ( त्रि० ) ( ढः । ढा । ढम् ) दृढ़ वा मज़बूत, ( नपुं० ) अत्यन्त, दुःख ।
प्रगुण ( त्रि० ) ( णः । णा । णम् ) दृढ़ वा मज़बूत, सूधा = धी ।
प्रगे ( अव्यय ) प्रातःकाल वा भोर वा सबेरा ।
प्रग्रहः ( पुं० ) कैदी जो चोर इ-

त्यादि अपराधी का दण्ड है, पगहा वा पशु बाँधने की डोरी।

प्रग्राहः (पुं०) तराजू, घोड़ा इत्यादि की लगाम। [प्रग्रहः]

प्रग्रीवम् (नपुं०) वृक्ष की फुनगी।

प्रघणः (पुं०) चउखट के बाहर का स्थान जो चौतरा इत्यादि के सदृश रहता है।

प्रघाणः (पुं०) तथा।

प्रचक्रम् (नपुं०) वह सेना जिस ने डेरा कूच किया है।

प्रचलायित (त्रि०) (तः। ता। तम्) निद्रा से घूर्णित वा औंघाया।

प्रचीरम् (नपुं०) गाँव इत्यादि के किनारे चारों ओर का काँटा इत्यादि का घेरा।

प्रचुर (त्रि०) (रः। रा। रम्) बहुत।

प्रचेतस् (पुं०) (ताः) वरुण।

प्रचोदनी (स्त्री) भटकटैया ओषधी।

प्रच्छदपटः (पुं०) वीणा डोली पालकी इत्यादि का ओहार वा आच्छादन वस्त्र, स्त्रियों का घूंघट।

प्रच्छन्न (त्रि०) (न्नः। न्ना। न्नम्) छिपा हुआ=ढ़, (नपुं०) खिड़की।

प्रच्छर्दिका (स्त्री) वमन वा छाँट।

प्रजन (पुं०। नपुं०) (नः। नम्) गर्भ का धारण करना।

प्रजविन् (पुं०) (वी) वेगवान्।

प्रजा (स्त्री) सन्तति वा लड़का लड़की, लोग वा रैय्यत।

प्रजाता (स्त्री) वह स्त्री जिसको लड़का भया है।

प्रजापतिः (पुं०) ब्रह्मा।

प्रजावती (स्त्री) लड़के वाले वाली स्त्री, भाई की स्त्री।

प्रज्ञ (त्रि०) (ज्ञः। ज्ञा। ज्ञम्) पण्डित, "प्रज्ञु" में देखो।

प्रज्ञा (स्त्री) बुद्धि।

प्रज्ञानम् (नपुं०) बुद्धि, चिह्न।

प्रज्ञु (त्रि०) (ज्ञुः। ज्ञुः। ज्ञु) रोग से जिस की जङ्घा दूर २ हो गई है।

प्रडीनम् (नपुं०) पक्षियों का तिरछा चलना।

प्रणदः (पुं०) अनुराग वा प्रीति से उत्पन्न भया शब्द।

प्रणयः (पुं०) प्रेम वा प्रीति, माँगना, विश्वास।

प्रणवः (पुं०) ओङ्कार जो वेद पढ़ने के पहिले बोला जाता है।

प्रणादः (पुं०) अनुराग वा प्रीति से उत्पन्न भया शब्द।

प्रणाल (पुं० । स्त्री) (लः । ली) पनारा वा पनारी, (स्त्री) परिपाटी वा क्रम ।

प्रणिधानम् (नपुं०) सावधानता वा चित्त की एकाग्रता ।

प्रणिधिः (पुं०) हलकारा, प्रार्थन ।

प्रणिहित (त्रि०) (तः । ता । तम्) लब्ध हुआ वा पाया गया = ई ।

प्रणीत (त्रि०) (तः । ता । तम्) बनाया गया वा सिरजा गया वा निर्माण किया गया = ई, रसादि कर के वा पाक कर के संस्कृत व्यञ्जनादिक, (पुं०) मन्त्रादिक से संस्कृत अग्नि ।

प्रणुत (त्रि०) (तः । ता । तम्) स्तुति किया गया वा वर्णन किया गया = ई ।

प्रणेय (त्रि०) (यः । या । यम्) वश में स्थित ।

प्रतन (त्रि०) (नः । नी । नम्) पुराना = नी ।

प्रतलः (पुं०) थपेड़ा ।

प्रतापः (पुं०) कोष वा खजाने से और सेना वा फ़ौज से उत्पन्न हुआ तेज ।

प्रतापसः (पुं०) श्वेत मंदार वृक्ष ।

प्रति (अव्यय) मुख्य के सदृश, वीप्सा वा व्याप्त करने की इच्छा (जैसा,—"ग्रामङ्ग्रामम्प्रति गच्छति" = गाँव गाँव घूमता है), लक्षण वा चिह्न, उलटा वा विपरीत ।

प्रतिकर्मन् (नपुं०) (र्म) सिंगारना ।

प्रतिकूल (त्रि०) (लः । ला । लम्) विपरीत वा विरुद्ध ।

प्रतिकृतिः (स्त्री) प्रतिमा वा मूर्ति वा तसबीर ।

प्रतिकृष्ट (त्रि०) (ष्टः । ष्टा । ष्टम्) नीच वा अधम ।

प्रतिक्षिप्त (त्रि०) (प्तः । प्ता । प्तम्) धिक्कारित ("अधिक्षिप्त" में देखो) ।

प्रतिख्यातिः (स्त्री) अत्यन्त प्रसिद्धि । [प्रतिविख्यातिः] [प्रविख्यातिः]

प्रतिग्रहः (पुं०) दान लेना, सेना का पृष्ठ भाग वा पीछा, पिकदानी ।

प्रतिग्राहः (पुं०) पिकदानी ।

प्रतिघः (पुं०) कोप वा क्रोध ।

प्रतिघातनम् (नपुं०) मारडालना ।

प्रतिच्छाया (स्त्री) "प्रतिकृति" में देखो ।

प्रतिजागरः (पुं०) वस्तुओं की निगहबानी करना ।

प्रतिज्ञा (स्त्री) प्रतिज्ञा वा कौल ।

प्रतिज्ञात (त्रि०) (तः । ता । तम्)

अङ्गीकृत वा अङ्गीकार किया गया = ई।

प्रतिज्ञानम् ( नपुं० ) अङ्गीकार।

प्रतिदानम् ( नपुं० ) धरोहरवाले को उस की थाती सौंप देना, अदल बदल करना।

प्रतिध्वानम् ( नपुं० ) प्रतिध्वनि वा गूंज अर्थात् कूंआँ इत्यादि में शब्द करने से जो दूसरा शब्द निकलता है।

प्रतिनिधिः ( पुं० ) "प्रतिकृति" में देखो, तुल्य वा सदृश।

प्रतिपद् ( स्त्री० ) ( त्—द् ) पड़िवा तिथि, बुद्धि।

प्रतिपन्न (त्रि०) ( न्नः। न्ना। न्नम् ) जाना गया = ई।

प्रतिपादनम् ( नपुं० ) दान।

प्रतिबद्ध (त्रि०) ( द्धः। द्धा। द्धम् ) जिसका मन टूट गया वा उदास हो गया = ई।

प्रतिबन्धः ( पुं० ) कार्य का प्रतिघात वा रुकावट।

प्रतिभय (त्रि०) ( यः। या। यम् ) "प्रतीभय" में देखो।

प्रतिभा ( स्त्री ) तर्क वितर्क वाली बुद्धि।

प्रतिभूः ( पुं० ) मध्यस्थ वा निचवई।

प्रतिमा ( स्त्री ) "प्रतिकृति" में देखो।

प्रतिमानम (नपुं०) तथा, वाच्छित्य का अधोभाग अर्थात् हाथी के दोनों दाँतों के बीच का हिस्सा

प्रतिमुक्तः ( पुं० ) कवच पहिने हुए योद्धा।

प्रतियत्नः (पुं०) गुण का आरोपण करना वा गुण का स्थापन करना, लाभ की इच्छा, संस्कार।

प्रतियातना (स्त्री) "प्रतिकृति" में देखो, बदला लेना।

प्रतिरोधिन् (पुं०) ( धी ) चोर।

प्रतिवाक्यम् ( नपुं० ) उत्तरवाक्य वा जवाब।

प्रतिवादिन् ( पुं० ) ( दी ) शङ्का का समाधान करने वाला वा झगड़ा करनेवाला वा मुद्दालह।

प्रतिबिम्बम् (नपुं०) "प्रतिकृति" में देखो, प्रतिबिम्ब वा छाया ( जैसा मुखादिक की छाया दरपण इत्यादि में पड़ती है )।

प्रतिविषा ( स्त्री ) अतीस ओषधी।

प्रतिशासनम् ( नपुं० ) नौकरों को हुक्म देना वा आज्ञा देना।

प्रतिश्यायः ( पुं० ) एक तरह का नाक का रोग जिस को "पीनस" भी कहते हैं।

प्रतिश्रयः (पुं०) सभा, आश्रय वा अवलम्ब, अङ्गीकार।
प्रतिश्रवः (पुं०) अङ्गीकार।
प्रतिश्रुत (त्रि०) (तः। ता। तम्) अङ्गीकार किया गया = ई।
प्रतिश्रुत् (स्त्री) "प्रतिध्वान" में देखो।
प्रतिष्टम्भः (पुं०) कार्य का प्रतिघात वा रुकावट।
प्रतिसरः (पुं०) सेना का पिछला हिस्सा, मन्त्र तन्त्र का डोरा।
प्रतिसीरा (स्त्री) कनात वा पर्दा।
प्रतिहत (त्रि०) (तः। ता। तम्) मन में टूट गया वा उदास हो गया = ई।
प्रतिहारकः (पुं०) ऐन्द्रजालिक वा बाजीगर। [प्रातिहारकः]
प्रतिहासः (पुं०) कंदइल पुष्पवृक्ष। [प्रतीहासः]
प्रतीक (त्रि०) (कः। का। कम्) प्रतिकूल वा विरोधी, (पुं०) अङ्ग, किसी चीज़ का एक हिस्सा।
प्रतीकारः (पुं०) वैर लेना।
प्रतीकाश (त्रि०) (शः। शा। शम्) तुल्य (यह पद किसी पद के उत्तर में, अर्थात् अगाड़ी रह कर पूर्व पद की तुल्यता को बोधन करता है)।
प्रतीक्ष्य (त्रि०) (क्ष्यः। क्ष्या। क्ष्यम्) पूज्य वा मान्य वा आदर करने के योग्य।
प्रतीची (स्त्री) पश्चिम दिशा।
प्रतीचीन (त्रि०) (नः। ना। नम्) "प्रत्यग्भव" में देखो।
प्रतीचीपतिः (पुं०) वरुण देवता।
प्रतीत (त्रि०) (तः। ता। तम्) प्रसन्न, प्रसिद्ध।
प्रतीप (त्रि०) (पः। पा। पम्) विपरीत वा विरुद्ध।
प्रतीपदर्शिनी (स्त्री) स्त्री, विपरीत देखने वाली।
प्रतीभय (त्रि०) (यः। या। यम्) भयङ्कर वस्तु, (नपुं०) भयानक रस। [प्रतिभय]
प्रतीरम् (नपुं०) नदी इत्यादि का तीर।
प्रतीवापः (पुं०) दूध इत्यादि में मट्ठा इत्यादि का मिलाना।
प्रतीहारः (पुं०) द्वार, द्वारपाल। [प्रतिहारः]
प्रतीहारी (स्त्री) द्वार की निगहबानी करने वाली स्त्री।
प्रतीहासः (पुं०) कंदइल पुष्पवृक्ष। [प्रतिहासः]
प्रतोली (स्त्री) गल्ली।
प्रत्न (त्रि०) (त्नः। त्ना। त्नम्)

प्राचीन वा पुराना = नी ।
प्रत्यक् ( अव्यय ) पश्चिम दिशा, पश्चिम देश, पिछला समय ।
प्रत्यक्पर्णी ( स्त्री ) चिचिड़ा वृक्ष।
प्रत्यक्श्रेणी ( स्त्री ) मूसाकर्णी ओषधी, वज्रदन्ती ओषधी ।
प्रत्यक्ष (त्रि०) (क्षः । क्षा । क्षम्) इन्द्रियों से ग्रहण करने के योग्य वस्तु, ( नपुं० ) प्रत्यक्ष ज्ञान, चक्षु इत्यादि ६ ज्ञानेन्द्रिय ।
प्रत्यग्भव ( त्रि०) (वः । वा । वम्) पश्चिम दिशा का वा पश्चिम दिशा में उत्पन्न भया = ई ।
प्रत्यग्र ( त्रि० ) ( ग्रः । ग्रा । ग्रम् ) नया = ई ।
प्रत्यन्तः (पुं०) म्लेच्छों का देश ।
प्रत्यन्तपर्वतः ( पुं० ) बड़े पर्वत के पास का छोटा पर्वत ।
प्रत्ययः ( पुं० ) शपथ, शपथ, ज्ञान, विश्वास, कारण ।
प्रत्ययित (त्रि०) ( तः । ता । तम्) विश्वासपात्र अर्थात् जिस पर विश्वास है ।
प्रत्यर्थिन् ( पुं० ) ( र्थी ) शत्रु ।
प्रत्यवसित (त्रि०) (तः । ता । तम्) खाया गया = ई ।
प्रत्याख्यात (त्रि०) (तः । ता । तम्) अङ्गीकार न किया गया वा मना कर दिया गया ।
प्रत्याख्यानम् ( नपुं० ) निषेध करना वा मना करना ।
प्रत्यादिष्ट (त्रि०) (ष्टः । ष्टा । ष्टम्) आज्ञा रहित किया गया = ई ।
प्रत्यादेशः ( पुं० ) निषेध करना वा मना करना ।
प्रत्यायित (त्रि०) (तः । ता । तम्) विश्वास कराया गया = ई ।
प्रत्यालीढम् ( नपुं० ) एक बाण चलाने का आसन जिस में बाँईं जाँघ फैली और दहिनी सिकुड़ी रहती है ।
प्रत्यासारः ( पुं० ) सेना के समूह का पृष्ठभाग वा पीछा ।
प्रत्याहारः ( पुं० ) इन्द्रियों का आकर्षण वा खींचना अर्थात् कोई विषय में न जाने देना, सङ्क्षेप ।
प्रत्युत्क्रमः ( पुं० ) कर्म के प्रारम्भ में पहिला व्यवहार, युद्ध के लिये अत्यन्त उद्योग ।
प्रत्यूष (पुं० । नपुं०) ( षः । षम् ) प्रातःकाल । [ प्रत्युष ]
प्रत्यूषस् ( नपुं० ) (षः) प्रातःकाल। [ प्रत्युषस्—( षः ) ]
प्रत्यूहः ( पुं० ) विघ्न वा रुकावट।
प्रथम ( त्रि० )( मः । मा । मम् )

पहिला = ली, मुख्य वा प्रधान।
प्रथा ( स्त्री ) प्रसिद्धि वा ख्याति।
प्रथित ( त्रि० ) ( तः । ता । तम् ) प्रसिद्ध वा ख्यात ।
प्रदरः (पुं०) स्त्रियों का एक रोग जिस के होने से मूत्रद्वार से लोहू बहा जाता है, भङ्ग वा टूटना, बाण ।
प्रदीपः ( पुं० ) दीपक वा दीया ।
प्रदीपनः ( पुं० ) एक विष ।
प्रदेशः ( पुं० ) स्थान, तर्जनी से लेकर फैले हुए अंगुठे तक का विस्तार । [ प्रादेशः ]
प्रदेशनम् ( नपुं० ) भेंट वा नज़र जो राजा वा गुरु इत्यादि को दी जाती है ।
प्रदेशिनी ( स्त्री ) हाथ के अंगूठे के पास की अंगुली जिस को "तर्जनी" कहते हैं। [प्रदेशनी]
प्रदोषः (पुं०) रात्रि का प्रारम्भ वा साँझ ।
प्रद्युम्नः ( पुं० ) कृष्ण का पुत्र वा कामदेव ।
प्रद्योतनः ( पुं० ) सूर्य ।
प्रद्रावः (पुं०) भागना ।
प्रधनम् ( नपुं० ) युद्ध ।
प्रधान (पुं० । नपुं०) (नः। नम् ) प्रधान वा मुख्य, राजा का मुख्य सहाय, (नपुं०) परमात्मा, बुद्धि, साङ्ख्यशास्त्रोक्त प्रकृति।
प्रधिः ( पुं० ) रथ के पहिया का वह भाग जो भूमि को छूता जाता है ।
प्रपञ्चः ( पुं० ) जगत्, शब्द का विस्तार, वैपरीत्य वा उलटा-पुलटा, ठगना ।
प्रपदम् (नपुं०) पैर का अग्रभाग।
प्रपा ( स्त्री ) पौसरा वा पानी का घर ।
प्रपातः ( पुं० ) पानी का झरना वा सोता, पर्वत का वह स्थान कि जहाँ से कोई चीज़ गिरे तो बीच में न रुके ।
प्रपितामहः (पुं०) परदादा अर्थात् पितामह के पिता ।
प्रपुन्नाडः (पुं०) चकवड़ वृक्ष । [ प्रपुन्नालः ] [ प्रपुनालः ] [ प्रपुनाडः ] [ प्रपुन्नडः ]
प्रपौण्डरीकम् ( नपुं० ) पुण्डरीय वृक्ष ।
प्रफुल्ल ( त्रि० ) ( ल्लः । ल्ला । ल्लम् ) फूला हुवा = ई ( वृक्ष इत्यादि )
इत्यादि कथा ।
प्रबोधनम् ( नपुं० ) सूते हुए को जगाना, "अनुबोध" में देखो।

प्रभञ्जनः ( पुं० ) वायु वा हवा ।
प्रभवः ( पुं० ) कारण वा हेतु, उत्पत्ति का पहिला स्थान (जैसा गङ्गा के प्रथमोत्पत्ति का स्थान हिमाचल ) ।
प्रभा ( स्त्री ) प्रकाश ।
प्रभाकरः ( पुं० ) सूर्य ।
प्रभातम् ( नपुं० ) प्रातःकाल ।
प्रभावः ( पुं० ) "प्रताप" में देखो ।
प्रभिन्नः (पुं०) वह हाथी जिस को मद बह रहा है ।
प्रभुः ( पुं० ) स्वामी ।
प्रभूत ( त्रि० ) ( तः । ता । तम् ) बहुत ।
प्रभ्रष्टकम् ( नपुं० ) शिखा में लटकती हुई माला ।
प्रमथनम् ( नपुं० ) मार डालना ।
प्रमथाः, बहुवचन, ( पुं० ) शिव के गण ।
प्रमथाधिपः ( पुं० ) शिव ।
प्रमद ( त्रि० ) ( दः । दा । दम् ) उन्मत्त, ( पुं० ) सुख वा हर्ष ।
प्रमदवनम् (नपुं०) स्त्रियों के विहार का बन जहाँ राजा स्त्रियों के साथ विहार करता है ।
प्रमदा (स्त्री) काम से व्याप्त स्त्री
प्रमनस् (त्रि०) (नाः । नाः । नः) प्रसन्न चित्त वाला = ली ।
प्रमा (स्त्री) यथार्थ वा ठीक ज्ञान ।
प्रमाणम् ( नपुं० ) प्रत्यक्ष अनुमान इत्यादि चार प्रमाण, सीमा, शास्त्र, कृत करना ।
प्रमातामहः ( पुं० ) परनाना अर्थात् माता का दादा ।
प्रमातामही ( स्त्री ) परनानी अर्थात् माता की नानी ।
प्रमादः ( पुं० ) भूल ।
प्रमापणम् (नपुं०) मार डालना । [ प्रमापनम् ]
प्रमितिः (स्त्री) यथार्थ वा ठीक ज्ञान
प्रमीत ( त्रि० ) ( तः । ता । तम् ) मर गया = ई, ( पुं० ) यज्ञ के लिये मारा गया पशु ।
प्रमीला ( स्त्री ) अत्यन्त परिश्रम से इन्द्रियों का असामर्थ्य वा शिथिल हो जाना ।
प्रमुख ( त्रि० ) (खः । खा । खम्) प्रधान वा मुख्य ।
प्रमुदित (त्रि०) ( तः । ता । तम् ) हर्षित वा खुश ।
प्रमोदः ( पुं० ) सुख वा हर्ष ।
प्रयत ( त्रि० ) ( तः । ता । तम् ) पवित्र, एकाग्र वा सावधान ।
प्रयस्त (त्रि०) (स्तः । स्ता । स्तम्) प्रयत्न से सिद्ध कियागया वा पकाया गया अन्न इत्यादि ।

प्रथामः (पुं०) धन धान्य इत्यादि में जनों के आदर की अधिकाई।
प्रयोगः ( पुं० ) मारण उच्चाटन इत्यादि क्रिया, उच्चारण वा बोलना, दृष्टान्त, युद्ध के लिये अत्यन्त उद्योग करना।
प्रलम्बघ्नः ( पुं० ) बलदेव ( कृष्ण के बड़े भाई )।
प्रलयः ( पुं० ) "कल्प"का अन्त, मूर्च्छा, मरना, नाश।
प्रलापः (पुं०) पागल का बोलना वा व्यर्थ बड़ बड़ करना।
प्रवण ( त्रि० ) ( णः। णा। णम् ) नम्र, तत्पर, ढार वा क्रम से नीचा स्थान, (पुं०) चौरहा।
प्रवयस् ( पुं० ) ( याः ) बुड्ढा वा अधिक उमर वाला।
प्रवर्ह ( त्रि० ) ( र्हः। र्हा। र्हम् ) प्रधान वा मुख्य, पहिला = ली।
प्रवहः ( पुं० ) तीसरे मण्डल का वायु जिस के बल से नक्षत्रमण्डल घूमता है, बहना।
प्रवहणम् ( नपुं० ) स्त्रियों के चढ़ने कीगाड़ी जिस पर वस्त्र का ओहार पड़ा रहता है, डोला।
प्रवह्लिका (स्त्री) पहेली वा बुझौवल
प्रवारणम् ( नपुं० ) तुलादान इत्यादि महादान [प्रहारणम्]।
प्रवाल (पुं०। नपुं०) (लः। लम्) मूंगा, नया पत्ता, अङ्कुर, (पुं०) वीणा का दण्ड।
प्रवासनम् ( नपुं० ) निकाल देना, मार डालना।
प्रवाहः ( पुं० ) जल इत्यादि पतली वस्तु की निरन्तर गति वा बहना।
प्रवाहिका ( स्त्री ) सङ्ग्रहणी रोग।
प्रविदारणम् ( नपुं० ) युद्ध।
प्रविश्लेषः ( पुं० ) अत्यन्त वियोग वा जुदाई।
प्रवीण (त्रि०) ( णः। णा। णम् ) चतुर।
प्रवृत्तिः ( स्त्री ) कोई काम में लगना, समाचार, जल इत्यादि की निरन्तर गति वा बहना।
प्रवृद्ध ( त्रि० ) ( द्धः। द्धा। द्धम् ) बहुत बढ़ गया = ई, बहुत फैल गया = ई।
प्रवेक ( त्रि० ) ( कः। का। कम् ) प्रधान वा मुख्य।
प्रवेणि ( स्त्री ) (णिः—णी) सर्पाकार बनाई हुई केशों की चोटी, हाथी पर का बिछौना।
प्रवेष्टः ( पुं० ) भुजा वा बाँह।
प्रव्यक्त ( त्रि० ) (क्तः। क्ता। क्तम्)

स्पष्ट वा साफ़ वा सन्देहरहित।
प्रश्नः ( पुं० ) पुछना वा सवाल।
प्रश्रयः ( पुं० ) प्रेम वा प्रीति ।
प्रश्रित ( त्रि० ) (तः । ता । तम् ) नम्र वा विनययुक्त ।
प्रष्ठ ( त्रि० ) ( ष्ठः । ष्ठा । ष्ठम् ) अग्रगामी वा अगाड़ी चलने वाला =ली, (पुं०) बैलों की चञ्चलता दूर करने के लिये एक काठ
प्रष्ठवाह् ( पुं० ) ( ट्—ड् ) "प्रष्ठ" को ढोने वाला अर्थात् गाड़ी में जोतने के लिये पहिले पहिल सधाया जाता बैल ( प्रष्ठ—बैलों की चञ्चलता दूर करने के लिये एक काष्ठ ) ।
प्रष्ठौही ( स्त्री ) प्रथम गर्भ धारण करने वाली गाय ।
प्रसन्न ( त्रि० ) ( न्नः । न्ना । न्नम् ) प्रसन्न वा ख़ुश, निर्मल, ( स्त्री ) मद्य ।
प्रसन्नता (स्त्री) प्रसन्नता वा ख़ुशी, निर्मलता ।
प्रसभम् (नपुं०) हठ वा ज़बरदस्ती
प्रसरः (पुं०) फैलना वा फैलावट ।
प्रसरणम् ( नपुं० ) चारो ओर से फैलना
प्रसरणिः ( स्त्री ) तथा ।
प्रसवः ( पुं० ) जनना, उत्पत्ति, फल, पुष्प वा फूल ।
प्रसव्य (त्रि०) ( व्यः । व्या । व्यम् ) विपरीत वा उलटा =टी ।
प्रसह्य ( अव्यय ) हठ से वा ज़बरदस्ती ।
प्रसादः ( पुं० ) प्रसन्नता, निर्मलता, अनुग्रह वा मिहरबानी, काव्य का एक गुण, सावधानी ।
प्रसाधनम् ( नपुं० ) सिंगारना, "आकल्प" में देखो ।
प्रसाधनी ( स्त्री ) ककही ।
प्रसाधित (त्रि०) (तः । ता । तम् ) सिंगारा गया वा भूषित किया गया =ई ।
प्रसारणी ( स्त्री ) कुब्जप्रसारणी ओषधी [ प्रसारिणी ] ।
प्रसारिन् (त्रि०) (री । रिणी । रि) जिस का फैलने का स्वभाव है, जिस का फैलाने का स्वभाव है।
प्रसित ( त्रि० ) ( तः । ता । तम् ) बाँधा हुआ =ई, तत्पर वा आसक्त ।
प्रसितिः ( स्त्री ) बन्धन ।
प्रसिद्ध ( त्रि० ) ( द्धः । द्धा । द्धम् ) प्रसिद्ध वा ख्यात, भूषित वा
प्रसूः ( स्त्री ) माता, घोड़ी ।
प्रसूजनयितृ, द्विवचन, ( पुं० )

(तारी) माता पिता ।

प्रसूत ( त्रि० ) ( तः । ता । तम् ) पैदा हुवा वा उत्पन्न हुआ = ई, पैदा किया गया = ई, (स्त्री) वह स्त्री जिस को लड़का भया है

प्रसूतिः ( स्त्री ) पैदा करना वा जनना ।

प्रसूतिका ( स्त्री ) वह स्त्री जिस को लड़का भया है अर्थात् जब तक वह सौर के घर में है ।

प्रसूतिजम् (नपुं०) मन की पीड़ा वा शोक ।

प्रसूनम् ( नपुं० ) फूल, फल ।

प्रसृत ( त्रि० ) फैला हुआ = ई वा फैलावट के सहित, (स्त्री) पैर की पेंडुरी ।

प्रसृतिः ( स्त्री ) पसर वा अंजुरी का आधा । [ प्रसृतः—(पुं०)]

प्रसेवः ( पुं० ) थैली, बोरा ।

प्रसेवकः (पुं०) वीणा का तुम्बा ।

प्रस्तरः ( पुं० ) पत्थर ।

प्रस्तावः ( पुं० ) प्रसङ्ग वा अवसर ।

प्रस्थ (पुं० । नपुं०) (स्थः । स्थम्) पर्वत की चोटी, पर्वत की सम भूमि, तौलने का वा नापने का सेर ।

प्रस्थपुष्पः ( पुं० ) मरुवा वृक्ष ।

प्रस्थमानम् ( नपुं० ) एक प्रकार का नाप वा परिमाण ।

प्रस्थानम् ( नपुं० ) यात्रा करना वा कूंच करना ।

प्रस्फोटनम् ( नपुं० ) सूप ( जिस से अन्न पछोड़ा जाता है ) ।

प्रस्रवण ( पुं० । नपुं० ) ( णः । णम् ) ( पुं० ) एक पर्वत का नाम, ( नपुं० ) झरना अर्थात् पर्वत का वह स्थान जहाँ से पानी बहता है ।

प्रस्रावः ( पुं० ) मूत्र वा मूत ।

प्रहरः ( पुं० ) पहर भर अर्थात् तीन घण्टा ।

प्रहरणम् ( नपुं० ) अस्त्र वा हथियार ( खड्ग इत्यादि ) ।

प्रहस्तः ( पुं० ) थपेड़ा वा सब अंगुली फैलाया हुआ हाथ, रावण के एक बेटे का नाम ।

प्रहारः ( पुं० ) मारना वा चोट करना ।

प्रहारणम् ( नपुं० ) तुलादान पुरुषदान इत्यादि महादान । [ प्रवारणम् ]

प्रहिः ( पुं० ) कूप वा कूंआँ वा इनारा ।

प्रहेलिका (स्त्री) पहेली वा बुझौवल

प्रहृष्ट ( त्रि० ) ( ष्टः । ष्टा । ष्टम् ) प्रसन्न वा हर्षित ।

प्राकाम्यम् ( नपुं० ) यथेष्ट वा इच्छा के सदृश ।
प्राकारः ( पुं० ) घेरा (जैसा शहर पनाह )।
प्राकृत ( त्रि० ) ( तः । ता । तम् ) नीच वा अधम ।
प्राक् ( अव्यय ) पूर्व दिशा, पूर्व देश, पूर्व काल, बीत गया ।
प्राग्भव ( त्रि० ) (वः । वा । वम् ) पूर्व दिशा में उत्पन्न भया = ई, पहिले भया = ई ।
प्राग्रहर (त्रि०) ( रः । रा । रम् ) प्रधान वा मुख्य ।
प्राग्र्य ( त्रि० ) ( ग्र्यः । ग्र्या । ग्र्यम् ) तथा ।
प्राग्वंशः ( पुं० ) अग्निशाला के पूर्व ओर का सदस्यादिकों का घर ( सदस्य—यज्ञ में क्रियासमूह का देखने वाला )।
प्राचारः (पुं० ) बहना वा चूना।
प्राघुणकः (पुं०) अतिथि वा पहुना।
प्राघुणिकः ( पुं० ) तथा ।
प्राघूर्णिकः ( पुं० ) तथा ।
प्राचिका ( स्त्री ) बनमक्खी, एक प्रकार का पची ।
प्राची ( स्त्री ) पूर्व दिशा ।
प्राचीन (त्रि०) ( नः । ना । नम् ) पुराना = नी, पूर्व दिशा में भया = ई, ( स्त्री ) सोनापाठा एक लकड़ी ।
प्राचीनावीतम् ( नपुं० ) अपसव्य अर्थात् दहिने काँधे पर रक्खा हुआ जनेऊ ।
प्राचीपतिः ( पुं० ) इन्द्र ।
प्राचेतसः ( पुं० )वाल्मीकि ऋषि ।
प्राच्यः ( पुं० ) शरावती नदी से पूर्व दक्षिण का देश ।
प्राजनम् (नपुं०) कोड़ा वा चाबुक ।
प्राजितृ ( पुं० ) ( ता ) सारथी ।
प्राज्ञः ( पुं० ) पण्डित ।
प्राज्ञा ( स्त्री ) बुद्धिमती स्त्री ।
प्राज्ञी (स्त्री) पण्डिता स्त्री । [प्रज्ञा]
प्राज्य (त्रि०) (ज्यः । ज्या । ज्यम्) बहुत ।
प्राड्विवाकः ( पुं० ) न्यायकर्ता वा मुकद्दमों का देखने वाला वा १८ प्रकार के विवादस्थानों का देखने वाला ।
प्राणः ( पुं० ) सामर्थ्य वा बल, गन्धरस ।
प्राणाः, बहुवचन, ( पुं० ) प्राणवायु जो हृदय में रहता है ।
प्राणिन् ( पुं० ) ( णी ) मनुष्य इत्यादि प्राणधारी जीव ।
प्रातर् ( अव्यय ) (तः) प्रातःकाल वा सबेरा ।

प्राथमकल्पिकः (पुं०) वह विद्यार्थी जिस ने पहिले पहिल वेद पढ़ना आरम्भ किया है।

प्रादुर् (अव्यय) (दुः) नाम, प्रकट होना।

प्रादेशः (पुं०) तर्जनी से लेकर अङ्गुष्ठ तक का विस्तार।

प्रादेशनम् (नपुं०) दान।

प्राध्वम् (अव्यय) अनुकूलता वा अनुसार।

प्रान्तरम् (नपुं०) चौगान वा पटपर वा छायारहित भूमि।

प्राप्त (त्रि०) (प्तः। प्ता। प्तम्) पंहुचा = ची, पाया गया = ई

प्राप्तपञ्चत्व (त्रि०) (त्वः। त्वा। त्वम्) मर गया = ई।

प्राप्तरूप (त्रि०) (पः। पा। पम्) पण्डित, सुन्दर।

प्राप्तिः (स्त्री) लाभ, उत्पत्ति।

प्राप्य (त्रि०) (प्यः। प्या। प्यम्) प्राप्त करने के शक्य वा योग्य।

प्राभृतम् (नपुं०) नज़र वा भेंट जो राजा वा गुरु इत्यादि को दी जाती है।

प्रायः (पुं०) सन्यासपूर्वक भोजन का त्याग, मृत्यु वा मरण, तुल्य।

प्रायस् (अव्यय) (यः) बहुधा वा अवसर।

प्रार्थित (त्रि०) (तः। ता। तम्) माँगा गया = ई।

प्रालम्बम् (नपुं०) कण्ठ में सूधी लटकती हुई माला इत्यादि।

प्रालम्बिका (स्त्री) सुवर्ण से बनी हुई "ललन्तिका" वा एक तरह का भूषण जो कण्ठ में पहिना जाता है।

प्रालेयम् (नपुं०) हिम वा पाला।

प्रावरः (पुं०) दुपट्टा।

प्रावरणम् (नपुं०) ओढ़ना।

प्रावारः (पुं०) दुपट्टा।

प्रावृत (त्रि०) (तः। ता। तम्) लपेटा = टी।

प्रावृष् (स्त्री) (ट्—ड्) वर्षाकाल वा बरसात।

प्रावृषायणी (स्त्री) केवाँच।

प्रावृषेण्य (त्रि०) (ण्यः। ण्या। ण्यम्) बरसाती।

प्रासः (पुं०) साँग वा साँगी (एक शस्त्र)।

प्रासङ्गः (पुं०) बैलों के जोतने के पहिले अभ्यास के लिये वा चपलता के शान्ति के लिये काँधे पर रखने का काठ।

प्रासङ्ग्यः (पुं०) "प्रासङ्ग" नाम काठ का ढोने वाला बैल।

प्रासादः ( पुं० ) देवतों वा राजों का घर ।

प्रासिकः (पुं०) बल्लम वा साँग-नामक अस्त्र का धारण करने वाला ।

प्रास्थिक (त्रि०) (कः । की । कम) जिस में "प्रस्थ" भर अन्न बोया जा सकता है ( खेत ) ।

प्राह्णः ( पुं० ) दिन का प्रारम्भ ।

प्रांशु ( त्रि० ) ( शुः । शुः । शु )ऊंचा = ची, लम्बा = म्बी ।

प्रिय ( त्रि० ) ( यः । या । यम् ) प्यारा = री, (पुं०) स्त्री का पति।

प्रियकः ( पुं० ) कदम वृक्ष, बिजयसार एक लकड़ी, एक प्रकार का मृग, गोंदी वृक्ष ।

प्रियङ्गुः ( स्त्री ) कंगुनी वा टंगुनी वा काँक वा ककुनी (एक अन्न), गोंदी वृक्ष ।

प्रियता ( स्त्री ) प्रेम ।

प्रियंवद (त्रि०) ( दः । दा । दम् ) प्रिय वचन बोलने वाला = ली।

प्रियालः ( पुं० ) प्यारमेवा जिस में से चिरौंजी निकलती है।

प्रियालकः ( पुं० ) तथा ।

प्रीणनम् ( नपुं० ) प्रसन्न करना वा खुश करना, तृप्ति ।

प्रीत ( त्रि० ) ( तः । ता । तम् ) प्रसन्न वा हर्षित वा खुश ।

प्रीतिः (स्त्री) सुख, स्नेह ।

प्रुष्ट ( त्रि० ) ( ष्टः । ष्टा । ष्टम् ) जलाया गया = ई ।

प्रेक्षा ( स्त्री ) बुद्धि, देखना ।

प्रेङ्खा ( स्त्री ) हिंडोला, डोली ।

प्रेङ्खादोला ( स्त्री ) तथा ।

प्रेङ्खित ( त्रि० ) ( तः । ता । तम् ) थोड़ा कम्पित वा हिला।

प्रेत ( त्रि० ) ( तः । ता । तम् ) मर गया = ई, (पुं०) मुरदा, पिशाच ।

प्रेताः, बहुवचन, (पुं०) वे प्राणी जो कि नरक में गिराये जाते हैं।

प्रेत्य, ल्यबन्त ( अव्यय ) दूसरा जन्म, मरने के बाद ।

प्रेम ( नपुं० ) स्नेह वा प्यार ।

प्रेमन् ( पुं० ) ( मा ) तथा ।

प्रेषणम् ( नपुं० ) भेजना ।

प्रेष्ठ ( त्रि० ) ( ष्ठः । ष्ठा । ष्ठम् ) अत्यन्त प्रिय वा प्यारा ।

प्रेष्यः ( पुं० ) दास वा नौकर ।

प्रैयङ्गवीन (त्रि०) (नः । ना । नम्) जिस में प्रियङ्गु वा कंगुनी बोई जाती है ( खेत ) ।

प्रैषः ( पुं० ) भेजना, मर्दन करना, आज्ञा देना ।

प्रैष्यः ( पुं० ) दास वा नौकर ।

प्रोक्षणम् ( नपुं० ) जल से सीँचना वा जल छिड़कना, यज्ञ के पशु का मारना।

प्रोक्षित (त्रि०) ( तः । ता । तम् ) जिस पर जल छिड़का गया है, मारा गया यज्ञ का पशु।

प्रोथ (पुं० । नपुं०) ( थः । थम् ) घोड़ा की नाक, ( पुं० ) कुल्हा अर्थात् कमर के पास का पिण्ड।

प्रोद्यत ( त्रि० ) ( तः । ता । तम् ) तयार।

प्रोष्ठ ( पुं० । स्त्री ) ( ष्ठः । ष्ठी ) एक तरह की मछली।

प्रोष्ठपद ( पुं० । स्त्री ) (दः । दा) ( पुं० ) भादों महीना, (स्त्री) पूर्वभाद्रपदा उत्तरभाद्रपदा नक्षत्र। [ प्रौष्ठपद ]

प्रौढ ( त्रि० ) ( ढः । ढा । ढम् ) बहुत बड़ा = ड़ी वा बड़े उमर वाला = ली।

प्लक्षः (पुं०) पाकर वृक्ष, गेठी वृक्ष।

प्लव ( पुं० । नपुं० ) ( वः । वम् ) ( पुं० ) धरनई डेंगी इत्यादि जल के पार उतरने के लिये वस्तु, मेढ़क, जलकौवा, चण्डाल वा डोम, (नपुं०) मोथा घास।

प्लवगः (पुं०) बन्दर, मेढ़क, सारथी

प्लवङ्गः ( पुं० ) तथा।

प्लवङ्गमः ( पुं० ) बन्दर, मेढ़क।

प्लाक्षम् (नपुं०) पाकर वृक्ष का फल।

प्लीहन् ( पुं० ) ( हा ) पिलही रोग जो पेट के बाँई ओर होता है।

प्लीहशत्रुः (पुं०) रोहित एक घास।

प्लुतम् (नपुं०) घोड़े की चौकचाल अर्थात् चौकड़ी मारते हुए चलना।

प्लुष्ट (त्रि०) ( ष्टः । ष्टा । ष्टम् ) जलाया गया = ई। [ प्रुष्ट ]

प्लोषः ( पुं० ) दाह वा जलाना।

प्सात ( त्रि० ) ( तः । ता । तम् ) खाया गया = ई।

—**—

# ( फ )

फः ( पुं० ) कफ, वात, पुकारना, फूंकना, व्यर्थ बोलना।

फञ्जिका (स्त्री) ब्रह्मदण्डी ओषधी।

फटा ( स्त्री ) सर्प का फण।

फण (पुं० । स्त्री) (णः । णा) तथा।

फणधरः ( पुं० ) सर्प।

फणिज्जकः ( पुं० ) मरुआ वृक्ष।

फणिन् ( पुं० ) ( णी ) सर्प।

फलम् ( नपुं० ) वृक्ष इत्यादि का फल, जायफल, ढाल, हल के नीचे का काठ जिस का अग्र भाग लोहे से बना रहता है, हेतु से सिद्ध किया गया (जैसे यज्ञ का फल स्वर्ग ), बाण का अग्र भाग, त्रिफला, कङ्कोल परिणाम, लाभ वा नफा।

फलक (पुं० नपुं०) (कः। कम्) ढाल

फलकपाणिः ( पुं० ) ढाल बाँधने वाला।

फलपूरः ( पुं० ) बिजौरा नीबू।

फलवत् ( त्रि० ) ( वान्। वती। वत् ) फलयुक्त (वृक्ष इत्यादि)।

फलसः ( पुं० ) कटहर तरकारी।

फलाध्यक्षः ( पुं० ) खिरनी वृक्ष, फल का स्वामी।

फलिन (त्रि०) ( नः। ना। नम् ) फलसहित ( वृक्ष इत्यादि )।

फलिनी ( स्त्री ) गोंदी वृक्ष, इन्द्रपुष्पी लताविशेष।

फलिन् (त्रि०) (ली। लिनी। लि) फलसहित (वृक्ष इत्यादि), (पुं०) गोंदी वृक्ष।

फली ( स्त्री ) गोंदी वृक्ष।

फलेग्रहि (त्रि०)(हिः। हिः—ही। हि ) समय पर फलने वाला ( वृक्ष इत्यादि )।

फलेरुहा ( स्त्री ) पॉडर वृक्ष।

फल्गु (त्रि०) ( ल्गुः। ल्गुः। ल्गु ) थोड़ा = ड़ी, निर्बल, ( स्त्री ) कुटुम्बरी वृक्ष।

फाणितम् ( नपुं० ) राब जो ऊख के रस से बनती है।

फाण्ट (त्रि०) (ण्टः। ण्टा। ण्टम्) एक प्रकार का काढ़ा जो बिना परिश्रम बनाया जा सकता है।

फाल (पुं०। नपुं०) ( लः। लम् ) (पुं०) फार अर्थात् हल के नीचे का काठ जिस में लोहा लगा रहता है, (नपुं०) रूई से बना वस्त्र।

फाल्गुनः (पुं०) फागुन महीना, अर्जुन (युधिष्ठिर का एक भाई)। [ फाल्गुणः ]

फाल्गुनिकः (पुं०) फागुन महीना। [ फाल्गुणिकः ]

फाल्गुनी ( स्त्री ) फागुन की पौर्णमासी। [ फाल्गुणी ]

फुल्ल (त्रि०)(ल्लः। ल्ला। ल्लम्) फूला हुआ = ई (वृक्ष इत्यादि)।

फेनः (पुं०) फेन, समुद्रफेन। [फेणः]

फेनिल ( त्रि० ) ( लः। ला। लम् ) फेनयुक्त ( पानी इत्यादि ), (पुं०) रीठी एक वृक्ष, (नपुं०) बदर का फल।

फेरवः ( पुं० ) सियार जन्तु।
फेरुः ( पुं० ) तथा।
फेला ( स्त्री ) खाय कर फेंकी हुई वस्तु। [ फेलीः ]

-❋❋—

# ( ब )

बः ( पुं० ) वरुण देवता, घड़ा, फल, क्यारी, गदा।
बकः ( पुं० ) बकुला पक्षी, गुम्मा भाजी।
बकुलः (पुं०) मौलसरी पुष्पवृक्ष।
बङ्गम् ( नपुं० ) राँगा धातु।
बडवा ( स्त्री ) घोड़ी।
बडवानलः ( पुं० ) बड़वाग्नि जो समुद्र में है।
बडिशम् ( नपुं० ) मछली पकड़ने की बंसी।
बदरम् ( नपुं० ) बदर का फल।
बदरा (स्त्री) कपास, वाराहीकन्द।
बदरी ( स्त्री ) बदर का वृक्ष।
बद्ध ( त्रि० ) (द्धः। द्धा। द्धम्) बाँधा हुआ=ई।
बधिर (त्रि०) ( रः। रा। रम्) बहिरा=री।
बन्धकी ( स्त्री ) कुलटा वा खानगी स्त्री।
बन्धनम् (नपुं०) बन्धन, बाँधना।
बन्धनी ( स्त्री ) पगहा ( "पशुरज्जु" में देखो )।
बन्धुः ( पुं० ) समानगोत्रवाला भाई इत्यादि, मित्र।
बन्धुकः (पुं०) दुपहरिया पुष्पवृक्ष।
बन्धुजीवः ( पुं० ) तथा।
बन्धुजीवकः (पुं०) तथा।
बन्धुता ( स्त्री ) समानगोत्रवालों का समूह, मित्रों का समूह।
बन्धुर ( त्रि० ) ( रः। रा। रम् ) स्वभावही से ऊँचा कोई पदार्थ जो कि किसी कारण वश से झुक गया हो। [ बन्धूर ]
बन्धुलः ( पुं० ) कुलटा का पुत्र।
बन्धूकः (पुं०) दुपहरिया पुष्पवृक्ष।
बन्धूकपुष्पः (पुं०) विजयसार एक लकड़ी।
बभ्रु ( त्रि० ) ( भ्रुः। भ्रुः। भ्रु ) पीले रङ्ग वाली वस्तु, ( पुं० ) पीला रङ्ग, बड़ा नेउर, विष्णु, एक यादव।
बर्बणा ( स्त्री ) माछी।
बर्बरः ( पुं० ) ब्रह्मदण्डी ओषधी, एक देश का नाम, एकम्लेच्छजाति।

बर्बरा ( स्त्री ) एक प्रकार की त-
रकारी ।
बर्ह ( पुं० । नपुं० ) ( र्हः । र्हम् )
मोर का पङ्ख वा पोंछ, पत्ता,
करौंदा वृक्ष
बर्हपुष्पम् ( नपुं० ) करौंदा ।
बर्हिणः ( पुं० ) मोर पक्षी ।
बर्हिन् ( पुं० ) ( र्ही ) तथा ।
बर्हिपुष्पम् ( नपुं० ) करौंदा ।
बर्हिर्मुखः ( पुं० ) देवता ।
बर्हिष् (पुं० । नपुं०) (र्हिः । र्हिः)
(पुं०) अग्नि वा आग, (नपुं०)
करौंदा वृक्ष ।
बर्हिष्ठम् (नपुं०) नेत्रबाला ओषधी ।
बल ( पुं० । नपुं० ) ( लः । लम् )
( पुं० ) बलदेव, कौवा पक्षी,
(नपुं०) सामर्थ्य वा बल, सेना,
मोटाई ।
बलजम् ( नपुं० ) खेत, नगर का
फाटक ।
बलजा ( स्त्री ) सुन्दरी स्त्री ।
बलदेवः ( पुं० ) बलदेव ( कृष्ण
के भाई ) ।
बलभद्रः ( पुं० ) तथा ।
बलभद्रिका ( स्त्री ) "त्रायमाणा"
ओषधी ।
बलय (पुं० । नपुं० ) ( यः । यम् )
मण्डल, हाथ का गहना ( कं-
गना इत्यादि, "आवापक"
में देखो ) ।
बलयित ( त्रि० ) ( तः । ता । तम् )
चारों ओर से घेरा हुआ = ई
(जैसा नदी इत्यादि से नगर) ।
बलवत् ( त्रि० ) (वान् । वती । वत्)
बलवान् वा बलयुक्त, (नपुं०)
अतिशयित वा अत्यन्त ( क्रिया
विशेषण में ) ।
बला ( स्त्री ) बरिआर ओषधी ।
बलाका ( स्त्री ) बकुलों की पाँती
जो मिल कर आकाश में उड़ती
है, एक प्रकार का बकुला ।
बलात्कारः ( पुं० ) ज़बरदस्ती ।
बलारातिः ( पुं० ) इन्द्र ।
बलाहकः ( पुं० ) मेघ, कृष्ण के
चार घोड़ों में से एक का नाम ।
बलि (पुं० स्त्री) (लिः । लिः—ली)
( पुं० ) कर वा मासूल जो
राजा लेता है, एक दैत्य का
नाम, भेंट वा नज़र, ( स्त्री )
बुढ़ौती में मनुष्य के शरीर
पर की सिकुड़न, ललाट पर की
सिकुड़न, पेट पर की सिकुड़न
बलिध्वंसिन् (पुं०) (सी) विष्णु ।
बलिन ( त्रि० ) (नः । ना । नम्)
जिस का चमड़ा बुढ़ाई से सि-
कुड़ गया हो ।

बलिपुष्टः ( पुं० ) कौवा पक्षी ।
बलिभ ( त्रि० ) (भः । भा । भम्) "बलिन" में देखो ।
बलिभुज् ( पुं० ) ( क्—ग् ) कौवा पक्षी ।
बलिसद्मन् (नपुं०) (द्म) पाताल ।
बलीमुखः ( पुं० ) बन्दर ।
बलीवर्दः ( पुं० ) बैल । [बरीवर्दः]
बल्लवः (पुं०) अहीर, रसोईदार ।
बहिर्द्वारम् ( नपुं० ) द्वार के बाहर का हिस्सा, बाहर का द्वार ।
बहिस् ( अव्यय ) ( हिः ) बाहर ।
बहु ( त्रि० ) ( हुः । ह्वी—हुः । हु) बहुत ।
बहुकरः ( पुं० ) झाड़ू देना पानी छिड़कना इत्यादि कामों का करनेवाला ।
बहुपाद् (पुं०) (त्—द्) बड़ वृक्ष ।
बहुप्रद (त्रि०) (दः । दा । दम्) बहुत देनेवाला = ली वा दानशूर ।
बहुरूप ( त्रि० ) (पः । पा । पम्) अनेक रूप वाला = ली, (पुं० ) राल वा धूप, बहुरूपिया ।
बहुल ( त्रि० ) ( लः । ला । लम् ) बहुत, काले रङ्ग वाला = ली, ( पुं० ) अग्नि वा आग, कृष्ण पक्ष, काला रङ्ग, (स्त्री) नेवारी पुष्पवृक्ष, स्त्री, गैया,(एक वचन) बड़ी लायची, (नपुं०) आकाश ।
बहुलाः, बहुवचन, (स्त्री) कृत्तिका नक्षत्र ।
बहुलीकृत (त्रि०) (तः । ता । तम्) बहुत किया गया = ई, ओसाय कर साफ किया गया अन्न ।
बहुवारकः ( पुं० ) लसोड़ा वृक्ष ।
बहुविध ( त्रि० ) ( धः । धा । धम् ) नाना प्रकार की वस्तु ।
बहुसुता ( स्त्री ) सतावर ओषधी, बहुत पुत्र वाली स्त्री ।
बहुसूतिः (स्त्री) बहुत ब्याने वाली गाय ।
बंहिष्ठ (त्रि०) (ष्ठः । ष्ठा । ष्ठम् ) अत्यन्त बहुत ।
बाकुची ( स्त्री ) बकुची ओषधी ।
बाडवः (पुं०) बडवानल (समुद्र का अग्नि ) ।
बाढ (त्रि०) (ढः । ढा । ढम्) बड़ा वा दृढ़, ( नपुं० ) प्रतिज्ञा, अङ्गीकार, अत्यन्त ।
बाण ( पुं० । स्त्री ) ( णः । णा ) नीली कठसरैया पुष्पवृक्ष, (पुं०) बाण, बलि का पुत्र ।
बाणवार (पुं० । नपुं०) (रः । रम्) योद्धों के पहिनने का कवच ।
बादरम् ( नपुं० ) कपास से बनी हुई वस्तु ।

बाधा (स्त्री) पीड़ा, चिन्ता वा शोक
बान्धकिनेयः (पुं०) कुलटा का पुत्र।
बान्धवः (पुं०) समान गोत्र वाला, मित्र ।
बार्हतम् (नपुं०) भटकटैया का फल।
बाल (पुं० । नपुं०) (लः । लम्) (पुं०) लड़का, केश वा बाल, मूर्ख, (नपुं०) नेत्रबाला ओषधी।
बालतनयः (पुं०) खैर ।
बालतृणम् (नपुं०) कोमल वा नया घास ।
बालधिः (पुं०) केशसमूह करके युक्त पोंछ का अग्रभाग ।
बालपाश्या (स्त्री) "पारितथ्या" में देखो ।
बालमूषिका (स्त्री) छोटी मुसरी जन्तु ।
बालहस्तः (पुं०) "बालधि" मे देखो ।
बाला (स्त्री) छोटे वय वाली स्त्री, छोटी लड़की ।
बालिशः (पुं०) बालक, मूर्ख ।
बालेयः (पुं०) गदहा पशु ।
बालेयशाकः (पुं०) ब्रह्मदण्डी ओषधी ।
बाल्यम् (नपुं०) लड़काई ।
बाष्पिका (स्त्री) हींग का वृक्ष ।
बाष्पीका (स्त्री) तथा ।

बाहुः (पुं०) बाँह वा भुजा ।
बाहुः (पुं०) तथा ।
बाहुजः (पुं०) क्षत्रिय अर्थात् दूसरा वर्ण ।
बाहुदा (स्त्री) एक नदी ।
बाहुमूलम् (नपुं०) काँख वा बगल ।
बाहुयुद्धम् (नपुं०) बाहुयुद्ध वा मल्लयुद्ध (कुस्ती) ।
बाहुल' (पुं०) कातिक महीना ।
बाहुलेयः (पुं०) स्वामिकातिक ।
बाह्लिक (पुं० । नपुं०) (कः । कम्) (पुं०) बाह्लीक देश का घोड़ा, (नपुं०) केसर ।
बाह्लीक (त्रि०) (कः । का । कम्) धीर, (पुं०) बाह्लीक देश का घोड़ा, एक देश का नाम, (नपुं०) केसर, हींग ।
बाह्य (त्रि०) (ह्यः । ह्या । ह्यम्) बाहर का ।
बिडालः (पुं०) बिलार पशु ।
बिबधः (पुं०) ध्यान मौन जप इत्यादि नियम, रस्ता, बोझा ।
बिभीतक (त्रि०) (कः । की । कम्) बहेड़ा वृक्ष वा फल ।
बिलम् (नपुं०) बिल ।
बिलेशयः (पुं०) सर्प ।
बिल्व (पुं० । नपुं०) (ल्वः। ल्वम्)

(पुं०) बेल वृक्ष, (नपुं०) बेल फल।
बीजम् ( नपुं० ) बोया, कारण वा हेतु, वीर्य वा शुक्र वा धातु।
बीजकोशः ( पुं० ) कमलगट्टा का छाता।
बीजपूरः ( पुं० ) बिजौरा नीबू।
बीजाकृत (त्रि०) (तः। ता। तम्) जो खेत वा कियारी बोय कर पीछे जोता गया।
बीज्यः ( पुं० ) कुल में उत्पन्न वा कुलीन।
बीबधः (पुं०) "बिबध" में देखो।
बीभत्स (त्रि०) (त्सः। त्सा त्सम्) जिसको देख कर घिन उत्पन्न हो, घात करनेवाला, क्रूर वा कठोर, ( पुं० ) बीभत्स रस।
बुक्का ( स्त्री ) करेजा।
बुद्ध ( त्रि० ) ( द्धः। द्धा। द्धम् ) जानागया = ई, ( पुं० ) बुद्धमतावलम्बियों की देवता का नाम।
बुद्धिः ( स्त्री ) बुद्धि वा ज्ञान।
बुद्बुदः ( पुं० ) बुल्ला।
बुधः ( पुं० ) पण्डित, एक ग्रह।
बुधित ( त्रि० ) (तः। ता। तम्) जाना गया = ई।
बुध्नः ( पुं० ) वृक्ष इत्यादि की जड़, किसी वस्तु की पेंदी।
बुभुक्षा ( स्त्री ) भोजन की इच्छा वा भूख।
बुभुक्षित ( त्रि० ) (तः। ता। तम्) भूखा = खी।
बुषम् ( नपुं० ) भूसा।
बुसम् ( नपुं० ) तथा।
बृहतिका ( स्त्री ) दुपट्टा, परदा।
बृहत् ( त्रि० ) ( न्। ती। त् ) विस्तीर्ण वा बड़ा = ड़ी, ( स्त्री ) भटकटैया, "क्षुद्रवार्ताकी" ओषधी, वाणी, एक छन्द का नाम
बृहत्कुक्षिः ( पुं० ) बड़े पेटवाला।
बृहद्भानुः ( पुं० ) अग्नि।
बृहस्पतिः ( पुं० ) बृहस्पति ( देवताओं के गुरु वा एक ग्रह )
बृंहितम् (नपुं०) हाथी का शब्द।
बोधकरः ( पुं० ) जगानेवाला।
बोधिद्रुमः ( पुं० ) पीपर वृक्ष।
बोलः ( पुं० ) गन्धरस, गन्धक।
ब्रध्नः ( पुं० ) सूर्य्य।
ब्रह्मचारिन् ( पुं० ) ( री ) ब्रह्मचारी वा प्रथम आश्रम वाला।
ब्रह्मण्यः ( पुं० ) ब्राह्मण का भक्त, तून वृक्ष।
ब्रह्मत्वम् ( नपुं० ) मोक्ष।
ब्रह्मदर्भा (स्त्री) अजवाइन ओषधी।
ब्रह्मदारुः ( पुं० ) तून।
ब्रह्मन् (पुं०। नपुं०) ( ह्मा। ह्म )

(पुं०) ब्रह्मा, ब्राह्मण, (नपुं०) वेद, चैतन्य, तप, ईश्वर ।

ब्रह्मपुत्रः (पुं०) ब्रह्मा का पुत्र, एक विष ।

ब्रह्मबन्धुः (पुं०) ब्राह्मण का भाई वा मित्र (यह शब्द निन्दापूर्वक बोलने में दिया जाता है (जैसा "ब्रह्मबन्धो दुष्टोऽसि" —हे ब्रह्मबन्धु तू दुष्ट है), निर्देश में बोला जाता है ।

ब्रह्मभूयम् (नपुं०) मोक्ष ।

ब्रह्मयज्ञः (पुं०) विधि पूर्वक वेद का पढ़ना ।

ब्रह्मवर्चसम् (नपुं०) सदाचार के पालन और वेद के अभ्यास की वृद्धि ।

ब्रह्मवादिन् (पुं०) (दी) वेदान्त शास्त्र का जाननेवाला ।

ब्रह्मविन्दवः, बहुवचन, (पुं०) वेद पढ़ने में मुख से निकले हुये थूक के विन्दु ।

ब्रह्मसायुज्यम् (नपुं०) मोक्ष ।

ब्रह्मसूः (पुं०) कामदेव, अनिरुद्ध अर्थात् प्रद्युम्न का बेटा ।

ब्रह्मसूत्रम् (नपुं०) जनेऊ ।

ब्रह्माञ्जलिः (पुं०) वेद पढ़ने के प्रारम्भ में ओङ्कार को उच्चारण करके जोड़ा हुआ हाथ ।

ब्रह्मासनम् (पुं०) ध्यान और योग के समय का आसन (स्वस्तिक, सिद्ध, पद्म इत्यादि) ।

ब्राह्मम् (नपुं०) अङ्गुष्ठ के मूल का तीर्थ ।

ब्राह्मणः (पुं०) ब्राह्मण अर्थात् प्रथम वर्ण ।

ब्राह्मणयष्टिका (स्त्री) ब्रह्मदण्डी ओषधी, ब्राह्मण की लाठी ।

ब्राह्मणी (स्त्री) ब्रह्मदण्डी ओषधी, ब्राह्मण जाति की स्त्री, बम्हनी एक जन्तु ।

ब्राह्मण्यम् (नपुं०) ब्राह्मण का धर्म, ब्राह्मणों का झुण्ड ।

ब्राह्मी (स्त्री) ब्रह्मशक्ति देवता, एक ओषधी, सरस्वती, वचन ।

—***—

भ

भ (पुं० । नपुं०) (भः । भम्) (पुं०) घर, (नपुं०) अश्विनी भरणी इत्यादि तारा ।

भक्त (त्रि०) (क्तः । क्ता । क्तम्) भक्त वा सेवक वा अत्यन्त चा-

हने वाला = ली, (नपुं०) भात (अन्न)।

भक्षक (त्रि०) (क्षकः। क्षिका। क्षकम्) खानेवाला = ली।

भक्षकार (त्रि०) (रः। री। रम्) रसोईदार।

भक्षित (त्रि०) (तः। ता। तम्) खाया गया = ई।

भक्ष्यकार (त्रि०) (रः। री। रम) "भक्षकार" में देखो।

भग (पुं०। नपुं०) (गः। गम्) (पुं०) सूर्य, (नपुं०) लक्ष्मी, इच्छा, बड़ाई, पराक्रम वा सामर्थ्य, उपाय, कीर्ति वा यश, स्त्री का मूत्रद्वार, माहात्म्य।

भगन्दरः (पुं०) एक रोग।

भगवत् (त्रि०) (वान्। वती। वत्) पूज्य अर्थात् पूजा वा आदर के योग्य, (पुं०) जिन (एक बुद्धमतावलम्बियों की देवता), (स्त्री) गौरी वा पार्वती।

भगिनी (स्त्री) बहिन।

भङ्गः (पुं०) हानि वा नाश, टुकड़ा, टूटना, तरङ्ग वा लहर।

भङ्गा (स्त्री) भाँग (एक अमल करने वाली वस्तु)।

भङ्गी (स्त्री) रीति वा प्रकार, रचना

भङ्ग्यम् (नपुं०) भाँग का खेत।

भजमान (त्रि०) (नः। ना। नम्) न्याय वा नीति के अनुसार जो होता है वा हुआ = ई, सेवक।

भटः (पुं०) योद्धा वा युद्ध करने वाला।

भटित्र (त्रि०) (त्रः। त्रा। त्रम्) लोहे के डण्डा पर लपेट के पकाया हुआ (मांस इत्यादि)।

भट्टारकः (पुं०) राजा (नाट्य में)।

भट्टिनी (स्त्री) (नाट्य में) राजा की वह स्त्री जिसको अभिषेक नहीं भया है।

भणित (त्रि०) (तः। ता। तम्) कहा गया = ई, (नपुं०) रति के समय का शब्द, बोलना।

भण्टाकी (स्त्री) वन का भण्टा।

भण्डिरः (पुं०) सिरसा वृक्ष।

भण्डिरी (स्त्री) मजीठ (एक रङ्ग की लकड़ी)।

भण्डिलः (पुं०) सिरसा वृक्ष।

भण्डी (स्त्री) मजीठ (एक रङ्ग की लकड़ी)।

भण्डीरी (स्त्री) तथा।

भण्डीलः (पुं०) सिरसा वृक्ष।

भद्र (त्रि०) (द्रः। द्रा। द्रम्) साधु वा भला आदमी, (पुं०) बैल, (नपुं०) कल्याण वा मङ्गल

भद्रकुम्भः (पुं०) भरा घड़ा।

भद्रदारु ( नपुं० ) देवदार वृक्ष ।
भद्रपदा ( स्त्री ) पूर्वभाद्रपदा उत्तरभाद्रपदा नक्षत्र ।
भद्रपर्णी ( स्त्री ) खंभारी वृक्ष ।
भद्रबला ( स्त्री ) कुब्जप्रसारिणी ओषधी ।
भद्रमुस्तकः (पुं०) नागरमोथा घास
भद्रयवम् (नपुं०) इन्द्रजव ओषधी।
भद्रश्रीः (पुं०) मलयगिरिचन्दन ।
भद्राकरणम् ( नपुं० ) मुण्डन वा मूडना ।
भद्रासनम् ( नपुं० ) राजा का आसन ।
भयम् ( नपुं० ) डर ।
भयङ्कर ( त्रि० ) ( रः । री । रम्) जिसको देखने से डर उत्पन्न हो, (पुं०) भयानक रस ।
भयानक (त्रि०) (कः । का । कम्) तथा ।
भरः ( पुं० ) अतिशय वा अत्यन्त, बोझा ।
भरणम् ( नपुं० ) पोषण वा पालना, मजूरी वा तलब ।
भरण्यम् ( नपुं० ) मजूरी वा तलब ।
भरण्यभुज् ( पुं० ) (क—ग्) मजूर ( "कर्मकर" में देखो )।
भरण्या ( स्त्री ) मजूरी वा तलब ।
भरतः (पुं०) रामचन्द्र के एक भाई का नाम, एक राजा जिसके नाम से हिन्दुस्तान 'भारतवर्ष' कहलाता है,एक देवतों के ऋषि, नट ।
भरद्वाजः ( पुं० ) एक ऋषि का नाम, भरदूल पक्षी ।
भर्गः ( पुं० ) शिव ।
भर्तृ ( त्रि० ) ( र्ता । त्री । र्तृ ) धारण करने वाला = ली, पोषण करनेवाला = ली, (पुं०) स्त्री का पति ।
भर्तृदारकः ( पुं० ) युवराज (नाट्य में ) ।
भर्तृदारिका ( स्त्री ) राजा की कन्या (नाट्य में )।
भर्त्सनम् ( नपुं० ) डपटना वा धिक्कारना ।
भर्मन् ( नपुं० ) ( र्म ) घर, सुवर्ण वा सोना, मजूरी वा तलब ।
भल्लः ( पुं० ) भालू ।
भल्लातकी ( स्त्री ) भिलाँवाँ ( एक ओषधीवृक्ष ) ।
भल्लुकः ( पुं० ) भालू वनपशु ।
भल्लूकः ( पुं० ) तथा ।
भवः ( पुं० ) संसार, जन्म, शिव ।
भवनम् ( नपुं० ) घर, होना ।
भवानी ( स्त्री ) पार्वती ।

भविक ( त्रि० ) ( कः । का—की । कम् ) सुन्दर, (नपुं०) कल्याण वा मङ्गल ।

भवितृ ( त्रि० ) ( ता । त्री । तृ ) होने वाला = ली, जिस का हो- ने का स्वभाव है ।

भविष्णु (त्रि०) (ष्णुः । ष्णुः । ष्णु) जिस का होने का स्वभाव है ।

भव्य (त्रि०) ( व्यः । व्या । व्यम् ) सुन्दर, ( नपुं० ) कल्याण वा मङ्गल ।

भषकः ( पुं० ) कुत्ता ।

भसितम् (नपुं०) भस्म वा राख ।

भस्त्रा ( स्त्री ) भाथी जिस से सो- नार वा लोहार आग सुलगा- ते हैं ।

भस्मगन्धिनी ( स्त्री ) रेणुकबीज ( एक गन्धद्रव्य ) ।

भस्मगर्भा ( स्त्री ) एक सीसो वृक्ष जिस का फूल कपिल रङ्ग का होता है ।

भस्मन् ( नपुं० ) ( स्म ) राख ।

भा (स्त्री) प्रभा वा प्रकाश, शोभा ।

भागः ( पुं० ) बाँटा वा बखरा, अंश वा हिस्सा ।

भागधेय ( पुं० । नपुं० ) ( यः । यम् ) ( पुं० ) कर वा मासूल, ( नपुं० ) भाग्य वा पूर्व जन्म के किए हुए अच्छे वा बुरे कर्म ।

भागिनेयः (पुं०) बहिन का लड़का ।

भागीरथी ( स्त्री ) गङ्गा नदी ।

भाग्यम् (नपुं०) भाग्य वा पूर्व जन्म के किए हुए अच्छे वा बुरे कर्म ।

भाङ्गीनम् (नपुं०) भाँग का खेत ।

भाजनम् (नपुं०) पात्र वा बरतन ।

भाण्डम् ( नपुं० ) तथा, घोड़ों का गहना, बनियाँ का मूल धन वा पूंजी ।

भाद्रः ( पुं० ) भादों महीना ।

भाद्रपदः ( पुं० ) तथा ।

भाद्रपदा ( स्त्री ) पूर्वभाद्रपदा न- क्षत्र, उत्तरभाद्रपदा नक्षत्र ।

भानुः ( पुं० ) सूर्य्य, किरण ।

भानुज (पुं० । स्त्री) ( जः । जा ) ( पुं० ) शनैश्चर, यमराज, ( स्त्री ) यमुना नदी ।

भामिनी (स्त्री) क्रोध वाली स्त्री ।

भारः ( पुं० ) तौल में बीस तुला वा २००० पल वा काशी की तौल से ४ मन ।

भारत (पुं० । नपुं०) (तः । तम् ) ( पुं० ) नट, ( नपुं० ) भारत वर्ष वा हिन्दुस्तान देश ।

भारतवर्षम् ( नपुं० ) हिन्दुस्तान देश ।

भारती (स्त्री) सरस्वती, वचन ।

भारद्वाजी ( स्त्री ) नरमा एक कपास ।
भारयष्टिः (स्त्री) बंहंगी का डण्डा ।
भारवाहः (पुं०) बोझा ढोनेवाला ।
भारिक. ( पुं० ) तथा ।
भार्गवः ( पुं० ) शुक्र वा दैत्यों का गुरु ।
भार्गवी (स्त्री) भृगु मुनि के गोत्र की स्त्री, दूर्वा घास, लक्ष्मी ।
भार्गी ( स्त्री ) ब्रह्मदण्डी ओषधी ।
भार्या ( स्त्री ) विवाहिता स्त्री ।
भार्यापती, द्विवचन, ( पुं० ) स्त्री पुरुष वा पत्नी पति ।
भाल्लुकः (पुं०) भालू जङ्गली पशु ।
भाल्लूकः ( पुं० ) तथा ।
भावः ( पुं० ) अभिप्राय वा तात्पर्य, विद्वान् वा पण्डित (नाट्य में पारिपार्श्विक सूत्रधार को "भाव" इस नाम से पुकारता है), सत्ता वा रहने वाले का धर्म, स्वभाव, आत्मा, जन्म वा उत्पत्ति, चेष्टा, मन का विकार ।
भावित (त्रि०) ( तः । ता । तम् ) उत्पन्न किया गया = ई वा जन्माया गया = ई, बासा गया = ई ( फूल इत्यादि से ) प्राप्त वा मिला = ली, विचारा गया = ई ।
भावुक ( त्रि० ) ( कः । का । कम् ) सुन्दर वा भला वा साधु, (नपुं०) कल्याण वा मङ्गल ।
भाषा ( स्त्री ) वचन वा बोलना, बोली, सरस्वती ।
भाषित (त्रि०) ( तः । ता । तम् ) कहा गया = ई, ( नपुं० ) बोलना ।
भाष्यम् ( नपुं० ) पदों के अर्थों का प्रकाश करना ।
भासः ( पुं० ) एक प्रकार का मुरगा पक्षी ।
भास् ( स्त्री ) ( भाः ) प्रभा वा प्रकाश ।
भास्करः ( पुं० ) सूर्य्य ।
भास्वत् ( पुं० ) ( स्वान् ) तथा ।
भिक्षा ( स्त्री ) भीख, सेवा, प्रार्थना, मजूरी ।
भिक्षुः (पुं०) भिखारी, सन्न्यासी ।
भित्तम् ( नपुं० ) टुकड़ा ।
भित्तिः ( स्त्री ) भीत ।
भिदा ( स्त्री ) भेद वा प्रकार, फरक, फटना, फाड़ना, तोड़ना।
भिदुरम् ( नपुं० ) वज्र ।
भिन्दिपालः ( पुं० ) ढेलवाँस ।
भिन्न ( त्रि० ) ( न्नः । न्ना । न्नम् ) अन्य वा दूसरा = री, फाड़ा गया = ई ।

भिषज् ( पुं० ) ( क्—ग् ) वैद्य ।
भिस्सटा (स्त्री) जला हुआ भात।
भिस्सा ( स्त्री ) भात अन्न ।
भीः ( स्त्री ) भय वा डर ।
भीत ( त्रि० ) ( तः । ता । तम् ) डरा हुआ = ई ।
भीतिः ( स्त्री ) भय वा डर ।
भीम ( त्रि० ) ( मः । मा । मम् ) भयङ्कर वा जिसके देखने से डर उत्पन्न हो, ( पुं० ) भीमसेन (युधिष्ठिर के एक भाई का नाम), शिव, भयानक रस, (स्त्री) एक देवी का नाम ।
भीरु ( त्रि० ) ( रुः । रूः । रु ) डरनेवाला = ली ।
भीरुक ( त्रि० ) (कः । का । कम् ) तथा ।
भीलु (त्रि०) (लुः । लुः । लु) तथा।
भीलुक (त्रि०) ( कः । का । कम् ) तथा ।
भीषण (त्रि०) ( णः । णा । णम् ) भयङ्कर वा जिस के देखने से डर उत्पन्न हो, ( पुं० ) भयानक रस ।
भीष्म ( त्रि० ) ( ष्मः । ष्मा । ष्मम् ) तथा, ( पुं० ) कौरव पाण्डवों के पितामह ।
भीष्मसूः ( स्त्री ) गङ्गा नदी ।
भुक्त (त्रि०) (क्तः । क्ता । क्तम्) खाया गया = ई, भोगा गया = ई ।
भुग्न (त्रि०) ( ग्नः । ग्ना । ग्नम् ) टेढ़ा = ढ़ी, टूटा हुवा = ई वा टेढ़ा हो गया = ई ।
भुज ( पुं० । स्त्री ) ( जः । जा ) बाँह वा भुजा ।
भुजगः ( पुं० ) सर्प ।
भुजङ्गः ( पुं० ) तथा ।
भुजङ्गभुज् ( पुं० ) ( क्—ग् ) मोर पक्षी ।
भुजङ्गमः ( पुं० ) सर्प ।
भुजङ्गाक्षी (स्त्री) रासन ओषधी ।
भुजशिरस् ( नपुं० ) ( रः ) काँधा वा कन्धा ।
भुजान्तरम् ( नपुं० ) वक्षःस्थल वा छाती ।
भुजिष्यः ( पुं० ) दास ।
भुजिष्या ( स्त्री ) दासी ।
भुवनम् ( नपुं० ) स्वर्गादि लोक, जल ।
भूः ( स्त्री ) पृथ्वी वा भूमि।
भूत ( त्रि० ) ( तः । ता । तम् ) हुआ = ई, प्राप्त वा मिला = ली, सदृश, ( पुं० ) प्रेत वा पिशाच एक देवयोनि, ( नपुं० ) पञ्चभूत ( पृथिवी, जल, तेज, वायु, आकाश), न्याययुक्त कार्य, सत्य,

प्राणी वा जीवधारी ।
भूतकेशः (पुं०) जटामाँसी ओषधी।
भूतधात्री ( स्त्री ) पृथिवी ।
भूतयज्ञः ( पुं० ) बलि चढ़ाना ।
भूतवेशी ( स्त्री ) श्वेत नेवारी पुष्पवृक्ष, तुलसी वृक्ष ।
भूतात्मन् ( पुं० ) ( त्मा ) ब्रह्मा, देह, धारण करने वाला ।
भूतावासः ( पुं० ) बहेड़ा वृक्ष वा फल ।
भूतिः (स्त्री) अणिमा महिमा इत्यादि आठ प्रकार की सिद्धि, भस्म वा राख, सम्पत्ति वा दौलत ।
भूतिकम् (नपुं०) चिरायता ओषधी, रोहिस एक प्रकार की घास, एक प्रकार का तृण वा घास ।
भूतेशः ( पुं० ) शिव ।
भूदारः ( पुं० ) सूअर पशु ।
भूदेवः ( पुं० ) ब्राह्मण ।
भूधरः ( पुं० ) पर्वत ।
भूनिम्बः (पुं०) चिरायता ओषधी।
भूपः ( पुं० ) राजा ।
भूपदी ( स्त्री ) बेइल वा लता ।
भूभृत् ( पुं० ) राजा, पर्वत ।
भूमन् ( पुं० ) ( मा ) बहुताई ।
भूमिः ( स्त्री ) पृथिवी ।
भूमिजम्बुका ( स्त्री ) नारङ्गी वृक्ष वा फल, भूमिजम्बू एक वृक्ष ।
भूमिधरः ( पुं० ) पर्वत ।
भूमिस्पृश् (पुं०) ( क्—ग् ) वैश्य वा तीसरा वर्ण, भूमि का स्पर्श करने वाला ।
भूयस् ( त्रि० ) (यान् । यसी । यः) अत्यन्त बहुत ।
भूयस् ( अव्यय । नपुं० ) ( यः । यः ) पुनः वा फिर ।
भूयिष्ठ ( त्रि० ) ( ष्ठः । ष्ठा । ष्ठम् ) अत्यन्त बहुत ।
भूरि ( त्रि० ) ( रिः । रिः । रि ) बहुत, ( पुं० ) विष्णु, शिव, ब्रह्मा, (नपुं०) सुवर्ण वा सोना।
भूरिफेना ( स्त्री ) एक तरह का सेंहुड़, सिकाकाई ।
भूरिमायः ( पुं० ) सियार ।
भूरुण्डी ( स्त्री ) एक तरह की साग जिसका पत्ता हाथी के कान के ऐसा होता है ।
भूर्जः ( पुं० ) भोजपत्र का वृक्ष ।
भूषणम् (नपुं०) सिंगारना, गहना।
भूषा (स्त्री) तथा ।
भूषित ( त्रि० ) ( तः । ता । तम् ) भूषित वा सिंगारा हुआ = ई ।
भूष्णु ( त्रि० ) (ष्णुः । ष्णुः । ष्णु) जिस का होने का स्वभाव है ।
भूस्तृणम् (नपुं०) एक तृण वा घास

भृगुः ( पुं० ) एक ऋषि का नाम, पर्वत का वह स्थान जहाँ से गिरती हुई कोई वस्तु बीच में रुक न सके।

भृङ्ग ( त्रि० ) ( ङ्गः । ङ्गी । ङ्गम् ) ( पुं० ) भंवरा, तरबूज, तज एक वृक्ष वा पत्ता, (स्त्री) भंवरी

भृङ्गरजस् ( पुं० ) (जाः) भृङ्गराज एक सुगन्ध वृक्ष वा लता।

भृङ्गराजः ( पुं० ) तथा।

भृङ्गारः ( पुं० ) झारी वा गडुआ एक जलपात्र।

भृङ्गारी (स्त्री) "चीरी" में देखो।

भृङ्गिन् ( पुं० ) ( ङ्गी ) शिव के एक गण का नाम।

भृतकः ( पुं० ) मजूर।

भृतिः ( स्त्री ) मजूरी वा तलब।

भृतिभुज् (पुं०) ( क्—ग् ) मजूर।

भृत्यः ( पुं० ) नौकर वा दास।

भृत्या ( स्त्री ) मजूरी वा तलब।

भृश ( त्रि० ) ( शः । शा । शम् ) बहुत, अत्यन्त बहुत, ( नपुं० ) अत्यन्त वा बहुत ( क्रिया-विशेषण )।

भेक ( पुं० । स्त्री ) ( कः । की ) मेंढक।

भेदः ( पुं० ) मिले हुए का जुदा करना, फाड़ना, फर्क, प्रकार।

भेदित ( त्रि० ) ( तः । ता । तम् ) फोड़ा गया वा फाड़ा गया वा जुदा किया गया = हुं।

भेरी ( स्त्री ) एक नगाड़ा।

भेषजम् ( नपुं० ) औषध।

भैक्षम् ( नपुं० ) भिक्षाओं का समूह।

भैरव (त्रि०) (वः । वा—वी । वम्) भयङ्कर वा डराने वाला = ली, ( पुं० ) भैरव देवता, भयानक रस, ( स्त्री ) ( भैरवी ) दुर्गा।

भैषजम् ( नपुं० ) औषध।

भैषज्यम् ( नपुं० ) तथा।

भोगः (पुं०) एक प्रकार की सेना की रचना, सुख, सुख वा दुःख का भोगना, वेश्या हस्ती घोड़ा इत्यादि का पालना, सर्प का फण वा शरीर।

भोगधरः ( पुं० ) सर्प।

भोगवती ( स्त्री ) एक नागों की नदी, नागों की नगरी।

भोगिनी ( स्त्री ) राजा की वह स्त्री जिस को अभिषेक नहीं हुआ है।

भोगिन् ( पुं० ) ( गी ) सुख वा दुःख का भोग करने वाला, सर्प।

भोजनम् ( नपुं० ) खाना।

भोस् ( अव्यय ) ( भोः ) हे! ( स-

सम्बोधन में बोला जाता है, जैसा,—भवन् )।

भौमः ( पुं० ) मङ्गल ग्रह।

भौरिकः ( पुं० ) सुवर्णाध्यक्ष वा सोने का खजानची।

भ्रकुटिः ( स्त्री ) क्रोधादि से ललाट का सिकोरना।

भ्रकुंसः ( पुं० ) वह पुरुष जो कि स्त्री का वेष करके नाचता है।

भ्रमः (पुं०) मिथ्या ज्ञान, घूमना, जल निकलने का छिद्र।

भ्रमरः ( पुं० ) भंवरा।

भ्रमरकाः, बहुवचन, ( पुं० ) टेढ़े टेढ़े केश।

भ्रमिः ( स्त्री ) घूमना वा भ्रमण, मिथ्या ज्ञान।

भ्रष्ट ( त्रि० ) ( ष्टः । ष्टा । ष्टम् ) च्युत वा चुय पड़ा = ड़ी।

भ्राजिष्णु (त्रि०) (ष्णुः। ष्णुः। ष्णु) अत्यन्त शोभमान वा प्रकाशमान।

भ्रातरौ, ऋदन्त, द्विवचन, ( पुं० ) भाई बहिन।

भ्रातृजः (पुं०) भतीजा अर्थात् भाई का बेटा।

भ्रातृजाया ( स्त्री ) भौजाई।

भ्रातृव्यः ( पुं० ) भाई का लड़का वा भतीजा, शत्रु।

भ्रात्रीयः ( पुं० ) भतीजा अर्थात् भाई का लड़का।

भ्रान्तिः ( स्त्री ) मिथ्या ज्ञान, घूमना।

भ्रामरम् (नपुं०) भंवरे का सहद।

भ्राष्ट्र ( त्रि० ) ( ष्ट्रः । ष्ट्रा । ष्ट्रम् ) भरसाईं वा भाड़।

भ्रुकुटिः ( स्त्री ) क्रोधादिक से ललाट का सिकोरना।

भ्रुकुंसः (पुं०) "भ्रकुंस" में देखो।

भ्रूः ( स्त्री ) भौं।

भ्रूकुटिः ( स्त्री ) क्रोधादिक से ललाट का सिकोरना।

भ्रूकुंसः (पुं०) "भ्रकुंस" में देखो।

भ्रूणः (पुं०) स्त्री के पेट का गर्भ, लड़का।

भ्रेषः ( पुं० ) यथोचित स्वरूप से बदल जाना वा यथोचित स्वरूप का भ्रंश हो जाना।

भ्रंशः (पुं०) गिर पड़ना, नाश।

—***—

# ( म )

मः ( पुं० ) शिव, चन्द्रमा, ब्रह्मा।

मकरः (पुं०) मगर (एक जलजन्तु),

मेषादि १२ राशियों में से एक राशि का नाम, एक निधि ।
मकरध्वजः (पुं०) कामदेव ।
मकरन्दः (पुं०) फूल का रस जिस को लेकर मक्खियाँ वा भंवरे सहद बनाती हैं ।
मकुष्टकः (पुं०) मोट नामक अन्न ।
मकुष्ठकः (पुं०) तथा ।
मकूलकः (पुं०) वज्रदन्ती औषधी ।
मक्षिका (स्त्री) मक्खी ।
मक्षीका (स्त्री) तथा ।
मखः (पुं०) यज्ञ ।
मगधः (पुं०) एक देश जिस को मगाह कहते हैं, भाट अर्थात् स्तुति करने वाला ।
मघवत् (पुं०) (वान्) इन्द्र ।
मघवन् (पुं०) (वा) तथा ।
मङ्क्षु (अव्यय) जल्दी ।
मङ्गल (त्रि०) (लः । ला । लम्) मनोहर वा मङ्गलयुक्त, (पुं०) एक ग्रह का नाम, (नपुं०) कल्याण वा मङ्गल ।
मङ्गल्यकः (पुं०) मसूरी अन्न ।
मङ्गल्या (स्त्री) एक प्रकार का अगर जिस में बेला के फूल के ऐसी सुगन्ध आती है ।
मचर्चिका (स्त्री) प्रशस्त वा पूजित वा प्रशंसा के योग्य वा स्तुति किया गया = ई ।
मज्जा (स्त्री) वृक्ष इत्यादि का क्षीर, हड्डी के भीतर का सार जो घी के सदृश रहता है ।
मञ्चः (पुं०) ऊंचा आसन (मचिया मोढ़ा कुरसी इत्यादि) ।
मञ्जरी (स्त्री) तुलसी इत्यादि वृक्ष में फूल के सहित निकली हुई एक कलंगी के ऐसी वस्तु (बाल), नया अङ्कुर । [मञ्जरि]
मञ्जिष्ठा (स्त्री) मजीठ एक रङ्ग ।
मञ्जीर (पुं० । नपुं०) (रः । रम्) स्त्री के पैर का गहना (पायल पैजनी इत्यादि, जो बजता है)
मञ्जील (पुं० । नपुं०) (लः । लम्) तथा ।
मञ्जु (त्रि०) (ञ्जुः । ञ्जूः । ञ्जु) मनोहर वा सुन्दर ।
मञ्जुल (त्रि०) (लः । ला । लम्) तथा ।
मञ्जूषा (स्त्री) सन्दूक वा पेटारा ।
मठः (पुं०) सन्यासियों का वा विद्यार्थियों का घर ।
मड्डुः (पुं०) एक तरह का बाजा ।
मणि (पुं० । स्त्री) (णिः । णी) रत्न वा जवाहिर ।
मणिक (पुं० । नपुं०) (कः । कम्) मेटिया वा मटका ।

मणिबन्धः (पुं०) हाथ का गट्टा।
मण्ड (पुं० । नपुं०) (ण्डः । ण्डम्) भात इत्यादि का माँड़, (पुं०) रेंड वृक्ष ।
मण्डन (पुं० । नपुं०) (नः । नम्) (पुं०) अलङ्कार करने वाला वा सिंगारिया, (नपुं०) भूषण वा सिंगार ।
मण्डप (पुं० । नपुं०) (पः । पम्) जनों के रहने का स्थान ।
मण्डल (त्रि०) (लः । ली । लम्) सूर्य वा चन्द्र का मण्डल, चन्द्र वा सूर्य के चारो ओर जो मण्डल पड़ता है, चक्राकार समूह, समूह ।
मण्डलकम् (नपुं०) बाण चलाने के समय का एक आसन, "कोठ" में देखो ।
मण्डलाग्रः (पुं०) तलवार ।
मण्डलेश्वरः (पुं०) भूमि के एक प्रदेश का राजा ।
मण्डहारकः (पुं०) कलवार ।
मण्डित (त्रि०) (तः । ता । तम्) भूषित वा सिंगारा हुआ = ई ।
मण्डीरी (स्त्री) मजीठ एक रङ्ग की लकड़ी ।
मण्डूकः (पुं०) मेढ़क जन्तु ।
मण्डूकपर्णः (पुं०) सोनापाढ़ा एक लकड़ी ।
मण्डूकपर्णी (स्त्री) मजीठ एक रङ्ग ।
मण्डूरम् (नपुं०) लोहा की मैल जिस को लोहकीट भी कहते हैं।
मतङ्गः (पुं०) हाथी, एक ऋषि का नाम ।
मतङ्गजः (पुं०) हाथी ।
मतल्लिका (स्त्री) "मचर्चिका" में देखो ।
मतिः (स्त्री) बुद्धि ।
मत्त (त्रि०) (त्तः । त्ता । त्तम्) मतवाला = ली, हर्षित, (पुं०) मद बहानेवाला हाथी ।
मत्तकाशिनी (स्त्री) गुणों मे सब स्त्रियों से उत्तम स्त्री ।
मत्तकासिनी (स्त्री) तथा ।
मत्सर (त्रि०) (रः । रा । रम्) ईर्ष्या वा डाह करने वाला = ली, कृपण वा सूम, (पुं०) ईर्ष्या वा डाह ।
मत्स्यः (पुं०) मछली ।
मत्स्यण्डी (स्त्री) राब जो ऊख के रस से बनती है ।
मत्स्यपित्ता (स्त्री) कुटुकी ।
मत्स्यवेधनम् (नपुं०) मछली पकड़ने की बंसी ।
मत्स्याक्षी (स्त्री) ब्राह्मी ओषधी-लता ।

मत्स्याधानी ( स्त्री ) मछली र-
खने की थैली ।
मथित ( त्रि० ) (तः । ता । तम्)
मथा गया = ई, (नपुं०) बिना
जल का मथा दही ।
मथिन् ( पुं० ) ( न्थाः ) मन्थन-
दण्ड वा मथनिया ।
मदः ( पुं० ) घमण्ड वा अहङ्कार,
अमल, हर्ष, हस्ती का मद-
जल, पुरुष की धातु ।
मदकलः ( पुं० ) मद से मतवाला
हाथी, मतवाला वा हर्षित ।
मदनः ( पुं० ) कामदेव, मयन-
फल का वृक्ष, धतूरा ।
मदस्थानम् ( नपुं० ) कलवरिया ।
मदिरा ( स्त्री ) मद्य ।
मदिरागृहम् ( नपुं० ) हौली वा
कलवरिया ।
मदोत्कटः (पुं०) मद से मतवाला
( हाथी इत्यादि ) ।
मद्गुः ( पुं० ) जलकौआ ।
मद्गुरः ( पुं० ) एक मछली ।
मद्गुरी ( स्त्री ) तथा ।
मद्यम् ( नपुं० ) शराब ।
मधु ( पुं० । नपुं० ) ( धुः । धु )
( पुं० ) एक दैत्य का नाम,
चैत महीना, ( नपुं० ) महुवा
से बना हुआ मद्य, मक्खी का
सहद, फूल का मकरन्द वा रस
मधुक (पुं० । नपुं०) ( कः । कम् )
(पुं०) महुवा वृक्ष, स्तुति का प-
ढ़नेवाला वा भाट, (नपुं०) जे-
ठीमधु (एक लकड़ी ओषधी) ।
मधुकरः ( पुं० ) भंवरा ।
मधुक्रमः (पुं०) मद्य पीने का क्रम।
मधुद्रुमः ( पुं० ) महुवा वृक्ष ।
मधुपः ( पुं० ) भंवरा ।
मधुपर्णिका ( स्त्री ) खभारी वृक्ष,
नील ।
मधुपर्णी (स्त्री) गुरुच ओषधीलता
मधुमक्षिका (स्त्री) सहद बनाने-
वाली मक्खी ।
मधुयष्टिका (स्त्री) जेठीमधु ( एक
मीठी लकड़ी ओषधी ) ।
मधुर ( त्रि० ) ( रः । रा । रम् )
मीठा = ठी, स्वादयुक्त, प्रिय वा
प्यारा = री, (पुं०) मीठा रस,
( स्त्री ) सौंफ ।
मधुरकः (पुं०) ओषधियों के अष्ट-
वर्ग में की एक ओषधी ।
मधुरसा ( स्त्री ) दाख एक फल,
मुर्रा ( जिस से लोग पनच ब-
नाते हैं ) ।
मधुरिका ( स्त्री ) बनसौंफ ।
मधुरिपुः ( पुं० ) विष्णु ।
मधुलः (पुं०) महुवा वृक्ष । [मधूलः]

मधुलिह (पुं०) (ट्—ड) भवंरा ।

मधुवार: (पुं०) मद्य पीने का क्रम

मधुव्रत: ( पुं० ) भंवंरा ।

मधुशिग्रु: (पुं०) लाल फूल वाला सहिंजन वृक्ष ।

मधुश्रेणी ( स्त्री ) मुर्गा वृक्ष ।

मधुष्ठील: ( पुं० ) महुआ वृक्ष ।

मधुस्रवा (स्त्री) गुजरात देश का एक वृक्ष जिस को 'दोड़ी' कहते हैं ।

मधूक: ( पुं० ) महुवा वृक्ष ।

मधूच्छिष्टम ( नपुं० ) मोम ।

मधूल: ( पुं० ) महुआ वृक्ष ।

मधूलक: ( पुं० ) जलमहुवा ( मामान्य महुवे से इस का पत्ता लम्बा होता है) ।

मधूलिका (स्त्री) "मूर्वा" में देखो।

मध्य (त्रि०) ( ध्य: । ध्या । ध्यम ) बिचला = ली वा बीचवाला = ली, अधम वा नीच, न्याययुक्त वा न्याय के सदृश, (पुं० । नपुं०) कमर, बीच।

मध्यदेश: (पुं०) विन्ध्य और हिमालय के बीच का देश ।

मध्यम ( त्रि० ) (म: । मा । मम्) बिचला = ली वा बीचवाला = ली (पुं ) मध्य देश, एक स्वर ( जैसा कौञ्च पक्षी बोलता है ), (स्त्री) मध्यमा वा हाथ को बीच की अंगुली, प्रथमरजस्वला स्त्री ( नपुं० ) कमर ।

मध्याह्न: ( पुं० ) दोपहर वा दुपहरिया ।

मध्वासव: (पुं०) महुवा का मद्य ।

मनःशिल (पुं० । स्त्री) (ल: । ला) मैनसिल औषधीधातु ।

मनसिज: ( पुं० ) कामदेव ।

मनस् ( नपुं० ) ( न: ) मन ।

मनस्कार: (पुं०) मन की सुखादि में तत्परता वा आसक्ति ।

मनाक् ( अव्यय ) थोड़ा ।

मनित ( त्रि० ) (त: । ता । तम्) जानागया = ई ।

मनीषा ( स्त्री ) बुद्धि ।

मनीषिन् ( पुं० ) ( षी ) पण्डित।

मनु: (पुं०) ब्रह्मा के पुत्र का नाम।

मनुज: (पुं०) मनुष्य वा आदमी।

मनुष्य: ( पुं० ) तथा ।

मनुष्यधर्मन ( पुं० ) (र्मा) कुबेर ।

मनुष्ययज्ञ: (पुं०) अतिथियों को सन्तुष्ट करना ।

मनोगुप्ता (स्त्री) मैनसिल औषधीधातु ।

मनोजव: ( पुं० ) कामदेव, पिता के तुल्य ।

मनोजवमः (पुं०) पिता के तुल्य
मनोज्ञ ( त्रि० ) (ज्ञः । ज्ञा । ज्ञम्) सुन्दर ।
मनोभवः ( पुं० ) कामदेव ।
मनोरथः ( पुं० ) इच्छा ।
मनोरम (त्रि०) ( मः । मा । मम् ) सुन्दर ।
मनोहत ( त्रि० ) (तः । ता । तम्) जिस का मन टूट गया वा उदास हो गया है ।
मनोहर ( त्रि० ) (रः । रा । रम्) सुन्दर ।
मनोहारिन् (त्रि०) (री । रिणी । रि) मनोहर ।
मनोह्वा ( स्त्री ) मैनसिल ओषधी-धातु ।
मन्तुः ( पुं० ) अपराध ।
मन्त्रः ( पुं० ) मन्त्र वा सलाह, एक वेद का भेद, गुप्त बोलना।
मन्त्रिन् ( पुं० ) (न्त्री) राजा का मन्त्री वा राजा को सलाह देनेवाला ।
मन्थः ( पुं० ) मन्थनदण्ड वा मथनियाँ ।
मन्थदण्डकः ( पुं० ) तथा ।
मन्थनी (स्त्री) दही इत्यादि मथने का पात्र ।
मन्थर ( त्रि० ) ( रः । रा । रम् ) धीरे चलनेवाला = ली ।
मन्थानः ( पुं० ) मन्थनदण्ड वा मथनियाँ ।
मन्द ( त्रि० ) । (न्दः । न्दा । न्दम) मूर्ख, आलसी, थोड़ा = ड़ी, निर्भाग्य वा अभागा = गी, (पुं०) शनैश्चर ग्रह, ( नपुं० ) धीरे ।
मन्दगामिन् (त्रि०) (मी । मिनी । मि) धीरे चलनेवाला = ली ।
मन्दाकिनी ( स्त्री ) आकाशगङ्गा ।
मन्दाक्षम् ( नपुं० ) लज्जा ।
मन्दारः (पुं०) एक देववृक्ष का नाम, बकाइन वृक्ष, मंदार वृक्ष।
मन्दिरम ( नपुं० ) गृह, नगर ।
मन्दुरा ( स्त्री ) घोड़साल अर्थात् घोड़ों के रहने का स्थान ।
मन्दोष्ण ( त्रि० ) ( ष्णः । ष्णा । ष्णम्) थोड़ा गरम वस्तु, (नपुं०) थोड़ा गरम ।
मन्द्रः (पुं०) गम्भीर शब्द ( जैसा मेघ का ) ।
मन्मथः (पुं०) कामदेव, काइत वृक्ष ।
मन्या ( स्त्री ) गले के पास की नस वा नाडी ।
मन्युः ( पुं० ) यज्ञ, क्रोध, दीनता वा ग़रीबी, चिन्ता वा शोक ।
मन्वन्तरम् ( नपुं० ) दिव्य युग ।
मपष्टकः ( पुं० ) मोट नामक अन्न ।

मघष्ठः ( पुं० ) तथा ।
मघुष्टः ( पुं० ) तथा ।
मघुष्टकः ( पुं० ) तथा ।
मयः (पुं०) एक दैत्य का नाम, ऊंट।
मयष्टकः ( पुं० ) मोट नामक अन्न।
मयुः ( पुं० ) किन्नर ।
मयुष्टकः (पुं०) मोट नामक अन्न ।
मयूखः ( पुं० ) किरण, प्रभा वा प्रकाश, ज्वाला ।
मयूरः (पुं०) मोर पक्षी, मोर की शिखा, अजमोदा ओषधी ।
मयूरक (पुं० । नपुं०) ( कः । कम् ) ( पुं० ) चिचिड़ा वृक्ष, (नपुं०) तुतिया ओषधी ।
मरकतम् ( नपुं० ) हरा मणि अर्थात् पन्ना ।
मरणम् ( नपुं० ) मरना ।
मरिचम् ( नपुं० ) मिरिच ।
मरीचम् ( नपुं० ) तथा ।
मरीचि (पुं० । स्त्री) (चिः चिः—ची) किरण, ( पुं० ) एक ऋषि का नाम ।
मरीचिका ( स्त्री ) "मृगतृष्णा" में देखो ।
मरुः ( पुं० ) निर्जल देश, पर्वत ।
मरुत् ( पुं० ) वायु, देवता, अस्यरक ओषधी ।
मरुत्वत् ( पुं० ) ( त्वान् ) इन्द्र ।
मरुन्माला ( स्त्री ) अस्यरक ओषधी, देवतों का समूह, वायु का समूह ।
मरुवकः ( पुं० ) मयनफल, मरुवा एक वृक्ष ।
मर्कटः ( पुं० ) बन्दर ।
मर्कटकः (पुं०) मकड़ी ( जो जाला लगाती है) ।
मर्कटी ( स्त्री ) केंवाच तरकारी, एक प्रकार का करञ्ज ।
मर्त्यः ( पुं० ) मनुष्य ।
मर्दनम् (नपुं०) मर्दन करना वा मलना ।
मर्दलः ( पुं० ) मृदङ्ग के ऐसा एक बाजा ।
मर्मन् ( नपुं० ) ( र्म ) शरीर का एक देश जिस में चोट लगने से प्राण जाने का भय रहता है, तात्पर्य वा मतलब ।
मर्मरः ( पुं० ) वस्त्र का वा पत्तों का शब्द
मर्मस्पृश् (त्रि०) ( क्—ग् । क्—ग् । क्—ग् ) चोखा = खी (क्री इत्यादि), मर्मस्थान को फोड़ने वा तोड़नेवाला = ली।
मर्यादा ( स्त्री ) न्यायपूर्वक व्यवहार करना ।
मल ( पुं० । नपुं० ) (लः । लम्)

मैल, पाप, विष्ठा ।
मलदूषित (त्रि०) (तः । ता । तम्) मलिन वा मैला = ली ।
मलपूः (स्त्री) कठुम्बरी ओषधी ।
मलयः (पुं०) एक पर्वत ।
मलयजः (पुं०) चन्दन वृक्ष ।
मलयूः (स्त्री) कठुम्बरी ओषधी ।
मलापूः (स्त्री) तथा ।
मलिन (त्रि०) (नः । ना । नम्) मैला = ली ।
मलिनी (स्त्री) रजस्वला स्त्री ।
मलिम्लुचः (पुं०) चोर ।
मलीमस (त्रि०) (सः । सा । सम्) मलिन वा मैला = ली ।
मल्लः (पुं०) पहलवान् (कुश्ती-बाज़) ।
मल्लकः (पुं०) एक पुष्पलता ।
मल्लिका (स्त्री) बेला का फूल, बेइल का फूल ।
मल्लिकाक्षः (पुं०) बत्तक पक्षी।
मल्लिकाख्यः (पुं०) तथा ।
मषि (स्त्री) (षिः—षी) लिखने की स्याही, करिखा वा काजर, जटामासी ओषधी ।
मसि (स्त्री) (सिः—सी) तथा।
मसुरा (स्त्री) मसुरी (एक अन्न)।
मसूर (पुं० । स्त्री) (रः । रा) तथा।
मसूरविदला (स्त्री) श्यामतिधारा (ओषधी) ।
मसृण (त्रि०) (णः । णा । णम्) चिकना = नी ।
मस्करः (पुं०) बाँस ।
मस्करिन् (पुं०) (री) सन्न्यासी।
मस्तक (पुं० । नपुं०) (कः । कम्) मस्तक वा माथा ।
मस्तिष्कम् (नपुं०) मस्तक के भीतर की घी के सदृश एक चिकनी वस्तु ।
मस्तिस्कम् (नपुं०) तथा ।
मस्तु (नपुं०) दही का पानी ।
महः (पुं०) उत्सव वा खुशी ।
महती (स्त्री) नारद की वीणा।
महत् (त्रि०) (हान् । हती । हत्) बड़ा = ड़ी, विस्तीर्ण वा विस्तारयुक्त, (नपुं०) राज्य ।
महस् (नपुं०) (हः) तेज ।
महाकन्दः (पुं०) लहसुन ।
महाकुल (त्रि०) (लः । ला । लम्) कुलीन वा बड़े कुल में पैदा हुआ = ई । [ माहाकुल ]
महाङ्गः (पुं०) ऊंट पशु ।
महाजाली (स्त्री) पीले फूलवाला घोषक वा घीया वृक्ष ।
महादेवः (पुं०) शिव ।
महाधन (त्रि०) (नः । ना । नम्)

बड़े दाम की वस्तु ।
महानटः ( पुं० ) शिव ।
महानसम् (नपुं०) रसोई का घर ।
महापद्मः ( पु० ) एक निधि ।
महाबिलम ( नपुं० ) आकाश ।
महामात्रः ( पुं० ) राजा का मुख्य सहायक ।
महायज्ञः ( पुं० ) पाठ होम अतिथिपूजन तर्पण बलि ये पाँचो महायज्ञ कहे जाते हैं ।
महारजतम् (नपुं०) सुवर्ण वा सोना
महारजनम् (नपुं०) कुसुम ( एक रंगने का फूल) ।
महारण्यम् ( नपुं० ) बड़ा बन ।
महाराजिकाः, बहुवचन, ( पुं० ) एक देवतों का समूह जो गिनती में २२० हैं ।
महारौरवः ( पुं० ) एक नरक ।
महावातः ( पु० ) आँधी ।
महाशयः (पुं०) उदार चित्तवाला वा बड़े अभिप्रायवाला ।
महाशूद्री ( स्त्री ) अहिरिन ।
महाश्वेता ( स्त्री ) काला भुइं-कोंहड़ा ।
महासहा (स्त्री) कठसरैया, जङ्गली उरद ।
महासेनः (पुं०) स्वामिकार्तिक ।
महिमन् ( पुं० ) ( मा ) बड़ाई ।
महिला ( स्त्री ) स्त्री । [महला] [महेला ]
महिलाह्वया ( स्त्री ) गोंदी वृक्ष ।
महिषः ( पुं० ) भैंसा ।
महिषी ( स्त्री ) भैंस, राजा की पटरानी ।
मही ( स्त्री ) पृथिवी वा भूमि ।
महीक्षित् ( पुं० ) राजा ।
महीध्रः ( पुं० ) पर्वत ।
महीरुहः ( पुं० ) वृक्ष ।
महीलता ( स्त्री ) केंचुवा जन्तु ।
महीसुतः ( पुं० ) मङ्गल ग्रह ।
महीसूनुः ( पुं० ) तथा ।
महेच्छः ( पुं० ) उदार चित्तवाला वा बड़े अभिप्रायवाला ।
महेरणा ( स्त्री ) साल वा सलई ।
महेरुणा ( स्त्री ) तथा ।
महेश्वरः ( पुं० ) शिव ।
महोक्षः ( पुं० ) बड़ा बैल ।
महोत्पलम् ( नपुं० ) कमल ।
महोत्साहः (पुं०) बड़े उत्साहवाला अर्थात् दुराप वा दुर्घट कामों में भी प्रवृत्त होनेवाला ।
महोद्यमः ( पुं० ) तथा ।
महौषधम् ( नपुं० ) अतीस, लहसुन, सोंठ ।
मा ( अव्यय ) मत ।
मा ( स्त्री ) लक्ष्मी ।

माक्षिकम् (नपुं०) मक्खी का सहद।
मागध (त्रि०) (धः। धी। धम्) मगध देश में उत्पन्न हुआ = ई, (पुं०) वैश्य से क्षत्रिया स्त्री में उत्पन्न, भाट, (स्त्री) जूही (एक पुष्पवृक्ष), पीपर ओषधी।
माघ (पुं०) माघ महीना।
माध्यम् (नपुं०) कुन्द पुष्प।
माठरः (पुं०) एक सूर्य का पार्श्ववर्ती
माढिः (स्त्री) पत्ते की नस, दीनता
माणवकः (पुं०) लड़का हार के बीच का मणि वा सुमेर, बीस लड़ का हार।
माणव्यम् (नपुं०) लड़कों का झुण्ड
माणिक्यम् (नपुं०) लाल (मणि)।
माणिमन्थम् (नपुं०) सेंधा नोन।
मातङ्गः (पुं०) हाथी, चण्डाल वा डोम।
मातरपितरौ, ऋदन्त, द्विवचन, (पुं०) मा बाप।
मातरिश्वन् (पुं०) (श्वा) वायु।
मातलिः (पुं०) इन्द्र का सारथी।
मातापितरौ, ऋदन्त, द्विवचन, (पुं०) मा बाप।
मातामहः (पुं०) नाना अर्थात् माता के पिता।
मातुलः (पुं०) मामा अर्थात् माता का भाई, धतूरा।
मातुलपुत्रकः (पुं०) धतूरा का फल, मामा का लड़का।
मातुलानी (स्त्री) मामी, भाँग वा बूटी।
मातुलाहिः (पुं०) चित्रसर्प।
मातुली (स्त्री) मामी। [मातुला]
मातुलुङ्गकः (पुं०) बिजौरा नीबू।
मातृ (स्त्री) (ता) माता, गैया।
मातृष्वसेयः (पुं०) मौसी का बेटा।
मातृष्वस्रीयः (पुं०) तथा।
मात्र (स्त्री। नपुं०) (त्रा। त्रम्) (स्त्री) परिच्छद वा सामग्री, परिमाण, सूक्ष्म वा पतला, (नपुं०) सम्पूर्णता, अवधारण वा निश्चय।
मादः (पुं०) हर्ष।
माधवः (पुं०) विष्णु, वैसाख महीना।
माधवकः (पुं०) महुवा का मद्य।
माधविका (स्त्री) वासन्तीलता (कुन्दभेद, जो वसन्त ही में फलता है)।
माधवी (स्त्री) तथा।
माधवीलता (स्त्री) तथा।
माध्वीकम् (नपुं०) महुवा का मद्य।
मान (पुं०। नपुं०) (नः। नम्) (पुं०) मान वा आदर, (नपुं०)

नाप वा तौल।
मानवः (पुं०) मनुष्य।
मानसम् (नपुं०) मन, एक सरोवर वा झील।
मानसौकस् (पुं०) (काः) हंस।
मानिनी (स्त्री) मानवती स्त्री।
मानुषः (पुं०) मनुष्य।
मानुष्यकम् (नपुं०) मनुष्यों का समूह।
माया (स्त्री) माया वा इन्द्रजाल।
मायाकारः (पुं०) बाजीगर।
मायादेवीसुतः (पुं०) शाक्य मुनि।
मायुः (पुं०) पित्त (एक शरीर का धातु)।
मायूरम् (नपुं०) मोरों का समूह।
मारः (पुं०) कामदेव।
मारजित् (पुं०) बुद्ध वा बौद्धों की देवता।
मारणम् (नपुं०) मार डालना।
मारिषः (पुं०) आर्य वा आदर करने के योग्य वा श्रेष्ठ (नाट्य में सूत्रधार पारिपार्श्विक को "मारिष" कह कर पुकारता है)।
मारुतः (पुं०) वायु।
मार्कवः (पुं०) भृङ्गराज वा भंगरैया वृक्ष।
मार्गः (पुं०) रस्ता, अगहन महीना।
मार्गण (पुं०। नपुं०) (णः। णम्) (पुं०) बाण, याचक, (नपुं०) खोजना वा ढूंढना।
मार्गशीर्षः (पुं०) अगहन महीना।
मार्गित (त्रि०) (तः। ता। तम्) खोजागया = ई।
मार्जन (त्रि०) (नः। नी। नम) साफ करनेवाला = ली, (पुं०) लोध ओषधी, (स्त्री) झाड़, (नपुं०) साफ करना।
मार्जना (स्त्री) साफ करना।
मार्जारः (पुं०) बिलार।
मार्जित (त्रि०) (तः। ता। तम्) साफ कियागया = ई, (स्त्री) "रसाला" में देखो।
मार्ष्टि (त्रि०) (ता। त्री। ष्टृ) साफ करनेवाला = ली।
मार्तण्डः (पुं०) सूर्य।
मार्दङ्गिकः (पुं०) मृदङ्ग बजानेवाला
मार्द्वीकम् (नपुं०) महुवा का मद्य।
मार्ष्टिः (स्त्री) पोंछना, साफ करना
मालकः (पुं०) नीम वृक्ष।
मालती (स्त्री) चमेली पुष्पवृक्ष।
माला (स्त्री) माला, पङ्क्ति, अस्वरक ओषधी।
मालाकारः (पुं०) माली।
मालातृणम् (नपुं०) एक घास।
मालातृणकम् (नपुं०) तथा।

मालिकः ( पुं० ) माली ।

मालुधानः ( पुं० ) चित्रसर्प ।

मालूरः ( पुं० ) बेल वृक्ष ।

माल्यम् ( नपुं० ) माला, मस्तक से धारण की गई पुष्पपङ्क्ति ।

माल्यवत् ( त्रि० ) ( वान् । वती । वत् ) जिस ने माला पहिनी है, (पुं०) एक पर्वत, रावण का नाना ।

माषः ( पुं० ) उरद अन्न ।

माषपर्णी ( स्त्री ) जङ्गली उरद ।

माषीणम् (नपुं०) उरद का खेत ।

माष्यम् ( नपुं० ) तथा ।

मासः (पु०) महीना, पितर लोगों की दिन रात्रि ।

मासरः ( पुं० ) भात का माँड़ ।

मासिक (त्रि०) ( कः । की । कम् ) महीने का ।

मास्म ( अव्यय ) मत ।

माहिषः (पुं०) क्षत्रिय से वैश्या स्त्री में उत्पन्न लड़का ।

माहिष्यः ( पुं० ) तथा ।

माहेयी ( स्त्री ) गैया ।

माहेश्वरी (स्त्री) शिवशक्ति देवता, पार्वती ।

मांसम् ( नपुं० ) माँस ।

मांसलः ( पुं० ) मोटा वा थुथला, बलवान् ।

मांसिकः (पुं०) मांस बेचनेवाला।

मितम्पचः ( पुं० ) सूम ।

मित्र (पुं० । नपुं०) ( त्रः । त्रम् ) ( पुं० ) सूर्य, ( नपुं० ) मित्र वा दोस्त, अपने समीप के राजा से व्यवहित राजा ।

मिथस् ( अव्यय ) ( थः ) परस्पर, एकान्त ।

मिथुनम् ( नपुं० ) स्त्री पुरुष का जोड़ा, मेषादि १२ राशियों में से एक राशि का नाम ।

मिथ्या ( अव्यय ) झूठा ।

मिथ्यादृष्टिः (स्त्री) नास्तिक बुद्धि अर्थात् स्वर्गादिक परलोक को न मानना ।

मिथ्याभियोगः ( पुं० ) मिथ्या विवाद वा जाल करना ।

मिथ्याभिशंसनम् ( नपुं० ) झूठा दोष लगाना ।

मिथ्यामतिः ( स्त्री ) झूठा ज्ञान ।

मिशि ( स्त्री ) ( शिः—शी ) बनसौंफ ।

मिश्रेया ( स्त्री ) तथा ।

मिषि ( स्त्री ) ( षिः—षी ) जटामाँसी ओषधी ।

मिसि ( स्त्री ) ( सिः—सी ) सौंफ, बनसौंफ ।

मिहिका (स्त्री) हिम वा पाला ।

मिहिरः ( पुं० ) सूर्य ।
मीढ ( त्रि० ) ( ढः । ढा । ढम् ) मूतागया = ई वा पेशाब कियागया = ई ।
मीनः (पुं०) मछली, मेषादि १२ राशियों में से एक राशि का नाम ।
मीनकेतनः ( पुं० ) कामदेव ।
मीमांसकः (पुं०) मीमांसा शास्त्र का जाननेवाला ।
मुकुटम् ( नपुं० ) एक माथे का भूषण । [ मकुटम् ]
मुकुन्दः ( पुं० ) विष्णु, एक निधि, पालकी साग, कुन्दरू तरकारी ।
मुकुरः ( पुं० ) दर्पण । [ मकुरः ]
मुकुल (पुं० । नपुं०) (लः । लम् ) थोड़ी फूली हुई कली ।
मुकुष्ठकः (पुं०) मोट नामक अन्न ।
मुकूलकः (पुं०) वज्रदन्ती ओषधी।
मुक्ता ( स्त्री ) मोती ।
मुक्तावली ( स्त्री ) मोती का हार
मुक्तास्फोटः (पुं०) मोती की सीप।
मुक्तिः (स्त्री) मोक्ष वा छूट जाना।
मुखम् ( नपुं० ) मुख, प्रारम्भ, प्रथम सन्धि ( नाट्य में ), निकलने पैठने की रस्ता ।
मुखर ( त्रि० ) ( रः । रा । रम् ) बेरोक बोलनेवाला = ली ।

मुखवासन ( त्रि० ) ( नः । नी । नम्) मुख को सुगन्धित करनेवाला पदार्थ (बीड़ा इत्यादि), ( नपुं० ) मुख को सुगन्धित करना ।
मुख्य (त्रि०) (ख्यः । ख्या । ख्यम्) प्रधान, पहिला = ली ।
मुग्ध (त्रि०) ( ग्धः । ग्धा । ग्धम् ) सुन्दर, मूढ़ वा मूर्ख ।
मुण्ड (त्रि०) (ण्डः । ण्डा । ण्डम्) जिस का माथा मुण्डित वा मूड़ा है, ( नपुं० ) सिर ।
मुण्डनम् ( नपुं० ) मूड़ना वा हजामत करना ।
मुण्डित (त्रि०) ( तः । ता । तम् ) मूड़ागया = ई ।
मुण्डिन् ( पुं० )( ण्डी ) हज्जाम, सन्न्यासी ।
मुदिरः ( पुं० ) मेघ ।
मुद् (स्त्री) (त्—द्) हर्ष वा सुख ।
मुद्गः ( पुं० ) मूंग ( अन्न ) ।
मुद्गपर्णी ( स्त्री ) मुगौनी ( एक वृक्ष का फल ) ।
मुद्गरः ( पुं० ) मुंगरा वा जोड़ी ।
मुधा ( स्त्री ) मिथ्या वा झूठ ।
मुनिः (पुं०) ऋषि, बुद्ध (एक विष्णु का अवतार), मौनव्रती वा चुपचाप रहना। जिस का व्रत है।

मुनीन्द्रः ( पुं० ) मुनियों में श्रेष्ठ, बुद्ध (एक विष्णु का अवतार) ।

मुरः ( पुं० ) एक दैत्य का नाम ।

मुरजः ( पुं० ) मृदङ्ग बाजा ।

मुरमर्द्दनः ( पुं० ) विष्णु ।

मुरा ( स्त्री ) एक सुगन्धद्रव्य ।

मुषकः ( पुं० ) चोर, मूसा ।

मुषित ( त्रि० ) ( तः । ता । तम् ) चोराया गया = ई, ( नपुं० ) चोरी ।

मुष्कः (पुं०) अण्डकोश अर्थात् पुरुष के मूत्रद्वार के नीचे का अङ्ग

मुष्ककः (पुं०) एक तरह की लोध ओषधी ।

मुसल (पुं० । नपुं०) (लः । लम् ) मूसर ।

मुसलिन् ( पुं० ) ( ली ) बलदेव अर्थात् कृष्ण के बड़े भाई ।

मुसली ( स्त्री ) मुष्टी जन्तु, मुसरी ओषधी, विस्तुइया जन्तु ।

मुसल्य ( त्रि० ) ( ल्यः । ल्या । ल्यम् ) मूसर से मारडालने के लायक ( जैसा सुवर्ण का चोरानेवाला ) ।

मुस्तक (पुं० । नपुं०) (कः । कम् ) मोथा घास ।

मुस्ता ( स्त्री ) तथा ।

मुहुर्भाषा ( स्त्री ) बार २ बोलना।

मुहुस् ( अव्यय ) (हुः) बार बार वा फेर फेर ।

मुहूर्त्त (पुं० । नपुं०) (र्त्तः । र्त्तम्) १२ क्षण वा ४८ मिनिट ।

मूक ( त्रि० ) ( कः । का । कम् ) गूंगा = गी ।

मूढ ( त्रि० ) ( ढः । ढा । ढम् ) मूढ वा मूर्ख ।

मूत ( त्रि० ) ( तः । ता । तम् ) बाँधा हुआ = ई ।

मूत्रम् ( नपुं० ) मूत वा पेशाब ।

मूत्रकृच्छ्रम् ( नपुं० ) करकमुत्ती एक रोग ( जिस के होने से बार २ लघुशङ्का होती है और लघुशङ्का करने के समय मूत्रद्वार में पीड़ा होती है ।

मूत्रितम् ( नपुं० ) मूतागया, मूतना ।

मूर्ख ( त्रि० ) ( र्खः । र्खा । र्खम् ) मूढ वा अज्ञान ।

मूर्च्छा ( स्त्री ) मोह वा बेहोशी, बढना वा बढ़ती वा वृद्धि ।

मूर्च्छाल (त्रि०) (लः । ला । लम् ) जिस को मूर्च्छा हो ।

मूर्च्छित (त्रि०) (तः । ता । तम्) बेहोश हो गया = ई, बढ़ा = ढ़ी

मूर्ण ( त्रि० ) ( र्णः । र्णा । र्णम् ) "मूत" में देखो ।

मूर्त्त ( त्रि० ) ( र्त्तः । र्त्ता । र्त्तम् ) "मूर्च्छित" में देखो, मूर्त्तिमान्, कठोर ।

मूर्त्तिः (स्त्री) प्रतिमा, कठोरता ।

मूर्त्तिमत् ( त्रि० ) (मान् । मती । मत् ) मूर्त्तिमान्, कठोर ।

मूर्द्धन् (पुं०) (र्द्धा) मस्तक वा माथा ।

मूर्द्धाभिषिक्तः ( पुं० ) क्षत्रिय (एक वर्ण), राजा, प्रधान वा मुख्य ।

मूर्वा (स्त्री) मुर्रा ( जिस से पनच बनती है ) ।

मूर्वी ( स्त्री ) तथा ।

मूलम् (नपुं०) जड़, पहिला, वृक्ष की जटा, आदिकारण ।

मूलकम् ( नपुं० ) मुरई साग ।

मूलधनम् ( नपुं० ) मूर ( धन ) जिस का व्याज मिलता है ।

मूल्यम् ( नपुं० ) मोल वा दाम, मजूरी वा तलब ।

मूषकः ( पुं० ) मूसा ( जन्तु ) । [ मुषकः ]

मूषा ( स्त्री ) सुवर्ण इत्यादि धातु गलाने की घरिया । [ मुषा ] [ मुषी ]

मूषिकः ( पुं० ) मूसा ( जन्तु ) । [ मूषकः ] [ मुषकः ]

मूषिकपर्णी ( स्त्री ) मूसाकर्णी ओषधी ।

मूषित ( त्रि० ) (तः । ता । तम् ) चोराया हुआ = ई । [मुषित]

मृगः (पुं०) हरिण, खोजना, पशु।

मृगणा ( स्त्री ) खोजना ।

मृगतृष्णा ( स्त्री ) मृगों का निर्जल स्थान में जल का ज्ञान होना ।

मृगदंशकः ( पुं० ) कुत्ता, बिल्ली।

मृगदृष्टिः ( पुं० ) सिंह ।

मृगद्विष् ( पुं० ) ( ट्—ड् ) तथा, मृग का बैरी (बाघ इत्यादि) ।

मृगधूर्तकः ( पुं० ) सियार जन्तु ।

मृगनाभिः ( पुं० ) कस्तूरी ।

मृगबधाजीवः ( पुं० ) व्याध वा बहेलिया (मृग फसानेवाला) ।

मृगबन्धनी ( स्त्री ) मृग फसाने का जाल ।

मृगमदः ( पुं० ) कस्तूरी ।

मृगया (स्त्री) आखेट वा शिकार ।

मृगयुः ( पुं० ) व्याध वा बहेलिया ( मृग पकड़नेवाला ) ।

मृगरिपुः ( पुं० ) सिंह ।

मृगव्यम् (नपुं०) शिकार खेलना ।

मृगशिरस् (नपुं०) (रः) मृगशीर्षा ( एक नक्षत्र का नाम )

मृगशीर्षम् ( नपुं० ) तथा ।

मृगाङ्कः ( पुं० ) चन्द्रमा ।

मृगादनः (पुं०) "तरक्षु" में देखो।

मृगाशनः ( पुं० ) सिंह ।

मृगित ( त्रि० ) (तः । ता । तम्) खोजागया = हूं ।

मृगेन्द्रः ( पुं० ) सिंह ।

मृजा ( स्त्री ) सफाई वा शुद्धि ।

मृडः ( पुं० ) शिव ।

मृडानी ( स्त्री ) पार्वती ।

मृणाल ( पुं० । नपुं० ) (लः । लम्) कमल इत्यादि की जड़, कमलदण्ड ।

मृत ( त्रि० ) ( तः । ता । तम् ) मरगया = हूं, ( नपुं० ) भीख माँगना ।

मृतस्नात ( त्रि० ) (तः । ता । तम्) किसी के मरने में जिसने स्नान किया है ।

मृतालकम् ( नपुं० ) रहर (अन्न) ।

मृत्तालकम् ( नपुं० ) तथा । [ मृत्तालम् ]

मृत्तिका ( स्त्री ) मट्टी ।

मृत्यु (पुं० । स्त्री) (त्युः । त्युः) मारण

मृत्युञ्जयः ( पुं० ) शिव ।

मृत्सा ( स्त्री ) अच्छी मट्टी ।

मृत्स्ना (स्त्री) तथा, रहर (अन्न) ।

मृदङ्गः ( पुं० ) मृदङ्ग बाजा ।

मृदु ( त्रि० ) (दुः । दुः—द्वी । दु) कोमल ।

मृदुत्वच् (पुं०) (क्—ग्) भोजपत्र का वृक्ष ।

मृदुल ( त्रि० ) (लः । ला । लम्) कोमल

मृद् ( स्त्री ) ( त्—द् ) मट्टी ।

मृद्वीका ( स्त्री ) दाख वा मुनक्का ।

मृधम् ( नपुं० ) सङ्ग्राम वा युद्ध ।

मृषा ( स्त्री ) झूठ वा मिथ्या ।

मृष्ट (त्रि०) (ष्टः । ष्टा । ष्टम्) साफ़ कियागया = हूं ।

मेकलकन्यका ( स्त्री ) रेवा नदी ।

मेखलकन्यका ( स्त्री ) तथा ।

मेखला ( स्त्री ) स्त्री के कमर का एक गहना जो दलड़ का होता है ( करधनी, क्षुद्रघण्टिका इत्यादि), चमड़ा इत्यादि से बना हुआ खड्ग इत्यादि का कटिबन्ध, युद्ध में हाथ से खड्ग के न खसकने के लिये गट्टे में का चमड़े का बन्धन ।

मेघः ( पुं० ) बादल ।

मेघज्योतिष् ( पुं० ) ( तिः ) मेघ का तेज जिस के गिरने से वृक्षादि नष्ट हो जाते हैं ।

मेघनादानुलासिन् ( पुं० ) (सी) मोर पक्षी ।

मेघनामन् (पुं०) (मा) मोथा घास ।

मेघनिर्घोषः ( पुं० ) मेघ का गरजना ।

मेघपुष्पः ( पुं० ) कृष्ण के चार घोड़ों में से एक का नाम।
मेघपुष्पम् (नपुं०) जल वा पानी।
मेघमाला ( स्त्री ) मेघ की घटा।
मेघवाहनः ( पुं० ) इन्द्र।
मेघाध्वनः ( पुं० ) (ध्वा) आकाश।
मेचक ( त्रि० ) (कः। का। कम्) काले रङ्गवाला = ली, ( पुं० ) काला रङ्ग, भेड़ा, मोर के पङ्ख पर का चन्द्राकार चिह्न।
मेढ्र ( पुं०। नपुं० ) ( ढ्रः। ढ्रम् ) पुरुष का मूत्रद्वार, (पुं०) भेड़ा।
मेदकः ( पुं० ) मद्य के लिये कुछ पीसा वस्तु, किसी के पिसान से बनाहुआ मद्य।
मेदस ( नपुं० ) ( दः ) चरबी।
मेदिनी ( स्त्री ) पृथ्वी वा भूमि।
मेदुर ( त्रि० ) ( रः। रा। रम् ) घन वा गझिन और चिकना।
मेधा ( स्त्री ) वह बुद्धि जो कोई अर्थ को धारण कर सकी है।
मेधिः ( पुं० ) बैल इत्यादि के बाँधने का खूंटा [ मेथिः ]
मेध्य (त्रि०) (ध्यः। ध्या। ध्यम्) पवित्र।
मेनका (स्त्री) स्वर्ग की एक अप्सरा का नाम।
मेनकात्मजा ( स्त्री ) पार्वती।
मेरुः ( पुं० ) सुमेरु पर्वत।
मेलकः ( पुं० ) सङ्गम वा मेल करनेवाला, सङ्गम वा मेल।
मेला (स्त्री) बहुतों का झुण्ड, नील
मेषः ( पुं० ) भेड़ा, एक राशि का नाम।
मेषकम्बलः (पुं०) कम्बल वा कमरा।
मेहः ( पुं० ) प्रमेह रोग।
मेहनम् (नपुं०) मूतने का इन्द्रिय, मूतना।
मैत्रावरुणिः (पुं०) वाल्मीकि ऋषि।
मैत्री ( स्त्री ) मित्रता।
मैत्र्यम् ( नपुं० ) तथा।
मैथुनम् ( नपुं० ) स्त्री पुरुष का संयोग, सङ्गति।
मैनाकः (पुं०) एक पर्वत का नाम।
मैरेयम् (नपुं०) ऊख के पक्के रस से बनाया हुआ मद्य।
मोक्षः (पुं०) मुक्ति वा छूट जाना, एक तरह की लोध।
मोघ ( त्रि० ) ( घः। घा। घम् ) निष्फल वा व्यर्थ, ( स्त्री ) पाँडर एक वृक्ष, बाभीरङ्ग ओषधी।
मोचकः ( पुं० ) सहिंजन वृक्ष।
मोचा (स्त्री) केला वृक्ष, सेमर वृक्ष
मोट्टायितम् ( नपुं० ) एक प्रकार का हाव अर्थात् शृङ्गार के भाव से उत्पन्न क्रिया जिसमें पुरुष

वा स्त्री कुछ देह मोड़ कर जंभाई ले ।

मोदक ( त्रि० ) ( दकः । दिका । दकम् ) प्रसन्न होनेवाला = ली, ( पुं० । नपुं० ) लड्डू ।

मोरटम् ( नपु ) ऊख की जड़ ।

मोरटा ( स्त्री ) "मूर्वा" में देखो।

मोषक ( पुं० ) चोर ।

मोहः ( पुं० ) मूर्च्छा ।

मौकलिः ( पुं० ) कौआ पक्षी ।

मौकुलिः ( पुं० ) तथा ।

मौक्तिकम् ( नपुं० ) मोती ।

मौद्गीनम् ( नपुं० ) मूंग का खेत।

मौनम् ( नपुं० ) चुप रहना ।

मौरजिकः (पुं०) मृदङ्ग बजानेवाला

मौर्वी ( स्त्री ) प्रत्यञ्चा वा पनच ।

मौलिः ( पुं० ) माथा, शिखा वा चोटी, किरीट वा सिरपेंच, बाँधेहुये बाल ।

मौहूर्त्तः ( पुं० ) ज्योतिषी ।

मौहूर्त्तिकः ( पुं० ) तथा ।

म्रक्षणम् ( नपुं० ) तेल, चिकना करना ।

म्लिष्ट ( त्रि० ) ( ष्टः । ष्टा । ष्टम् ) अस्पष्ट ।

म्लेच्छमुखम् ( नपुं० ) ताँबा ।

# ( य )

यः (पुं०) यश वा कीर्ति, वायु, सवारी, गमन करनेवाला, त्याग।

यकृत् ( नपुं० ) पेट की दहिनी ओर कोठ कलेजे के सामने का एक मांस का पिण्ड ।

यक्षः (पुं०) एक देवजाति, कुवेर।

यक्षकर्दमः (पुं०) कपूर अगर कस्तूरी और कक्कोल इन सब वस्तुओं को मिलाय कर बनाया हुआ एक प्रकार का सुगन्धचूर्ण।

यक्षधूपः ( पुं० ) राल वा धूप ।

यक्षराज् ( पुं० ) (ट्—ड्) कुवेर ।

यक्ष्मन् ( पुं० ) (क्ष्मा) क्षय रोग।

यजमानः ( पुं० ) यज्ञ करनेवाला, "व्रती" में देखो ।

यजुष् ( पुं० । नपुं० ) (जुः । जुः) यजुर्वेद ।

यज्ञः ( पुं० ) यज्ञ वा याग ।

यज्ञपुरुषः ( पुं० ) विष्णु ।

यज्ञाङ्गः ( पुं० ) गूलर वृक्ष ।

यज्ञिय ( त्रि० ) (यः । या । यम्) यज्ञकर्म के योग्य वस्तु ( ब्राह्मण द्रव्य इत्यादि ) ।

यज्वन् ( पुं० ) ( ज्वा ) जिस ने विधिपूर्वक यज्ञ किया है ।

यतस् ( अव्यय ) (तः) जिस लिये।

यतिः ( पुं० ) जितेन्द्रिय ।
यतिन् ( पुं० ) ( ती ) तथा ।
यत् (अव्यय) यदि, जिस लिये, कि।
यथा ( अव्यय ) जैसा, तुल्यता ।
यथाजात ( त्रि० ) (तः । ता । तम्)

यथातथम् ( नपुं० ) सत्य ( क्रिया-
विशेषण ) ।
यथायथम् (नपुं०) यथायोग्य वा
जैसा उचित है (क्रियाविशेषण)।
यथार्थम् ( नपुं० ) सत्य ( क्रिया-
विशेषण ) ।
यथार्हवर्णः (पुं०) हलकारा वा दूत
यथास्वम् ( नपुं० ) "यथायथम्"
में देखो ।
यदि ( अव्यय ) जो वा अगर ।
यद् (त्रि०) (यः । या । यत्—द्) जो
यदृच्छा ( स्त्री ) स्वच्छन्दता वा
अपनी इच्छा ।
यन्तृ ( पुं० ) ( न्ता ) हाथीवान्,
सारथी ।
यमः (पुं०) यमराज, संयम (योग
का एक अङ्ग), केवल शरीर से
साध्य कर्म ( जैसा अहिंसा,
सत्य, अस्तेय वा चोरी न कर-
ना, ब्रह्मचर्य इत्यादि ) ।
यमनिका (स्त्री) कनात वा परदा।
यमराज् (पुं०) (ट्—ड्) यमराज ।
यमुना ( स्त्री ) एक नदी ।
यमुनाभ्रातृ (पुं०) (ता) यमराज ।
ययुः (पुं०) अश्वमेध यज्ञ का घोड़ा
यवः ( पुं० ) जव ( एक अन्न ) ।
यवक्य (त्रि०) (क्यः । क्या । क्यम्)
ढूंढ़ा रक्षित जव का खेत ।
यवक्षारः ( पुं० ) जवाखार ( एक
नोन ) ।
यवफलः ( पुं० ) बाँस वृक्ष ।
यवसम् ( नपुं० ) तृण वा घास ।
यवागूः ( स्त्री ) लपसी ( एक भ-
क्ष्य वस्तु ) ।
यवाग्रजः (पुं०) जवाखार(एक नोन)
यवानिका (स्त्री) अजवाइन ओषधी
यवासः ( पुं० ) जवासा वा हिंगुवा
( एक कांटेला वृक्ष ) ।
यविष्ठ ( त्रि० ) ( ष्ठः । ष्ठा । ष्ठम् )
जवान, नया = यी, (पुं०) छो-
टा भाई ।
यवीयस् ( त्रि० ) ( यान् । यसी ।
यः ) जवान, छोटा = टी, नया
= ई ।
यव्य ( त्रि० ) (व्यः । व्या । व्यम्)
जव का खेत ।
यशस् (नपुं०) (शः) यश वा कीर्ति ।
यष्टि (पुं० । स्त्री) (ष्टिः । ष्टिः) लाठी।
यष्टिमधुकम् ( नपुं० ) जेठीमधु ।
[ यष्टीमधुकम् ]

यष्टृ ( पुं० ) (ष्टा) यज्ञ करनेवाला, "व्रती" में देखो ।
यागः ( पुं० ) यज्ञ ।
याचकः ( पुं० ) माँगनेवाला ।
याचनकः ( पुं० ) तथा ।
याचना ( स्त्री ) माँगना ।
याचित ( त्रि० ) (तः । ता । तम्) माँगाहुआ = ई, ( नपुं० ) माँगना ।
याचितकम् ( नपुं० ) मंगनी की वस्तु ।
याच्ञा ( स्त्री ) माँगना ।
याजकः ( पुं० ) यज्ञ में ब्रह्मा उद्गाता होता अध्वर्यु ब्राह्मणाच्छंसी, अच्छावाक् नेष्टा इत्यादि १६ ऋत्विक् "याजक" कहे जाते हैं ।
यातना ( स्त्री ) कठोर दुःख ।
यातयाम (त्रि०) (मः । मा । मम्) पुराना = नी, बासी ( अन्न इत्यादि ), भोजन कर के त्याग कियागया = ई ।
यातु ( नपुं० ) राक्षस ।
यातुधानः ( पुं० ) तथा ।
यातृ (त्रि०) (ता । त्री । तृ) गमन करने वा चलनेवाला = ली ।
यातृ ( स्त्री ) ( ता ) देवरानी वा जेठानी ( भाइयों की स्त्रियाँ परस्पर "याता" कहलाती हैं ) ।
यात्रा ( स्त्री ) गमन वा चलना, चलाना ।
यादबन्धनम् ( नपुं० ) गैया भैंस इत्यादि पशुरूप धन ।
यादसाम्पतिः ( पुं० ) वरुण ।
यादस् ( नपुं० ) ( दः ) जल का जन्तु ।
यादःपतिः ( पुं० ) समुद्र ।
यानम् (नपुं०) वाहन वा सवारी, चढ़ाई करना ।
यानमुखम् ( नपुं० ) रथ इत्यादि सवारी का अग्रभाग ।
याप्य (त्रि०) (प्यः । प्या । प्यम्) अधम वा नीच ।
याप्ययानम् ( नपुं० ) पालकी सवारी ।
यामः ( पुं० ) पहर वा ३ घण्टे का काल, संयम ( योग का एक अङ्ग ) ।
यामिनी ( स्त्री ) रात्रि वा रात ।
यामुनम् ( नपुं० ) सुरमा ।
यायजूकः ( पुं० ) जिस का यज्ञ करने का स्वभाव है ।
यावः ( पुं० ) महावर (एक रङ्ग) ।
यावकः ( पुं० ) तथा, आधा पकाहुआ जव इत्यादि ।
यावत् ( अव्यय ) जबतक, पहिले,

साकल्य वा सम्पूर्णरूप से, निश्चय वा सिद्धान्त ।
यावत् ( त्रि० ) (वान् । वती । वत्) चेतना = नी ।
यावनः (पुं०) लोहवान (एक धूप)।
याष्टीकः (पुं०) लाठीवाला वा जिस का हथियार लाठी है ।
यासः ( पुं० ) जवासा वा हिंगुवा ( एक कंटैला वृक्ष ) ।
युक्त ( त्रि० ) ( क्तः । क्ता । क्तम् ) जुटाहुआ = ई, न्याय के अनुसार ।
युक्तरसा ( स्त्री ) "एलापर्णी" ओषधी ।
युग ( पुं० । नपुं० ) (गः । गम्) ( पुं० ) जूआ अर्थात् बैल के काँधे पर रखने का एक काष्ठ, ( नपुं० ) जोड़ा वा दो, सत्य त्रेता द्वापर कलि—ये चारो युग, चार हाथ, एक प्रकार का औषध ।
युगकीलकः (पुं०) जूआ की कील।
युगन्धरः (पुं०) वह काठ जहाँ कि रथ में घोड़ा जोता जाता है ।
युगपत् (अव्यय) एकही काल में।
युगपत्रकः ( पुं० ) कचनार वृक्ष ।
युगपार्श्वगः (पुं०) "प्रष्ठवाह्" में देखो ।
युगलम् ( नपुं० ) जोड़ा वा दो ।
युग्मम् ( नपुं० ) तथा ।
युग्य (पुं० । नपुं०) (ग्यः । ग्यम्) ( पुं० ) जूआ के काठ को ढोने वाला बैल, ( नपुं० ) वाहन वा सवारी ।
युध् ( स्त्री ) (त्—द्) सङ्ग्राम वा युद्ध ।
युद्धम् ( नपुं० ) तथा ।
युवति ( स्त्री ) (ति.—ती) जवान स्त्री ।
युवन् ( पुं० ) (वा ) जवान पुरुष।
युवराजः ( पुं० ) राजा के हाथ के नीचे का छोटा राजा ।
यूथ ( पुं० । नपुं० ) (थः । थम् ) पक्षियों का झुण्ड, पशुओं का झुण्ड
यूथनाथः (पुं०) हाथियों के झुण्ड में का मुख्य हाथी ।
यूथपः ( पुं० ) तथा ।
यूथिका ( स्त्री ) जूही ( एक पुष्पवृक्ष ) ।
यूप ( पुं० । नपुं० ) ( पः । पम् ) यज्ञ में पशु बाँधने का खम्भा, ( पुं० ) तूत वृक्ष ।
यूपखण्डम् ( नपुं० ) यज्ञस्तम्भ के छीलने के समय गिरता हुआ पहिला टुकड़ा ।

यूष ( पुं० । नपुं० ) ( षः । षम् ) माँड़ ।

योक्त्रम् ( नपुं० ) बैल इत्यादि के गले में जूआ जोड़ने की रस्सी।

योगः ( पुं० ) कवच, साम दान भेद और दण्ड—ये चारो उपाय, ध्यान, मेल, जोड़ना वा जोड़ ।

योगेष्टम् ( नपुं० ) सीसा (धातु) ।

योग्य ( त्रि० ) (ग्यः । ग्या । ग्यम) उचित, ( नपुं० ) एक औषध जिस को "ऋद्धि" "वृद्धि" और "सिद्धि" भी कहते हैं ।

योजनम् ( नपुं० ) चार कोस, परमात्मा, जोड़ना वा मिलाना

योजनवल्ली ( स्त्री ) एक रङ्ग की लकड़ी ।

योत्रम् (नपुं०) "योक्त्र" में देखो ।

योद्धृ ( पुं० ) ( द्धा ) युद्ध करनेवाला ।

योधः ( पुं० ) तथा ।

योनि ( पुं० । स्त्री ) (निः । निः) हेतु वा कारण, स्त्री का मूत्रद्वार ।

योषा ( स्त्री ) स्त्री ।

योषिता ( स्त्री ) तथा ।

योषित् ( स्त्री ) तथा ।

यौतकम् ( नपुं० ) दैजा ।

यौतुकम् ( नपुं० ) तथा ।

यौतवम् ( नपुं० ) मान वा नाप वा तौल ।

यौवतम् (नपुं०) युवतियों का समूह वा झुण्ड ।

यौवनम् ( नपुं० ) जवानी ।

—***—

# ( र )

रः ( पुं० ) अग्नि, बलदेव, वायु, भूमि, धन, इन्द्रिय, धन कारोक ।

रक्त ( त्रि० ) ( क्तः । क्ता । क्तम् ) रंगा हुआ = ई, अनुरक्त, लाल रङ्ग, ( नपुं० ) लोहू, केसर, ताँबा का रङ्ग ।

रक्तकः ( पुं० ) दुपहरिया ( एक पुष्पवृक्ष ) ।

रक्तचन्दनम् ( नपुं० ) रक्तसार, लाल चन्दन ।

रक्तपा (स्त्री) जोंक (एक जलजन्तु)

रक्तफला ( स्त्री ) कुन्दरू तरकारी ।

रक्तमालः ( पुं० ) करञ्ज वृक्ष ।

रक्तसन्ध्यकम् ( नपुं० ) लाल कल्हार पुष्प वा लाल रङ्ग का तो-

जो सन्ध्या में फूलनेवाला पुष्प ।

रक्तसरोरुहम् (नपुं॰) लाल कमल।

रक्ताङ्गः ( पुं॰ ) कबीला औषधी।

रक्तोत्पलम् ( नपुं॰ ) लाल कमल।

रक्षस् ( नपुं॰ ) ( क्षः ) राक्षस ।

रक्षस्सभम् ( नपुं॰ ) राक्षसों की सभा, राक्षसों का झुण्ड ।

रक्षा ( स्त्री ) बचाना, राख ।

रक्षित ( त्रि॰ ) (तः । ता । तम्) बचायागया = ई, ( नपुं॰ ) बचाना ।

रक्षिवर्गः (पुं॰) राजा के रक्षकों का समूह ।

रक्षणः ( पुं॰ ) रक्षा करना ।

रङ्कुः (पुं॰) चीता (एक बनपशु)।

रङ्ग ( पुं॰ । नपुं॰ ) (ङ्गः । ङ्गम्) (पुं॰) अखाड़ा अर्थात् राग रङ्ग और कसरत का स्थान, (नपुं॰) राँगा धातु ।

रङ्गाजीवः (पुं॰) रंगरेज, रंगसाज।

रचना (स्त्री) रचना वा बनाना ।

रजत ( त्रि॰ ) ( तः । ता । तम् ) श्वेत रङ्ग की वस्तु, (पुं॰) श्वेत रङ्ग, (नपुं॰) चाँदी, सोना ।

रजनम् ( नपुं॰ ) रंगना, तस्वीर खींचना ।

रजनि ( स्त्री ) (निः—नी) रात्रि वा रात, चकवड़ वृक्ष, हरदी ।

रजनीमुखम् ( नपुं॰ ) सन्ध्याकाल वा साँझ ।

रजस् ( नपुं॰ ) (जः) धूली वा धूर, रजोगुण, स्त्री का हर महीने का रुधिर ।

रजस्वला ( स्त्री ) जो स्त्री कपड़े से भई है ।

रजोमूर्तिः ( पुं॰ ) ब्रह्मा ।

रज्जुः ( स्त्री ) डोरी वा रस्सी ।

रञ्जनम् ( नपुं॰ ) रंगना, रक्त चन्दन ।

रञ्जनी ( स्त्री ) नील ।

रण ( पुं॰ । नपुं॰ ) (णः । णम् संग्राम वा युद्ध, ( पुं॰ ) शब्द ।

रण्डा ( स्त्री ) विधवा वा राँड़ स्त्री, मूसाकर्णी औषधी ।

रतम् ( नपुं॰ ) मैथुन वा सुरत वा स्त्री पुरुष का संयोग ।

रतिः ( स्त्री ) तथा, प्रीति वा प्रेम कामदेव की स्त्री का नाम ।

रतिपतिः ( पुं॰ ) कामदेव ।

रत्नम् ( नपुं॰ ) जवाहिर, अपने जातिवालों में श्रेष्ठ वा उत्तम ( जैसा,—'स्त्रीरत्नम्' = स्त्रियों में श्रेष्ठ ) ।

रत्नगर्भा ( स्त्री ) पृथ्वी ।

रत्नसानुः ( पुं॰ ) सुमेरु पर्वत ।

रत्नाकरः ( पुं॰ ) समुद्र ।

रत्निः ( पुं० ) एक नाप ( "अरत्नि" में देखो )।
रथः ( पुं० ) गाड़ी, बेंत वृक्ष।
रथकट्या ( स्त्री ) रथों का समूह।
रथकारः (पुं०) रथ बनाने वाला, बढ़ई, "माहिष्य" जातिवाले मनुष्य से "करणी" जातिवाली स्त्री में उत्पन्न लड़का।
रथगुप्तिः ( स्त्री ) रथ के ऊपर का कलसा ( "वरूथ" में देखो )।
रथद्रुः ( पुं० ) वञ्जुल (एक प्रकार का वृक्ष)।
रथाङ्ग ( पुं० । नपुं० ) (ङ्गः । ङ्गम्) (पुं०) चकवा पक्षी, (नपुं०) रथ की पहिया।
रथाङ्गनामन् (पुं० । स्त्री) ( मा । म्नी ) चकवा पक्षी।
रथाङ्गाह्वय. ( पुं० ) चकवा पक्षी।
रथिकः ( पुं० ) रथ का स्वामी।
रथिनः ( पुं० ) तथा।
रथिन् ( पुं० ) ( थी ) तथा, रथ पर चढ़ कर युद्ध करनेवाला।
रथिरः ( पुं० ) रथ का स्वामी।
रथ्यः ( पुं० ) रथ का खींचने वाला घोड़ा।
रथ्या (स्त्री) गली, रथों का समूह।
रदः ( पुं० ) दाँत।
रदनः ( पुं० ) तथा।
रदनच्छदः (पुं०) ओष्ठ वा ओंठ।
रन्ध्रम् ( नपुं० ) छेद वा बिल।
रभसः ( पुं० ) हर्ष, वेग।
रमणी ( स्त्री ) क्रीड़ा करानेवाली वा रमानेवाली स्त्री।
रमणी ( स्त्री ) तथा।
रमा ( स्त्री ) लक्ष्मी।
रम्भा (स्त्री) केला वृक्ष, एक स्वर्ग की वेश्या का नाम।
रयः ( पुं० ) वेग से चलना।
रल्लकः (पुं०) कम्बल वा कमरा।
रवः ( पुं० ) शब्द।
रवण (त्रि०) (णः । णा । णम्) जिस का शब्द करने का स्वभाव है।
रविः ( पुं० ) सूर्य्य।
रशना ( स्त्री ) जीभ, सोरह लड का स्त्री के कमर का गहना ( करधनी इत्यादि )।
रश्मिः ( पुं० ) किरण वा प्रकाश, घोड़ा इत्यादि की बागडोर वा लगाम।
रसः ( पुं० ) खट्टा मीठा इत्यादि ६ रस, पारा धातु, गन्धरस, शृङ्गार वीर करुण इत्यादि साहित्य के रस, वीर्य वा धातु, प्रीति वा प्रेम, जहर, स्वाद, पतली वस्तु ( जैसा पानी, सरबत इत्यादि )।

रसगन्धः (पुं०) गन्धरस वा बोर।
रसगर्भम् ( नपुं० ) 'तार्च्यशैल"में देखो।
रसज्ञ ( त्रि० ) ( ज्ञः । ज्ञा । ज्ञम्) रस को जानने वाला = ली।
रसज्ञा ( स्त्री ) जीभ।
रसना (स्त्री) "रशना" में देखो।
रसवती (स्त्री) रसोंई का स्थान।
रसा ( स्त्री ) पृथ्वी वा भूमि, सलई (एक लकड़ी ), सोनापाढ़ा ( एक ओषधीकाष्ठ )।
रसाञ्जनम् ( नपुं० ) "तार्च्यशैल" में देखो।
रसातलम् ( नपुं० ) पाताल।
रसाल ( पुं० । नपुं० ) ( लः । लम् ) (पुं०) आम वृक्ष, ऊख, ( नपुं० ) आम फल।
रसाला (स्त्री) श्रीखण्ड वा सिखरन (एक खाने का पदार्थ, जो कि—
काली दही—७॥ छटाँक,
उत्तम चीनी—१० छटाँक १ तोला,
घी—२ तोला ८ मासे,
सहद—२ तोला ८ मासे,
मिरिच—१ तोला ४ मासे,
सोंठ—१ तोला ४ मासे,

अथवा

घी इत्यादि चारो वस्तु प्रत्येक १ तोला ४ मासे,
इन सब पदार्थों को मिला कर मह्हीन कपड़े में छान कर कपूर से सुगन्धित पात्र में रखने से बनता है )।
रसितम् ( नपुं० ) मेघ का गर्जनशब्द।
रसोनम् ( नपुं० ) लहसन ( एक कन्द )।
रसोनकः ( पुं० ) तथा।
रहस् ( अव्यय ) ( ह. ) एकान्त।
रहस् (नपुं०) (हः) तथा, परस्पर।
रहस्य (त्रि०) (स्यः। स्या। स्यम्) एकान्त में हुआ = ई, गोप्य वा छिपाने के योग्य।
राका ( स्त्री ) वह पूर्णमासी की रात्रि जिसमें चन्द्र पूर्ण रहते हैं।
राक्षसः (पुं०) राक्षस (एक देवयोनि )।
राक्षसी ( स्त्री ) चोर नामक एक गन्धवस्तु, राक्षस की स्त्री।
राक्षा ( स्त्री ) महावर वा लाही का रङ्ग।
राङ्कव ( त्रि० ) ( वः । वी । वम् ) मृग के रोम से बना हुआ (वस्त्र इत्यादि )।

राजकम् (नपुं०) राजों का समूह।
राजकशेरु (नपुं०) नागरमोथा।
राजन् (पुं०) (जा) राजा, चन्द्रमा, क्षत्रिय, यक्ष।
राजन्यः (पुं०) क्षत्रिय।
राजन्यकम् (नपुं०) क्षत्रियों का समूह।
राजन्वत् (त्रि०) (न्वान् । न्वती । न्वत्) वह देश वा नगर वा भूमि जिस में अच्छा राजा है।
राजबला (स्त्री) 'कुब्जप्रसारणी' औषधी।
राजबीजिन् (त्रि०) (जी । जिनी । जि) राजा के वंश में उत्पन्न वा पैदा हुआ = ई।
राजराजः (पुं०) कुवेर।
राजवत् (त्रि०) (वान् । वती । वत्) वह देश वा भूमि वा नगर जिस में राजा हो।
राजवृक्षः (पुं०) अमिलतास।
राजवंश्य (त्रि०) (श्यः । श्या । श्यम्) राजा के वंश में उत्पन्न वा पैदा हुआ = ई।
राजसदनम् (नपुं०) सब से ऊंचा घर, राजा का घर।
राजसूयम् (नपुं०) एक यज्ञ का नाम।
राजहंसः (पुं०) वह हंस पक्षी जिस का रङ्ग श्वेत हो और चोंच और पैर लाल २ हों।
राजातनः (पुं०) प्यारमेवा वृक्ष।
राजादन (पुं० । नपुं०) (नः । नम्) तथा, खिरनी वृक्ष।
राजार्ह (त्रि०) (र्हः । र्हा र्हम) राजा के योग्य वस्तु, (नपुं०) अगुरुचन्दन।
राजि (स्त्री) (जिः—जी) पङ्क्ति वा पाँती वा कतार।
राजिका (स्त्री) राई।
राजिलः (पुं०) वह दुमुहाँ सर्प जिस में विष नहीं रहता।
राजीव (पुं० । नपुं०) (वः । वम्) (पुं०) एक बड़ी मछली, (नपुं०) कमल।
राज् (पुं०) (ट्—ड्) राजा।
राज्याङ्गानि, बहुवचन, (नपुं०) १ राजा, २ मन्त्री, ३ राजा का मित्र, ४ खजाना, ५ देश की भूमि, ६ दुर्गम स्थान अर्थात् पर्वत किला इत्यादि, ७ सेना, ८ पुरवासियों का समूह ये आठ "राज्याङ्ग" कहलाते हैं।
रात्रि (स्त्री) (त्रिः—त्री) रात।
रात्रिचरः (पुं०) राक्षस।
रात्रिञ्चरः (पुं०) तथा।
राद्धान्तः (पुं०) सिद्धान्त वा निर्णय।

राधः ( पुं० ) वैशाख महीना ।
राधा (स्त्री) विशाखा नक्षत्र, एक गोपी का नाम ।
राम ( त्रि० ) ( मः । मा । मम् ) सुन्दर वा मनोहर, नीली वस्तु, श्वेत वस्तु, ( पुं० ) रामचन्द्र, परशुराम, बलदेव, एक प्रकार का सुन्दर मृग, नीला रङ्ग, श्वेत रङ्ग ।
रामठम ( नपुं० ) हींग ।
रामा ( स्त्री ) स्त्री ।
राम्भः ( पुं० ) बाँस का दण्ड जो ब्रह्मचर्य में धारण कियाजाता है ।
रालः ( पुं० ) राल वा धूप ।
रावः ( पुं० ) शब्द ।
राशिः (पुं०) ढेर, मेष वृष मिथुन इत्यादि १२ राशि, गणित शास्त्र की सङ्ख्या ।
राष्ट्र ( पुं० । नपुं० ) ( ष्ट्रः । ष्ट्रम् ) देश, उपद्रव ।
राष्ट्रिका ( स्त्री ) भटकटैया ( एक कंटैला वृक्ष ) ।
राष्ट्रियः ( पुं० ) राजा का साला ( नाट्य में ) ।
रासः (पुं०) मेघ का शब्द, ग्वालों की एक प्रकार की क्रीड़ा वा खेल
रासभः ( पुं० ) गदहा ( पशु ) ।
रास्ना ( स्त्री ) रासन (एक वृक्ष), एलापर्णी ओषधी ।
राहुः ( पुं० ) एक ग्रह ।
रिक्त ( त्रि० ) (क्तः । क्ता । क्तम्) शून्य वा खाली ।
रिक्तक (त्रि०) (कः । का । कम्) तथा।
रिक्थम् (नपुं०) धन वा दौलत ।
रिङ्गणम् ( नपुं० ) रेंगना, अपने धर्मादि से विचल जाना, बालक इत्यादि के हाथ पैर, विकलाय कर गिरना । [रिङ्खणम्]
रिटिः ( पुं० ) शिव के एक गण का नाम ।
रिपुः ( पुं० ) शत्रु ।
रिष्टम् (नपुं०) मङ्गल वा कल्याण, अमङ्गल वा अकल्याण, अमङ्गल का नाश ।
रिष्टिः ( पुं० ) तलवार ।
रीढा (स्त्री) अनादर वा अपमान।
रीण (त्रि०)(णः । णा । णम्) बहा = ची (जैसा गैया के थन इत्यादि से दूध इत्यादि) ।
रीति ( स्त्री ) ( तिः—ती ) रीति वा लोकाचार, पीतर एक धातु, बहना, लोहा की मैल ।
रीतिपुष्पम् (नपुं०) "कुसुमाञ्जन" में देखो ।
रुक्मम् ( नपुं० ) सुवर्ण वा सोना।
रुक्मकारकः ( पुं० ) सोनार ।

रूक्ष (त्रि०) (क्ष: । क्षा । क्षम्) रूखा = खी, (पुं०) अप्रेम वा अप्रीति वा प्रेम का नाश।

रुग्ण (त्रि०) (ग्णः । ग्णा । ग्णम्) व्यथित वा पीड़ित वा रोगी, टूटा हुआ = ई।

रुचक (पुं० । नपुं०) (कः । कम्) बिजौरा नीबू, रेंड वृक्ष, राजा इत्यादि धनपात्रों का एक प्रकार का घर, (पुं०) एक प्रकार का गहना, (नपुं०) सोचरनोन, सोचरखार।

रुचिः (स्त्री) चाह वा इच्छा, प्रभा वा प्रकाश, आलिङ्गन वा गले से लगाना, अत्यन्त आसक्ति सूर्यादिक की किरण, शोभा वा सुन्दरता।

रुचिर (त्रि०) (रः । रा । रम्) सुन्दर।

रुच (स्त्री) (क्—ग्) रोग वा पीड़ा।

रुच्य (त्रि०) (च्यः । च्या । च्यम्) प्यारा = री, सुन्दर।

रुजा (स्त्री) रोग वा पीड़ा।

रुज् (स्त्री) (क्—ग्) तथा।

रुतम (नपुं०) अस्पष्ट शब्द।

रुदितम (नपुं०) रोना।

रुद्ध (त्रि०) (द्धः । द्धा । द्धम्) रोका हुआ = ई, बन्द किया हुआ = ई, बाँधा हुआ = ई।

रुद्र (पुं०) शिव।

रुद्राः बहुवचन, (पुं०) रुद्र नामक गणदेवता जो गिनती में ११ हैं।

रुद्राणी (स्त्री) पार्वती।

रुधिर (पुं० । नपुं०) (रः । रम्) (पुं०) मङ्गल ग्रह, (नपुं०) केसर, लोहू।

रुमा (स्त्री) खारा समुद्र, सुग्रीव की स्त्री का नाम।

रुरुः (पुं०) एक प्रकार का मृग वा बनपशु।

रुवकः (पुं०) रेंड़ वृक्ष। [रुबुकः] [रूबकः]

रुशत् (त्रि०)(शत् । शती—शन्ती । शत्) अमङ्गल बोलना।

रुष् (स्त्री) (ट्—ड्) क्रोध।

रुहा (स्त्री) दूर्वा घास।

रूपम् (नपुं०) रूप वा आकार, सफेद नीला पीला इत्यादि रङ्ग, चाँदी।

रूपाजीवा (स्त्री) वेश्या।

रूप्य (त्रि०) (प्यः । प्या । प्यम्) रमणीय वा सुन्दर, (नपुं०) रुपा वा चाँदी, छापा हुआ चाँदी वा सोना अर्थात् चाँदी वा सोने का रुपया।

रूप्याध्यक्षः ( पुं० ) रूपा का अध्यक्ष वा अधिकारी वा खज़ानची ।

रूषित ( त्रि० ) ( तः । ता । तम् ) धूलि इत्यादि से लपेटा हुआ वा रूखा किया हुआ = ई ।

रेचन ( त्रि० ) (नः । नी । नम्) पतला दस्त लाने वाली वस्तु, (स्त्री) कबीला ओषधी, (नपुं०) जुलाब लेना ।

रेचित ( त्रि० ) (तः । ता । तम) दस्त की राह से गिराया गया = ई, त्याग किया गया = ई, ( नपुं० ) घोड़े की एक प्रकार की चाल ।

रेणु (पुं० । स्त्री) (णुः । णुः) धूली वा धूर ।

रेणुकः ( पुं० ) मटर (एक अन्न) ।

रेणुका (स्त्री) रेणुकबीज नामक एक गन्धवस्तु, परशुराम की माता का नाम ।

रेतस् (नपुं०) (तः) वीर्य वा धातु ।

रेफ ( त्रि० ) (फः । फा । फम् ) अधम वा नीच [ रेप ], (पुं०) रेफ वा हल् रकार एक वर्ण ।

रेवती ( स्त्री ) एक तारा, बलदेव की स्त्री ।

रेवतीरमणः ( पुं० ) बलदेव ।

रेवा ( स्त्री ) नर्मदा नदी ।

रै ( पुं० ) ( राः ) धन, सुवर्ण वा सोना ।

रोकम् ( नपुं० ) छिद्र वा बिल ।

रोगः ( पुं० ) बीमारी ।

रोगहारिन् ( पुं० ) (री) वैद्य ।

रोचनः ( पुं० ) काला सेमर वृक्ष ।

रोचनी (स्त्री) श्वेत त्रिधारा ओषधी, कबीला ओषधी । [रेचनी]

रोचिष ( नपुं० ) (चिः) प्रभा ।

रोचिष्णु ( त्रि० ) ( ष्णुः । ष्णुः । ष्णु ) अत्यन्त शोभा को प्राप्त होता हुआ = ई ।

रोदनम् (नपुं०) रोना, रोलाना, आँसू ।

रोदनी ( स्त्री ) जवासा वा हिंगुआ ( एक कटैला वृक्ष ) ।

रोदसी, द्विवचनान्त, (स्त्री) (स्यौ) भूमि और आकाश ।

रोदस्, द्विवचनान्त, (नपुं०) (सी) तथा ।

रोधः (पुं०) नदी इत्यादि का तीर

रोधस् ( नपुं० ) ( धः ) तथा ।

रोधोवक्रा ( स्त्री ) नदी ।

रोपः ( पुं० ) बाण ।

रोमन् ( नपुं० ) ( म ) रोंआँ ।

रोमन्थः ( पुं० ) पगुरी ।

रोमहर्षणम् ( नपुं० ) रोंआँ का

खड़ा होना।
रोमाञ्चः (पुं०) तथा।
रोषः (पुं०) क्रोध।
रोहिणी (स्त्री) कुटकी ओषधी, एक तारा जिस को चन्द्र की प्यारी स्त्री कहते है।
रोहित (त्रि०) (तः। ता। तम्) लाल रङ्ग की वस्तु, (पुं०) रोहू मछली, एक लाल रङ्ग का मृग, (नपुं०) सूधा इन्द्र का धनुष् (पुं०। नपुं०) लाल रङ्ग।
रोहितकः (पुं०) रोहित घास, रोहू मछली, लाल मृग।
रोहिताश्वः (पुं०) अग्नि वा आग।
रोहिन् (पुं०) (ही) रोहित घास, रोही मृग।
रौद्र (त्रि०) (द्रः। द्री। द्रम्) भयङ्कर वा जिस के देखने से डर लगै, (पुं०) रौद्र रस।
रौमकम् (नपुं०) साँभर नोन।
रौरवः (पुं०) एक नरक।
रौहिणेयः (पुं०) बलदेव, बुध ग्रह।
रौहिषम् (नपुं०) रोहिस घास।
रंहस् (नपुं०) (हः) वेग, बल।

—***—

# (ल)

लः (पुं०) प्रकाश, भूमि, भय, आनन्द, वायु, नोन, दान, श्लेष वा अनेकार्थ शब्द का प्रयोग, अभिप्राय वा तात्पर्य वा मतलब, प्रलय, साधन, मन, वरुण, आ-श्वासन करना वा तसल्ली देना
लकुच (पुं०। नपुं०) (चः। चम्) (पुं०) बड़हर वृक्ष, (नपुं०) बड़हर फल। [लिकुच]
लक्तकः (पुं०) चिथड़ा वा लत्ता।
लक्षम् (नपुं) लाख (१०००००) सङ्ख्या, निशाना।
लक्षणम् (नपुं०) चिह्न।
लक्षणा (स्त्री) हंसी, सारस पक्षी की स्त्री, एक लता।
लक्ष्मण (त्रि०) (णः। णा। णम्) लक्ष्मीयुक्त, (पुं०) रामचन्द्र के एक भाई का नाम, (स्त्री) सारस पक्षी की स्त्री, एक लता। [लक्षणा]
लक्ष्मन् (नपुं०) (क्ष्म) चिह्न, प्रधान वा मुख्य।
लक्ष्मीः (स्त्री) लक्ष्मी, सम्पत्ति वा धन, अधिकाई, "ऋद्धि" ओषधी
लक्ष्मीवत् (त्रि०) (वान्। वती। वत्) लक्ष्मीयुक्त।

लक्ष्य (त्रि०) (क्ष्यः । क्ष्या । क्ष्यम्) निशाना, (नपुं०) स्वरूप का ढाँपना वा छिपाना।
लगुडः (पुं०) लकड़ी वा डण्डा।
लग्न (त्रि०) (ग्नः । ग्ना । ग्नम्) लगाहुआ = ई, (नपुं०) राशियों का उदय।
लग्नकः (पुं०) मध्यस्थ वा बिचवई वा ज़ामिनदार।
लघिमन् (पुं०) (मा) छोटाई।
लघु (त्रि०) (घुः । घुः—घ्वी । घु) जल्दीबाज, छोटा = टी, इष्ट वा चाहाहुआ = ई, (पुं०) अस्यरक ओषधी, (नपुं०) शीघ्र वा जल्दी।
लघुलयम् (नपुं०) खस वा गाँडर की जड़।
लङ्का (स्त्री) समुद्र में का एक टापू, लाल मिरचा।
लङ्कोपिका (स्त्री) अस्यरक ओषधी
लज्जा (स्त्री) लाज।
लज्जित (त्रि०) (तः । ता । तम्) लजायगया = ई।
लट्वा (स्त्री) गाँव की गौरैया, एक प्रकार का करञ्जफल, बाजा
लता (स्त्री) लता वा बेल, वृक्ष की शाखा, गोंदी वृक्ष, वसन्त में फूलने वाला कन्द, अस्यरक ओषधी, मालकांगुनी ओषधी।
लतार्कः (पुं०) हरा प्याज।
लपनम् (नपुं०) मुख, बोलना।
लपित (त्रि०) (तः । ता । तम) कहागया = ई, (नपुं०) बोलना
लब्ध (त्रि०) (ब्धः । ब्धा । ब्धम्) प्राप्त हुआ = ई वा मिला = ली।
लब्धवर्णः (पुं०) पण्डित।
लभ्य (त्रि०) (भ्यः । भ्या । भ्यम्) पाने के योग्य, न्याय के अनुसार।
लम्बनम् (नपुं०) लटकना, एक कण्ठ का गहना जो कण्ठा की अपेक्षा कुछ अधिक लटकता रहता है।
लम्बोदरः (पुं०) गणेश, लम्बे पेट वाला।
लयः (पुं०) लीन होना वा मिल जाना वा उसी का रूप हो जाना, नाच में गीत बाजा और पैर रखने की क्रिया और ताल—इन के काल की समता वा बराबरी।
ललना (स्त्री) विलासयुक्त स्त्री।
ललन्तिका (स्त्री) एक कण्ठ का गहना जो कण्ठा की अपेक्षा कुछ अधिक लटकता रहता है।
ललाटम् (नपुं०) भाल वा लिलार।

ललाटिका ( स्त्री ) "पत्रपाश्या" में देखो ।
ललाम (पुं० । नपुं०) (मः । मम्) पोंछ, घोडे के माथे का एक चिह्न, घोड़ा, घोड़े का गहना, प्रधान वा मुख्य, ध्वजा, मनोहर, प्रभाव, पुरुष, भूषण, सूंड, सींग, चिह्न, अश्वलिङ्गी, संदूक इत्यादि का खाना ।
ललामकम् ( नपुं० ) कपाल तक लटकती हुई माला ।
ललामन् ( नपुं० ) (म) "ललाम" में देखो ।
ललितम् ( नपुं० ) सुरत वा मैथुन में स्त्रियों की चेष्टा ।
लवः (पुं०) सूक्ष्म वा थोड़ा, काटना, टुकड़ा ।
लवङ्ग ( पुं० । नपुं० ) (ङ्गः । ङ्गम) (पुं०) लवङ्ग वृक्ष, (नपुं०) लवङ्ग फूल ।
लवण ( त्रि० ) (णः । णा । णम्) खारा=री, (स्त्री) सुन्दरता, (नपुं०) नोन वा खारा रस ।
लवणाकरः ( पुं० ) खारा समुद्र ।
लवणोदः ( पुं० ) खारे पानी का समुद्र ।
लवनम् ( नपुं० ) काटना ।
लवित्रम् (नपुं०) हंसुवा एक काटने का हथियार ।
लशुनम ( नपुं० ) लहसुन ।
लशूनम ( नपुं० ) तथा ।
लस्तकः ( पुं० ) धनुष् का मध्यभाग ।
लाक्षा (स्त्री) लाही वा महावर ।
लाक्षाप्रसादनः (पुं०) लाल लोध ।
लाङ्गलम् ( नपुं० ) हल (जिस से खेत जोता जाता है ) ।
लाङ्गलिकः (पुं०) हल चलानेवाला।
लाङ्गलिकी ( स्त्री ) करियारी ।
लाङ्गलिन् (पुं०) (ली) जलपीपर, नरियर, बलदेव ।
लाङ्गूलम् (नपुं०) पोंछ । [लाङ्गुलम्]
लाजाः, बहुवचन, ( पुं० ) लावा ( धान इत्यादि अन्न का )।
लाञ्छनम् (नपुं०) चिह्न, कलङ्क ।
लाबूः ( स्त्री ) तुम्बा । [ लाबुः ]
लाभः (पुं०) फल वा नफा, पाना ।
लामज्जकम् (नपुं०) खस वा गाँडर की जड़ ।
लालसा ( स्त्री ) प्रार्थना, उत्कण्ठा वा बड़ी चाह ।
लाला ( स्त्री ) मुंह का लार ।
लालाटिकः (पुं०) वह नौकर जो कि कामों में असमर्थ हो कर अपने स्वामी के क्रोध वा प्रसन्नता की परीक्षा के लिये उस

का मुख देखता है।

लावः (पुं०) लावा पक्षी, खेत का लवना वा काटना।

लासिका (स्त्री) नाचनेवाली स्त्री।

लास्यम (नपुं०) नाचना।

लिकुचः (पुं०) बड़हर वृक्ष।

लिक्षा (स्त्री) जूआ का अण्डा।

लिखित (त्रि०) (तः। ता। तम्) लिखाहुआ वा लिखागया = ई, (नपुं०) लिखना।

लिङ्गवृत्तिः (पुं०) अपने पेट भरने के लिये जटा इत्यादि बढ़ानेवाला।

लिपि (स्त्री) (पिः—पी) लिखावट वा लिखना।

लिपिकरः (पुं०) लिखनेवाला वा लेखक।

लिप्त (त्रि०) (प्तः। प्ता। प्तम्) लीपा गया = ई, खायागया = ई।

लिप्तकः (पुं०) विष में बुताया-हुआ बाण।

लिप्सा (स्त्री) पाने की इच्छा।

लिबि (स्त्री) (बिः—बी) "लिपि" में देखो।

लिबिकरः (पुं०) लेखक।

लिबिकारः (पुं०) तथा।

लिवि (स्त्री) (विः—वी) "लिपि" में देखो।

लिविकरः (पुं०) लेखक।

लिविकारः (पुं०) तथा।

लीढ (त्रि०) (ढः। ढा। ढम्) चाटागया = ई, चीखागया = ई, खायागया = ई।

लीला (स्त्री) विलास वा क्रीड़ा, क्रिया, एक प्रकार का हाव (स्त्री का बोलने में पहिरावा में और चेष्टा में अपने प्यारे पति की नकल करना)।

लुठित (त्रि०) (तः। ता। तम्) लोट गया = ई, श्रम दूर करने के लिये भूमि पर लोटाहुआ घोड़ा।

लुण्ठित (त्रि०) (तः। ता। तम) लूट लियागया वा डाँका मार कर छीन लियागया = ई।

लुब्ध (त्रि०) (ब्धः। ब्धा। ब्धम्) लोभी वा लालची।

लुब्धकः (पुं०) व्याध वा शिकारी, व्याघ्र वा बाघ।

लुलापः (पुं०) भैंसा (एक पशु)।

लुलायः (पुं०) तथा।

लूता (स्त्री) मकड़ी (एक जन्तु, जो जाला लगाती है)।

लून (त्रि०) (नः। ना। नम्) काटागया = ई, खण्डित।

लूमम् (नपुं०) पोंछ।

लेखः (पुं०) देवता ।
लेखकः (पुं०) लिखनेवाला ।
लेखर्षभः (पुं०) इन्द्र ।
लेखा (स्त्री) रेखा वा पङ्क्ति वा पाँती ।
लेपः (पुं०) शरीर में चन्दन इत्यादि का वा औषधादि का लेप, भोजन वा खाना ।
लेपकः (पुं०) लीपनेवाला वा लेप करनेवाला ।
लेलिहानः (पुं०) सर्प ।
लेशः (पुं०) थोड़ा वा सूक्ष्म वा किञ्चित वा ज़रासा ।
लेष्टुः (पुं०) ढेला ।
लेहः (पुं०) चाटना वा चीखना ।
लोकः (पुं०) स्वर्ग इत्यादि लोक, लोग वा जन ।
लोकजननी (स्त्री) लक्ष्मी ।
लोकजित् (पुं०) बुद्ध (एक नास्तिकों की देवता) ।
लोकबन्धुः (पुं०) सूर्य्य ।
लोकबान्धवः (पुं०) तथा ।
लोकमातृ (स्त्री) (ता) लक्ष्मी ।
लोकायतम् (नपुं०) चार्वाक (एक नास्तिक) का शास्त्र ।
लोकायतिकः (पुं०) महानास्तिक ("चार्वाक" में देखो) ।
कायतिकः ]
लोकालोकः (पुं०) लोकालोकाचल एक पर्वत ।
लोकेशः (पुं०) ब्रह्मा ।
लोचनम् (नपुं०) नेत्र वा आँख ।
लोचमर्कटः (पुं०) एक औषध जिस को "मयूरशिखा" भी कहते हैं ।
लोचमस्तकः (पुं०) तथा, मजमोदा औषधी ।
लोत (पुं० । नपुं०) (तः । तम्) चोरी का धन ।
लोत्रम् (नपुं०) तथा ।
लोध्र (पुं० । नपुं०) (ध्रः । ध्रम्) (पुं०) लोध वृक्ष, (नपुं०) लोध औषधी ।
लोपामुद्रा (स्त्री) अगस्त्य ऋषि की स्त्री ।
लोप्त्रम् (नपुं०) चोरी का धन ।
लोभः (पुं०) लालच ।
लोमन् (नपुं०) (म) रोम वा रोआँ ।
लोमश (त्रि०) (शः । शा । शम्) बहुत रोमयुक्त, (पुं०) एक ऋषि का नाम, (स्त्री) जटामासी औषधी ।
लोल (त्रि०) (लः । ला । लम्) चञ्चल, लालची ।
लोलुप (त्रि०) (पः । पा । पम्)

अत्यन्त लालची ।

लोलुभ (त्रि०) (भः । भा । भम्) तथा ।

लोष्ट (पुं० । नपुं०) (ष्टः । ष्टम्) ढेला वा कङ्कड़ ।

लोष्टभेदन (पुं० । नपुं०) (नः । नम्) ढेला फोड़ने का मोंगरा।

लोह (पुं० । नपुं०) (हः । हम) लोहा (धातु), (नपुं०) अगुरुचन्दन, सुवर्ण इत्यादि आठो धातु इस शब्द से कहे जाते हैं (१ सोना २ चाँदी ३ ताँबा ४ पीतल ५ काँसा ६ राँगा ७ सीसा ८ लोहा)।

लोहकारकः (पुं०) लोहार ।

लोहपृष्ठः (पुं०) "कङ्क" में देखो ।

लोहल (त्रि०) (लः । ला । लम्) अस्पष्ट वा गडबड़ बोलनेवाला = ली ।

लोहाभिसारः (पुं०) शस्त्रधारी राजाओं का महानवमी वा विजयदशमी के दिन युद्धयात्रा के पहिले शस्त्र वाहन इत्यादि के पूजन की विधि, योद्धा लोगों को शस्त्र देना ।

लोहाभिहारः (पुं०) तथा ।

लोहित (त्रि०) (तः । ता । तम) लाल रङ्ग की वस्तु, (नपुं०) रुधिर वा लोहू ।

लोहितकः (पुं०) लाल मणि ।

लोहितचन्दनम् (नपुं०) केसर, रक्तचन्दन ।

लोहिताङ्गः (पुं०) मङ्गल ग्रह ।

लौकायतिकः (पुं०) "लोकायतिक" में देखो ।

लौहम् (नपुं०) लोहा, सुवर्ण इत्यादि आठो धातु इस नाम से कहे जाते हैं ("लोह" में देखो)

—***—

# ( व )

व (अव्यय) तुल्यता अर्थ में (इव)।

वः (पुं०) वायु, वरुण, आश्वासन वा तसल्ली देना ।

वक्तव्य (त्रि०) (व्यः । व्या । व्यम्) बोलने के योग्य, निन्दा करने के योग्य, हीन अर्थात् किसी वस्तु से रहित, अधीन वा परतन्त्र ।

वक्तृ (त्रि०) (क्ता । क्त्री । क्तृ) बोलनेवाला = ली ।

वक्त्रम् (नपुं०) मुख ।

वक्र (त्रि०) (क्रः । क्रा । क्रम्)

टेढ़ा =ढ़ी, ( नपुं० ) नाद वा जल का भंवर अर्थात् जल के घूमने से जो उस में गड्ढा सा पड़ जाता है।

वक्षस ( नपुं० ) (क्ष:) छाती।

वङ्क्षणः (पुं०) जङ्घाओं का जोड़।

वचनम् ( नपुं० ) बात, बोलना।

वचस् ( नपुं० ) (चः) वचन।

वचा ( स्त्री ) बच औषधी।

वज्र (पुं० । नपुं०) ( ज्रः । ज्रम् ) इन्द्र का वज्र, ( पुं० ) सेंहुड़ वृक्ष, ( नपुं० ) हीरा।

वज्रद्रुः ( पुं० ) सेंहुड़ वृक्ष।

वज्रनिर्घोषः ( पुं० ) बिजुली का कड़कना।

वज्रपुष्पम् (नपुं०) तिल का फूल।

वज्रिन् ( पुं० ) ( ज्री ) इन्द्र।

वञ्चक ( त्रि० ) ( ञ्चकः । ञ्चिका । ञ्चकम) ठगनेवाला =ली, (पुं०) सियार ( पशु )।

वञ्चित ( त्रि० ) ( तः । ता । तम्) ठगागया =ई।

वञ्चुकः ( पुं० ) सियार ( पशु )।

वञ्जुलः (पुं०) बेंत वृक्ष, अशोक वृक्ष।

वट (त्रि०) (टः । टी । टम) डोरी वा रस्सी, (पुं०) बड़ का वृक्ष।

वटकः (पुं०) बड़ा (एक खाद्य वस्तु)

वटाकरः ( पुं० ) डोरी वा रस्सी।

वटी ( स्त्री ) तथा, गोली,

वड् (त्रि० ) ( डः । डा । डम् ) विस्तीर्ण वा फैलावटयुक्त [वड]

वणिक्पथः ( पुं० ) बाज़ार।

वणिज् (पुं०) ( क्—ग् ) बनियाँ।

वणिज्यम् ( नपुं० ) बनियाँ का रोज़गार।

वणिज्या ( स्त्री ) तथा।

वण्टकः (पुं०) बाँटनेवाला, बाँटा।

वत (अव्यय) खेद वा दुःख, दया, सन्तोष, आश्चर्य, "जैसी इच्छा हो वैसा करो" ऐसी आज्ञा देना।

वतोका ( स्त्री ) वह गैया जिसका गर्भ अकस्मात् गिर गया हो।

वत्स (पुं० । नपुं०) (त्सः । त्सम् ) (पुं०) बछवा, बच्चा वा लड़का, (नपुं०) छाती, वर्ष वा बरिस।

वत्सकः (पुं०) कोरैया एक पुष्पवृक्ष।

वत्सतरः ( पुं० ) छोटा बछवा।

वत्सनाभः ( पुं० ) बचनाग ( एक विष )।

वत्सरः ( पुं० ) वर्ष वा बरिस वा साल।

वत्सल ( त्रि० ) ( लः । ला । लम् ) दयालु।

वत्सादनी ( स्त्री ) गुरुच (एक ओषधीलता )।

वद (त्रि०) (दः । दा । दम्) बोल-

नेवाला = ली ।

वदनम् ( नपुं० ) मुख ।

वदान्य (त्रि०) (न्यः । न्या । न्यम्) दाता वा देनेवाला = ली, मीठा बोलनेवाला = ली ।

वदावद (त्रि०) ( दः । दा । दम् ) बोलनेवाला = ली ।

वधः (पुं०) मार डालना ।

वधूः (स्त्री) स्त्री, विवाहिता स्त्री, पतोहू, अस्वरक ओषधी ।

वध्य (त्रि०) (ध्यः । ध्या । ध्यम्) मारडालने के योग्य ।

वनम् (नपुं०) जङ्गल, पानी, बगीचा

वनतिक्तिका (स्त्री) सोनापाढ़ा ओषधी ।

वनप्रियः (पुं०) कोकिल पक्षी ।

वनमक्षिका (स्त्री) जङ्गली मक्खी वा डाँस ।

वनमालिन् (पुं०) (ली) विष्णु ।

वनमुद्गः (पुं०) मोट नामक अन्न ।

वनशृङ्गाटः (पुं०) गोखरू ओषधी।

वनस्पतिः ( पुं० ) वह वृक्ष जो बिना फूले फलता है ।

वनायुः ( पुं० ) हरिण वा मृग, एक देश का नाम ।

वनायुजः(पुं०) वनायु देश का घोड़ा

वनिता (स्त्री) स्त्री, अत्यन्त प्यारी स्त्री ।

वनीपकः ( पुं० ) याचक वा भिखमङ्गा ।

वनीयकः ( पुं० ) तथा ।

वनौकस् (पुं०) (काः) बन्दर पशु ।

वन्दनम् (नपुं०) नमस्कार करना।

वन्दा (स्त्री) अकासबंवर (एक लता)

वन्दारु ( त्रि० ) ( रुः । रुः । रु ) वन्दना वा नमस्कार करनेवाला = ली ।

वन्दि ( स्त्री ) (न्दिः—न्दी) कैदी वा जो कैद कियागया है ।

वन्दिन् ( पुं० ) (न्दी) राजा की स्तुति करनेवाला वा भाट ।

वन्ध्य ( त्रि० ) ( न्ध्यः । न्ध्या । न्ध्यम् ) बाँझ वा फलरहित ( वृक्ष इत्यादि ) ।

वन्या ( स्त्री ) वन का समूह वा बड़ा बन ।

वपनम् (नपुं०) मुण्डन वा मूड़ना।

वपा (स्त्री) बिल वा छिद्र, चरबी।

वपुष् (नपुं०) ( पुः ) देह वा शरीर।

वप्र ( पुं० । नपुं० ) ( प्रः । प्रम् ) धुस वा क़िला के अगल बगल जो मट्टी गाँज देते हैं जिस से शत्रु के तोप का गोला क़िले में असर न करै, घेरा, (पुं०) खेत, ( नपुं० ) सीसा धातु ।

वमः (पुं०) छाँट वा उलटी करना।

वमथुः ( पुं० ) तथा, हाथियों के सूंड़ का पानी ।

वमि ( स्त्री ) (मिः—मी) तथा ।

वयस् ( नपुं० ) ( यः ) पक्षी, अवस्था वा उमर, जवानी ।

वयस्थ (त्रि०)(स्थः । स्था । स्थम्) जवान वा तरुण, (स्त्री) आंवरा वृक्ष, ब्राह्मी एक लता, ककोड़ी वृक्ष ( ओषधी ) ।

वयस्य (त्रि०) (स्यः । स्या । स्यम्) मित्र, जवान, ( स्त्री ) सखी ।

वर ( त्रि० ) (रः । रा । रम्) श्रेष्ठ वा प्रधान वा मुख्य, ( पुं० ) देवता ने प्रसन्न हो कर जो दिया, दुलहा वा वर, (नपुं०) केसर, ( क्रियाविशेषण ) थोड़े अङ्गीकार अर्थ वा थोड़े प्रिय अर्थ में ।

वरट (पुं० । स्त्री) (टः । टा) गंधैली माछी, (स्त्री) हंस की स्त्री ।

वरण (पुं० । नपुं०) (णः । णम्) (पुं०) शहरपनाह, वरुण वृक्ष, ( नपुं० ) नेवता देना वा वरण करना ।

वरण्डः ( पुं० ) एक प्रकार का मुख का रोग ।

वरत्रा ( स्त्री ) हाथियों के शरीर के बीच में बाँधने के लिये चमड़े की डोरी, चमड़े की डोरी।

वरद ( त्रि० ) ( दः । दा । दम् ) वर देनेवाला = ली ।

वरवर्णिनी (स्त्री) अच्छे रङ्गवाली स्त्री, हरदी ।

वराङ्गम् ( नपुं० ) माथा, स्त्री का मूत्रद्वार ।

वराङ्गकम् ( नपुं० ) तज एक प्रकार की ओषधी ।

वराटक ( त्रि० ) ( टकः । टिका । टकम् ) ( पुं० । नपुं० ) डोरी वा रस्सी, ( पुं० ) कमलगट्टे का छाता, (पुं०। स्त्री) कौड़ी ।

वरारोहा ( स्त्री ) अच्छे चूतड़वाली स्त्री ।

वराशिः ( पुं० ) मोटा कपड़ा ।

वरासिः ( पुं० ) तथा ।

वराहः ( पुं० ) सूअर ।

वरिवसित (त्रि०) (तः । ता । तम्) शुश्रूषा वा सेवा कियागया = ई, ( नपुं० ) शुश्रूषा वा सेवा ।

वरिवस्या (स्त्री) सेवा वा खुशामद।

वरिवस्यित (त्रि०) (तः । ता । तम्) "वरिवसित" में देखो ।

वरिष्ठ ( त्रि० ) ( ष्ठः । ष्ठा । ष्ठम् ) अत्यन्त बड़ा, अत्यन्त श्रेष्ठ, ( नपुं० ) ताँबा धातु ।

वरी ( स्त्री ) सतावर ओषधी ।

वरीयस् (त्रि०) (यान् । यसी । यः) अत्यन्त बड़ा, अत्यन्त श्रेष्ठ ।

वरुणः (पुं०) एक देवता का नाम, एक वृक्ष ।

वरुणात्मजा (स्त्री) मद्य ।

वरूथः (पुं०) शस्त्र इत्यादि से रथ के बचाने के लिये लोहा इत्यादि से बना हुआ आवरण वा कलसा ।

वरूथिनी (स्त्री) सेना ।

वरेण्य (त्रि०) (ण्यः । ण्या । ण्यम्) वर्णन करने के योग्य, प्रधान वा मुख्य वा श्रेष्ठ ।

वर्करः (पुं०) बकरा पशु, जवान पशु ।

वर्गः (पुं०) समानों वा तुल्यों का समूह वा झुण्ड ।

वर्चस् (नपुं०) (र्चः) तेज वा प्रकाश वा चमक, विष्ठा ।

वर्चस्क (पुं० । नपुं०) (स्कः । स्कम) विष्ठा ।

वर्ण (पुं० । नपुं०) (र्णः । र्णम्) अक्षर, (पुं०) ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य और शूद्र, श्वेत पीला काला इत्यादि रङ्ग, हाथी पर का विछौना, स्तुति वा प्रशंसा ।

वर्णक (त्रि०) (र्णकः । र्णिका । र्णकम्) चन्दन, शरीर में लेपन के योग्य पीसा वा घंसा हुआ सुगन्धद्रव्य, (पुं०) कत्थक, (पुं० । स्त्री) नीला पीला इत्यादि रङ्ग, (स्त्री) सुवर्ण की उत्तमता ।

वर्णित (त्रि०) (तः । ता । तम्) वर्णन कियागया = है ।

वर्णिन् (पुं०) (र्णी) ब्रह्मचारी ।

वर्तकः (पुं०) बटेर एक पक्षी, घोड़े का खुर ।

वर्तन (त्रि०) (नः । ना । नम) रहने का जिस का स्वभाव है, वृत्ति वा जीविका करने का जिस का स्वभाव है, (नपुं०) जीविका वा जीवनोपाय, रहना ।

वर्तनी (स्त्री) मार्ग वा रस्ता ।

वर्त्तिः (स्त्री) बत्ती, शरीर में लेपन के योग्य पीसा वा घंसा हुआ सुगन्धद्रव्य ।

वर्त्तिका (स्त्री) बटेर पक्षी, बत्ती ।

वर्त्तिष्णु (त्रि०) (ष्णुः । ष्णुः । ष्णु) रहने का जिसका स्वभाव है, वृत्ति वा जीविका करने का जिस का स्वभाव है ।

वर्त्तुल (त्रि०) (लः । ला । लम्) गोल ।

वर्त्मन् (पुं० । नपुं०) (र्त्मा । र्त्म) मार्ग वा रस्ता, आँख की पलक ।

वर्त्मनी ( स्त्री ) तथा। [ वर्त्मनिः ]
वर्द्धम् ( नपुं० ) सीसा धातु ।
वर्द्धकः ( पुं० ) ब्रह्मदण्डी ओषधी।
वर्द्धकिः ( पुं० ) बढ़ई वा काठ का काम बनाने वाला।
वर्द्धन ( त्रि० ) ( नः । नी । नम् ) बढ़ने का जिस का स्वभाव है, बढ़ाने का जिस का स्वभाव है, काटने का जिस्का स्वभाव है, (स्त्री) कूंची वा झाड़ू, (नपुं०) छेदना, काटना, बढ़ना, बढ़ाना
वर्द्धमानः ( पुं० ) राजा इत्यादि धनपात्रों का घर, रेंड़ वृक्ष ।
वर्द्धमानकः ( पुं० ) "शराव" में देखो ।
वर्द्धिष्णु (त्रि०) (ष्णुः । ष्णुः । ष्णु) जिस का बढ़ने का स्वभाव है।
वर्द्ध्री ( स्त्री ) चमड़े की डोरी।
वर्मन् (नपुं०) ( र्म ) योद्धालोगों का कवच ।
वर्मितः (पुं०) जिस योद्धा ने कवच पहिना है।
वर्य्य (त्रि०) (र्य्यः। र्य्या। र्य्यम्) मुख्य वा प्रधान वा श्रेष्ठ, (स्त्री) अपनी इच्छा से पति को बरने वाली कन्या।
वर्वणा ( स्त्री ) माक्खी वा मक्खी।
वर्वरः ( पुं० ) ब्रह्मदण्डी ओषधी, एक देश का नाम, नीच, बाल।
वर्वरा ( स्त्री ) एक प्रकार की तरकारी ।
वर्वरी ( स्त्री ) तथा ।
वर्ष ( पुं० । नपुं० ) ( र्षः । र्षम् ) बरस वा देवतों का एक दिन, वृष्टि वा वर्षा, जम्बूद्वीप, स्थान।
वर्षवरः ( पुं० ) नपुंसक ।
वर्षाः, बहुवचन, ( स्त्री ) वर्षाकाल वा बरसात।
वर्षाभूः (पुं०) मेंढ़क (जलजन्तु)।
वर्षाभ्वी ( स्त्री) मेंडुकी ।
वर्षिष्ठ (त्रि०) (ष्ठः । ष्ठा । ष्ठम्) बहुत पुराना = नी, बहुत बुड्ढा = ड्ढी ।
वर्षीयस् (त्रि०) (यान् । यसी। यः) तथा ।
वर्षोपलः ( पुं० ) बनौरी ।
वर्ष्मन् ( नपुं० ) ( र्ष्म ) शरीर वा देह, प्रमाण वा नाप ।
वलक्ष ( त्रि० ) ( क्षः । क्षा। क्षम् ) श्वेत पदार्थ, (पुं०) श्वेत रङ्ग।
वलभी (स्त्री) घर में सब से ऊपर की कोठरी वा बंगला।
वलिर ( त्रि० ) ( रः । रा । रम् ) माँड़ा = ड़ी, टेरा = री वा ऐंचाताना = नी, काना = नी ।
वलीक (पुं० । नपुं०) (कः । कम्)

खपड़ा वा छान्ही की ओरी।
वल्क (पुं०। नपुं०)(ल्कः। ल्कम्) वृक्ष इत्यादि की छाल वा बोकला।
वल्कल (पुं०। नपुं०) (लः। लम्) तथा।
वल्गितम् (नपुं०) घोड़े की एक प्रकार की चाल अर्थात् ऊंची नीची जगह में आगे के देह को ऊंचा कर के और मुंह को सिकोर कर चलना।
वल्गु (त्रि०) (ल्गुः। ल्गुः। ल्गु) मनोहर।
वल्मीक (पुं०। नपुं०) (कः। कम्) बिम्बौट वा चिउंटियों की खनी हुई मट्टी की ढेर।
वल्लकी (स्त्री) वीणा (एक बाजा)
वल्लभ (त्रि०) (भः। भा। भम्) प्यारा=री, (पुं०) स्त्री का पति, अध्यक्ष वा अधिकारी वा मालिक, कुलीन घोड़ा।
वल्लरी (स्त्री) तुलसी इत्यादि का नया अङ्कुर वा मञ्जरी।
वल्ली (स्त्री) लता।
वल्लूर (त्रि०) (रः। रा। रम्) सूखा मांस। [वल्लुर]
वल्वजाः, बहुवचन, (पुं०) बगई एक घास।
वशः (पुं०) इच्छा, अधिकार।
वशा (स्त्री) स्त्री, बाँझ गाय, हथिनी, बेटी।
वशिक (त्रि०) (कः। का। कम्) खाली।
वशिर (पुं०। नपुं०) (रः। रम) (पुं०) गजपीपर ओषधी, (नपुं०) समुद्र का नोन। [वसिर]
वश्य (त्रि०) (श्यः। श्या। श्यम्) जो अपने वश में है।
वषट् (अव्यय) यज्ञों में देवता को घृतादि हवि देने में यह शब्द बोला जाता है।
वषट्कृत (त्रि०) (तः। ता। तम्) वषट् मन्त्र से अग्नि में डाला गया घृत इत्यादि होमद्रव्य।
वष्कयणी (स्त्री) बकेन गाय।
वसतिः (स्त्री) घर, रात्रि वा रात।
वसनम् (नपुं०) वस्त्र वा कपड़ा।
वसन्तः (पुं०) चैत और वैसाख महीने का ऋतु।
वसवः, अदन्त, बहुवचन, (पुं०) वसु नामक गणदेवता जो गिनती में ८ हैं।
वसा (स्त्री) मांस के भीतर की चरबी।
वसु (पुं०। नपुं०) (सुः। सु) (पुं०) किरण वा प्रकाश, अग्नि वा आग, कुबेर, गुम्मा भाजी,

( नपुं० ) पानी, धन, मणि।
वसुक (पुं० । नपुं०) (कः । कम्) ( पुं० ) मंदार वृक्ष, [ वसूकः ], (नपुं०) साँभरनोन [वसूकम्]।
वसुदेवः ( पुं० ) कृष्ण के पिता।
वसुधा ( स्त्री ) पृथ्वी वा भूमि।
वसुन्धरा ( स्त्री ) तथा।
वसुमती ( स्त्री ) तथा।
वस्तः ( पुं० ) बकरा पशु।
वस्ति (पुं० । स्त्री) (स्तिः । स्तिः) पेड़ू ( देह में नाभी के नीचे मूत्र रहने का स्थान )।
वस्तु ( नपुं० ) पदार्थ।
वस्त्रम् ( नपुं० ) कपड़ा।
वस्नः ( पुं० ) दाम वा मोल।
वस्नसा (स्त्री) वह नाड़ी वा नस जिस से अङ्ग प्रत्यङ्ग के जोड़ बंधे रहते हैं।
वहः ( पुं० ) बैल का काँधा।
वहिस् ( अव्यय ) (हिः) बाहर।
वह्निः ( पुं० ) अग्नि वा आग।
वह्निशिखम् ( नपुं० ) कुसुम (एक पुष्पवृक्ष)।
वह्निसंज्ञकः ( पुं० ) चीता नामक एक ओषधीकाष्ट।
वा ( अव्यय ) अथवा, तुल्यता, उपमा, अवधारण वा निश्चय।
वाक्पति (त्रि०) (तिः । तिः । ति) सुन्दर उत्कृष्ट बोलनेवाला = ली, ( पुं० ) बृहस्पति।
वाक्यम् ( नपुं० ) पदों का समूह।
वागीश ( त्रि० ) (शः । शा । शम्) "वाक्पति" में देखो।
वागुजी ( स्त्री ) बकुची ओषधी।
वागुरा ( स्त्री ) मृग बझाने की डोरी वा जाल।
वागुरिकः (पुं०) मृग बझानेवाला अर्थात् व्याध।
वाग्मिन् (त्रि० )( ग्मी । ग्मिनी । ग्मि) अच्छा बोलनेवाला = ली, (पुं०) नैयायिक वा न्यायशास्त्र का जाननेवाला।
वाङ्मयम् ( नपुं० ) शास्त्र।
वाङ्मुखम् ( नपुं० ) बोलने का प्रारम्भ।
वाचक ( त्रि० ) (चकः । चिका । चकम्) बोलनेवाला = ली, बाँचनेवाला = ली, ( पुं० ) अभिधेय अर्थ का बोध करानेवाला शब्द।
वाचस्पतिः ( पुं० ) बृहस्पति।
वाचाट ( त्रि० ) (टः । टा । टम्) व्यर्थ बड़ बड़ करनेवाला = ली।
वाचाल ( त्रि० ) (लः । ला । लम्) तथा।
वाचिक (त्रि०) (कः । की । कम्)

सन्देशवचन वा सन्देसा।
वाचोयुक्ति (त्रि०) (क्तिः। क्तिः। क्ति) "वाग्मिन्" में देखो।
वाचयमः (पुं०) मौनव्रती वा चुपचाप रहना जिस का व्रत है।
वाच् (स्त्री) (क्—ग्) वाणी, सरस्वती देवी।
वाजः (पुं०) कङ्क इत्यादि पक्षियों का पङ्ख जो बाण में लगा रहता है।
वाजपेयम् (नपुं०) एक यज्ञ।
वाजिदन्तकः (पुं०) अरूम वृक्ष।
वजिन् (पुं०) (जी) घोड़ा, पक्षी, बाण।
वाजिशाला (स्त्री) घोड़सार वा घोड़ों के बाँधने का स्थान।
वाञ्छा (स्त्री) इच्छा।
वाट (त्रि०) (टः। टी। टम) (पुं०) मार्ग, आच्छादन, (स्त्री) घर, नज़रबाग, कमर, (नपुं०) एक प्रकार का मुख का रोग, शरीर, प्रकार।
वाटरम् (नपुं०) सङ्कट।
वाट्यालका (स्त्री) "धाट्यालका" में देखो।
वाडव (पुं०। नपुं०) (वः। वम्) (पुं०) ब्राह्मण, बड़वानल, (नपुं०) घोड़ियों का झुण्ड।
वाडव्यम् (नपुं०) ब्राह्मणों का समूह।
वाणि (स्त्री) (णिः—णी) कपड़ा इत्यादि का बीनना।
वाणिजः (पुं०) बनियाँ।
वाणिज्यम् (नपुं०) बनियों का व्यापार अर्थात् खरीदना वा बेचना। [वणिज्यम्]
वाणिनी (स्त्री) नाचनेवाली स्त्री, दूती वा कुटनी।
वाणी (स्त्री) सरस्वती देवी, बोली।
वातः (पुं०) वायु वा हवा।
वातकः (पुं०) पटशण एक वृक्ष।
वातकिन् (त्रि०) (की। किनी। कि) जिस को वात वा बाइ का रोग है।
वातपोथः (पुं०) पलाश वृक्ष।
वातप्रमीः (पुं०) हुंड़ार वा भेंड़िया।
वातमृगः (पुं०) तथा।
वातरोगिन् (त्रि०) (गी। गिणी। गि) जिस को बाई का रोग है।
वातायनम् (नपुं०) खिड़की वा झरोखा।
वातायुः (पुं०) हरिण वा मृग।
वातूल (त्रि०) (लः। ला। लम्) बावला = ली, (पुं०) बवण्डर वा घूमताहुआ हवा। [वातुल]
वात्या (स्त्री) बवण्डर।

वात्मकम (नपुं०) बक्कवों का झुण्ड।

वादित्रम् ( नपुं० ) बाजा ( वीणा, सितार इत्यादि )।

वाद्यम् ( नपुं० ) तथा।

वाट्यालका ( स्त्री ) बरियार वा बरियरा ओषधी। [वात्यालका]

वान (त्रि०) (नः। ना—नी। नम्) सूखाहुआ फल।

वानप्रस्थः ( पुं० ) ब्रह्मचर्यादि आश्रमों में का तृतीय आश्रम [ वानप्रस्थ्यः ], तृतीय आश्रम-वाला ( जिस आश्रम में स्त्री के सहित वा अकेले जाकर जङ्गल में रहते हैं ), महुवा वृक्ष।

वानरः ( पुं० ) बन्दर पशु।

वानस्पत्यः ( पुं० ) वह वृक्ष जिस में फूल से फल उत्पन्न हो।

वानायुः ( पुं० ) हरिण वा मृग।

वानीरः ( पुं० ) बेंत का वृक्ष।

वानेयम् ( नपुं० ) मोथा घास।

वापः ( पुं० ) बीज वा बीया का बोना वा खेत में रोपना, खेत।

वापी ( स्त्री ) बावली।

वाप्यम् (नपुं०) कुट्ट एक ओषधी।

वाम ( त्रि० ) ( मः। मा। मम् ) बाँयां = यें, टेढ़ा = ढ़ी, सुन्दर, (पुं०) कामदेव, स्त्री का स्तन, शिव, शत्रु, ( स्त्री ) स्त्री।

वामदेवः ( पुं० ) शिव।

वामन ( त्रि० ) ( नः। ना। नम् ) बवना वा अत्यन्त नाटा = टी, (पुं०) विष्णु का पाँचवां अवतार, दक्षिण दिशा का दिग्गज

वामलूरः ( पुं० ) बिम्बौट ( "वल्मीक" में देखो )।

वामलोचना (स्त्री) वह स्त्री जिस की आँखें सुन्दर हैं।

वामा ( स्त्री ) स्त्री।

वामी ( स्त्री ) घोड़ी, गदही, हथिनी, सियारिन, खच्चरी।

वायदण्डः ( पुं० ) कपड़ा बीनने का दण्ड।

वायवीपतिः (पुं०) वायु वा हवा।

वायसः ( पुं० ) कौआ पक्षी।

वायसारातिः (पुं०) कौआ का शत्रु अर्थात् उल्लू पक्षी।

वायसी ( स्त्री ) कौआ पक्षी की स्त्री, काकजङ्घा वा काकशिवा ओषधी।

वायसोली ( स्त्री ) ककोड़ी एक ओषधीवृक्ष।

वायुः ( पुं० ) हवा।

वायुसखः (पुं०) अग्नि वा आग।

वारः ( पुं० ) सोम मङ्गल बुध इत्यादि ७वार, अवसर, समूह।

वारणः ( पुं० ) हाथी।

वारणबुषा ( स्त्री ) केला वृक्ष ।
वारणबुसा ( स्त्री ) तथा ।
वारमुख्या ( स्त्री ) वेश्या ।
वारबाण ( पुं० । नपुं० ) ( णः । णम् ) योद्धों के पहिनने का कवच ।
वारस्त्री ( स्त्री ) वेश्या ।
वाराही ( स्त्री ) वराहशक्ति देवता, वाराहीकन्द ओषधी ।
वारि ( नपुं० ) पानी ।
वारिदः ( पुं० ) मेघ ।
वारिपर्णी (स्त्री) जलकुम्भी (जल में की एक प्रकार की घास ) ।
वारिवाहः ( पुं० ) मेघ ।
वारी ( स्त्री ) हाथियों के बांधने का स्थान, गगरी ।
वारुणी ( स्त्री ) मद्य, वरुण की दिशा अर्थात् पश्चिम दिशा ।
वार् ( नपुं० ) ( वाः ) पानी ।
वार्त्त (त्रि०) ( र्त्तः । र्त्ता । र्त्तम् ) रोगरहित वा नीरोग, (स्त्री) समाचार, जीविका वा जीवनोपाय, (नपुं०) कुशल, थोड़ा, निस्सार वा बेदम ।
वार्त्ताकि ( स्त्री ) ( किः—की ) जङ्गली भण्टा ।
वार्त्ताकिन् ( पुं० ) ( की ) तथा ।
वार्त्तावहः ( पुं० ) कांधे से कांवर ढोनेवाला, हलकारा वा दूत ।
वार्द्धकम् ( नपुं० ) बुढ़ाई, बूढ़ों वा बुड्ढों का समूह ।
वार्द्धक्यम् ( नपुं० ) तथा ।
वार्द्धुषिः ( पुं० ) ब्याज वा सूद खानेवाला ।
वार्द्धुषिकः ( पुं० ) तथा ।
वार्मणम् ( नपुं० ) कवचों का समूह ।
वार्षिक ( त्रि० ) (कः । की । कम् ) बरसाती, ( नपुं० ) "त्रायमाणा" ओषधी ।
वालुकम् ( नपुं० ) वालुका नामक गन्धद्रव्य ।
वालुका ( स्त्री ) तथा, बालू ।
वाल्कम् ( नपुं० ) वृक्ष के छाल से बना वस्त्र ।
वाल्मीकिः ( पुं० ) एक ऋषि का नाम । [ वल्मिकिः ] [ वल्मीकः ]
वावदूक (त्रि०) ( कः । का । कम् ) बहुत बोलनेवाला = ली ।
वाशिका ( स्त्री ) अडूस एक वृक्ष । [ वासिका ]
वाशितम् ( नपुं० ) सियार इत्यादि वनपशुओं का बोलना ।
वाष्पम् ( नपुं० ) भाफ अर्थात् गरम वस्तु पर पानी डालने से धुंआँ के सदृश ऊपर उठती हुई

वस्तु, आँसू, गरमी ।[ बाष्पः ]
वासः ( पुं० ) रहना वा टिकना, घर ।
वासकः ( पुं० ) अड़ूस एक वृक्ष ।
वासगृहम् ( नपुं० ) रहने का घर, घर का मध्यभाग वा भिचला हिस्सा ।
वासन्ती (स्त्री) एक तरह का कुन्द जो वसन्त में फूलता है ।
वासयोगः (पुं०) सुगन्धचूर्ण ( मसाला इत्यादि, जिस के डालने वा लगाने से सुगन्ध हो ) ।
वासर (पुं० । नपुं०) ( रः । रम् ) दिवस वा दिन ।
वासवः ( पुं० ) इन्द्र ।
वासस् ( नपुं० ) ( सः ) वस्त्र वा कपड़ा ।
वासित ( त्रि० ) ( तः । ता । तम् ) फूल इत्यादि से बासा हुआ = ई ( कपड़ा इत्यादि ), ( स्त्री ) हथिनी ।
वासुकिः (पुं०) एक सर्पों का राजा ।
वासुदेवः ( पुं० ) कृष्ण ।
वासूः ( स्त्री ) बाला स्त्री अर्थात् कुमारी ( नाट्य में ) ।
वास्तु ( पुं० नपुं० ) (स्तुः । स्तु) घर की भूमि, घर ।
वास्तुकम् (नपुं०) बथुवा भाजी ।
वास्तूकम् ( नपुं० ) तथा ।
वास्तोष्पतिः ( पुं० ) इन्द्र ।
वास्त्र (त्रि०) ( स्त्रः ।स्त्रा । स्त्रम् ) वस्त्र वा कपड़े से घेराहुआ (रथ इत्यादि ) ।
वाहः ( पुं० ) घोड़ा, बारहमनी तौल वा बटखरा ।
वाहद्विषत् (पुं०) (न्) भैंसा पशु ।
वाहनम् ( नपुं० ) सवारी ।
वाहसः ( पुं० ) अजगर सर्प ।
वाहित्थम् ( नपुं० ) हाथियों के कुम्भ के नीचे का स्थान, हाथियों के ललाट के नीचे का स्थान ।
वाहिनी ( स्त्री ) वह सेना जिस में ८१ हाथी ८१ रथ २४३ घोड़े और ४०५ पैदल रहते हैं ( यह तीन गण की वाहिनी कहलाती है), सेना, नदी ।
वाहिनीपतिः ( पुं० ) समुद्र, सेनापति ।
विः ( पुं० ) पक्षी ।
विकङ्कतः ( पुं० ) कंठेर वृक्ष ।
विकच (त्रि०) ( चः । चा । चम् ) फूला हुआ ( वृक्ष इत्यादि ) ।
विकट ( त्रि० ) ( टः । टा । टम् ) भयङ्कर वा जिस को देखने से डर लगे ।

विकर्त्तनः (पुं०) सूर्य्य।

विकल (त्रि०) (लः। ला। लम्) व्याकुल वा घबराया हुआ = ई, शून्य वा खाली वा रहित।

विकलाङ्ग (त्रि०) (ङ्गः। ङ्गी। ङ्गम्) किसी अङ्ग से हीन वा रहित वा किसी अङ्ग से अधिक (जैसे किसी को आधा हाथ नहीं रहता और किसी को ६ अंगुलियाँ रहती हैं)।

विकषा (स्त्री) मजीठ (एक रङ्ग की लकड़ी)।

विकसा (स्त्री) तथा।

विकसित (त्रि०) (तः। ता। तम्) फूला हुआ (वृक्ष इत्यादि)।

विकस्वर (त्रि०) (रः। रा। रम्) जिस का फूलने का स्वभाव है, प्रकाश वा प्रकट होनेवाला वा फैलने वाला = ली (शब्द इत्यादि)।

विकारः (पुं०) "परिणाम" में देखो।

विकाशिन् (त्रि०) (शी। शिनी। शि) फूलनेवाला (वृक्ष इत्यादि), फूलाने वाला वा विकास करने वाला।

विकासिन् (त्रि०) (सी। सिनी। सि) तथा।

विकिरः (पुं०) पक्षी।

विकिरणः (पुं०) मंदार वृक्ष।

विकीरणः (पुं०) तथा।

विकुर्वाण (त्रि०) (णः। णा। णम्) प्रसन्नचित्तवाला वा खुशदिल।

विकृत (त्रि०) (तः। ता। तम्) बिगड़ाहुआ = ई, घिनौना अर्थात् जिस को देखने से घिन उत्पन्न हो, रोगी वा बीमार, (नपुं०) बीभत्स रस।

विकृतिः (स्त्री) "विकार" में देखो, विरुद्ध क्रिया वा नियम से विपरीत करना।

विक्रमः (पुं०) पराक्रम, चलना वा पैर उठा कर रखना।

विक्रयः (पुं०) बेंचना।

विक्रयिकः (पुं०) बेंचनेवाला।

विक्रान्तः (पुं०) शूर वा पराक्रमवाला वा सामर्थ्यवाला।

विक्रिया (स्त्री) "विकृति" में देखो।

विक्रेतृ (पुं०) (ता) बेंचनेवाला।

विक्रेय (त्रि०) (यः। या। यम) बेंचने के योग्य वस्तु।

विक्लव (त्रि०) (वः। वा। वम्) शोक से जिस का अङ्ग भङ्ग हो गया है।

विक्षावः (पुं०) छींक।

विख्य (त्रि०) (ख्यः। ख्या। ख्यम्)

रोग इत्यादि से जिसकी नाक कट गई हो अर्थात् नकटा = टी।
विख (त्रि०) (खः । खा । खम्) तथा
विख्रु (त्रि०) (ख्रुः । ख्रुः । ख्रु) तथा ।
विगत (त्रि०) (तः । ता । तम्) प्रकाशरहित, नष्ट वा जिसका नाश हुआ है ।
विग्र (त्रि०) (ग्रः । ग्रा । ग्रम्) नकटा = टी ।
विग्रहः (पुं०) देह वा शरीर, कलह वा झगड़ा वा युद्ध, विस्तार ।
विघसः (पुं०) देव पितृ अतिथि गुरु इत्यादि के भोजन का शेष वा जो भोजन से बचगया, भोजन ।
विघ्नः (पुं०) विघ्न वा रोकावट ।
विघ्नराजः (पुं०) गणेश ।
विचक्षण (त्रि०) (णः । णा । णम्) चतुर ।
विचयनम् (नपुं०) तात्पर्य से वस्तु का खोजना वा परखना ।
विचर्चिका (स्त्री) मोटी खजुली (रोग)।
विचारणा (स्त्री) विचार ।
विचारित (त्रि०) (तः । ता । तम्) विचारागया = ई ।
विचिकित्सा (स्त्री) संशय वा संदेह।
विच्छन्दकः (पुं०) राजा का एक प्रकार का घर । [ विच्छर्दकः ]
विच्छाय (त्रि०) (यः । या । यम्) छायारहित स्थान, (नपुं०) पक्षियों की छाया ।
विच्छित्तिः (स्त्री) स्त्रियों का एक प्रकार का हाव जिस में कि स्त्री लोग अपने रूप के घमण्ड से गहना वा आभूषण का अनादर करती हैं ।
विजन (त्रि०) (नः । ना । नम्) एकान्त वा जनरहित स्थान ।
विजयः (पुं०) जीत ।
विजिल (त्रि०) (लः । ला । लम्) चिकना वा बिछलहल का स्थान अर्थात् जिस पर मनुष्य बिछलाय कर गिरैं ।
विज्जन (त्रि०) (नः । ना । नम्) तथा ।
विज्जल (त्रि०) (लः । ला । लम्) तथा ।
विज्ञ (त्रि०) (ज्ञः । ज्ञा । ज्ञम्) निपुण वा चतुर वा पण्डित ।
विज्ञात (त्रि०) (तः । ता । तम्) प्रसिद्ध वा जानाहुआ = ई ।
विज्ञानम् (नपुं०) कारीगरी, शास्त्र का ज्ञान, लोक में चतुरई ।

विटः (पुं०) स्त्री का उपपति वा यार वा दोस्त, पर्वत, नोन, मूसा, खैर ।

विटङ्क (पुं० । नपुं०) (ङ्कः । ङ्कम्) घर के किनारे पर बनाया हुआ पक्षियों के रहने का स्थान ।

विटप (पुं० । नपुं०) (पः । पम्) पत्ता, शाखा पत्ता इत्यादि का समूह, घास तृण इत्यादि का गुच्छा, वृक्ष वा पेड़ ।

विटपिन् (पुं०) (पी) वृक्ष वा पेड़ ।

विट्खदिरः (पुं०) एक प्रकार का दुर्गन्धी खैर जिस को गुह्रागर भी कहते हैं ।

विट्चरः (पुं०) गाँव का सूअर ।

विडम् (नपुं०) खारीनोन ।

विडङ्ग (पुं० । नपुं०) (ङ्गः । ङ्गम्) बाभीरङ्ग ओषधी ।

विडालः (पुं०) बिलार (पशु) ।

विडौजस् (पुं०) (जाः) इन्द्र ।

वितण्डा (स्त्री) बखेड़ा ।

वितथ (त्रि०) (थः । था । थम्) झूठा (वचन इत्यादि), (नपुं०) मिथ्या वा झूठ ।

वितरणम् (नपुं०) दान वा देना ।

वितर्दि (स्त्री) (र्दिः—र्दी) घर के अंगना इत्यादि में बनाया हुआ बैठने का स्थान वा बैठक ।

वितस्तिः (स्त्री) हाथ का बित्ता ।

वितान (त्रि०) (नः । ना । नम्) शून्य वा एकान्त वा खाली, (नपुं०) यज्ञ, विस्तार, (पुं० । नपुं०) चंदवा ।

वितुन्नम् (नपुं०) बिसखपरिया ओषधी ।

वितुन्नक (पुं० । नपुं०) (कः । कम्) (पुं०) भुंई भंवरा, (नपुं०) धनियाँ, तुतिया ।

वितंसः (पुं०) मृग पक्षी इत्यादि के बझाने की वस्तु (जाल इत्यादि) ।

वित्त (त्रि०) (त्तः । त्ता । त्तम्) ख्यात वा प्रसिद्ध (नपुं०) धन ।

विदरः (पुं०) फटना वा दो फाँक हो जाना ।

विदलम् (नपुं०) फराठी, बाँस से बना हुआ एक पात्र ।

विदारकः (पुं०) बावली तलाव इत्यादि में पानी आने के लिये खना हुआ कूंवाँ वा बड़ा गड़हा ।

विदारी (स्त्री) भुंइ कोंहड़े की जड़, भुंइ कोंहड़े का फूल, सफेद भुंइ कोंहड़ा ।

विदारीगन्धा (स्त्री) शालपर्णी ओषधी । [ विदारिगन्धा ].

विदित (त्रि०) (तः । ता । तम्)

जानाहुआ = ई, प्रसिद्ध, अङ्गीकार किया हुआ = ई।
विदिश् (स्त्री) (क्—ग्) दो दिशाओं के बीच का कोना।
विदुः (पुं०) हाथियों के दोनों कुम्भों के बीच का स्थान।
विदुर (त्रि०) (रः। रा। रम्) जाननेवाला = ली, धृतराष्ट्र का अन्यमाता से उत्पन्न हुआ एक भाई, बेंत।
विदुलः (पुं०) पानी का बेंत।
विद्दलः (पुं०) बेंत।
विद्ध (त्रि०) (द्धः। द्धा। द्धम्) छेदागया = ई, फाड़ागया = ई
विद्धकर्णी (स्त्री) सोनापाढ़ा औषधी
विद्या (स्त्री) वेद शास्त्र इत्यादि का ज्ञान।
विद्याधरः (पुं०) एक देवजाति।
विद्युत् (स्त्री) बिजुली।
विद्रधिः (पुं०। स्त्री) पेट इत्यादि कोमल स्थान का फोड़ा।
विद्रवः (पुं०) भागना।
विद्रुत (त्रि०) (तः। ता। तम्) भागगया = ई, टेवलगया = ई
विद्रुमः (पुं०) मूंगा एक मणि।
विद्रुमलता (स्त्री) मालकंगुनी औषधी।
विद्वस् (त्रि०)(द्वान्। दुषी। द्वत्) पण्डित वा जानकार, (पुं०) बुध।
विद्विष् (पुं०) (ट्—ड्) शत्रु वा वैरी
विद्वेषः (पुं०) शत्रुता वा वैर।
विधवा (स्त्री) राँड़ स्त्री अर्थात् जिस का पति मरगया है।
विधा (स्त्री) प्रकार वा तरह, मजूरी वा तलब, क्रिया वा कर्म वा काम।
विधातृ (त्रि०) (ता। त्री। तृ) करनेवाला = ली, (पुं०) ब्रह्मा।
विधिः (पुं०) ब्रह्मा, करना, भाग्य, धर्मशास्त्र, आज्ञा देना।
विधुः (पुं०) चन्द्र, विष्णु, राक्षस, कपूर।
विधुत (त्रि०) (तः। ता। तम्) त्याग कियागया वा छोड़ दियागया वा फेंक दियागया = ई, हिलायागया = ई।
विधुन्तुदः (पुं०) राहु (एक ग्रह)।
विधुर (त्रि०) (रः। रा। रम्) पीड़ित वा दुःखित वा क्षोभित, (नपुं०) अत्यन्त वियोग वा जुदाई।
विधुवनम् (नपुं०) कंपाना वा हिलाना।
विधूननम् (नपुं०) तथा। [ विधुननम् ]
विधेय (त्रि०) (यः। या। यम्)

वगइत्न वा कहना माननेवा- ला = ली ।
विनयः (पुं०) नम्रता, शिक्षा, बिन्ती
विना ( अव्यय ) बिना वा बगैर ।
विनायकः ( पुं० ) गणेश देवता, बुद्ध एक विष्णु का नवम अव- तार, गरुड़ पक्षी ।
विनाशः ( पुं० ) नाश वा मरना ।
विनीत ( त्रि० ) ( तः । ता । तम् ) विनययुक्त, शिक्षित वा सिखा- याहुआ = ई. (पुं०) सुन्दर च- लनेवाला घोड़ा ।
विनीतक ( पुं० । नपुं० ) ( कः । कम् ) मनुष्य की सवारी ( पा लकी डोली इत्यादि ) ।
विन्दु ( त्रि० ) ( न्दुः । न्दुः । न्दु ) जाननेवाला = ली, (पुं०) बूंद ।
विन्दुकः ( पुं० ) छोटा बूंद, ति- लक वा टीका ।
विन्ध्यः (पुं०) एकपर्वत का नाम ।
विन्न ( त्रि० ) ( न्नः । न्ना । न्नम् ) विचाराहुआ = ई, वा विचा- रागया = ई, प्राप्त हुआ = ई वा मिला = ली ।
विन्यस्त (त्रि०) (स्तः । स्ता । स्तम्) स्थापित ।
विपक्ष (त्रि०) ( क्षः । क्षा । क्षम् ) शत्रु वा वैरी ।
विपञ्ची (स्त्री) वीणा (एक बाजा) ।
विपणः ( पुं० ) बेंचना ।
विपणि (पुं० । स्त्री) (णिः । णि- णी ) बजार की राह, बजार वा हाट, दूकान ।
विपत्तिः (स्त्री) विपत् वा आफत ।
विपथः ( पुं० ) खराब रस्ता ।
विपद् ( स्त्री ) ( त्—द् ) विपत्ति वा आफत ।
विपर्ययः (पुं०) विपरीत वा उलटा ।
विपर्यासः ( पुं० ) क्रम का उल्ल- ङ्घन वा विपरीत ।
विपश्चित् ( पुं० ) पण्डित ।
विपादिका ( स्त्री ) बेवाय ( एक पैर का रोग, जो पैर को फा- ड़ता है ) ।
विपाशा ( स्त्री ) एक नदी ।
विपाश् ( स्त्री ) ( ट्—ड् ) तथा ।
विपिनम् (नपुं०) वन वा जङ्गल ।
विपुल (त्रि०) ( लः । ला । लम् ) विस्तीर्ण वा विस्तारयुक्त, बहुत, ( स्त्री ) पृथिवी ।
विप्रः ( पुं० ) ब्राह्मण ।
विप्रकारः (पुं०) अपकार वा बुराई ।
विप्रकृत (त्रि०) ( तः । ता । तम् ) हरायागया = ई, अनादर कि- यागया वा बहुत धिक्कारागया = ई ।

विप्रकृष्ट (त्रि०) (ष्टः। ष्टा। ष्टम्) दूरवाला = ली, (नपुं०) दूर।
विप्रतीकारः (पुं०) दूर करना वा हटा देना।
विप्रतीसारः (पुं०) पश्चात्ताप वा पछतावा।
विप्रयोगः (पुं०) वियोग वा जुदाई।
विप्रलब्ध (त्रि०) (ब्धः। ब्धा। ब्धम्) ठगागया = ई।
विप्रलम्भः (पुं०) अङ्गीकार किए हुए का पूरा न करना, वियोग वा जुदाई।
विप्रलापः (पुं०) परस्पर विरुद्ध वा उलटापुलटा बोलना (जैसा मतवाले आपस में बोलते हैं)।
विप्रश्निका (स्त्री) ज्योतिषविद्या की जाननेवाली स्त्री जो लक्षण पहिचान कर भला वा बुरा बता दे सकती है।
विप्रुष् (स्त्री) (ट्—ड्) जल का कण वा छोटा बूंद वा छीटा।
विप्लवः (पुं०) लूट वा डाँका वा प्रलय वा उलट पुलट हो जाना।
विबन्धः (पुं०) मल मूत्र की रोकावट।
विबुधः (पुं०) देवता।
विभवः (पुं०) धन, सामर्थ्य।
विभाकरः (पुं०) सूर्य्य।
विभावरी (स्त्री) रात्रि वा रात।
विभावसुः (पुं०) अग्नि वा आग, सूर्य्य।
विभूतिः (स्त्री) सम्पत्ति, अणिमा इत्यादि ८ सिद्धि (१ अणिमा, २ महिमा, ३ गरिमा, ४ लघिमा, ५ प्राप्तिः, ६ प्राकाम्यम्, ७ ईशित्वम्, ८ वशित्वम्)।
विभूषणम् (नपुं०) अलङ्कार (कपड़ा गहना इत्यादि), सिँगारना।
विभ्रमः (पुं०) स्त्रियों का एक प्रकार का हाव अर्थात् मन का ठिकाने न रहना, भ्रान्ति।
विभ्राज् (पुं०) (ट्—ड्) अत्यन्त शोभमान वा प्रकाशमान।
विमनस् (त्रि०) (नाः। नाः। नः) व्याकुल वा घबड़ायाहुआ = ई।
विमयः (पुं०) अदल बदल वा एक वस्तु देकर दूसरी वस्तु लेना।
विमर्दनम् (नपुं०) मर्दन करना वा मलना वा उबटना (देह में केशर इत्यादि का)।
विमला (स्त्री) सीकाकाई (एक वृक्ष की छीमी)।
विमातृजः (पुं०) माता के सवत का लड़का।
विमान (पुं०। नपुं०) (नः।

नम् ) देवतों का रथ वा उड़न-खटोला ।
विम्ब (पुं० । नपुं० ) ( म्बः । म्बम् ) मण्डल, (पुं० ) प्रति-विम्ब, (नपुं०) कुन्दरू तरकारी।
विम्बिका (स्त्री) कुन्दरू तरकारी।
वियत् (नपुं० ) आकाश ।
वियद्गङ्गा ( स्त्री ) आकाशगङ्गा।
वियमः (पुं० ) संयम ( योगाभ्यास का एक अङ्ग ) ।
वियात (त्रि०) ( तः । ता । तम् ) ढीठा = ठी ।
वियामः (पुं०) "वियम" में देखो।
विरञ्चिः (पुं०) ब्रह्मा । [विरिञ्चिः] [ विरिञ्चः ]
विरतिः ( स्त्री ) विशेष प्रीति, रुकजाना वा रोकावट, बन्द कर देना ।
विरल ( त्रि० ) (लः । ला । लम् ) बीडर वा छितिरबितिर ।
विराज् ( पुं० ) ( ट्—ड् ) आदिपुरुष, क्षत्रिय ( एक वर्ण ) ।
विरावः ( पुं० ) शब्द ।
विरिञ्चः ( पुं० ) ब्रह्मा ।
विरिञ्चिः ( पुं० ) तथा ।
विरिणम् ( नपुं० ) उजाड़ स्थान, ऊसर । [वीरिणम्] [ इरणम्] [ ईरणम् ]
विरूपाक्षः ( पुं० ) शिव ।
विरोचनः ( पुं० ) सूर्य्य, प्रह्लाद-नामक दैत्य के पुत्र का नाम, चन्द्र, अग्नि ।
विरोधः ( पुं० ) विरोध वा बिगाड़, विरोधालङ्कार ( साहित्य में ) ।
विरोधनम् ( नपुं० ) विरोध वा बिगाड़, वैर करना ।
विलक्ष (त्रि०) ( क्षः । क्षा । क्षम् ) लज्जित वा लजायाहुआ = ई, आश्चर्य्ययुक्त ।
विलक्षणम् ( नपुं० ) विचित्र ।
विलम्बितम् ( नपुं० ) देरी ।
विलम्भः ( पुं० ) अत्यन्त दान ।
विलापः ( पुं० ) पछतावा करना वा पछतावा से बोलना ।
विलासः ( पुं० ) एक स्त्रियों का हाव अर्थात् पति के मिलने पर बैठने उठने में एक प्रकार का देह ऐंठना वा जँभाना ।
विलीन (त्रि०) ( नः । ना । नम् ) छिपगया वा गायब हो गया = ई, टेघलगया = ई ।
विलेपनम् ( नपुं० ) "गात्रानुलेपनी" में देखो, केसर इत्यादि से देह में मर्दन करना ।
विलेपित (त्रि०) ( तः । ता । तम् )

किसी सुगन्धद्रव्य से उबटा-
हुआ = ई, ( नपुं० ) उबटना।
विलेपी (स्त्री) लपसी (एक भोज्य-
वस्तु ) ।
विवधिकः (पुं०) काँवर ढोनेवाला,
बँहगी ढोनेवाला ।
विवरम् ( नपुं० ) बिल वा छिद्र ।
विवर्ण (त्रि०) ( र्णः । र्णा । र्णम् )
वह वस्तु जिस का रङ्ग बदल
गया है वा फीका पड़ गया है,
अधम वा नीच ।
विवश ( त्रि० ) ( शः । शा । शम् )
परवश हो गया = ई अर्थात्
जो अपने इख्तियार में नहीं,
"अरिष्टदुष्टधी" में देखो ।
विवस्वत् ( पुं० ) ( स्वान् ) सूर्य,
देवता ।
विवादः (पुं०) झगड़ा वा कलह ।
विवाहः ( पुं० ) व्याह ।
विविक्त (त्रि०) ( क्तः । क्ता । क्तम् )
एकान्त वा जनरहित स्थान,
शुद्ध वा पवित्र ।
विविध (त्रि०) ( धः । धा । धम् )
नाना प्रकार का वा अनेक प्र-
कार का ( पदार्थ ) ।
विवेकः ( पुं० ) विवेक वा निर्णय,
प्रकृति पुरुष इत्यादि साङ्ख्य-
शास्त्रोक्त तत्वों का ज्ञान ।
विव्वोकः ( पुं० ) स्त्रियों का एक
प्रकार का हाव अर्थात् वाञ्छित
वा इष्ट के प्राप्ति भये पर भी गर्व
से उसका अनादर करना ।
विशङ्कट (त्रि०) ( टः । टा—टी ।
टम् ) विस्तारयुक्त वा बड़ा।
विशद ( त्रि० ) ( दः । दा । दम् )
स्वच्छ वा निर्मल, श्वेत रङ्गवा-
ला = ली ।
विशरः ( पुं० ) मार डालना ।
विशल्या ( स्त्री ) गुरुच ओषधी,
इन्द्रपुष्पी ओषधी, अग्नि की
शिखा वा आगकी लौर, द-
न्तिका ओषधी ।
विशसनम् (नपुं०) मार डालना ।
विशाखः ( पुं० ) स्वामिकार्तिक
देवता ।
विशाखा (स्त्री) एक नक्षत्र वा तारा
विशाथः (पुं०) पहरूदार इत्यादि
जागनेवालों का अपने पारी से
सूतना ।
विशारणम् (नपुं०) मार डालना।
विशारद (त्रि०) ( दः । दा । दम् )
विद्वान् वा जानकार, चतुर,
ढीठा = ठी ।
विशाल (त्रि०) ( लः । ला । लम )
बड़ा = ड़ी, (स्त्री) एक नगरी,
इन्द्रायन एक ओषधी ।

विशालता (स्त्री) लम्बाई चौड़ाई वा बड़ाई वा विस्तार ।

विशालत्वच् ( पुं० ) ( क्—ग् ) छितिउन एक वृक्ष ।

विशिखः ( पुं० ) बाण ।

विशिखा ( स्त्री ) गली ।

विशेषक ( पुं० । नपुं० ) ( कः । कम् ) कस्तूरी इत्यादि सुगन्धद्रव्य से किया हुआ तिलक, वे ३ श्लोक जिन का अन्वय एक ही में रहता है ।

विश् ( पुं० । स्त्री ) ( ट्—ड् । ट्—ड् ) ( पुं० ) वैश्य, मनुष्य, ( स्त्री ) विष्ठा ।

विश्रम्भः ( पुं० ) विश्वास, केलि वा क्रीड़ा में कलह, प्रेम वा प्रीति, मार डालना ।

विश्राणनम् ( नपुं० ) दान ।

विश्रावः ( पुं० ) अत्यन्त ख्याति वा प्रसिद्धि ।

विश्रुत ( त्रि० ) ( तः । ता । तम् ) ख्यात वा प्रसिद्ध वा मशहूर ।

विश्व (त्रि०) (श्वः । श्वा । श्वम् ) समग्र वा सम्पूर्ण का सब, (नपुं०) संसार वा जगत, (स्त्री। नपुं० ) सोंठ ओषधी, ( पुं०, बहुवचनान्त ) विश्वनामक गणदेवता ( विश्वेदेवाः ) जो गिनती में तेरह हैं, ( स्त्री ) अतीस ओषधी ।

विश्वकद्रुः ( पुं० ) वह कुत्ता जो शिकार करने में चतुर है ।

विश्वकर्मन् ( पुं० ) ( र्मा ) देवतों का बढ़ई, सूर्य ।

विश्वकेतुः ( पुं० ) कामदेव, अनिरुद्ध ( प्रद्युम्न का पुत्र ) ।

विश्वभेषजम् (नपुं०) सोंठ ओषधी।

विश्वम्भरः ( पुं० ) विष्णु ।

विश्वम्भरा (स्त्री) पृथिवी वा भूमि।

विश्वसृज् ( पुं० )(ट्—ड) ब्रह्मा ।

विश्वस्त ( त्रि० ) ( स्तः । स्ता । स्तम् ) विश्वास किया गया वा विश्वास को प्राप्त भया = ई, (स्त्री) रण्डा वा जिस का पति मर गया ऐसी स्त्री ।

विश्वामित्र. ( पुं० ) एक मुनि ।

विश्वावसुः ( पुं० ) एक देवतों का गवैया

विश्वासः ( पुं० ) विश्वास वा भरोसा ।

विषम् ( नपुं० ) विष वा ज़हर, पानी ।

विषधरः (पुं०) विषवाला सर्प, मेघ।

विषम ( त्रि० ) ( मः । मा । मम् ) अयुग्म अर्थात् १-३-५ इत्यादि सङ्ख्या जिस को ताक कहते

हैं, टेढ़ामेढ़ा = ढ़ी, ऊँचाखा-
ला ( मार्ग इत्यादि )।
विषमच्छदः (पुं०) छितिवन वृक्ष।
विषमच्छादः ( पुं० ) तथा ।
विषयः ( पुं० ) जानी हुई वस्तु, रूप रस गन्ध स्पर्श शब्द ( ये प्रत्येक विषय कहलाते हैं ), देश, स्थान, आश्रय वा अवलम्ब।
विषयिन् (त्रि०) (यी । यिणी । यि) रूप रस गन्ध इत्यादि का भोगनेवाला = ली, (नपुं०) चक्षु इत्यादि इन्द्रिय ।
विषवैद्यः ( पुं० ) सर्प पकड़नेवाला वा मँदारी ।
विषा ( स्त्री ) अतीस ।
विषाण (त्रि०) ( णः । णी । णम् ) बैल इत्यादि पशुओं की सींग, हाथी का दाँत, ( स्त्री ) मेढ़ासींगी (एक आँख की औषधी)।
विषाणिन् ( पुं० ) ( णी ) हाथी।
विषुवत् ( नपुं० ) जिस में रात दिन बराबर हो जाते हैं वह समय ।
विषुवम् ( नपुं० ) तथा ।
विष्कम्भः ( पुं० ) बेंवड़ा ।
विष्किरः ( पुं० ) पक्षी ।
विष्कुहः (पुं०) वृक्ष का खोंदरा।
विष्टपम् (नपुं०) स्वर्ग इत्यादि लोक।
विष्टरः ( पुं० ) बैठने का आसन, वृक्ष, दर्भमुष्टि एक प्रकार का परिमाण वा नाप ।
विष्टरश्रवस ( पुं० ) (वा०) विष्णु ।
विष्टि ( त्रि० ) ( ष्टिः । ष्टिः । ष्टि ) कर्मकर वा मजदूर, ( स्त्री ) मेष इत्यादि की सङ्क्रान्ति, बिना मजदूरी काम करना, जबरदस्ती नरक में डालना, मुण्डन करवाना ।
विष्ठा ( स्त्री ) मल वा गूह् ।
विष्णुः ( पुं० ) नारायण ।
विष्णुक्रान्ता ( स्त्री ) कौआठोंठी ( एक पुष्पवृक्ष ) ।
विष्णुपदम् ( नपुं० ) आकाश ।
विष्णुपदी ( स्त्री ) गङ्गा नदी ।
विष्णुरथः ( पुं० ) गरुड़ ।
विष्य (त्रि०) ( ष्यः । ष्या । ष्यम्) विष देकर मारने के योग्य ।
विष्वक् ( अव्यय ) चारो तरफ ।
विष्वक्सेनः ( पुं० ) विष्णु ।
विष्वक्सेनप्रिया (स्त्री) वाराहीकन्द ।
विष्वक्सेना ( स्त्री ) गोंदी वृक्ष ।
विष्वद्र्यञ्च् ( त्रि० ) ( द्र्यङ् । द्रीची । द्र्यक् ) चारो तरफ जानेवाला = ली, चारो तरफ पूजा करनेवाला = ली ।

विस (पुं० । नपुं०) ( सः । सम् ) कमल की जड़ ।

विसकण्ठिका ( स्त्री ) एक तरह का बकुला ।

विसप्रसूनम् ( नपुं० ) कमलपुष्प।

विसरः ( पुं० ) समूह वा झुण्ड ।

विसर्जनम् ( नपुं० ) त्याग वा छोड़ देना, दान ।

विसर्पणम् ( नपुं० ) फैलना वा फैलावट ।

विसारः ( पुं० ) मछली ।

विसारिन् ( त्रि०) ( री । रिणी। रि ) जिस का फैलने का स्वभाव है ।

विसिनी (स्त्री) छोटा कमलवृक्ष ।

विसृत ( त्रि० ) (तः । ता । तम् ) विस्तृत वा विस्तारयुक्त ।

विसृत्वर (त्रि०) ( रः । री । रम् ) फैलने का वा विस्तारयुक्त होने का जिस का स्वभाव है ।

विसृमर (त्रि०) ( रः । रा । रम् ) तथा ।

विसंवादः ( पुं० ) अङ्गीकृत का पूरा न करना, दो वस्तुओं का एक मेल न मिलना ।

विस्तः ( पुं० ) सोलह मासे भर सोना ।

विस्तरः (पुं०) शब्द का विस्तार ।

विस्तारः ( पुं० ) चौड़ाई, फैलाव, वृक्ष के शाखा पल्लव का समुदाय ।

विस्तृत (त्रि०) (तः । ता । तम् ) विस्तारयुक्त ।

विस्पष्टम् ( नपुं० ) स्पष्ट वचन ।

विस्फारः ( पुं० ) धनुष् के प्रत्यञ्चा का शब्द ।

विस्फोटः (पुं०) फोड़ा वा पिरकी ।

विस्मयः (पुं०) आश्चर्य, अद्भुतरस ।

विस्मृत (त्रि०) (तः । ता । तम्) भूलाहुआ = ई वा भूलगया = ई ।

विस्रम् ( नपुं० ) अपक्व वा कच्चे मांस इत्यादि का गन्ध ।

विस्रम्भः ( पुं० ) "विश्रम्भ" में देखो ।

विस्रसा ( स्त्री ) बुढ़ाई ।

विहगः ( पुं० ) पक्षी ।

विहङ्गः ( पुं० ) तथा ।

विहङ्गमः ( पुं० ) तथा ।

विहङ्गिका ( स्त्री ) बँहगी का दण्डा, बँहगी ।

विहसितम् (नपुं०) मधुर हँसना ।

विहस्त (त्रि०) (स्तः । स्ता । स्तम्) व्याकुल वा वे इख्तियार ।

विहापित (त्रि०) (तः । ता । तम् ) दियागया = ई, (नपुं०) दान ।

विहायसः ( पुं० ) आकाश ।

विहायस् (पुं० । नपुं० ) ( याः । यः ) तथा, ( पुं० ) पक्षी ।
विहायित (त्रि०) (तः । ता । तम्) दियागया = ई, (नपुं०) दान ।
विहारः (पुं०) क्रीड़ा वा खेलना, पैर से चलना ।
विहृतम् ( नपुं० ) स्त्रियों का एक प्रकार का हाव अर्थात् छल से वक्तव्य बात का न बोलना ।
विह्वल (त्रि०) (लः । ला । लम्) व्याकुल, शोक वा चिन्ता से जिस का अङ्ग भङ्ग होगया हो।
वीकाशः ( पुं० ) एकान्त, प्रकाश ।
वीचि (पुं० । स्त्री) (चिः । चिः) जल इत्यादि का तरङ्ग वा लहर ।
वीणा ( स्त्री ) बीन एक बाजा ।
वीणावादः ( पुं० ) वीणाबजानेवाला, वीणा का बजाना वा शब्द
वीत ( त्रि० ) ( तः । ता । तम् ) खर्च हो गया वा खोराय गया वा नष्ट हो गया = ई, (नपुं०) निर्बल वा बे काम हाथी, निर्बल वा बे काम घोड़ा, हाथी को अङ्कुश से शिक्षा देना ।
वीतंसः ( पुं० ) मृग वा पक्षियों के बझाने का हथियार ( जाल इत्यादि ) ।
वीति (पुं० । स्त्री) (तिः । तिः) (पुं०) घोड़ा, (स्त्री) गमन वा चलना, प्रकाश, गर्भ का धारण करना, भोजन करना, दौड़ना ।
वीतिहोत्रः (पुं०) अग्नि वा आग ।
वीथी ( स्त्री ) पङ्क्ति वा पाँती, मार्ग वा रास्ता वा गली ।
वीध्र ( त्रि० ) ( ध्रः । ध्रा । ध्रम् ) स्वभाव से मलरहित वा निर्मल।
वीनाहः ( पुं० ) कूँएँ की जगत् ।
वीरः (पुं०) शूर वा बीर, वीर रस
वीरणम् (नपुं०) गाँड़र (एक घास जिसकी जड़ खस कहलाती है)।
वीरतरम् ( नपुं० ) तथा ।
वीरतरुः ( पुं० ) अर्जुन वृक्ष ।
वीरपत्नी ( स्त्री ) शूर की स्त्री ।
वीरपाणम् ( नपुं० ) युद्ध के पहिले वा पीछे वीर लोगों का मद्यादि का पीना ।
वीरपानम् ( नपुं० ) तथा ।
वीरभार्या ( स्त्री ) शूर की स्त्री ।
वीरमातृ ( स्त्री ) ( ता ) वीर की माता ।
वीरवृक्षः ( पुं० ) भेलावाँ ( एक ओषधीवृक्ष ) ।
वीरसूः ( स्त्री ) वीर की माता ।
वीरहन् (पुं०) (हा) जिसके अग्निहोत्र का अग्नि बुत गया वह ।
वीराशंसनम् (नपुं०) भयङ्कर युद्ध

का स्थान जहाँ कटे हुए वीर वा हाथी वा घोड़े पड़े हैं और जिन को देखने से भय लगता है ।

वीरुध् ( स्त्री ) ( त्—द् ) शाखा पत्ता इत्यादियुक्त लता ।

वीर्यम् (नपुं०) धातु, बल वा सामर्थ्य, प्रभाव वा तेज ।

वुकः ( पुं० ) गुम्मा एक भाजी ।

वृकः (पुं०) हुंडार वा भेंड़िया पशु, मूसा एक जन्तु ।

वृकधूपः (पुं०) कई एक सुगन्धद्रव्यों के मिलाने से बनाहुआ धूप, "श्रीवास" में देखो ।

वृकधूपकः ( पुं० ) तथा ।

वृक्ण (त्रि०) (क्णः । क्णा । क्णम्) खण्डित वा काटाहुआ = ई ।

वृक्षः ( पुं० ) पेड़ ।

वृक्षभेदिन् ( पुं० ) ( दी ) काष्ठ के काटने का हथियार ( बँसुला इत्यादि )

वृक्षरुहा ( स्त्री ) अकासबँवर एक लता ।

वृक्षवाटिका ( स्त्री ) वेश्या का बगीचा, राजा के मन्त्री का बगीचा ।

वृक्षादनी ( स्त्री ) "वृक्षभेदिन्" में देखो, "वृक्षरुहा" में देखो ।

वृक्षाम्लम् (नपुं०) चुक्र वा अमसुल ( एक खटाई ) ।

वृजिन (त्रि०) (नः । ना । नम्) वक्र वा टेढ़ा = ढ़ी, मुण्डित वा मूड़ा हुआ = ई, ( पुं० ) केश वा बाल, ( नपुं० ) क्लेश वा दुःख, पाप, रँगा चमड़ा ।

वृत (त्रि०) (तः । ता । तम्) घेरा हुआ = ई, वरण कियागया वा अङ्गीकार कियागया = ई ।

वृतिः (स्त्री) वस्त्र इत्यादि का घेरा, वर जो प्रसन्न होकर देवता देते हैं ।

वृत्त (त्रि०) (त्तः । त्ता । त्तम्) गोल वा गोलाकार वस्तु, वरण कियागया वा अङ्गीकार कियागया = ई, बीत गया = ई वा हुआ = ई वा सम्पूर्ण हुआ = ई, पढ़ागया = ई, मरगया = ई, दृढ़ अर्थात् जो हिल न सकै, ( पुं० । नपुं० ) छन्द ( "अनुष्टुप्" इत्यादि ), चारित्र वा लोकाचार, जीविका वा जीवनोपाय ।

वृत्तान्तः ( पुं० ) समाचार वा खबर, प्रकरण वा ग्रन्थ का एक देश, भाव वा अभिप्राय, साकल्य वा सम्पूर्णता ।

वृत्तिः ( स्त्री ) जीविका वा जीवनोपाय, ऋषियों के बनाए हुए सूत्रों का अर्थ, भारती सात्वती कैशिकी और आरभटी ( ये चारो नाटक में "वृत्ति" नाम से कही जाती हैं )।

वृत्रः ( पुं० ) वृत्रासुर एक दैत्य, अन्धकार, शत्रु ।

वृत्रहन् ( पुं० ) (हा) इन्द्र ।

वृथा ( अव्यय ) निरर्थक, विधि से रहित ।

वृद्ध ( त्रि० ) ( द्धः । द्धा । द्धम् ) बुड्ढा = ढी, बड़ा = ड़ी, पण्डित, ( नपुं० ) शिलाजीत ओषधी ।

वृद्धत्वम् (नपुं०) बुढौती वा बुढ़ाई ।

वृद्धदारकः (पुं०) एक ओषधीवृक्ष ।

वृद्धनाभिः(पुं०) वात रोग से जिस की नाभी ऊँची होगई है ।

वृद्धप्रमातामहः ( पुं० ) माता का परदादा ।

वृद्धश्रवस् ( पुं० ) (वाः) इन्द्र ।

वृद्धिः ( स्त्री ) बढ़ती ।

वृद्धिजीविका (स्त्री) व्याज वा सूद।

वृद्धिमत् ( त्रि० ) ( मान् । मती । मत् ) बढ़ताहुआ = ई ।

वृद्धोक्षः ( पुं० ) बुड्ढा बैल ।

वृद्ध्याजीवः (पुं०) व्याज खानेवाला

वृन्तम् ( नपुं० ) वृक्ष में की ठोंठी जिस में फूल फल और पत्ते अटके रहते हैं ।

वृन्दम् ( नपुं० ) समूह ।

वृन्दारक (त्रि०) (रकः । रिका—रका । रकम् ) रूपवान् वा सुन्दर, प्रधान वा मुख्य, ( पुं० ) देवता ।

वृन्दिष्ठ ( त्रि० ) ( ष्ठः । ष्ठा । ष्ठम् ) अत्यन्त सुन्दर, अत्यन्त मुख्य ।

वृश्चिकः ( पुं० ) बिच्छू (एक डङ्क वाला जन्तु), केकड़ा जन्तु, एक वृक्ष, मेष इत्यादि १२ राशियों में की एक राशि का नाम, अन्न खानेवाला कीड़ा, भँवरा ।

वृषः ( पुं० ) मूसा जन्तु, श्रेष्ठ वा मुख्य, अडूस एक वृक्ष, ऋषभ नामक औषध, बैल, अण्डकोष, धर्म, मेष इत्यादि १२ राशियों में की एक राशि का नाम, सिंगिया (एकविष), एक सुगन्धचूर्ण

वृषणः ( पुं० ) अण्डकोश ।

वृषदंशकः ( पुं० ) बिलार पशु ।

वृषध्वजः ( पुं० ) शिव ।

वृषन् ( पुं० ) ( षा ) इन्द्र ।

वृषभः (पुं०) बैल, श्रेष्ठ वा प्रधान।

वृषलः ( पुं० ) शूद्र ( एक वर्ण ) ।

वृषस्यन्ती (स्त्री) सुरत वा सम्भोग

की इच्छा करने वाली स्त्री।
वृषा (स्त्री) मूसाकर्णी ओषधी।
वृषाकपायी (स्त्री) लक्ष्मी, पार्वती।
वृषाकपिः (पुं०) शिव, विष्णु।
वृषी (स्त्री) मुनि लोगों का आसन। [वृसी]
वृष्टिः (स्त्री) वर्षा वा बरसना।
वृष्णिः (पुं०) एक राजा जिस के वंश में कृष्ण ने अवतार लिया, भेड़ा एक पशु।
वेगः (पुं०) झोंक, जल का प्रवाह।
वेगिन (त्रि०) (गी। गिनी। गि) वेगयुक्त।
वेणि (स्त्री) (णिः—णी) केशों की चोटी जो सर्पाकार बनाई है, नद्यादि जलाशयका मध्यभाग वा धारा।
वेणी (स्त्री) बन्दाल एक ओषधीवृक्ष
वेणुः (पुं०) बाँसुली बाजा, बाँस एक वृक्ष।
वेणुकम् (नपुं०) हाथियों के मारने के लिये एक डण्डा।
वेणुध्माः (पुं०) बाँसुली बजानेवाला
वेणुनिस्सृतिः (पुं०) एक प्रकार का ऊख।
वेतनम् (नपुं०) मजूरी वा तलब।
वेतसः (पुं०) बेंत वृक्ष।
वेतस्वत् (त्रि०) (स्वान्। स्वती। स्वत्) जिस नदी वा तलाव वा भूमि पर बेंत बहुत हैं वह स्थान।
वेतालः (पुं०) वह मुर्दा जिस में भूत ने प्रवेश किया है (बेताल)।
वेत्रवती (स्त्री) एक नदी।
वेदः (पुं०) ऋक् यजुष् साम और अथर्वण इन को वेद कहते हैं।
वेदन (स्त्री। नपुं०) (ना। नम्) अनुभव और स्मृति से भिन्न ज्ञान अर्थात् प्रत्यक्ष अनुमिति उपमिति और शाब्द, (स्त्री) पीड़ा।
वेदान्तिन् (पुं०) (न्ती) वेदान्तशास्त्र का जाननेवाला।
वेदि (स्त्री) (दिः—दी) रच कर बनाई हुई भूमि, यज्ञ के लिये डमरू के सदृश बनाई हुई भूमि, अँगुटी (एक भूषण), बरै (एक जन्तु)।
वेदिका (स्त्री) अँगना में बनाया हुआ चौतरा इत्यादि बैठने का स्थान।
वेधः (पुं०) छेद, बेधना वा छेदना।
वेधनिका (स्त्री) "आस्फोटनी" में देखो।
वेधमुख्यकः (पुं०) कचूर ओषधी।
वेधस् (पुं०) (धाः) ब्रह्मा, विष्णु, पण्डित।

वेधित (त्रि०) (तः । ता । तम्) छेदागया वा वेधागया = हूं ।
वेपथुः (पुं०) कम्प वा काँपना ।
वेमन् (पु०) (मा) जोलहों का एक हथियार जिस से बीनने के समय सूत बराबर करते हैं।
वेला (स्त्री) समुद्र का तीर, काल वा समय, मर्यादा वा हद्द ।
वेल्लम् (नपुं०) वाभीरङ्ग ओषधी ।
वेल्लजम् (नपुं०) मिरिच (एक तीता दाना) ।
वेल्लित (त्रि०) (तः । ता । तम्) टेढ़ा = ढ़ो, थोड़ा कम्पित वा थोड़ा काँपता ।
वेशः (पुं०) वेश्या का घर, "आकल्प" में देखो [वेषः], स्वरूप [वेषः] ।
वेशन्तः (पुं०) छोटा सरोवर ।
वेश्मन् (नपुं०) (श्म) घर ।
वेश्या (स्त्री) वेश्या वा ख़राब स्त्री वा खानगी । [वेष्या]
वेषः (पुं०) अलङ्कार की रचना इत्यादि से की गई शोभा ।
वेशवारः (पुं०) सेंधानोन सोंठ पीपर मिरिच धनियाँ जीरा अनार हरदी हींग इन सब पदार्थों को इकट्ठा कर के बनाया हुआ चूर्ण (सोंठ पीपर मिरिच सेंधानोन धनियाँ हींग राई अनार अजवाइन—किसी के मत में इन सब वस्तुओं के चूर्ण को "वेशवार" कहते हैं)।
वेषवारः (पुं०) तथा ।
वेष्टित (त्रि०) (तः । ता । तम्) लपेटाहुआ वा घेराहुआ = हूं ।
वेसवारः (पुं०) "वेशवार" में देखो ।
वेहत् (स्त्री) बैलके संयोग से अपने गर्भ को गिरा देनेवाली गैया।
वै (अव्यय) निश्चय, श्लोक के पादपूरण करने में ।
वैकक्षकम् (नपुं०) जनेऊ के ऐसी पहिनी हुई माला ।
वैकक्षिकम् (नपुं०) तथा ।
वैकङ्कतः (पुं०) विकङ्कत वा कँठेर वृक्ष
वैकुण्ठ (पुं० । नपुं०) (ण्ठः । ण्ठम्) (पुं०) विष्णु, (नपुं०) विष्णुलोक ।
वैजननः (पुं०) लड़का जनने का महीना अर्थात् गर्भ का नवाँ या दसवाँ महीना ।
वैजयन्तः (पुं०) इन्द्र का घर वा महल ।
वैजयन्तिकः (पुं०) झण्डी वा फरहरा ढोनेवाला ।
वैजयन्तिका (स्त्री) टेकार वृक्ष ।
वैजयन्ती (स्त्री) पताका ।

वैज्ञानिक (त्रि०) (कः। की। कम्) निपुण वा चतुर।

वैणव (त्रि०) (वः। वी। वम्) बाँस की बनी हुई वस्तु, (नपुं०) बाँस का फल।

वैणविकः (पुं०) बाँसुली बजानेवाला।

वैणिकः (पुं०) तथा, वीणा का बजानेवाला।

वैणुकम् (नपुं०) हाथियों के ताड़न के लिये एक दण्ड।

वैतनिकः (पुं०) मजूर।

वैतरणि (स्त्री) (णिः — णी) एक नरक की नदी।

वैतालिकः (पुं०) प्रातःकाल के समय गाय कर राजा को जगानेवाला।

वैतंसिकः (पुं०) मांस बेंचनेवाला।

वैदेहकः (पुं०) बनियां, वैश्य से ब्राह्मणी में उत्पन्न हुआ।

वैदेही (स्त्री) पीपर ओषधी, सीता (रामचन्द्र की स्त्री)।

वैद्यः (पुं०) वैद्य वा रोग दूर करने वाला।

वैद्यमातृ (स्त्री) (ता) अडूस (एक वृक्ष)।

वैधात्रः (पुं०) सनत्कुमार (एक ब्रह्मा का पुत्र)।

वैधेय (त्रि०) (यः। यी। यम्) मूर्ख।

वैनतेयः (पुं०) गरुड पक्षी।

वैनीतक (पुं०। नपुं०) (कः। कम्) मनुष्य की सवारी (पालकी, डोली इत्यादि)।

वैमात्रः (पुं०) माता के सवत का लड़का।

वैमात्रेयः (पुं०) तथा।

वैमेयः (पुं०) अदल बदल वा एक चीज दे कर दूसरी लेना।

वैयाघ्रः (पुं०) बाघ के चमड़े से घेरा वा ओहारा हुआ रथ।

वैरम् (नपुं०) बैर वा शत्रुता।

वैरशुद्धिः (स्त्री) बैरी से बदला लेना वा बैर का बदला लेना।

वैरिन् (पुं०) (री) शत्रु।

वैवधिकः (पुं०) कांवर ढोनेवाला, बहँगी ढोनेवाला।

वैवस्वतः (पुं०) यमराज।

वैशाखः (पुं०) दही दूध इत्यादि के मथने का दण्ड, एक महीने का नाम, बाण चलाने वाले का एक प्रकार का आसन।

वैशेषिकः (पुं०) एक कणादनामक न्यायशास्त्र का बनानेवाला जो कि ७ पदार्थों को मानता है।

वैश्यः (पुं०) वैश्य (एक वर्ण)।

वैश्रवणः (पुं०) कुवेर (एक दिक्पाल)।
वैश्वानरः (पुं०) अग्नि वा आग।
वैष्णवी (स्त्री) विष्णुशक्ति देवता।
वैसारिणः (पुं०) मछली।
वौषट् (अव्यय) यह शब्द यज्ञ में देवतों को हवि देने में बोला जाता है।
वंशः (पुं०) बाँस वृक्ष, वंश वा कुल, एक तरह का जख।
वंशकम् (नपुं०) अगर (एक चन्दन)
वंशरोचना (स्त्री) वंशलोचन (एक ओषधी)।
वंशलोचना (स्त्री) तथा।
वंशिकम् (नपुं०) अगर (एक चन्दन)।
व्यक्त (त्रि०) (क्तः। क्ता। क्तम्) स्पष्ट वा प्रकट वा प्रकाशित, (पुं०) पण्डित।
व्यक्तिः (स्त्री) स्पष्टता वा प्रकाश वा प्रकटता, प्राणियों के समूह में से एक।
व्यग्र (त्रि०) (ग्रः। ग्रा। ग्रम्) व्याकुल वा घबड़ाया=ई, दुचित्ता।
व्यङ्गा (स्त्री) हीन अङ्गवाली।
व्यजनम् (नपुं०) पङ्खा।
व्यञ्जक (त्रि०) (ञ्जकः। ञ्जिका। ञ्जकम्) प्रकाश करनेवाला वा जाहिर करनेवाला=ली, मन के अभिप्राय का जनाने वाला=ली (नाट्य में)।
व्यञ्जन (त्रि०) (नः। नी। नम्) जिस के द्वारा कोई बात प्रकट की जाय, (नपुं०) मीठा खट्टा तीता इत्यादि ६ रस, चिह्न (जिस से कोई वस्तु पहिचानी जाय), मोछ, कढ़ी (एक भोज्य वस्तु), हाथ पैर इत्यादि अङ्ग।
व्यडम्बकः (पुं०) रेंड़ वृक्ष।
व्यडम्बनः (पुं०) तथा।
व्यत्ययः (पुं०) उलटा पुलटा वा विपरीत।
व्यत्यासः (पुं०) तथा।
व्यथा (अव्यय) पीड़ा, मन की पीड़ा
व्यधः (पुं०) बेधना वा छेदना।
व्यध्वः (पुं०) खराब रस्ता।
व्यपेत (त्रि०) (तः। ता। तम्) हटगया वा चलागया वा नष्ट हो गया=ई।
व्ययः (पुं) खर्च वा छीजना वा कम होना वा घटजाना।
व्यलीक (त्रि०) (कः। का। कम्) अप्रिय वा जो प्यारा नहीं है, करने के योग्य नहीं, मिथ्यावादी वा झूठ बोलनेवाला=ली,

(नपुं०) दुःख वा पीड़ा, लज्जा, मिथ्या वा झूठ ।
व्यवधा ( स्त्री ) अन्तर्द्धान वा गुप्त होना वा छिप जाना, आड़ ।
व्यवसायः ( पुं० ) उद्योग ।
व्यवहारः (पुं०) व्यवहार वा काम में लाना, विवाद वा झगड़ा ।
व्यवायः (पुं०) मैथुन वा स्त्री और पुरुष का संयोग ।
व्यसनम् ( नपुं० ) विपत्ति वा मुसीबत, हानि वा नुकसान, काम से उत्पन्न हुआ दोष, क्रोध से उत्पन्न हुआ दोष, लत्त वा बान।
व्यसनार्त (त्रि०) (र्त्तः । र्त्ता । र्त्तम् ) दुःखित वा पीड़ित ।
व्यस्त (त्रि०) ( स्तः । स्ता । स्तम ) व्याकुल वा घबरायाहुआ = ई, छितरायाहुआ = ई ।
व्याकरणम् (नपुं०) व्याकरण वा शब्दशास्त्र, व्याख्या करना वा टीका करना ।
व्याकुल (त्रि०) ( लः । ला । लम् ) घबराया हुआ = ई ।
व्याकोश (त्रि०) ( शः । शा । शम् ) फलाहुआ = ई (वृक्ष इत्यादि), फूलाहुआ = ई (पुष्प) [व्याकोष]
व्याघ्रः (पुं०) बाघ, श्रेष्ठ वा उत्तम ।
व्याघ्रनखम् ( नपुं० ) व्याघ्रनख ( एक गन्धद्रव्य ) ।
व्याघ्रपाद् ( पुं० ) ( त्—द् ) विकङ्कत वा कँठेर वृक्ष ।
व्याघ्रपुच्छः ( पुं० ) रेंड़ वृक्ष ।
व्याघ्राटः (पुं०) भरदूल (एक पक्षी)
व्याघ्री ( स्त्री ) भटकटैया ओषधी, बाघिन ।
व्याजः ( पुं० ) स्वरूप का छिपाना वा ढांकना, बहाना करना ।
व्याडः ( पुं० ) सर्प, मांस का खानेवाला पशु ( बाघ इत्यादि )। [ व्यालः ]
व्याडायुधम् ( नपुं० ) व्याघ्रनख ( एक गन्धद्रव्य ) ।
व्याधः ( पुं० ) बहेलिया वा मृग पक्षी इत्यादि का बझाने वा मारनेवाला ।
व्याधिः ( पुं० ) रोग, कुट् ( एक ओषधी ) ।
व्याधिघातः (पुं०) रोग का नाश, अमिलतास (एक ओषधीवृक्ष )
व्याधित (त्रि०) ( तः । ता । तम् ) रोगी ।
व्यानः ( पुं० ) सब देह में घूमने वाला वायु ।
व्यापादः ( पुं० ) द्रोह करना वा वैर करना, मारडालना ।
व्यापादित (त्रि०) (तः । ता । तम् )

मार डालागया = हुआ ।

व्यामः ( पुं॰ ) अँकवार वा दोनों बाहुओं के फैलाने से जितना स्थान खाली रहता है ।

व्याल (त्रि॰) ( लः । ला । लम् ) धूर्त वा दगाबाज, (पुं॰) सर्प, चीता (एक वनपशु), दुष्ट हाथी, सिंह ।

व्यालग्राहिन् ( पुं॰ ) ( ही ) सर्प का पकड़नेवाला ।

व्यावृत ( त्रि॰ ) ( तः । ता । तम् ) वरण किया गया वा अङ्गीकार कियागया = हुआ, निवृत्त हो गया वा छूट गया = हुआ ।

व्यावृत्त (त्रि॰) ( त्तः । त्ता । त्तम् ) तथा । [ वावृत्त ]

व्यासः (पुं॰) पराशर के पुत्र व्यास, विस्तार ।

व्याहारः ( पुं॰ ) बोलना ।

व्युतिः (स्त्री) कपड़ा इत्यादि का बीनना ।

व्युत्थानम् (नपुं॰) तिरस्कार वा अनादर, विरोध करना, स्वतन्त्रता से काम करना ।

व्युष्टिः ( स्त्री ) फल, सम्पत्ति वा सम्पदा ।

व्यूढ ( त्रि॰ ) ( ढः । ढा । ढम् ) स्थापित किया गया = हुआ, एकट्ठा हुआ = हुआ, मोटा ताजा = जो ।

व्यूढकङ्कटः (पुं॰) वह योधा जिस ने कवच पहिना है ।

व्यूतिः ( स्त्री ) कपड़ा इत्यादि का बीनना ।

व्यूहः ( पुं॰ ) समूह, एक प्रकार की सेना की रचना ।

व्यूहपार्ष्णिः (पुं॰) रची हुई सेना के पीछे का भाग ।

व्यो ( अव्यय ) लोहा ।

व्योकारः ( पुं॰ ) लोहार ।

व्योमकेशः ( पुं॰ ) शिव ।

व्योमन् ( नपुं॰ ) (म) आकाश ।

व्योमयानम् ( नपुं॰ ) विमान वा उड़नखटोला ।

व्योषम् (नपुं॰) सोंठ मिरिच पीपर (यह शब्द मिले हुए इन तीनो का वाचक है) ।

व्रजः (पुं॰) समूह, गैया का गोठा, मार्ग ।

व्रज्या ( स्त्री ) पर्यटन वा घूमना, यात्रा वा कूँच ।

व्रण ( पुं॰ । नपुं॰) (णः । णम् ) घाव वा खत ।

व्रत (पुं॰ । नपुं॰ ) ( तः । तम् ) चान्द्रायण इत्यादि व्रत ।

व्रततिः ( स्त्री ) लता, विस्तार ।

व्रतिन् (पुं०) (ती) चान्द्रायण इत्यादि व्रत का करने वाला, वह अध्वर्यु जो यज्ञ में ऋत्विजों को आज्ञा करता है ।
व्रश्चनः (पुं०) काटने का हथियार (कुल्हाड़ी वा टँगारी इत्यादि)
व्रातः (पुं०) समूह वा झुण्ड, दुष्टाचरण वा ख़राब काम करना ।
व्रात्यः (पुं०) वह ब्राह्मण जिस का यज्ञोपवीत नहीं हुआ है, अधम वा नीच ।
व्रीडा (स्त्री) लज्जा ।
व्रीहिः (पुं०) धान, अन्न (जव इत्यादि) ।
व्रैहेय (त्रि०) (यः । यी । यम्) धान का खेत ।

—***—

# ( श )

श (पुं० । नपुं०) (शः । शम्) (पुं०) शिव, सोमा वा रुद्र, सूतना, हिंसा वा मारडालना, (नपुं०) सुख, कल्याण ।
शकट (त्रि०) (टः । टी । टम्) छकड़ा वा बैल की गाड़ी ।
शकल (पुं० । नपुं०) (लः । लम्) टुकड़ा ।
शकलिन् (पुं०) (ली) मछली ।
शकुलिन् (पुं०) (ली) तथा ।
शकुन (पुं० । नपुं०) (नः । नम्) सगुन (भुजा वा आँख का फरकना इत्यादि), (पुं०) पक्षी ।
शकुनिः (पुं०) पक्षी ।
शकुन्तः (पुं०) तथा, एक प्रकार का मुरगा पक्षी ।
शकुन्तिः (पुं०) तथा ।
शकुलः (पुं०) एक मछली ।
शकुलाक्षका (स्त्री) सफेद रङ्ग की दूब ।
शकुलादनी (स्त्री) जलपीपर लता, कुटकी वृक्ष ।
शकुलार्भकः (पुं०) गड़क नामक मछली ।
शकृत् (नपुं०) विष्ठा वा गूह् ।
शकृत्करिः (पुं०) बछवा वा बछड़ा ।
शक्तिः (स्त्री) सामर्थ्य वा बल, बरछी वा भाला (एक अस्त्र), प्रभाव उत्साह और मन्त्र इन तीनों से उत्पन्न भया राजों का सामर्थ्य ।
शक्तिधरः (पुं०) भाला धारण करनेवाला, स्वामिकार्तिक ।

शक्तिहेतिकः (पुं०) भाला धारण करनेवाला ।

शक्रः ( पुं० ) इन्द्र, कोरैया ( एक पुष्पवृक्ष ) ।

शक्रधनुष् ( नपुं० ) (नुः) इन्द्र का धनुष् जो प्रायः वर्षाकाल में आकाश में देख पड़ता है ।

शक्रपादपः ( पुं० ) देवदार वृक्ष ।

शक्रपुष्पी ( स्त्री ) इन्द्रपुष्पी ( एक लता ) ।

शक्ल ( त्रि० ) ( क्लः । क्ला । क्लम् ) प्रिय वा मीठा वचन बोलनेवाला = ली ।

शङ्करः ( पुं० ) शिव ।

शङ्कुः (पुं०) खूँटा वा खूँटी, एक जलका जन्तु, ठूँठा वृक्ष, बरछी वा भाला ।

शङ्ख ( पुं० । नपुं० ( ङ्खः । ङ्खम् ) खङ्ख, ( पुं० ) एक निधि, नख नामक एक गन्धद्रव्य, ललाट की हड्डी ।

शङ्खनखः ( पुं० ) छोटा शङ्ख ।

शङ्खपुष्पी ( स्त्री ) कौड़ेना ( एक ओषधीलता ) ।

शङ्खिनी (स्त्री) एक प्रकार की स्त्री, शङ्खाहुली ( एक लतावृक्ष ) ।

शची ( स्त्री ) इन्द्राणी वा इन्द्र की स्त्री ।

शचीपतिः ( पुं० ) इन्द्र ।

शटी ( स्त्री ) आँबाहरदी ।

शठ (त्रि०) ( ठः । ठा । ठम् ) धूर्त वा दगाबाज ।

शण ( पुं० । नपुं० ) ( णः । णम् ) सन जिस से डोरी कागज इत्यादि बनता है ।

शणपर्णी (स्त्री) पटशण एक वृक्ष ।

शणपुष्पिका ( स्त्री ) घण्टानाम एक लता ।

शणसूत्रम् ( नपुं० ) सन से बना हुआ जाल ।

शण्ढः ( पुं० ) नपुंसक वा हिँजड़ा वा खोजा । [ शण्डः ]

शतम् (नपुं०) सौ सङ्ख्या (१००)।

शतकोटिः ( पुं० ) इन्द्र का वज्र ।

शतद्रुः ( स्त्री ) सतलज नदी ।

शतपत्रम् (नपुं०) कमल पुष्प ।

शतपत्रकः (पुं०) काठफोड़वा पक्षी ।

शतपदी (स्त्री) गोजर एक जन्तु ।

शतपर्वन् ( पुं० ) ( र्वा ) बाँस ।

शतपर्विका ( स्त्री) दूब (एक घास) [शतपर्णिका], बच (एक ओषधी)

शतपुष्पा ( स्त्री ) सौंफ ।

शतप्रासः (पुं०) कँदइल (पुष्पवृक्ष)।

शतभीरुः ( स्त्री ) बेइल वा छोटा बेला ( पुष्पवृक्ष ) ।

शतमन्युः ( पुं० ) इन्द्र ।

शतमान (पुं० । नपुं०) (नः । नम्) एक प्रकार की तौल ।
शतमूली (स्त्री) सतावर (श्रोषधी)।
शतवीर्या ( स्त्री ) सफेद दूब ।
शतवेधिन् (पुं०) (धी) चुक्र ( एक खट्टी वस्तु ) ।
शतह्रदा ( स्त्री ) बिजुली ।
शताङ्गः ( पुं० ) युद्ध का रथ ।
शतावरी (स्त्री) सतावर (श्रोषधी)।
शत्रुः ( पुं० ) वैरी, राजा के अपने देश के पास का राजा ।
शनैश्चरः ( पुं० ) एक ग्रह ।
शनैस् ( अव्यय ) ( नैः ) धीरे ।
शपथः ( पुं० ) शपथ वा किरिया वा कसम ।
शपनम् ( नपुं० ) तथा, शाप देना वा गाली देना ।
शफ ( पुं० । नपुं० ) ( फः । फम् ) पशु का खुर ।
शफर ( पुं० । स्त्री ) ( रः । री ) प्रोष्ठीनाम मछली ।
शबरः ( पुं० ) पर्वतवासी मनुष्यों की एक म्लेच्छजाति ।
शबल ( त्रि० ) ( लः । ला । लम् ) चितकबरा रङ्ग वाला = ली, (पुं०) चितकबरा रङ्ग, ( स्त्री ) एक गैया [ शबली ] ।
शब्दः ( पुं० ) शब्द वा आवाज़, अक्षर वा वर्ण से बनाहुआ राम कृष्ण घट इत्यादि शब्द ।
शब्दग्रहः (पुं०) वह इन्द्रिय जिस से शब्द का ग्रहण हो अर्थात् कान ।
शब्दन ( त्रि० ) (नः । ना । नम् ) जिस का शब्द करने का स्वभाव है ।
शमः (पुं०) शान्ति ( इन्द्रियों को वा काम क्रोध इत्यादि की ), मन की शान्ति ।
शमथः ( पुं० ) चित्त वा मन की शान्ति ।
शमन (पुं० । नपुं०) (नः । नम् ) ( पुं० ) यमराज, (नपुं०) यज्ञ के पशु को मारना ।
शमनस्वसृ ( पुं० ) ( सा ) यमुना नदी ।
शमलम् ( नपुं० ) विष्ठा वा गूह ।
शमित ( त्रि० ) ( तः । ता । तम् ) शान्त कियागया = ई ।
शमी ( स्त्री ) शमी ( एक वृक्ष ), छीमी ।
शमीधान्यम् (नपुं०) वह अन्न जो छीमी से निकलता है ( मूँग इत्यादि ) ।
शमीरः (पुं०) छोटा शमी का वृक्ष।
शम्पा ( स्त्री ) बिजुली ।

शम्पाकः ( पुं० ) अमिलतास (एक ओषधीवृक्ष ) ।

शम्बः ( पुं० ) इन्द्र का वज्र ।

शम्बर (पुं० । नपुं०) ( रः । रम्) (पुं० ) साबरनाम एक मृग, एक दैत्य का नाम, ( नपुं० ) जल वा पानी ।

शम्बरारिः ( पुं० ) कामदेव ।

शम्बरी (स्त्री) मूसाकर्णी ओषधी।

शम्बलम् ( नपुं० ) एक प्रकार का रङ्ग, राह का कलेवा ।

शाम्बाकृत (त्रि०) (तः । ता । तम्) दो बेर जोताहुआ = ई ( खेत इत्यादि ) ।

शम्बूक ( पुं० । स्त्री ) ( कः । का) छोटी सीप, (पुं०) घोंघा, ( स्त्री ) घोंघी ।

शम्भली ( स्त्री ) कुटनी वा स्त्री पुरुष को मिलानेवाली स्त्री ।

शम्भुः ( पुं० ) शिव, ब्रह्मा ।

शम्या ( स्त्री ) जूआ की कील वा खूँटी ।

शम्याकः (पुं०) अमिलतास ( एक ओषधीवृक्ष ) ।

शयः ( पुं० ) हाथ । [ शमः ]

शयनम् ( नपुं० ) खटिया इत्यादि (जिस पर सूता जाय), सूतना ।

शयनीयम् ( नपुं० ) खटिया इत्यादि (जिस पर सूता जाय) ।

शयालु ( त्रि० ) ( लुः । लुः । लु ) सूतनेवाला = ली ।

शयित ( त्रि० ) ( तः । ता । तम् ) सूताहुआ = ई ।

शयुः ( पुं० ) अजगर सर्प ।

शय्या ( स्त्री ) खटिया ।

शरः ( पुं० ) बाण, सरहरी ।

शरजन्मन् ( पुं० ) ( न्मा ) स्वामिकार्तिक ।

शरणम् ( नपुं० ) घर, रक्षा करनेवाला = ली ।

शरद् ( स्त्री ) ( त्—द् ) कुआर और कार्तिक का महीना, वर्ष वा बरिस ।

शरभः ( पुं० ) एक मृग ।

शरव्य (त्रि०) (व्यः । व्या । व्यम्) बाण का लक्ष्य वा निशाना ।

शराभ्यासः ( पुं० ) बाण चलाने का अभ्यास ।

शरारिः ( स्त्री ) आड़ी एक पक्षी।

शरारु (त्रि०) (रुः । रुः । रु) हिंसक वा मार डालनेवाला = ली ।

शरालिः (स्त्री) आड़ी पक्षी । [ शराली ]

शरावः ( पुं०) आरती साजने का बरतन, कसोरा वा परई ।

शरावती ( स्त्री ) एक नदी ।

शरासनम् ( नपुं० ) धनुष् ।
शरीरम् ( नपुं० ) शरीर वा देह।
शरीरिन ( त्रि० ) ( री । रिणी । रि ) प्राणी वा देहधारी ।
शर्करा ( स्त्री ) सक्कर वा खाँड़ सिकटी वा कङ्कड़ी, वह भूमि जहाँ सिकटी बहुत हैं, बालू ।
शर्करावत् ( त्रि० ) ( वान् । वती । वत् ) वह भूमि जिस में सिकटी बहुत है ।
शर्करिल (त्रि०) (लः । ला । लम् ) तथा ।
शर्मन् (नपुं०) (र्म) सुख वा आनन्द ।
शर्वः ( पुं० ) शिव ।
शर्वरी ( स्त्री ) रात्रि वा रात ।
शर्वला (स्त्री) गँड़ासा (एक शस्त्र)
शर्वाणी ( स्त्री ) पार्वती ।
शलम् ( नपुं० ) साही पशु का रोम वा रोंआँ ।
शलभः (पुं०) टिड्डी (एक जन्तु), फतिङ्गा जो उड़ कर दीया में गिरने से जल जाता है ।
शललम् ( नपुं० ) साही पशु का रोम वा रोंआँ ।
शलली ( स्त्री ) तथा, साही पशु ।
शलाटु ( त्रि० ) ( टुः । टुः । टु ) कच्चा फल ।
शल्कम् ( नपुं० ) छिलका वा को-कला, टुकड़ा ।
शल्मलि (पुं० । स्त्री) (लिः । लिः) सेमर वृक्ष ।
शल्य (पुं० । नपुं०) (ल्यः । ल्यम) बरछी वा शाला, (पुं०) बाण, मयनफल का वृक्ष, साही (पशु), एक राजा का नाम ।
शल्लकी ( स्त्री ) सलई ( वृक्ष ) ।
शव ( पुं० । नपुं० ) ( वः । वम् ) मुरदा वा मरे हुए का शरीर ।
शवरः ( पुं० ) पर्वतवासी मनुष्यों की एक म्लेच्छजाति ।
शवली ( स्त्री ) चितकबरी गैया ।
शशः ( पुं० ) खरहा वा खरगोश ( एक जन्तु ) ।
शशधरः ( पुं० ) चन्द्रमा ।
शशादनः ( पुं० ) बाज़ पक्षी ।
शशोर्णम् (नपुं०) खरहे का रोम वा रोंआँ ।
शश्वत् ( अव्यय ) सदा वा सर्वदा, निरन्तर वा हरदम, फेर फेर।
शष्कुली (स्त्री) पूरी, कचौरी ।
शष्पम् ( नपुं० ) कोमल तृण वा नरम घास ।
शसनम् ( नपुं० ) मार डालना, यज्ञ के पशु को मारना ।
शस्त (त्रि०) ( स्तः । स्ता । स्तम् ) सुन्दर वा बड़ाईयुक्त मङ्गलयुक्त,

कहागया = ई, (नपुं०) मङ्गल वा कल्याण।

शस्त्रम् ( नपुं० ) हथियार ( तलवार इत्यादि ), लोहा।

शस्त्रकम् ( नपुं० ) लोहा।

शस्त्रमार्जः (पुं०) शस्त्रों को साफ करनेवाला वा मांजनेवाला।

शस्त्राजीवः ( पुं० ) शस्त्र से जीने वाला अर्थात् सिपाही।

शस्त्रिन् (पुं०) (स्त्री) तथा, योद्धा।

शस्त्री ( स्त्री ) छूरी, गुप्ती।

शस्पम् ( नपुं० ) कोमल तृण वा नरम घास।

शस्यम् ( नपुं० ) वृक्ष इत्यादि का फल।

शस्यसम्बरः ( पुं० ) सखुवा वृक्ष।

शाक (पुं०। नपुं०) ( कः। कम् ) भाजी वा साग ( बथुवा इत्यादि), ( नपुं० ) भोजन का सरञ्जाम (पत्ता फूल फल जड़ इत्यादि तरकारी)।

शाकट ( त्रि० ) (टः। टी। टम्) छकड़े में जोता हुआ वा छकड़े को ढोनेवाला (बैल इत्यादि)।

शाकशाकटम् ( नपुं० ) तरकारी का खेत।

शाकशाकिनम् ( नपुं० ) तथा।

शाकुनिकः ( पुं० ) बहेलिया वा चिड़ियों का बझाने वाला।

शाक्तीकः ( पुं० ) बरछी वा भाला का बाँधने वा धारण करनेवाला

शाक्यमुनिः ( पुं० ) एक बौद्धों के आचार्य।

शाक्यसिंहः ( पुं० ) तथा।

शाखा ( स्त्री ) वृक्ष इत्यादि की डार।

शाखानगरम् (नपुं०) राजधानी के अगल बगल के छोटे २ नगर

शाखामृगः ( पुं० ) बन्दर।

शाखिन् ( पुं० ) ( खी ) वृक्ष।

शाङ्खिकः (पुं०) शङ्ख बजानेवाला, शङ्ख के काम का बनानेवाला।

शाटक (पुं०। नपुं०) (कः। कम्) पहिरने की साड़ी वा धोती।

शाटी ( स्त्री ) साड़ी।

शाठ्यम् (नपुं० ) धूर्त्तता वा दगाबाजी।

शाण (पुं०। नपुं० ) (णः। णम्) ( पुं० ) सोने की परीक्षा के लिए कसने की कसौटी (एक पत्थर), (नपुं०) चन्दन इत्यादि रगड़ने का पत्थर, ( स्त्री ) सन का बना हुआ वस्त्र।

शाणी ( स्त्री ) सन का बना हुआ वस्त्र।

शाण्डिल्यः ( पुं० ) एक ऋषि का

नाम, बेल ( वृक्ष )।

शात (त्रि०) (तः । ता । तम्) सान रक्खी हुई वा चोखी की हुई तलवार इत्यादि, (नपुं०) सुख।

शातकुम्भम् ( नपुं० ) सुवर्ण वा सोना।

शातला ( स्त्री ) सीकाकाई ( एक बाल साफ़ करने का मसाला ।

शात्रवः ( पुं० ) शत्रु वा बैरी।

शादः ( पुं० ) घास, चहला वा कीचड़।

शाद्वल ( त्रि० ) (लः । ला । लम्) वह स्थान जिस में हरी हरी घास लगी हों।

शान्त ( त्रि० )(न्तः । न्ता । न्तम्) शान्त वा ठण्ढा होगया वा ढीला होगया वा मन्द होगया वा धीर, नष्ट होगया = ई।

शान्तिः ( स्त्री ) आश्वासन वा तसल्ली वा धीरता, नाश।

शापः (पुं०) शाप वा गाली देना।

शाम्बरी ( स्त्री ) माया वा इन्द्र जाल, बाज़ीगर का खेल।

शार ( त्रि० ) ( रः । री । रम् ) चितकबरा = री, (पुं० । स्त्री) चौपड़ इत्यादि के खेलने की गोटी, ( पुं० ) वायु।

शारङ्ग ( त्रि० ) (ङ्गः । ङ्गा । ङ्गम् ) चितकबरा = री, पपीहा पक्षी।

शारङ्ग ( पुं० । स्त्री ) (ङ्गः । ङ्गी ) (पुं०) हरिण, (स्त्री) हरिणी।

शारद ( त्रि० ) ( दः । दी । दम् ) नया वा टटका = की, डरपोकना = नी, ( पुं० ) छितिउन (वृक्ष), (स्त्री) जलपीपर ओषधी।

शारदा ( स्त्री ) सरस्वती।

शारिफलम् ( नपुं० ) चौपड़ इत्यादि के खेलने का घर।

शारिवा ( स्त्री ) उत्पलशिखा वा सरिवन ओषधी।

शार्कर ( त्रि० ) ( रः । री । रम् ) शक्कर से बना हुआ = ई (मिठाई इत्यादि), कङ्कड़हा वा बलुहा ( स्थान इत्यादि )।

शार्ङ्गम् ( नपुं० ) धनुष, विष्णु का धनुष, सिँगिया ( विष )।

शार्ङ्गिन् ( पुं० ) ( ङ्गी ) विष्णु।

शार्दूलः ( पुं० ) बाघ ( एक वनपशु ), श्रेष्ठ।

शार्वर ( त्रि० ) ( रः । री । रम् ) मारने वाला = ली, ( नपुं० ) घन वा बड़ा अन्धकार।

शालः ( पुं० ) वृक्ष, सखुआ वृक्ष, एक मछली, नगर के घेरे की भीत वा शहरपनाह।

शालपर्णी ( स्त्री ) एक ओषधी,

शालपर्णी की जड़, शालपर्णी का फूल ।

शाला (स्त्री) घर, स्कन्ध की प्रथम शाखा ।

शालावृकः (पुं०) कुत्ता, बन्दर, सियार ।

शालिः (पुं०) साठीधान जो साठ दिन में पकता है ।

शालीन (त्रि०) (नः । ना । नम्) लज्जित वा लजायाहुआ = ई ।

शालूकम् (नपुं०) कमल की जड़।

शालूरः (पुं०) मेंढ़क (एक जल-जन्तु वा स्थलजन्तु) ।

शालेय (त्रि०) (यः । यी । यम्) साठीधान का खेत, (पुं०) बनसौंफ (औषधी) ।

शाल्मलः (पुं०) सेमर वृक्ष ।

शाल्मलि (पुं० । स्त्री) (लिः । लिः—ली) तथा ।

शाल्मलीवेष्टः (पुं०) सेमर का गोंद वा कामा ।

शावकः (पुं०) बच्चा वा लड़का ।

शावरः (पुं०) लाह (एक औषधी), लोध औषधी, सावर (एक मृग)।

शाश्वत (त्रि०) (तः । ती । तम्) निरन्तर वा सर्वकाल में रहने वाला वा उत्पत्ति और नाश से रहित (नित्य) ।

शाष्कुल (त्रि०) (लः । ली । लम्) मांस और मछली का खाने वाला ।

शाष्कुलिकम् (नपुं०) पूरियों का समूह, कचौरियों का समूह ।

शासनम् (नपुं०) आज्ञा, शिक्षा ।

शास्तृ (त्रि०) (स्ता । स्त्री । स्तृ) सिखाने वाला वा आज्ञा देने वाला = ली, (पुं०) बुद्ध अर्थात् विष्णु का नवम अवतार ।

शास्त्रम् (नपुं०) ६ शास्त्र (१ न्याय, २ वैशेषिक, ३ योग, ४ वेदान्त, ५ साङ्ख्य, ६ मीमांसा ), आज्ञा, ग्रन्थ ।

शास्त्रविद् (पुं०) (त्—द्) शास्त्रों का जाननेवाला ।

शिक्यम् (नपुं०) सिकहर वा छींका।

शिक्यित (त्रि०) (तः । ता । तम्) सिकहर पर रक्खा हुआ = ई ।

शिक्षा (स्त्री) सिखाना वा शिक्षा देना, एक वेद का अङ्ग ।

शिक्षित (त्रि०) (तः । ता । तम्) सिखाया हुआ = ई, निपुण वा चतुर ।

शिखण्डः (पुं०) मोर की पोंछ ।

शिखण्डकः (पुं०) "काकपक्ष" में देखो । [ शिखाण्डकः ] [ शिखिण्डकः ]

शिखण्डिन् (पुं०) (ण्डी) मोर पक्षी।
शिखर (पुं०। नपुं०) (रः। रम्) पर्वत का शृङ्ग वा चोटी, वृक्ष इत्यादि के ऊपर का भाग।
शिखरिन् (पुं०। स्त्री) (री। रिणी) (पुं०) पर्वत, वृक्ष, (स्त्री) एक छन्द।
शिखा (स्त्री) माथे की चोटी वा चुन्दी, आग की ज्वाला, मोर की पोंछ, किरण वा प्रकाश।
शिखावत् (पुं०) (वान्) आग।
शिखावलः (पुं०) मोर पक्षी।
शिखिग्रीवम् (नपुं०) तुतिया ओषधी।
शिखिन् (पुं०) (खी) मोर पक्षी, अग्नि वा आग।
शिखिवाहनः (पुं०) स्वामिकार्त्तिक।
शिग्रु (पुं०। नपुं०) (ग्रुः। ग्रु) बथवा की भाजी (पुं०) सहिंजन वृक्ष।
शिग्रुजम् (नपुं०) सहिंजन की बीया।
शिञ्जितम् (नपुं०) भूषण वा गहने का शब्द।
शिञ्जिनी (स्त्री) धनुष की डोरी वा प्रत्यञ्चा वा पनच।
शितशूकः (पुं०) जव (एक अन्न)।
शितिः (स्त्री) काला रङ्ग, श्वेत रङ्ग।
शितिकण्ठः (पुं०) शिव।
शितिसारकः (पुं०) तेंदू वृक्ष।
शिपिविष्टः (पुं०) शिव, टाल अर्थात् जिस पुरुष के चांदी के बाल झड़ गए हैं, शरीर वा वह चमड़ा जिसकी खाल खुरदर गई है।
शिफा (स्त्री) कमल का कन्द, वृक्ष की जड़ जो जटा के ऐसी होती है।
शिफाकन्दः (पुं०) तथा।
शिम्बा (स्त्री) छीमी।
शिम्बि (स्त्री) (म्बिः—म्बी) तथा।
शिरस् (नपुं०) (रः) मस्तक वा माथा, वृक्ष इत्यादि का ऊपर का भाग, पिपरामूल।
शिरस्त्रम् (नपुं०) सिर का पहिरावा (टोपी पगड़ी इत्यादि), योद्धों का टोप जो युद्ध के समय पहिनते हैं।
शिरस्यः (पुं०) निर्मल केश।
शिरा (स्त्री) एक मोटी नस जिस को नाड़ी कहते हैं।
शिरीषः (पुं०) सिरसा का वृक्ष।
शिरोगृहम् (नपुं०) घर में सब से ऊपर की कोठरी अर्थात् बँगला।
शिरोधिः (स्त्री) कन्धरा वा गरदन।
शिरोरत्नम् (नपुं०) माथे का मणि।
शिरोरुहः (पुं०) बाल वा केश।

शिलम (नपुं०) एक तरह की ऋषि मुनिलोगों की जीविका (खेत कट जाने के पीछे जो उस में टूटी फूटी बाल रह जाती हैं उन को ला कर अपने भोजन का काम चलाना, इस को शिलवृत्ति भी कहते हैं)।

शिला (स्त्री) पत्थर की पटिया, द्वार के नीचे की आर लकड़ी जिस के सहारे से चौखटा रहता है)।

शिलाजतु (नपुं०) सिलाजीत ओषधी (पत्थर की लाही वा गोंद)।

शिली (स्त्री) केंचुई।

शिलीमुखः (पुं०) बाण, भँवरा।

शिलोच्चयः (पुं०) पर्वत।

शिल्पम् (नपुं०) कारीगरी।

शिल्पिन् (त्रि०) (ल्पी। ल्पिनी। ल्पि) कारीगर, मुसव्विर।

शिव (त्रि०) (वः। वा। वम्) सुन्दर वा कल्याणरूप वा मङ्गलरूप, (पुं०) शिव वा महादेव, (स्त्री) पार्वती, सियारिन, शमी वृक्ष, हर्रें, भुँइँ-आँवरा ओषधी, (नपुं०) कल्याण वा मङ्गल।

शिवकः (पुं०) खूँटा वा कील वा मेख।

शिवमल्ली (स्त्री) गुम्मा साग।

शिविका (स्त्री) पालकी (सवारी)।

शिविरम् (नपुं०) कपड़े का घर वा तम्बू, नवीन आए हुए सेना के टिकने का स्थान।

शिशिर (त्रि०) (रः। रा। रम्) शीतल वा ठण्ढी वस्तु, (पुं०। नपुं०) माघ और फागुन महीने का ऋतु।

शिशुः (पुं०) बालक (लड़का वा लड़की)।

शिशुकः (पुं०) सुँइँस (एक जलजन्तु)।

शिशुत्वम् (नपुं०) लड़काई।

शिशुमारः (पुं०) सुँइँस (जलजन्तु)।

शिश्नः (पुं०) पुरुष का मूत्रेन्द्रिय।

शिश्विदान (त्रि०) (नः। ना। नम्) पवित्र वा शुद्ध कामों का करनेवाला = ली।

शिष्टिः (स्त्री) आज्ञा वा हुकुम।

शिष्य (त्रि०) (ष्यः। ष्या। ष्यम्) चेला वा शागिर्द, सिखलाने वा बतलाने के योग्य।

शिंशपा (स्त्री) सीसो वृक्ष।

शीकरः (पुं०) पानी के बहुत छोटे २ बूँद।

शीघ्र (त्रि०) (घ्रः। घ्रा। घ्रम्) जल्दीबाज़, (नपुं०) जल्दी।

शीत ( त्रि० ) ( तः । ता । तम् ) शीतल वा ठण्ढी वस्तु, ( पुं० ) बेंत वृक्ष, लसोड़ा वृक्ष, सुस्त, ( स्त्री ) खेत में हल चलाने से पड़ी लकीर, आकाशगङ्गा, सीता (रामचन्द्र की स्त्री), (नपुं०) शीतल स्पर्श, जाड़ा ।

शीतक ( त्रि० ) ( कः । का । कम् ) आलसी वा सुस्त ।

शीतभीरु ( त्रि० ) (रुः । रुः । रु) ठण्ढा से डरनेवाला = ली, (स्त्री) बेइल वा छोला बेला ( एक पुष्पवृक्ष) ।

शीतल ( त्रि० )( लः । ला। लम् ) ठण्ढी वस्तु, ( स्त्री ) एक देवी, पटशण ( एक वृक्ष ) ।

शीतशिव ( पुं० । नपुं० ) ( वः । वम् ) (पुं०) बनसौंफ, (नपुं०) सेंधा नोन, सिलाजीत (ओषधी)।

शीतशीवम् ( नपुं० ) सिलाजीत ( ओषधी ) ।

शीतांशुः ( पुं० ) चन्द्रमा ।

शीत्य (त्रि०) ( त्यः । त्या । त्यम् ) जोता हुआ ( खेत इत्यादि ) ।

शीधु ( पुं० । नपुं ) ( धुः । धु ) मैरेयनाम एक मद्य । [ सीधु ]

शीफालिका ( स्त्री ) नेवारी ( एक पुष्पवृक्ष ) ।

शीरः (पुं०) हल वा हर । [सीरः]

शीर्षम् ( नपुं० ) मस्तक वा माथा।

शीर्षकम् ( नपुं० ) योद्धालोगों का टोप ।

शीर्षच्छेद्य (त्रि०) (द्यः । द्या । द्यम्) मस्तक काट लेने के योग्य अपराधी।

शीर्षण्य (पुं० । नपुं०) (ण्यः । ण्यम्) ( पुं० ) निर्मल केश वा साफ़ बाल, ( नपुं० ) योद्धा लोगों का टोप ।

शीलम् (नपुं०) शुद्ध कर्म वा पवित्र काम, स्वभाव ।

शीहुण्डः ( पुं० ) सेंहुड़ वृक्ष ।

शुक ( पुं० । नपुं ) ( कः । कम् ) (पुं०) सुग्गा पक्षी, व्यास मुनि का पुत्र, (नपुं०) कुरोदा वृक्ष ।

शुकनासः ( पुं० ) सोनापाढ़ा (एक ओषधीकाष्ठ ) ।

शुकवर्हम् ( नपुं० ) कुरोदा वृक्ष ।

शुक्त ( त्रि० ) ( क्तः । क्ता । क्तम् ) पवित्र वा शुद्ध, खट्टा = ट्टी, कठोर वा कड़ा = ड़ी ।

शुक्तिः ( स्त्री ) सीप वा सतुही, नखनामक गन्धवस्तु ।

शुक्र (पुं० । नपुं०) ( क्रः । क्रम् ) (पुं०) दैत्यों के गुरु, जेठ महीना, अग्नि वा आग, (नपुं०) पुरुष

वा स्त्री का वीर्य्य वा धातु ।
शुक्लः (पुं०) अण्डकोश ।
शुक्रशिष्यः (पुं०) दैत्य ।
शुक्ल (त्रि०) (क्लः । क्ला । क्लम्) श्वेत रङ्ग की वस्तु, (पुं०) श्वेत रङ्ग ।
शुचि (त्रि०) (चिः । चिः । चि) पवित्र, श्वेत वा सफेद वस्तु, छलरहित, (पुं०) श्वेत रङ्ग, असाढ़ महीना, शृङ्गार रस, अग्नि वा आग, राजा का मन्त्री।
शुण्ठि (स्त्री) (ण्ठिः—ण्ठी) सोंठ औषधी ।
शुण्डा (स्त्री) मदिरा का गृह वा कलवरिया ।
शुण्डापानम् (नपुं०) तथा "शुण्डा" "पानम्" ऐसा पृथक् २ शब्द भी उसी अर्थ का वाचक है )।
शुतुद्रिः (स्त्री) शतद्रू नदी ।
शुद्धान्तः (पुं०) राजों का जनानखाना, राजों का चोरमहल, आशौच वा अशुद्धता का अन्त ।
शुनकः (पुं०) कुत्ता ।
शुनासीरः (पुं०) इन्द्र ।
शुनी (स्त्री) कुतिया ।
शुभ (त्रि०) (भः । भा । भम्) सुन्दर वा कल्याणरूप वा मङ्गलरूप, (पुं०) बकरा (पशु), (नपुं०) कल्याण वा मङ्गल ।
शुभंयु (त्रि०) (युः । युः । यु) शुभयुक्त वा कल्याणयुक्त वा मङ्गलयुक्त ।
शुभ्र (त्रि०) (भ्रः । भ्रा । भ्रम्) श्वेतवर्ण वस्तु, उद्दीप्त वा प्रकाशमान, (पुं०) श्वेत रङ्ग ।
शुभ्रदन्ती (स्त्री) पुष्पदन्तनामक दिग्गज की स्त्री ।
शुभ्रांशुः (पुं०) चन्द्रमा ।
शुल्क (पुं० । नपुं०) (ल्कः । ल्कम्) कर वा महसूल वा मालगुज़ारी, स्त्री का धन ।
शुल्व (स्त्री । नपुं०) (ल्वा । ल्वम्) डोरी वा रस्सी, (नपुं०) ताँबा धातु ।
शुश्रूषा (स्त्री) गुरु इत्यादि बड़ों की सेवा, खुशामद ।
शुषि (स्त्री) (षिः—षी) छिद्र वा बिल ।
शुषिर (त्रि०) (रः । रा । रम्) छिद्रयुक्त वस्तु, (नपुं०) छिद्र वा बिल, बांसुली इत्यादि बाजा जो फूँकने से बजता है ।
शुष्क (त्रि०) (ष्कः । ष्का । ष्कम्) सूखा—खी ।
शुष्कल (त्रि०) (लः । ला । लम्) मांस और मछली का खानेवाला।

शुष्मम् ( नपुं० ) सामर्थ्य वा बल।
शुष्मन् (पुं०) (ष्मा) अग्नि वा आग।
शूकः (पुं०) जव इत्यादि का चोखा अग्रभाग वा टूँड़ा ।
शूककीटः ( पुं० ) ऊन खानेवाला कीड़ा ।
शूकधान्यम् (नपुं०) वह अन्न जिसमें टूँड़ा रहता है (जव गोहूँ इत्यादि )।
शूकरः ( पुं० ) सूअर ( पशु ) ।
शूकशिम्बा (स्त्री) केवाँच तरकारी।
शूकशिम्बि ( स्त्री ) (म्बिः—म्बी) तथा ।
शूद्रः (पुं०) शूद्र अर्थात् चौथा वर्ण।
शूद्रा ( स्त्री ) शूद्रजाति की स्त्री।
शूद्री ( स्त्री ) शूद्र की स्त्री ।
शून्य (त्रि०) ( न्यः । न्या । न्यम् ) सूनसान वा निर्जन स्थान, ( नपुं० ) आकाश, सुन्ना (०)। [ शुन्य ]
शून्यवादिन् ( पुं० ) ( दी ) एक प्रकार का नास्तिक ("सौगत" में देखो ) ।
शूरः ( पुं० ) वीर ।
शूरणः ( पुं० ) सूरन (एक कन्द) ।
शूर्प ( पुं० । नपुं० ) ( र्पः । र्पम् ) सूप ( अन्न पछोड़ने का पात्र )। [ सूर्प ]
शूल ( पुं० । नपुं० ) ( लः । लम् ) शूल रोग (जो पेट में होता है), शूल एक अस्त्र ।
शूलाकृत (त्रि०) ( तः । ता । तम् ) लोहे के दण्डे पर लपेट कर पकाया हुआ = ढूं (मांस इत्यादि)।
शूलिन् ( पुं० ) ( ली ) शिव ।
शूल्य (त्रि०) (ल्यः । ल्या । ल्यम् ) "शूलाकृत" में देखो ।
शृगालः (पुं०) सियार (एक पशु) ।
शृङ्खल (स्त्री । नपुं०) (ला । लम्) बेड़ी (जो कैदी के पैर में डाली जाती है), सिकड़ा ( स्त्रियों के पैर का गहना ), सिकड़ी, ( नपुं० ) पुरुष के कमर का गहना ( करधनी इत्यादि ) ।
शृङ्खलकः ( पुं० ) ऊँट का बच्चा जिस के पैर में काठ का बन्धन लगा रहता है ।
शृङ्ग ( पुं० । नपुं० ) ( ङ्गः । ङ्गम् ) (पुं०) ओषधियों के अष्टवर्ग में की जीवकनाम एक ओषधी, ( नपुं० ) सींग, पहाड़ की चोटी, प्रधानता ।
शृङ्गवेरम् ( नपुं० ) आदी ( एक तीता कन्द ) ।
शृङ्गाटकम् ( नपुं० ) चौरहा वा चौमोहानी, सिँघाड़ा ।

शृङ्गारः (पुं०) शृङ्गार रस जिस में स्त्री पुरुष की प्रीति वा क्रीड़ा का वर्णन रहता है, सिँगार।
शृङ्गिणी (स्त्री) गैया।
शृङ्गिन् (त्रि०) (ङ्गी। ङ्गिणी। ङ्गि) सींगवाला पशु, (पुं०) नन्दी (शिव के एक गण का नाम), ऋषभनामक औषध, (नपुं०) गहने का सोना।
शृङ्गी (स्त्री) "मद्गुर" जन्तु की स्त्री, अतीस ओषधी।
शृङ्गीकनकम् (नपुं०) गहने का सोना।
शृणिः (स्त्री) अङ्कुश वा आँकुस।
शृत (त्रि०) (तः। ता। तम्) पकायाहुआ (जैसा भात इत्यादि), (नपुं०) पकायाहुआ दूध घी और पानी।
शेखरः (पुं०) माथा वा ललाट, माथा वा ललाट का गहना ("आपीड" में देखो)।
शेफः (पुं०) पुरुष का मूत्रद्वार।
शेफस् (नपुं०) (फः) तथा। [शेपस्—(पः)]
शेफालिका (स्त्री) हरफारेवड़ीवृक्ष, नेवारी पुष्पवृक्ष, नेवारी फूल।
शेमुषी (स्त्री) बुद्धि।
शेलुः (पुं०) लसोड़ा वृक्ष।
शेवधिः (पुं०) निधि वा एक खजाना (१ महापद्म, २ पद्म, ३ शङ्ख, ४ मकर, ५ कच्छप, ६ मुकुन्द, ७ कुन्द, ८ नील, ९ खर्व)।
शेवलः (पुं०) पानी की सेवार।
शेवाल (पुं०। नपुं०) (लः। लम्) तथा। [शेपालः]
शेष (त्रि०) (षः। षा। षम्) (पुं०) शेषनाग, (स्त्री) किसी देवता की प्रसाद की माला, (पुं०। नपुं०) बाकी वा बचा हुआ=है।
शैक्षः (पुं०) वह विद्यार्थी जिस ने पहिले पहिल पढ़ना प्रारम्भ किया है।
शैखरिकः (पुं०) चिचिड़ा (एक लता)।
शैलः (पुं०) पर्वत।
शैलालिन् (पुं०) (ली) नट।
शैलूषः (पुं०) तथा, बेल वृक्ष।
शैलेयम् (नपुं०) सिलाजीत ओषधी अर्थात् एक सुगन्धवस्तु जो पत्थर से निकलती है।
शैवल (पुं०। नपुं०) (लः। लम्) पानी की सेवार।
शैवाल (पुं०। नपुं०) (लः। लम्) तथा।

शैवलिनी ( स्त्री ) नदी ।
शैव्यः ( पुं० ) कृष्ण के चार घोड़ों में से एक का नाम ।
शैशवम् ( नपुं० ) लड़काई वा लड़कपन ।
शोकः ( पुं० ) शोक वा चिन्ता ।
शोचिष् ( नपुं० ) (चिः) प्रभा वा ज्वाला ।
शोचिःकेशः (पुं०) अग्नि वा आग।
शोण ( त्रि० ) ( णः । णा । णम ) लाल रङ्गवाली वस्तु (जैसा कमल के फूल के पत्ते का रङ्ग होता है), (पुं०) लाल रङ्ग, एक नद ।
शोणकः (पुं०) सोनापाढ़ा ( काष्ठौषधी ) ।
शोणरत्नम् ( नपुं० ) लाल मणि वा मानिक ।
शोणाकः (पुं०) सोनापाढ़ा ओषधी।
शोणितम् (नपुं०) रुधिर वा लोहू।
शोथः ( पुं० ) सूज वा सूजन ( एक रोग ) ।
शोथघ्नी ( स्त्री ) गदहपूर्णा ( एक लताओषधी ) ।
शोधनकः ( पुं० ) झाड़ू देनेवाला वा सफाई करने वाला ।
शोधनी ( स्त्री ) झाड़ू वा कूँची ।
शोधित ( त्रि० ) (तः । ता । तम्) शोधागया वा मलरहित किया गया वा साफ़ कियागया = ई ।
शोनकः (पुं०) सोनापाढ़ा ओषधी।
शोफः ( पुं० ) सूज वा सूजन (एक रोग) ।
शोभन ( त्रि० ) (नः । ना । नम्) सुन्दर ।
शोभा (स्त्री) शोभा वा सुन्दरता।
शोभाञ्जनः ( पुं० ) सहिँजन वृक्ष ।
शोषः (पुं०) सूखना वा सूखजाना, क्षय रोग ।
शौकम् (नपुं०) सुग्गों का झुण्ड ।
शौक्लिकेयः (पुं०) एक प्रकारका विष।
शौक्ल्यम् ( नपुं० ) सफेदी ।
शौण्ड (त्रि०) (ण्डः । ण्डी । ण्डम्) चतुर, मतवाला = ली, ( स्त्री ) पीपर ओषधी ।
शौण्डिकः (पुं०) मद्य बनानेवाला वा कलवार ।
शौद्धोदनिः ( पुं० ) शाक्य मुनि ।
शौभाञ्जनः ( पुं० ) सहिँजन वृक्ष।
शौरिः ( पुं० ) कृष्ण ।
शौर्यम् (नपुं०) शूरता, सामर्थ्य ।
शौल्विकः ( पुं० ) ताँबा का काम बनानेवाला ।
शौष्कल ( त्रि० )(लः । ली । लम्) मछली मांस का खाने वाला । [ शौष्कल ]

श्च्योतः (पुं०) पानी इत्यादि पतली वस्तु का बहना वा चूना।

श्मशानम् (नपुं०) प्राणी के वध का स्थान।

श्मश्रु (नपुं०) मोछ और डाढ़ी के बाल।

श्याम (त्रि०) (मः। मा। मम्) काले रङ्गवाली वस्तु, हरे रङ्ग वाली वस्तु, (पुं०) काला रङ्ग, हरा रङ्ग, प्रयाग का वट, मेघ, वृद्धदारक एक ओषधीवृक्ष, कोकिल पक्षी, (स्त्री) उत्पलशारिवा ओषधी, सोलह बरस की स्त्री, वह स्त्री जिस को लड़का नहीं हुआ है, गोंदी वृक्ष, यमुना नदी, रात्रि वा रात, श्यामत्रिधारा ओषध, नेवारी पुष्पवृक्ष, (नपुं०) मिरिच, समुद्र का नोन।

श्यामल (त्रि०) (लः। ला। लम्) काले रङ्गवाला = ली, (पुं०) काला रङ्ग।

श्यामाकः (पुं०) सांवां (एक अन्न)।

श्यालः (पुं०) पत्नी का भाई।

श्याव (त्रि०) (वः। वा। वम्) काला पीला मिश्रित रङ्गवाला = ली (जैसा वानर का रोम), (पुं०) काला पीला मिश्रित रङ्ग।

श्येत (त्रि०) (तः। ता—नी। तम्) श्वेत वा सफेद रङ्गवाला = ली, (पुं०) श्वेत रङ्ग।

श्येनः (पुं०) बाज पक्षी।

श्यैनम्पाता (स्त्री) एक प्रकार का अहेर।

श्योनाकः (पुं०) सोनापाढ़ा ओषधी।

श्रद्धा (स्त्री) आदर, आकाङ्क्षा, विश्वास।

श्रद्धालु (त्रि०) (लुः। लुः। लु) श्रद्धा करने वाला वा विश्वास करनेवाला = ली, (स्त्री) गर्भ से कोई वस्तु पर इच्छा चलानेवाली स्त्री।

श्रयणम् (नपुं०) सेवा करना, आश्रय वा अवलम्ब करना।

श्रवः (पुं०) सुनना।

श्रवणम् (नपुं०) कान, सुनना।

श्रवस् (नपुं०) (वः) कान।

श्रविष्ठा (स्त्री) धनिष्ठा नक्षत्र।

श्राणा (स्त्री) लपसी (एक भोजन की वस्तु)।

श्राद्धम् (नपुं०) शास्त्रविहित एक पितृसम्बन्धी कर्म (पिण्डा पारना)।

श्राद्धदेवः (पुं०) यमराज।

श्रायः (पुं०) सेवा।

श्रावणः (पुं०) सावन महीना।

श्रावणिकः ( पुं० ) तथा ।
श्राव्यम् ( नपुं० ) स्पष्ट वचन ।
श्रीः ( स्त्री ) लक्ष्मी, धन, शोभा ।
श्रीकण्ठः ( पुं० ) शिव ।
श्रीघनः ( पुं० ) बुद्ध वा विष्णु का नवम अवतार ।
श्रीदः (पुं०) धन देनेवाला, कुबेर।
श्रीपतिः ( पुं० ) विष्णु ।
श्रीपर्णम् (नपुं०) अगेथू वृक्ष, कमल।
श्रीपर्णिका ( स्त्री ) कायफल ।
श्रीपर्णी ( स्त्री ) खम्भारी वृक्ष ।
श्रीपिष्टः (पुं०) "श्रीवास" में देखो।
श्रीफलः ( पुं० ) बेल वृक्ष ।
श्रीफली ( स्त्री ) नील ।
श्रीमत् ( त्रि० ) ( मान् । मती । मत् ) धनी, शोभावान्, (पुं०) विष्णु, तिलक वृक्ष ।
श्रील ( त्रि० ) ( लः । ला । लम् ) लक्ष्मीवान् वा धनी [श्लील], ( पुं० ) कुबेर ।
श्रीवत्सः ( पुं० ) विष्णु के छाती पर का भृगु मुनि के लात का चिह्न ।
श्रीवत्सलाञ्छनः ( पुं० ) विष्णु ।
श्रीवासः ( पुं० ) एक प्रकार का धूप जो सरल देवदार के लासा का होता है ।
श्रीवेष्टः ( पुं० ) तथा ।
श्रीसञ्ज्ञम् ( नपुं० ) लवँग ( एक वृक्ष का फूल ) ।
श्रीहस्तिनी (स्त्री) एक प्रकार की भाजी जिस का पत्ता हाथी के कान के ऐसा होता है ।
श्रुत (त्रि०) (तः । ता । तम्) सुना गया वा सुनपड़ा, = ड़ी (नपुं०) शास्त्र ।
श्रुतिः ( स्त्री ) वेद, कान, सुनना, वीणा इत्यादि तारवाले बाजों के बजाने से पहिले पहिल निकला हुआ सूक्ष्म शब्द वा पहिले शब्द की प्रतिध्वनि ।
श्रेणि ( पुं० । स्त्री ) (णिः । णिः —णी) पङ्क्ति वा पाँती, एकही काम करनेवाले कारीगरों का झुण्ड, समूह वा झुण्ड ।
श्रेयस् (त्रि०) (यान् । यसी । यः) अच्छा वा भला वा मङ्गलरूप, अत्यन्त प्रशंसा वा बड़ाई के योग्य, (स्त्री) गजपीपर ओषधी, हरैं, सोनापाटा ओषधी, (नपुं०) पुण्य, मोक्ष, मङ्गल वा कल्याण।
श्रेष्ठ ( त्रि० ) ( ष्ठः । ष्ठा । ष्ठम् ) श्रेष्ठ वा अत्यन्त प्रशंसा के योग्य।
श्रोण ( त्रि० ) ( णः । णा । णम् ) लङ्गाहीन अर्थात् जिस्की जङ्घा कटगई है ।

श्रोणि (स्त्री) (णिः—णी) कमर के पीछे का भाग वा चूतड़, कमर
श्रोत्रम् ( नपुं० ) कान।
श्रोत्रियः (पुं०) वेद का पढ़नेवाला।
श्रौषट् (अव्यय) यज्ञ में इस शब्द को उच्चारण कर के देवता को हवि दी जाती है।
श्लक्ष्ण (त्रि०) (क्ष्णः । क्ष्णा । क्ष्णम्) चिकना = नी, सूक्ष्म वा अल्प।
श्लीपदम् ( नपुं० ) पीलपाँव (एक प्रकार का रोग )।
श्लेषः (पुं०) आलिङ्गन वा देह से देह लपटाना, आश्रय वा अवलम्ब, एक काव्य का अलङ्कार।
श्लेष्मण (त्रि०) (णः । णा । णम्) कफ रोगवाला = ली, कफप्रकृतिवाला = ली।
श्लेष्मन् ( पुं० ) ( ष्मा ) कफ।
श्लेष्मल (त्रि०) (लः । ला । लम्) "श्लेष्मण" में देखो।
श्लेष्मातकः ( पुं० ) लसोड़ा वृक्ष।
श्लोकः ( पुं० ) पद्य वा श्लोक, यश वा कीर्ति।
श्वदंष्ट्रा ( स्त्री ) गोखुरू ओषधी, कुत्ता का दाँत।
श्वन् ( पुं० ) ( श्वा ) कुत्ता।
श्वनिश (स्त्री । नपुं०)(शा । शम्) कुत्तों की रात।
श्वपचः (पुं०) चाण्डाल वा डोम।
श्वपाकः ( पुं० ) तथा।
श्वभ्रम् ( नपुं० ) छिद्र वा बिल वा गड्ढा, पाताल।
श्वयथुः ( पुं० ) सूज वा सूजन।
श्ववृत्ति (पुं० । स्त्री) (त्तिः । त्तिः) (पुं०) चाण्डाल वा डोम, (स्त्री) सेवा वा नौकरी।
श्वशुरः (पुं०) ससुर अर्थात् पत्नी वा पति का पिता।
श्वशुरौ, द्विवचन, (पुं०) सास ससुर
श्वशुर्यः (पुं०) साला, देवर, जेठ।
श्वश्रूः ( स्त्री ) सास।
श्वश्रेयस (त्रि०)(सः । सा । सम्) अच्छा वा भला वा मङ्गलरूप, (नपुं०) कल्याण वा मङ्गल।
श्वसनः ( पुं० ) वायु, मयनफल का वृक्ष।
श्वस् ( अव्यय ) ( श्वः ) कल वा आनेवाला दिन।
श्वाविध् (पुं०) (त्—द्) साही पशु।
श्वित्रम् ( नपुं० ) श्वेत कुष्ठ रोग।
श्वेत ( त्रि० ) ( तः । ता । तम् ) सफेद रङ्गवाला = ली, ( पुं० ) सफेद रङ्ग, ( नपुं० ) चाँदी धातु, रुपया।
श्वेतगरुत् ( पुं० ) हंस पक्षी।
श्वेतच्छदः ( पुं० ) तथा।

श्वेतमरिचम् ( नपुं० ) सहैंजन की बीया ।

श्वेतरक्त (त्रि०) (क्तः । क्ता । क्तम्) गुलाबी रङ्गवाला = ली, (पुं०) गुलाबी रङ्ग ।

श्वेतसुरसा ( स्त्री ) सफेद नेवारी ( पुष्पवृक्ष ), तुलसी वृक्ष ।

—***—

# ( ष )

षः (पुं०) प्रधान वा श्रेष्ठ, गहिरी आँखवाला, उपद्रव, परोक्ष ।

षट्कर्मन् ( पुं० ) ( र्मा ) यजन याजन अध्ययन अध्यापन दान और प्रतिग्रह इन छ कर्मों को करनेवाला ब्राह्मण ।

षट्पदः ( पुं० ) भ्रमर वा भँवरा ।

षडभिज्ञः ( पुं० ) बुद्ध वा विष्णु का नवम अवतार ।

षडाननः ( पुं० ) स्वामिकार्तिक ।

षड्स्कन्धः ( पु० ) एक प्रकार का करञ्ज वृक्ष ।

षड्ग्रन्था ( स्त्री ) बच ओषधी ।

षड्ग्रन्थिका (स्त्री) आँबाहरदी ।

षड्जः (पुं०) खरज स्वर वा सात स्वरों में से पहिला स्वर (जैसा बरसात में मोर बोलता है) ।

षण्ड (पुं० । नपुं०) (ण्डः । ण्डम्) कमल इत्यादि पुष्पवृक्षों का झुण्ड, वृक्षों का झुण्ड, ( पुं० ) साँड़ वा मोटा ताज़ा बैल ।

षण्ढः (पुं०) हिँजड़ा वा नपुंसक । [ षण्डः ]

षष् ( त्रि० ) ( ट्—ड् । ट्—ड् । ट्—ड् ) छ सङ्ख्या ( ६ ), छ पदार्थ ।

षष्टिकः ( पुं० ) साठीधान ।

षष्टिक्य (त्रि०) (क्यः । क्या । क्यम्) साठी चावल का खेत ।

षाण्मातुरः (पुं०) स्वामिकार्तिक ।

—***—

# ( स )

स (पुं० । स्त्री)(सः । सा) (पुं०) क्रोध, ईश्वर, वरण वा अङ्गीकार, शिव, ( स्त्री ) लक्ष्मी; पार्वती ।

सकल ( त्रि० ) ( लः । ला । लम् ) अखण्ड वा सम्पूर्ण ।

सकृत् ( अव्यय ) एक बार वा एक

दफे, साथ वा सङ्ग।
सक्तत्प्रजः (पुं०) कौआ पक्षी।
सक्तत्प्रजस् (पुं०) (जाः) तथा।
सक्तुफला (स्त्री) शमी वृक्ष।
सक्तुफली (स्त्री) तथा।
सक्थि (नपुं०) जङ्घा (पैर का एक हिस्सा)।
सखि (पुं०) (खा) मित्र।
सखी (स्त्री) सखी वा सहेली।
सख्यम् (नपुं०) मित्रता वा मैत्री वा दोस्ती।
सगर्भ्यः (पुं०) एक माता के पेट से उत्पन्न वा सहोदर भाई।
सगोत्रः (पुं०) समान गोत्रवाला वा गोती।
सग्धिः (स्त्री) साथ में भोजन करना।
सङ्कट (त्रि०) (टः। टा। टम्) सकेत वा सकरा वा कम चौड़ा (रस्ता इत्यादि)।
सङ्करः (पुं०) कई एक विजातीय वस्तुओं का मेल, कतवार।
सङ्कर्षणः (पुं०) बलदेव (कृष्ण के बड़े भाई)।
सङ्कलित (त्रि०) (तः। ता। तम्) मिलायागया वा जोड़ागया = ई, (नपुं०) जोड़ना (जैसे २ और ३ = ५)।
सङ्कल्पः (पुं०) मानसकर्म वा मनसूबा।
सङ्कसुक (त्रि०) (कः। का। कम्) चञ्चल प्रकृतिवाला वा चञ्चल स्वभाववाला = ली, दुर्जन।
सङ्काश (त्रि०) (शः। शा। शम्) सदृश वा तुल्य।
सङ्कीर्ण (त्रि०) (र्णः। र्णा। र्णम्) भराहुआ = ई, कम चौड़ा = ड़ी, अशुद्ध, अमिश्र अर्थात् जो मिश्र नहीं है, (पुं०) वर्णसङ्कर जाति (अम्बष्ठ करण इत्यादि से लेकर चाण्डाल पर्य्यन्त।
सङ्कुल (त्रि०) (लः। ला। लम्) भराहुआ = ई, गड़बड़ कियाहुआ = ई, बे मेल का बोलना वा विरुद्धार्थ बोलना (जैसा— 'मेरी माता वन्ध्या है')।
सङ्केतः (पुं०) सान वा इशारा।
सङ्कोच (पुं०। नपुं०) (चः। चम्) (पुं०) सिकोरना वा फैलेहुए को बटोरना, (नपुं०) केसर एक सुगन्धवस्तु।
सङ्क्रन्दनः (पुं०) इन्द्र।
सङ्क्रमः (पुं०) मिल जाना, दुर्ग मार्ग वा दुर्गम स्थान में प्रवेश करना।
सङ्क्षेपः (पुं०) थोड़ा वा मुख-

तसर, एकट्ठा करना वा बटोर लेना ।

सङ्क्षेपणम् ( नपुं० ) एकट्ठा करना वा बटोर लेना ।

सङ्ख्यम् (नपुं०) सङ्ग्राम वा युद्ध।

सङ्ख्या ( स्त्री ) गिनती (१-२-३ इत्यादि ), विचार, गिनती करना ।

सङ्ख्यात (त्रि०) (तः । ता । तम्) गिनागया वा गिनाहुआ = ई ।

सङ्ख्यावत् (पुं०) (वान्) पण्डित ।

सङ्ख्येय (त्रि०) (यः । या । यम्) गिनने के योग्य वा जिस को गिन सकते हैं।

सङ्गः ( पुं० ) मेल वा भेंट ।

सङ्गत ( त्रि० ) ( तः । ता । तम् ) मिलगया = ई, युक्ति से मिला हुआ = ई ( वचन इत्यादि ), ( नपुं० ) मेल वा भेंट ।

सङ्गम (पुं० । नपुं०) (मः । मम्) मेल वा भेंट ।

सङ्गरः (पुं०) सङ्ग्राम वा युद्ध, प्रतिज्ञा, सलाह, आपत्ति वा विपत्ति ।

सङ्गीर्ण (त्रि०) ( र्णः । र्णा । र्णम् ) अङ्गीकार कियागया = ई ।

सङ्गूढ ( त्रि० ) ( ढः । ढा । ढम् ) जोड़ाहुआ = ई (जैसा २ ३ और ५ मिल कर १० हुए) ।

सङ्ग्रहः ( पुं० ) बटोरना वा एकट्ठा करना, फैले हुए को एक जगह करना ।

सङ्ग्रामः ( पुं० ) युद्ध ।

सङ्ग्राहः ( पुं० ) ढाल की मूठ अर्थात् पकड़ने का स्थान, मूठी से दृढ़ पकड़ना ।

सङ्घः ( पुं० ) प्राणियों का समूह।

सङ्घातः ( पुं० ) समूह वा झुण्ड, एक नरक ।

सचिवः ( पुं० ) राजा का मन्त्री, सहाय वा मददगार ।

सच्चिदानन्दः (पुं०) परमात्मा वा ईश्वर ।

सज्जः (पुं०) वह योद्धा जिसने कवच पहिना है ।

सज्जन (त्रि०) ( नः । ना । नम् ) (पुं०) कुलीन, (स्त्री) नायक वा सरदार के चढ़ने के लिए हाथी का तयार करना वा साजना, (नपुं०) पहरा वा चौकी देना।

सञ्चयः ( पुं० ) राशि वा ढेरी ।

सञ्चारिका ( स्त्री ) दूती वा पुरुष का स्त्री के पास वा स्त्री का पुरुष के पास समाचर पहुंचानेवाली ।

सञ्जनम् (नपुं०) जोड़ना वा सटाना, सङ्ग करना वा साथ करना

सञ्जवनम् (नपुं०) वह घर जिस में चार कोठरी आम्हने साम्हने है।
सञ्ज्ञपनम् (नपुं०) मार डालना।
सञ्ज्ञा (स्त्री) नाम, बुद्धि वा ज्ञान, सान बुझाना वा इशारा करना, गायत्री मन्त्र, सूर्य के स्त्री का नाम।
सञ्ज्ञुः (पुं०) सटी जाँघ वाला अर्थात् मोटाई से जिसकी जङ्घा सटी मालूम पड़ती है। [सञ्ज्ञः]
सञ्ज्वरः (पुं०) सन्ताप वा गरमी
सटा (स्त्री) जटा, सिंह घोड़ा इत्यादि के गले पर के बाल।
सण्डीनम् (नपुं०) पक्षियों का मिल कर चलना।
सततम् (अव्यय) सर्वदा वा सर्वकाल में।
सती (स्त्री) पतिव्रता, दक्ष की कन्या जो पहिले शिव को ब्याही थी
सतीनकः (पुं०) मटर (एक अन्न)।
सतीर्थ्यः (पुं०) एक साथ का पढ़नेवाला।
सतीलकः (पुं०) मटर (एक अन्न)।
सत् (त्रि०) (न्—ती। त्) सत्य वा सच्चा = च्ची, साधु वा भलामानुस, विद्यमान वा जो है, प्रशस्त वा प्रशंसायुक्त, पूजित वा प्रतिष्ठित, (पुं०) पण्डित।
सत्तम (त्रि०) (मः। मा। मम्) अत्यन्त सज्जन वा भलामानुस।
सत्पथः (पुं०) अच्छा मार्ग वा रस्ता
सत्य (त्रि०) (त्यः। त्या। त्यम्) सच्चा = च्ची, (स्त्री) सत्यभामा (एक कृष्ण की स्त्री), (नपुं०) सत्यता वा सच्चाई, शपथ वा कसम, सतयुग।
सत्यकः (पुं०) ब्रह्मा।
सत्यङ्कारः (पुं०) 'मैं अवश्य यह कार्य करूंगा' ऐसी प्रतिज्ञा करना।
सत्यवचस् (त्रि०) (चाः। चाः। चः) सच्ची बात बोलनेवाला = ली, (पुं०) ऋषि वा मुनि।
सत्यवतीसुतः (पुं०) व्यास मुनि अर्थात् पराशर मुनि के पुत्र।
सत्याकृतिः (स्त्री) "सत्यङ्कार" में देखो।
सत्यानृतम् (नपुं०) वाणिज्य वा बनियई वा बनियाँ का रोजगार
सत्यापनम् (नपुं०) "सत्यङ्कार" में देखो।
सत्रम् (नपुं०) आच्छादन (वस्त्र इत्यादि), यज्ञ, सदाबर्त, धन, वन, धूर्तता वा दगाबाजी।
सत्रा (अव्यय) सङ्ग वा साथ।
सत्रिन् (त्रि०) (त्री। त्रिणी। त्रि)

सदावर्त देनेवाला = ली ।

सत्व ( पुं० । नपुं० ) (त्वः । त्वम) जन्तु, (नपुं०) सत्त्वगुण, द्रव्य, प्राण, अत्यन्त पराक्रम वा सामर्थ्य, छीर ।

सत्वर ( त्रि० ) ( रः । रा । रम् ) जल्दीबाज़, ( नपुं० ) जल्दी ।

सदनम् ( नपुं० ) घर ।

सदस् ( नपुं० ) (दः) सभा ।

सदस्यः (पुं०) सभा में बैठनेवाला, यज्ञ में क्रियासमूह का देखनेवाला ।

सदा ( अव्यय ) सर्वकाल में ।

सदागतिः ( पुं० ) वायु ।

सदातन (त्रि०) (नः । नी । नम् ) सर्वकाल में रहनेवाला = ली, नित्य वस्तु ।

सदानन्दः ( पुं० ) ब्रह्म ।

सदानीरा ( स्त्री ) "करतोया" में देखो ।

सदृक्ष (त्रि०) ( क्षः । क्षा । क्षम् ) सदृश वा तुल्य ।

सदृश ( त्रि० )( शः । शी । शम् ) तथा ।

सदृश् (त्रि०) (क्—ग् । क्—ग् । क्—ग् ) तथा ।

सदेश ( त्रि० )( शः । शा । शम् ) एक देश का वा एक स्थान का वा एक जगह का रहनेवाला = ली, समीपवाला = ली, (पुं०) समीप ।

सद्मन् ( नपुं० ) ( द्म ) घर ।

सद्यस् ( अव्यय ) (द्यः) उसी क्षण में, अभी ।

सध्र्यञ्च् ( त्रि० )( ध्र्यङ् । ध्रीची । ध्र्यक् ) साथ में चलनेवाला वा एक साथ काम करने वाला, साथमें पूजा करनेवाला ।

सनत्कुमारः ( पुं० ) एक ब्रह्मा के पुत्र का नाम ।

सनपर्णी (स्त्री) पटसण एक वृक्ष ।

सना (अव्यय) सर्वकाल में वा नित्य।

सनातन (त्रि०) (नः । नी । नम् ) नित्य अर्थात् सर्वकाल में रहनेवाला = ली ।

सनाभिः (पुं०) सात पुरुष तक का वा ७ पुश्त तक का सम्बन्धी ।

सनिः (स्त्री) 'अध्येषणा' में देखो।

सनीड ( त्रि० ) ( डः । डा । डम् ) समीपवाला = ली ।

सन्तत ( त्रि० ) (तः । ता । तम् ) सर्वकाल में रहनेवाला = ली, विस्तृत वा विस्तारयुक्त, (नपुं०) निरन्तर वा सर्वकाल में ।

सन्ततम् ( अव्यय ) निरन्तर वा सर्वकाल में ।

सन्ततिः (स्त्री) गोत्र वा वंश, सन्तान (पुत्र पौत्र प्रपौत्र इत्यादि), पङ्क्ति वा पाँती ।

सन्तप्त (त्रि०) (प्तः । प्ता । प्तम्) सन्ताप को प्राप्त हुआ वा क्लेश को प्राप्त हुआ = ई, गरम हुआ = ई ।

सन्तमसम् (नपुं०) चारो ओर अन्धकार ।

सन्तानः (पुं०) देवतों का एक वृक्ष, पुत्र पौत्र इत्यादि वंश ।

सन्तापः (पुं०) गरमी ।

सन्तापित (त्रि०) (तः । ता । तम्) गरम कियागया = ई, दुःख दियागया = ई ।

सन्दानम् (नपुं०) पशु बाँधने की डोरी ।

सन्दानित (त्रि०) (तः । ता । तम्) बाँधाहुआ = ई ।

सन्द्रावः (पुं०) भागना ।

सन्दित (त्रि०) (तः । ता । तम्) गूथाहुआ = ई, बाँधाहुआ = ई।

सन्देशः (पुं०) सँदेसा वा समाचार

सन्देशवाच् (स्त्री) (क्—ग्) तथा ।

सन्देशहरः (पुं०) दूत वा हलकारा

सन्देहः (पुं०) संशय वा सन्देह ।

सन्दोहः (पुं०) समूह ।

सन्द्रावः (पुं०) भागना ।

सन्धा (स्त्री) प्रतिज्ञा, मर्यादा ।

सन्धानम् (नपुं०) मद्य का बनाना वा चुआना, दो वस्तुओं को मिलाना वा संयुक्त करना।

सन्धिः (पुं०) पड़िवा और पुनवाँसी का मध्यभाग, पड़िवा और अमावस का मध्यभाग, धन देकर शत्रु को प्रीति को बढ़ाना, आश्रय वा अवलम्ब, जोड़ना ।

सन्धिनी (स्त्री) बैल के साथ लगाई गई गैया ।

सन्ध्या (स्त्री) सन्ध्याकाल वा साँझ

सन्न (त्रि०) (न्नः । न्ना । न्नम्) दुःखित वा पीड़ित, नाश को प्राप्त हुआ = ई ।

सन्नकद्रुः (पुं०) प्यारमेवा वृक्ष ।

सन्नद्ध (त्रि०) (द्धः । द्धा । द्धम्) कामों के करने में उद्यत वा तयार, (पुं०) जिस योद्धा ने कवच पहिना है ।

सन्नयः (पुं०) अच्छी नीतिवाला वा अच्छा न्याय करनेवाला, सेना के पीछे की सेना, समूह।

सन्निकर्षः (पुं०) पास वा नगीच ।

सन्निकर्षणम् (नपुं०) तथा, पास करना वा नगीच करना ।

सन्निकृष्ट (त्रि०) (ष्टः । ष्टा । ष्टम्) पा-

सवाला वा नगीचवाला = ली।
सन्निधिः ( पुं० ) पास वा नगीच।
[ सन्निधम् ]
सन्निवेशः ( पुं० ) नगर इत्यादि में घर के लिये नापी हुई भूमि, टिकने की जगह वा भूमि, टिकना वा वास करना ।
सपत्न: ( पुं० ) शत्रु वा बैरी ।
सपत्नी ( स्त्री ) सवत वा पति की दूसरी स्त्री ।
सपदि (अव्यय) जल्दी, उसीक्षण में
सपर्या ( स्त्री ) पूजा वा आदर ।
सपिण्डः ( पुं० ) समानगोत्रवाला वा गोती, सात पुस्त तक का सम्बन्धी ।
सपीतिः ( स्त्री ) मद्य इत्यादि का एक साथ पीना ।
सप्तकी ( स्त्री ) एक तरह की मेखला वा स्त्री के कमर का गहना ।
सप्ततन्तुः ( पुं० ) यज्ञ ।
सप्तपर्णः ( पुं० ) छितिउन वृक्ष ।
सप्तर्षि, बहुवचनान्त, (पुं०) (र्षयः) सनक सनन्दन इत्यादि ७ ऋषि (किसी के मत में मरीचि इत्यादि ७ ऋषि हैं, १ सनक २ सनन्दन ३ सनातन ४ कपिल ५ आसुरि ६ वोढ़ ७ पञ्चशिख; १ मरीचि २ अङ्गिरा ३ अत्रि ४ पुलस्त्य ५ पुलह ६ क्रतु ७ वशिष्ठ) ।
सप्तला ( स्त्री ) एक तरह का पुष्पवृक्ष, सिकाकाई ( एक झाल का मसाला ) ।
सप्तार्चिष् ( पुं० ) ( र्चिः ) अग्नि वा आग ।
सप्ताश्वः ( पुं० ) सूर्य वा सूरज ।
सप्तिः ( पुं० ) घोड़ा ।
सब्रह्मचारिन् ( पुं० ) ( री ) एक शाखा के वेद का पढ़नेवाला ।
सभर्तृका (स्त्री) जिस स्त्री का पति जीता है अर्थात् पतियुक्त स्त्री ।
सभा ( स्त्री ) सभा, घर ।
सभाजनम् ( नपुं० ) पूजा करना, स्वागतादि शब्द से आदर करना । [ स्वभाजनम् ]
सभासद् ( पुं० ) ( त्—द् ) सभा में बैठनेवाला ।
सभास्तारः ( पुं० ) तथा ।
सभिकः (पुं०) जूआ का नालिया।
सभ्यः ( पुं० ) सभा में चतुर, कुलीन ।
सम ( वि० ) ( मः । मा । मम् ) समान वा तुल्य, समग्र वा सब, (स्त्री) वर्ष, वा बरिस, (नपुं०) साथ वा सङ्ग ।

समग्र (त्रि०) (ग्रः । ग्रा । ग्रम्) अखण्ड वा सम्पूर्ण ।

समङ्गा (स्त्री) मजीठ (एक रङ्ग की लकड़ी), लजालू लता ।

समजः (पुं०) पशुओं का झुण्ड ।

समज्ञा (स्त्री) कीर्ति वा यश ।

समज्या (स्त्री) सभा वा बैठक ।

समञ्जसम् (नपुं०) न्याय वा नीति।

समधिक (त्रि०) (कः । का । कम्) बहुत अधिक ।

समन्ततस् (अव्यय) (तः) चारो ओर से ।

समन्तदुग्धा (स्त्री) सेंहुड़ (ओषधीवृक्ष) ।

समन्तभद्रः (पुं०) बुद्ध (एक बौद्धों का देवता) ।

समन्तात् (अव्यय) चारो ओर से ।

समपदम् (नपुं०) एक प्रकार का बाण चलाने का आसन जिस में कि दोनो पैर बराबर रहते हैं।

समम् (अव्यय) साथ वा सङ्ग ।

समयः (पुं०) काल वा समय, शपथ वा किरिया, आचार वा अपने मत के सदृश व्यवहार, सिद्धान्त अर्थात् निर्णय कियाहुआ पदार्थ, बातचीत करना ।

समया (अव्यय) समीप, मध्य वा बीच ।

समर (पुं० । नपुं०) (रः । रम्) सङ्ग्राम वा युद्ध ।

समर्थ (त्रि०) (र्थः । र्था । र्थम्) समर्थ वा बलवान्, सम्बन्धयुक्त पदार्थ, हित ।

समर्थनम् (नपुं०) 'यही उचित है' ऐसा निश्चय करना ।

समर्द्धक (त्रि०) (कः । का । कम्) बर देनेवाला=ली ।

समर्याद (त्रि०) (दः । दा । दम्) समीपवाला वा साम्ननेवाला= ली, (पुं०) समीप ।

समवर्त्तिन् (पुं०) (र्त्ती) यमराज ।

समवायः (पुं०) सम्बन्ध, समूह ।

समष्ठिला (स्त्री) गाँडरदूर्वा वा गण्डिनी (एक प्रकार की साग) ।

समसनम् (नपुं०) सङ्क्षेप करना वा थोड़ा करना, मिलाना ।

समस्त (त्रि०) (स्तः । स्ता । स्तम्) अखण्ड वा सम्पूर्ण ।

समस्या (स्त्री) कवि की शक्ति की परीक्षा के लिये अपूर्ण पढ़े हुए श्लोक के पूर्ण होने की इच्छा।

समाः बहुवचन, (स्त्री) बरिस ।

समाकर्षिन् (त्रि०) (र्षी । र्षिणी । र्षि) खींचनेवाला=ली, (पुं०) दूर तक जानेवाला गन्ध ।

समागमः (पुं०) मेल वा भेंट ।

समाघातः (पुं०) सङ्ग्राम वा युद्ध ।
समाजः ( पुं० ) पशु से भिन्न प्राणियों का झुण्ड ।
समाधानम् (नपुं०) चित्त की एकाग्रता ।
समाधिः ( पुं० ) चित्त के व्यापार का रोकना, अङ्गीकार, "समर्थन" में देखो, चुप रहना, नियम, ध्यान ।
समान ( त्रि० ) ( नः । ना । नम् ) सदृश वा तुल्य, एक वा वही, ( पुं० ) नाभिस्थान का वायु, पण्डित ।
समानोदर्यः ( पुं० ) सहोदर वा एक पेट का भाई ।
समापनम् (नपुं०) समाप्त करना वा पूरा करना ।
समाप्तिः ( स्त्री ) समाप्त होना वा पूरा होना ।
समालम्भः ( पुं० ) केसर इत्यादि से देह को उबटना ।
समावृत्तः (पुं०) जिस "अनूचान" ने वा गुरुकुलवासी ब्रह्मचारी ने गार्हस्थ्य इत्यादि दूसरे आश्रम में जाने के लिये गुरु से आज्ञा पाई ।
समासः ( पुं० ) मेल, सङ्क्षेप ।
समासाद्य (त्रि०) (द्यः । द्या । द्यम्) प्राप्त करने के योग्य ।
समाहारः ( पुं० ) ढेरी करना वा एकट्ठा करना ।
समाहित (त्रि०) (तः । ता । तम्) समाधान कियागया = हुई, अङ्गीकार कियागया = हुई ।
समाहृतिः (स्त्री) विस्तार से कहे हुए पदार्थों को सूत्र और भाष्य में मिलाय कर रखना, सङ्क्षेप करना वा थोड़ा करना, बटोरना ।
समाह्वयः ( पुं० ) प्राणी से जूआ खेलना ( जैसा बुलबुल बटेर लाल इत्यादि को लड़ाय कर जूआ खेलते हैं ) ।
समांसमीना ( स्त्री ) वह गैया जो प्रत्येक वर्ष में बियाती है ।
समितिः ( स्त्री ) सङ्ग्राम वा युद्ध, सभा, सङ्ग वा साथ ।
समित् ( स्त्री ) सङ्ग्राम वा युद्ध ।
समिध् (स्त्री) ( त्—द् ) लकड़ी, होम की लकड़ी ।
समीकम् (नपुं०) युद्ध वा सङ्ग्राम ।
समीप ( त्रि० ) ( पः । पा । पम् ) समीपवाला वा पासवाला = ली
समीरः ( पुं० ) वायु ।
समीरणः (पुं०) तथा, मरुआ एक वृक्ष ।

समुच्चयः ( पुं० ) समूह वा ढेरी ।
समुच्छ्रयः (पुं०) उँचाई, विरोध ।
समुच्छ्रायः ( पुं० ) उँचाई ।
समुच्छ्रित (त्रि०) (तः । ता । तम् ) ऊँचा = ची ।
समुज्झित (त्रि०) (तः । ता । तम्) त्याग कियागया वा छोड़ दियागया = ई ।
समुत्पिञ्ज (त्रि०) (ञ्जः । ञ्जा । ञ्जम्) "पिञ्जल" में देखो ।
समुद्धृत (त्रि०) ( तः । ता । तम् ) ऊपर खींचागया = ई ( जैसा कूँआं में से पानी इत्यादि )।
समुदयः ( पुं० ) समूह, युद्ध ।
समुदायः ( पुं० ) तथा ।
समुद्गः ( पुं० ) डब्बा वा पेटारा ।
समुद्गकः ( पुं० ) तथा ।
समुद्धरणम् ( नपुं० ) वध करना वा छांट करना, जल इत्यादि का खींचना, उखाड़ना ।
समुद्धीर्ण (त्रि०) (र्णः । र्णा । र्णम् ) वध कियाहुआ वा छांट किया हुआ = ई, कूंआं इत्यादि से खींचाहुआ = ई, उखाड़ाहुआ = ई
समुद्धत (त्रि०) ( तः । ता । तम् ) अहङ्कारी वा गर्ववाला = ली, दुष्ट ।
समुद्रः ( पुं० ) समुद्र वा सागर ।
समुद्रान्ता ( स्त्री ) कपास वा रूई, जवासा वा हिंगुआ ( एक कँटैला वृक्ष ), अस्यरक औषधी ।
समुन्दनम् (नपुं०) थोड़ा होना ।
समुन्न ( त्रि० ) ( न्नः । न्ना । न्नम् ) थोड़ाहुआ = ई ।
समुन्नद्ध (त्रि०) ( द्धः । द्धा । द्धम् ) अपने को पण्डित मानने वाला = ली, गर्वित वा गर्वयुक्त ।
समुपजोषम् (नपुं०) आनन्द वा सुख
समूरुः ( पुं० ) वह मृग जिस के खाल का मृगचर्म बनता है ।
समूहः ( पुं० ) झुण्ड ।
समूह्यः ( पुं० ) यज्ञ में का एक अग्नि का आधार (उस के योग से वहाँ के अग्नि का यह नाम है )।
समृद्ध ( त्रि० ) ( द्धः । द्धा । द्धम् ) बड़ा धनी ।
समृद्धिः (स्त्री) माल (धन इत्यादि), वृद्धि ।
सम्, उपसर्ग, ( अव्यय ) अच्छीतरह से, चारो तरफ ।
सम्पत्तिः (स्त्री) बढ़ती, माल (धन इत्यादि )।
सम्पद् ( स्त्री ) ( त्—द् ) तथा ।
सम्परायः (पुं०) युद्ध वा सङ्ग्राम, उत्तरकाल वा अगाड़ी का समय

सम्पाकः (पुं०) अमिलतास वृक्ष ।
सम्पिधानम् ( नपुं० ) ढाँपना ।
सम्पुटकः (पुं०) डब्बा वा झांपी वा पेटारा ।
सम्प्रति ( अव्यय ) इस घड़ी ।
सम्प्रदायः ( पुं० ) "आम्नाय" में देखो ।
सम्प्रधारणम् (नपुं०) निश्चय करना।
सम्प्रधारणा ( स्त्री )'यही उचित है' ऐसा निश्चय करना ।
सम्प्रहारः (पुं०) सङ्ग्राम वा युद्ध ।
सम्फुल्ल ( त्रि० ) ( ल्लः । ल्ला । ल्लम् ) पुष्पित वा फूला हुआ =ई ( वृक्ष इत्यादि ) ।
सम्बर (पुं० । नपुं०) (रः । रम्) (पुं०) एक मृग, (नपुं०) जल ।
सम्बाकृत (त्रि०) (तः । ता । तम् ) दो बेर जोता हुआ = ई ( खेत इत्यादि ) ।
सम्बाधः (पुं०) सकरा वा सकेत ।
सम्बोधनम् ( नपुं० ) पुकारना ।
सम्भली ( स्त्री ) कुटनी वा स्त्री का पुरुष के पास वा पुरुष का स्त्री के पास समाचार पहुँचाने वाली स्त्री ।
सम्भेदः ( पुं० ) दो नदियों का मुहाना वा सङ्गम ।
सम्भ्रमः ( पुं० ) हर्ष इत्यादि से कार्य्यों में जल्दी करना, संवेग वा जल्दी ।
सम्मदः ( पुं० ) हर्ष, सुख ।
सम्मार्जनी (स्त्री) झाड़ू वा कूँची।
सम्मूर्च्छनम् ( नपुं० ) चारो ओर से बढ़ना वा भरजाना ।
सम्मृष्ट (त्रि०) (ष्टः । ष्टा । ष्टम्) धोधागया वा साफ़ कियागया = ई
सम्यक् (अव्यय) अच्छी तरह से ।
सम्यञ्च् (त्रि० ) ( म्यङ् । मीची । म्यक् ) सुन्दर, अच्छा वा भला =ली, सङ्गत वा उचित, सच्चा =च्ची, ( नपुं० ) सच ।
सम्राज् (पुं०) (ट्—ड्) वह राजा जिस ने राजसूय यज्ञ किया है और बारह मण्डल का स्वामी है और जिस की आज्ञा से सब राजे व्यवहार करते हैं ।
सरः (पुं०) हार (गले का भूषण), बाण, सरहरी (एक तृणवृक्ष) ।
सरक (पुं० । नपुं०) (कः । कम् ) ऊख का एक तरह का मद्य, मद्य का बरतन, मद्य का पीना।
सरघा ( स्त्री ) सहद की मक्खी ।
सरटः ( पुं० ) गिरगिटान जन्तु।
सरणा ( स्त्री ) कुब्जप्रसारणी ओषधी [ सरणी ], श्वेत त्रिधारा ओषधी ।

सरणि (स्त्री) ( णिः—णी ) मार्ग वा रस्ता ।
सरत्निः ( पु ० । स्त्री ) केहुनी से लेकर मूठी बँधाहुआ हाथ ।
सरमा (स्त्री) कुक्कुरी वा कुतिया ।
सरयूः ( स्त्री ) सरयू नदी ।
सरल ( त्रि० ) (लः । ला । लम्) सरल वा सूधा = धी, ( पु ० ) सरल नाम देवदार वृक्ष, (स्त्री) श्वेत त्रिधारा ओषधी ।
सरलद्रवः (पुं०) "श्रीवास" में देखो।
सरस ( त्रि० ) ( सः । सा । सम् ) ओदा वा रस से भरा = री ।
सरसी ( स्त्री ) खोदाहुआ तलाव जिस में कमल लगे हैं ।
सरसीरुहम् ( नपुं० ) कमल ।
सरस् (नपुं०) (रः) सरोवर वा झील
सरस्वती ( स्त्री ) सरस्वती देवी, वाणी, सरस्वती नदी, नदी ।
सरस्वत् ( पुं० ) ( स्वान् ) समुद्र, नद ( सोनभद्र इत्यादि ) ।
सरित् ( स्त्री ) नदी ।
सरित्पतिः ( पुं० ) समुद्र ।
सरीसृपः ( पुं० ) सर्प वा सांप ।
सर्गः (पुं०) सृष्टि, स्वभाव, त्याग, निश्चय, ग्रन्थ का अध्याय ।
सर्जः ( पुं० ) सखुआ वृक्ष ।
सर्जकः (पुं०) विजयसार (एक वृक्ष)।
सर्जरसः ( पुं० ) राल वा धूप ।
सर्जिकाक्षारः ( पुं० ) सज्जीखार।
सर्पः ( पुं० ) सर्प वा साँप ।
सर्पराजः ( पुं० ) साँपों का राजा वासुकी नाग ।
सर्पिष् (नपुं०) (र्पिः) घृत वा घी ।
सर्व ( त्रि० ) ( र्वः । र्वा । र्वम् ) समग्र वा सब, ( पुं० ) शिव वा महादेव ।
सर्वज्ञ ( त्रि० ) (ज्ञः । ज्ञा । ज्ञम्) सब जाननेवाला = ली, (पुं०) बुद्ध ( बौद्धों के देवता ), शिव ।
सर्वतस (अव्यय) (तः) चारो ओर।
सर्वतोभद्रः ( पुं० ) राजा इत्यादि धनपात्रों का एक प्रकार का घर, नीम वृक्ष ।
सर्वतोभद्रा (स्त्री) खम्भारी वृक्ष ।
सर्वतोमुखम् (नपुं०) जल वा पानी
सर्वदा ( अव्यय ) सब काल में ।
सर्वधुरीणः (पुं०) सब बोझा ढोने वाला ।
सर्वमङ्गला ( स्त्री ) पार्वती ।
सर्वरसः ( पुं० ) राल वा धूप ।
सर्वला ( स्त्री ) गँड़ासा एक लोहे का हथियार ।
सर्वलिङ्गिन् ( पुं० ) ( ङ्गी ) बौद्ध क्षपणक इत्यादि दुष्टशास्त्र के मतावलम्बी अर्थात् एक प्रकार

के नास्तिक ।

सर्व्ववेदस् ( पुं० ) (दाः) विश्वजित् नाम यज्ञ जिस ने किया हो ।

सर्व्वसन्नहनम् (नपुं०) चतुरङ्ग सैन्य का जमाव ।

सर्व्वसहा ( स्त्री ) पृथ्वी वा भूमि।

सर्व्वानुभूतिः ( स्त्री ) श्वेत त्रिधारा ओषधी ।

सर्व्वान्नीनः ( पुं० ) सब जाति के अन्न का भोजन करनेवाला ।

सर्व्वाभिसारः (पुं०) चतुरङ्ग सेना का जमाव ।

सर्व्वार्थसिद्ध (पुं०) शाक्यमुनि (बौद्धों के आचार्य) ।

सर्व्वौघः ( पुं० ) चतुरङ्ग सैन्य का जमाव ।

सर्षपः (पुं०) सरसों (एक वृक्ष, जिस के दाने से तेल निकलता है) ।

सलिलम् (नपुं०) जल वा पानी ।

सलिलोद्वाहनम् ( नपुं० ) रहट (एक पानी निकालने का यन्त्र)।

सल्लकी ( स्त्री ) सलई वृक्ष ।

सवः ( पुं० ) यज्ञ, मद्य बनाना ।

सवनम् (नपुं०) सोमलता का कूटना

सवयस् ( त्रि० ) (याः । याः । यः ) तुल्य वयवाला = ली, सखा वा मित्र ।

सविता (पुं०) (ता) सूर्य वा सूरज

सविध ( त्रि० ) (धः । धा । धम्) पासवाला = ली ।

सवेश (त्रि०) (शः । शा । शम्) तथा।

सव्य ( त्रि० ) (व्यः । व्या । व्यम्) शरीर का बाँयाँ अङ्ग, बाँयाँ ।

सव्येष्ठः (पुं०) सारथी वा रथवाहक।

ससनम् ( नपुं० ) "अरम्पराक" में देखो ।

सस्यम् ( नपुं० ) वृक्षादिकों का फल, अन्न (जव गोहूँ इत्यादि)।

सस्यसम्बरः ( पुं० ) सखुआ वृक्ष ।

सह ( अव्यय ) साथ वा सङ्ग ।

सह ( त्रि० ) ( हः । हा । हम् ) सहनेवाला = ली ।

सहकारः (पुं०) एक आम का वृक्ष जिसका फल सुगन्धित होता है।

सहचर (त्रि०) ( रः । री । रम् ) साथ २ रहनेवाला = ली ( दास दासी इत्यादि ), (पुं० । स्त्री) पीले फूलवाला कठसरैया वृक्ष ।

सहजः ( पुं० ) सहोदर भाई ।

सहधर्म्मिणी (स्त्री) विवाहिता स्त्री।

सहन ( त्रि० )( नः । ना । नम् ) सहने वाला = ली, ( नपुं० ) सहना ।

सहसा (अव्यय) जबर्दस्ती, जल्दी।

सहस् (पुं० । नपुं०) (हाः । हः) (पुं०) अगहन महीना, (नपुं०)

सामर्थ्य वा बल ।

सहस्यः ( पुं० ) पूस महीना ।

सहस्रम् (नपुं०) हजार (१०००) सङ्ख्या, हजार वस्तु ।

सहस्रदंष्ट्रः (पुं०) पहिना मछली ।

सहस्रपत्रम् ( नपुं० ) कमल ।

सहस्रवीर्या ( स्त्री ) दूब घास ।

सहस्रवेधिः ( पुं० ) हींग ( एक रसोंई का मसाला ) ।

सहस्रवेधिन् ( पुं० ) ( धी ) चुक ( एक खट्टी वस्तु ) ।

सहस्राक्षः ( पुं० ) इन्द्र ।

सहस्रांशुः ( पुं० ) सूर्य वा सूरज ।

सहस्रिन् (पु०) (स्त्री) हजार मनुष्यों की सेना का रखनेवाला

सहा ( स्त्री ) घिकुआर ओषधी, मुगौनी वृक्ष का मेवा ।

सहायः ( पुं० ) सहाय वा मददगार ।

सहायता (स्त्री) सहायों का झुण्ड, सहायता वा मदद ।

सहिष्णु (त्रि०) (ष्णुः । ष्णुः । ष्णु) क्षमा करनेवाला-ली ।

सहृदय (त्रि०) (यः । या । यम्) निर्मल चित्तवाला-ली, रसिक ।

सह्य ( त्रि० ) ( ह्यः । ह्या । ह्यम् ) सहने के योग्य, ( पुं० ) सह्याचल पर्वत ।

साकम् ( अव्यय ) साथ वा सङ्ग ।

साकल्यम् ( नपुं० ) सम्पूर्णता ।

साक्षात् ( अव्यय ) प्रत्यक्ष, तुल्य ।

सागरः ( पुं० ) समुद्र ।

सागराम्बरा ( स्त्री ) पृथ्वी ।

साङ्ख्यम् (नपुं०) साङ्ख्य शास्त्र।

साङ्ख्यः ( पुं० ) शाङ्ख्य शास्त्र का जाननेवाला ।

साचि ( अव्यय ) टेढ़ा बेंड़ा ।

सातम् ( नपुं० ) सुख ।

सातला ( स्त्री ) सिकाकाई ( एक बाल साफ करने का मसाला )

सातिः ( स्त्री ) अन्त वा समाप्ति, दान ।

सातीनकः ( पुं० ) मटर अन्न ।

सात्त्विक (त्रि०) (कः । की । कम् ) सत्वगुण युक्त ( जैसे विष्णु इत्यादि ), ( पुं० ) ८ सात्विकभाव ( १ पसीना होना २ ठगमुरी ३ रोमाञ्च ४ बोली का बदल जाना ५ कम्प ६ रङ्ग बदल जाना ७ आंसू गिरना ८ मूर्च्छा होना, ये कामदेव के विकार से वा और किसी हेतु से उत्पन्न होते हैं ) ।

सादिन् ( पुं० ) ( दी ) घोड़सवार, सारथी ।

साधनम् ( नपुं० ) पारा इत्यादि

रसायन का बनाना, चलना, पृथ्वी जल इत्यादि द्रव्य, धन दौलत, दिलवाना, धन इत्यादि का पैदा करना, उपाय, पीछे २ चलना, पुरुष का मूत्रेन्द्रिय, मृतक का अग्निसंस्कार ।

साधारण (त्रि०) (णः । णा । णम्) सदृश वा तुल्य, (नपुं०) सामान्य ।

साधित (त्रि०) (तः । ता । तम्) सिद्ध किया गया = ई, दिलवाने वाला = ली ।

साधिष्ठ (त्रि०) (ष्ठः । ष्ठा । ष्ठम्) अत्यन्त साधु वा भला = ली, अत्यन्त बहुत ।

साधीयस् (त्रि०) (यान् । यसी । यः) तथा ।

साधु (त्रि०) (धुः । धुः । धु) साधु, कुलीन, सुन्दर, रोजगारी, सज्जन ।

साध्याः, बहुवचन, (पुं०) साध्य नामक गणदेवता वा देवतों का एक झुण्ड जो गिनती में १२ हैं ।

साध्वसम् (नपुं०) भय ।

साध्वी (स्त्री) पतिव्रता स्त्री ।

सानु (पुं । नपुं०) (नुः । नु) पर्वत का शिखर वा शृङ्ग वा चोटी, पर्वत की समान वा बराबर भूमि ।

सान्त्व (त्रि०) (न्त्वः । न्त्वा । न्त्वम्) तसल्ली देने का वचन, (नपुं०) मीठा बोलना ।

सान्दृष्टिकम् (नपुं०) तात्कालिक वा उसी क्षण में उत्पन्न हुआ फल ।

सान्द्र (त्रि०) (न्द्रः । न्द्रा । न्द्रम्) निविड़ वा घन वा गझिन ।

सान्नाय्यम् (नपुं०) एक प्रकार की होम की वस्तु ।

साप्तपदीनम् (नपुं०) मैत्री वा दोस्ती अर्थात् ७ पद बोलने से जो हो ।

सामन् (नपुं०) (म) साम वेद, मीठा बोलना वा तसल्ली देना ।

सामाजिकः (पुं०) सभा में बैठनेवाला ।

सामान्य (त्रि०) (न्यः । न्या । न्यम्) साधारण, (स्त्री) वेश्या, (नपुं०) जाति ।

सामि (अव्यय) आधा, निन्दित ।

सामिधेनी (स्त्री) एक वेद की ऋचा जिस को पढ़कर यज्ञ में आग को प्रज्वलित करते हैं ।

साम्परायिकम् (नपुं०) सङ्ग्राम वा युद्ध । [सम्परायकम्]

साम्प्रतम् ( अव्यय ) इस घड़ी वा आजकल, योग्य वा उचित ।
सायः ( पुं० ) दिन का अन्त वा साँझ, अन्त ।
सायकः ( पुं० ) बाण, तलवार ।
सायम् ( अव्यय ) दिन का अन्त वा साँझ ।
सार ( त्रि० ) ( रः । रा । रम् ) श्रेष्ठ वा प्रधान, ( पुं० ) बल, वस्तु का स्थिरभाग वा हीर, मज्जा वा चरबी, (नपुं०) पानी, धन, उचित वा न्याय के अनुसार।
सारङ्ग (त्रि०) (ङ्गः। ङ्गी। ङ्गम्) चितकबरा रङ्गवाला = ली, (पुं०) चितकबरा रङ्ग, मृग पशु, पक्षी, पपीहा पक्षी, (स्त्री) मृगी ।
सारणी ( स्त्री ) कुब्जप्रसारणी ओषधी ।
सारथिः ( पुं० ) सारथि ।
सारमेयः ( पुं० ) कुत्ता ।
सारव ( त्रि० ) ( वः । वी । वम् ) सरयूसम्बन्धी ( तरङ्ग वा लहर इत्यादि ) ।
सारसः ( पुं० ) सहरस पक्षी ।
सारसम् ( नपुं० ) कमल ।
सारसनम् (नपुं०) "अधिकाङ्ग" में देखो, एक प्रकार की मेखला जो स्त्री लोग कमर में पहिनती हैं ।
सारिका ( स्त्री ) मैना पक्षी ।
सारिवा ( स्त्री ) उत्पलशिखा वा सरिवन ओषधी ।
सार्थः ( पुं० ) साथ वा सङ्ग, प्राणियों का झुण्ड ।
सार्थवाहः ( पुं० ) बनियाँ ।
सार्द्धम् ( अव्यय ) साथ वा सङ्ग ।
सार्द्र ( त्रि० ) ( द्रः । द्रा । द्रम् ) ओदा = दी ।
सार्वभौमः ( पुं० ) सब पृथ्वी का स्वामी, उत्तर दिशा का दिग्गज
सालः ( पुं० ) पेड़ वा वृक्ष, सखुआ वृक्ष ।
सालपर्णी (स्त्री) शालपर्णी ओषधी
सास्ना (स्त्री) गैयों के गले का वह हिस्सा जो लटकता रहता है।
साहसम् ( नपुं० ) मरने जीने का भय छोड़ कर काम करना, दण्ड वा सज़ा ।
साहस्र (पुं० । नपुं०) (स्रः । स्रम्) (पुं०) हज़ार मनुष्य की सेनावाला, (नपुं०) हज़ार मनुष्यों का झुण्ड ।
सिकता ( स्त्री ) बलुहा स्थान, सिकटी ।
सिकताः, बहुवचन, (स्त्री) बालू ।
सिकतावत् (त्रि०) (वान् । वती । वत्)

जिस स्थान में बहुत बालू है ।

सिकतिल (त्रि०) (लः । ला । लम्) तथा ।

सिक्थकम् ( नपुं० ) मोम, मोत ।

सिङ्घाणम् ( नपुं० ) नकटी वा नासिका का मल, लोहा का मल।

सित ( त्रि० ) ( तः । ता । तम् ) बांधाहुआ = ई, समाप्त हुआ वा पूरा हुआ = ई, सफेद रङ्गवाला = लो, (पुं०) सफेद रङ्ग, (स्त्री) चीनी ।

सितच्छत्रा ( स्त्री ) सौंफ ।

सिताभ्रः ( पुं० ) कपूर ।

सिद्ध ( त्रि० ) ( द्धः । द्धा । द्धम् ) सिद्ध हुआ = ई (अन्न इत्यादि), एक देवजाति ।

सिद्धान्तः ( पुं० ) सिद्धान्त वा कई एक लोग मिल कर जिस बात को ठीक करें ।

सिद्धार्थः (पुं०) सरसों (एक दाना)

सिद्धिः ( स्त्री ) अणिमा इत्यादि ८ सिद्धि ("विभूतिः" में देखो), जिस का प्रारम्भ किया है उस को यथार्थ पूर्णता, ऋद्धि वा वृद्धि ( एक ओषधी ) ।

सिध्यः ( पुं० ) पुष्य नक्षत्र ।

सिध्मम् (नपुं०) सेंहुआं (एक रोग)

सिध्मन् ( नपुं० ) (ध्म) तथा ।

सिध्मल (त्रि०) ( लः । ला । लम्) सेंहुआं रोगवाला = ली, (स्त्री) सूखी मछली ।

सिध्रका ( स्त्री ) एक वृक्ष ।

सिनीवाली ( स्त्री ) चन्द्रमायुक्त अमावस ।

सिन्दुकः ( पुं० ) स्योंड़ी वृक्ष ।

सिन्दुवारः ( पुं० ) तथा ।

सिन्दूरम् ( नपुं० ) सेंदुर ।

सिन्धु ( पुं० । स्त्री ) ( न्धुः । न्धुः ) ( पुं० ) समुद्र, एक नद, सिन्धु देश, ( स्त्री ) नदी ।

सिन्धुकः ( पुं० ) स्योंड़ी वृक्ष ।

सिन्धुजम् ( नपुं० ) सेंधा नोन ।

सिम्बा ( स्त्री ) छीमी ।

सिल्लकी ( स्त्री ) सलई वृक्ष ।

सिह्लः ( पुं० ) लोहबान ( एक धूप की वस्तु )

सीता ( स्त्री ) राम की पत्नी, हर का मार्ग अर्थात् खेत में जोतने से पड़ी हुई लकीर ।

सीत्य (त्रि०) ( त्यः । त्या । त्यम् ) जोता हुआ खेत ।

सीधुः ( पुं० ) एक तरह का मद्य जो ऊख के रस से बनता है ।

सीमन् ( स्त्री ) (मा) मर्यादा वा हद्द वा सिवाना ।

सीमन्तः ( पुं० ) मांग ।

सीमन्तिनी ( स्त्री ) स्त्री ।
सीमा ( स्त्री ) मर्यादा वा हद्द वा सिवाना ।
सीरः ( पुं० ) जोतने का हर ।
सीरपाणिः ( पुं० ) बलदेव ( कृष्ण के भाई ) ।
सीवनम् ( नपुं० ) सीना ।
सीसम् (नपुं०) सीसा (एक धातु)।
सीसकम् ( नपुं० ) तथा ।
सीहुण्डः ( पुं० ) सेंहुड वृक्ष ।
सु (अव्यय) अत्यन्त, पूजा वा प्रतिष्ठा ।
सुकन्दकः (पुं०) प्याज वा पियाज (एक कन्द ) ।
सुकर ( त्रि० ) ( रः । रा । रम् ) सुख से करने के योग्य, (स्त्री) क्रोधरहित स्त्री ।
सुकल (त्रि०) ( लः । ला । लम् ) देनेवाला और खानेवाला वा खाने खिलाने वाला = ली ।
सुकुमार (त्रि०) (रः । रा ।—री । रम् ) मृदु वा कोमल ।
सुकुमारकः (पुं०) एक प्रकार का ऊख ।
सुकृतम् ( नपुं० ) पुण्य ।
सुकृतिन् ( त्रि० ) ( ती । तिनी । ति । ) पुण्यवान्, भाग्यवान् ।
सुख ( त्रि० ) ( खः । खा । खम् ) सुख देनेवाला = ली, ( नपुं० ) सुख ।
सुखवर्चकः ( पुं० ) सज्जीखार ।
सुखसन्दुह्या ( स्त्री ) सुख से दूहने के योग्य गैया ।
सुखसन्दोह्या ( स्त्री ) तथा ।
सुगतः ( पुं० ) बुद्ध ( बौद्धों की देवता ) ।
सुगन्ध (त्रि०) (न्धः । न्धा । न्धम्) सुगसन्धयुक्त वस्तु, ( स्त्री ) रासन वृक्ष ।
सुगन्धि ( त्रि० ) (न्धिः । न्धिः । न्धि ) सुगन्धयुक्त वस्तु, ( पुं० ) सुगन्धः (नपुं०) बालुका नाम गन्धद्रव्य ।
सुग्रीव ( त्रि० ) ( वः । वा । वम् ) सुन्दर गरदन वाला = ली, बालि वानर का भाई, कृष्ण के चार घोड़ों में से एक का नाम।
सुचरित्रा ( स्त्री ) पतिव्रता स्त्री ।
सुतः ( पुं० ) पुत्र, राजा ।
सुतश्रेणी ( स्त्री ) मूसाकर्णी औषधी ।
सुता ( स्त्री ) कन्या ।
सुत्या (स्त्री) सोमलता का कूटना।
सुत्रामन् ( पुं० ) ( मा ) इन्द्र ।
सुत्वन् ( पुं० ) ( त्वा ) जिस ने यज्ञसमाप्ति में अवभृथ नाम

एक स्नान किया है।
सुदर्शन (पुं०। नपुं०) (नः। नम्) विष्णु का चक्र।
सुदायः (पुं०) कन्यादान के समय में और व्रत भिक्षा इत्यादि में जो द्रव्य दिया जाता है (दहजा इत्यादि)।
सुदूर (त्रि०) (रः। रा। रम्) अत्यन्त दूरवाला = लो, (नपुं०) अत्यन्त दूर।
सुधर्मन् (पुं०। स्त्री) (र्मा) अच्छे धर्म वाला वा अच्छा धर्मात्मा, (स्त्री) देवतों की सभा।
सुधर्मा (स्त्री) देवतों की सभा।
सुधा (स्त्री) अमृत, चूना, बिजुली, भोजन, भँवरा, सँहुड़ (एक वृक्ष)।
सुधांशुः (पुं०) चन्द्रमा।
सुधीः (पुं०) पण्डित वा बुद्धिमान्।
सुनासीरः (पुं०) इन्द्र।
सुनिषण्णकम् (नपुं०) बिसखपरिया औषधी।
सुन्दर (त्रि०) (रः। री। रम्) सुन्दर वा मनोहर, (स्त्री) सुन्दर स्त्री।
सुपथिन् (पुं०) (न्थाः) अच्छा मार्ग वा रास्ता।
सुपर्णः (पुं०) गरुड़ पक्षी।
सुपर्णकः (पुं०) अमिलतास वृक्ष।
सुपर्वन (पुं०) (र्वा) देवता।
सुपार्श्वकः (पुं०) गेठी वृक्ष।
सुप्रतीकः (पुं०) ईशान कोण का दिग्गज।
सुप्रलापः (पुं०) अच्छा बोलना।
सुभग (त्रि०) (गः। गा। गम्) सुडौल वा देखने में अच्छा।
सुभिक्षा (स्त्री) धव वृक्ष।
सुमम् (नपुं०) फूल। [समम्]
सुमन (पुं०। नपुं०) (नः। नम्) (पुं०) गोंहूँ अन्न, (नपुं०) फूल।
सुमनस् (पुं०। स्त्री) (नाः) (पुं०) देवता, (स्त्री) चमेली पुष्पवृक्ष।
सुमनसः, बहुवचन, (स्त्री) फूल।
सुमना (स्त्री) चमेली पुष्पवृक्ष।
सुमेरुः (पुं०) एक पर्वत का नाम।
सुरः (पुं०) देवता।
सुरङ्गा (स्त्री) सुरङ्ग।
सुरज्येष्ठः (पुं०) ब्रह्मा।
सुरदीर्घिका (स्त्री) आकाशगङ्गा।
सुरद्विष् (पुं०) (ट्—ड्) असुर वा दैत्य।
सुरनिम्नगा (स्त्री) आकाशगङ्गा, गङ्गा।
सुरपतिः (पुं०) इन्द्र।
सुरभि (त्रि०) (भिः। भिः—भी।

भि ) सुन्दर वा मनोहर, सुगन्धयुक्त, प्रसिद्ध, (पुं०) चम्पा ( पुष्पवृक्ष ), वसन्त ऋतु, जायफल, ( स्त्री ) कामधेनु, सलई वृक्ष, ( नपुं० ) सुवर्ण वा सोना, कमल ( पुष्पवृक्ष )।

सुरर्षिः ( पुं० ) देवऋषि ( नारद इत्यादि )।

सुरलोकः ( पुं० ) स्वर्ग।

सुरवर्त्मन् (नपुं०) (र्त्म) आकाश।

सुरसा ( स्त्री ) रासन वृक्ष, सर्पों की माता।

सुरा ( स्त्री ) मद्य।

सुराचार्यः ( पुं० ) बृहस्पति।

सुरालयः ( पुं० ) स्वर्ग।

सुराष्ट्रजम् ( नपुं० ) रहर अन्न।

सुरोदः ( पुं० ) मद्य का समुद्र।

सुवचनम् (नपुं०) अच्छा बोलना।

सुवर्ण (पुं०। नपुं०) ( र्णः। र्णम् ) सोलह मासे भर सोना, (नपुं०) सुवर्ण वा सोना।

सुवर्णकः ( पुं० ) अमिलतास वृक्ष।

सुवल्लि ( स्त्री ) ( ल्लिः—ल्ली ) बकुची ओषधी।

सुवह ( त्रि० ) ( हः। हा। हम् ) सुख से ढोने के योग्य, (स्त्री) सलई वृक्ष, एलापर्णी ओषधी, गोधापदी वा हंसपदी ओषधी, नेवारी पुष्पवृक्ष, रासन वृक्ष, बीन ( बाजा )।

सुवासिनी (स्त्री) कुछ जवान विवाहिता स्त्री।

सुव्रत ( त्रि० ) ( तः। ता। तम् ) अच्छे व्रत का करने वाला वा अच्छे नियमवाला = ली, (स्त्री) सुख से दूहने के योग्य गैया।

सुषम ( त्रि० ) ( मः। मा। मम् ) सुन्दर वा रूपवान्, (स्त्री) अति सुन्दरता वा शोभा।

सुषवी ( स्त्री ) करैला तरकारी [सुसवी] [सुशवी], कालीजीरी।

सुषिः ( स्त्री ) छिद्र वा बिल।

सुषिरम् (नपुं०) बांसुली इत्यादि जो मुख से बजाया जाय, छिद्र वा बिल।

सुषिरा (स्त्री) मालकँगुनी ओषधी।

सुषीम (त्रि०) ( मः। मा। मम् ) ठण्ढी वस्तु, मनोहर वा सुन्दर, एक प्रकार का सर्प।

सुषेणः ( पुं० ) करौंदा वृक्ष, एक बन्दर का नाम।

सुषेणिका ( स्त्री ) श्याम निशोथ ओषधी।

सुष्ठु ( अव्यय ) अत्यन्त, प्रशंसा।

सुसंस्कृत (त्रि०) ( तः। ता। तम् ) अच्छी तरह से संस्कार किया

हुआ वा प्रशंसनीय।

सुहृद् (पुं०) (त्—द्) मित्र।

सुहृदय (त्रि०) (यः। या। यम) साफ दिलवाला वा निर्मल चित्तवाला = ली, (पुं०) मित्र।

सूकरः (पुं०) सूअर पशु।

सूक्ष्म (त्रि०) (क्ष्मः। क्ष्मा। क्ष्मम्) अति छोटा = टी, अत्यन्त थोड़ा = डी, (पुं०) दगाबाजी, लिङ्गशरीर, परमाणु, (नपुं०) दूध, आकाश।

सूचकः (पुं०) चुगलखोर।

सूचनम् (नपुं०) अभिप्राय प्रकाश करना, चुगली खाना।

सूची (स्त्री) सूई, एक प्रकार का नृत्य, चोटी।

सूतः (पुं०) सारथि, पारा धातु, क्षत्रिय से ब्राह्मणी में पैदा हुआ लड़का, एक प्रकार का कारीगर (बढ़ई), बन्दी।

सूतिकागृहम् (नपुं०) जनने का घर वा सौर का घर।

सूतिमासः (पुं०) लड़का जनने का महीना अर्थात् नवाँ वा दसवाँ महीना।

सूत्थान (त्रि०) (नः। ना। नम्) चतुर।

सूत्रम् (नपुं०) सङ्क्षेप में ऋषियों का बनाया हुआ शास्त्र का तात्पर्यार्थ, सूत वा डोरा।

सूत्रामन् (पुं०) (मा) इन्द्र।

सूदः (पुं०) रसोईंदार, दही दूध खट्टा मीठा इत्यादि व्यञ्जनवस्तु, कढ़ी।

सूना (स्त्री) प्राणी का बधस्थान, गले की घाँटी, पुत्री वा कन्या।

सूनु (पुं०। स्त्री) (नुः। नुः) (पुं०) लड़का, (स्त्री) लड़की।

सूनृत (त्रि०) (तः। ता। तम्) सत्य और प्रियवचन।

सूपः (पुं०) दाल (एक भोज्यवस्तु)

सूपकारः (पुं०) रसोईंदार।

सूरः (पुं०) सूर्य वा सूरज।

सूरणः (पुं०) सूरन (एक तरकारी)।

सूरत (त्रि०) (तः। ता। तम्) दयावान् वा दयालु। [सुरत]

सूरसूतः (पुं०) अरुण (सूर्य का सारथि)।

सूरिः (पुं०) पण्डित।

सूर्प (पुं०। नपुं०) (र्पः। र्पम्) अनाज पछोड़ने का सूप।

सूर्मि (स्त्री) (र्मिः—र्मी) लोहे की प्रतिमा वा मूर्त्ति।

सूर्यः (पुं०) सूर्य वा सूरज।

सूर्यतनया (स्त्री) यमुना नदी।

सूर्यप्रिया (स्त्री) सूर्य की स्त्री

( १ छाया, २ संज्ञा, ३ राज्ञी )।
सूर्यसूतः ( पुं० ) अरुण ( सूर्य का सारथि ) ।
सूर्येन्दुसङ्गमः (पुं०) अमावस तिथि।
सृक्कन् (नपुं०) (क्क) दोनों ओठों के किनारे ।
सृक्कि ( नपुं० ) तथा ।
सृक्किणी ( स्त्री ) तथा ।
सृगः ( पुं० ) टेलवांस ।
सृगालः ( पुं० ) सियार ।
सृजिकाक्षारः ( पुं० ) सज्जीखार।
सृणि ( स्त्री ) (णिः—णी) हाथी का आंकुस ।
सृणिका ( स्त्री ) मुहँ का लार ।
सृणीका ( स्त्री ) तथा ।
सृतिः ( स्त्री ) मार्ग वा रास्ता ।
सृपाट ( पुं० । स्त्री ) ( टः । टी ) एक प्रकार का परिमाण ।
सृमरः ( पुं० ) एक मृग जो बहुत दौड़ता है ।
सृष्ट ( त्रि० ) ( ष्टः । ष्टा । ष्टम् ) बनायागया = ई, छोड़ दिया गया = ई, बहुत, निश्चय कियागया = ई ।
सृष्टिः (स्त्री) जगत् वा संसार, निर्माण वा बनावट ।
सेकपात्रम् (नपुं०) नाव के पानी के फेंकने का एक काठ का बरतन।
सेचनम् ( नपुं० ) तथा, सींचना।
सेतुः (पुं०) सेतु वा पुल, वरुण वृक्ष।
सेना ( स्त्री ) सेना वा फौज ।
सेनाङ्गम ( नपुं० ) हाथी घोड़ा रथ और पैदल—ये चारो ।
सेनानीः ( पुं० ) स्वामिकार्तिक, सेनापति ।
सेनामुखम् ( नपुं० ) वह सेना जिस में ३ हाथी ३ रथ ९ घोड़े और १५ पैदल रहते हैं ।
सेनारक्षः (पुं०) सेना की खबरदारी करनेवाला ।
सेलुः ( पुं० ) लसोड़ा वृक्ष ।
सेवक ( त्रि० ) (वकः । विका । वकम् ) सेवा करनेवाला = ली ।
सेवनम् (नपुं०) सेवा करना, सीना ( कपड़ा इत्यादि ) ।
सेवा ( स्त्री ) सेवा वा खिदमत ।
सेव्य (त्रि०) ( व्यः । व्या । व्यम् ) सेवा करने के योग्य, ( नपुं० ) गांडर वृक्ष की जड़ वा खस ( एक तरह की घास ) ।
सैकतम् ( नपुं० ) बालूयुक्त नदी इत्यादि का तीर ।
सैतवाहिनी (स्त्री) बाहुदा नदी।
सैनिकः (पुं०) सेना का रक्षक, सेना का सिपाही ।
सैन्धव (पुं० । नपुं०) ( वः । वम् )

सेंधा नोन, ( पुं० ) घोड़ा ।
सैन्य (पुं० । नपुं०) (न्यः । न्यम् ) (पुं०) सेना का सिपाही, ( नपुं० ) सेना वा फ़ौज ।
सैरन्ध्री ( स्त्री ) दूसरे घर में रहनेवाली और स्वतन्त्र स्त्री जो स्त्रियों का सिँगार करती हो। [ सैरिन्ध्रिः ]
सैरिक (त्रि०) ( कः । की । कम् ) हरसम्बन्धी कोई वस्तु, (पुं०) हर जोतनेवाला ।
सैरिभः ( पुं० ) भैंसा पशु ।
सैरीयकः ( पुं० ) कठसरैया ( एक पुष्पवृक्ष ) ।
सैरेयकः ( पुं० ) तथा ।
सोढ ( त्रि० ) ( ढः । ढा । ढम् ) सहागया = हूं ।
सोत्प्रासम् ( नपुं० ) उपहास के सहित वचन ।
सोदर्यः (पुं०) एक पेट का भाई ।
सोन्माद (त्रि०) (दः । दा । दम्) उन्मत्त वा सनकी वा पागल ।
सोपप्लव (त्रि०) ( वः । वा । वम् ) उपद्रव के सहित, (पुं०) राहु से ग्रस्त अर्थात् जिन को ग्रहण लगा है ऐसे चन्द्र वा सूर्य ।
सोपानम् ( नपुं० ) सीढ़ी ।
सोभाञ्जनः ( पुं० ) सहेंजन वृक्ष ।
सोमः ( पुं० ) चन्द्र, सोमलता ।
सोमपाः ( पुं० ) सोमयाग करनेवाला । [ सोमपः ]
सोमपीथिन् ( पुं० ) (थी) तथा । [ सोमपीती ] [ सोमपीवी ]
सोमराजी (स्त्री) बकुची ओषधी ।
सोमवल्कः (पुं०) सफ़ेद खैर, कायफल ओषधी ।
सोमवल्लरि ( स्त्री )( रिः—री ) ब्राह्मी ( एक ओषधी ) ।
सोमवल्लिका (स्त्री) बकुची ओषधी
सोमवल्ली (स्त्री) गुरुच ओषधी ।
सोमोद्भवा ( स्त्री ) नर्मदा नदी ।
सोल्लुण्ठनम् ( नपुं० ) उपहास के सहित वचन ।
सौगतः (पुं०) बौद्ध अर्थात् "जगत् का कारण कुछ भी नहीं है" ऐसे मत का अवलम्बी नास्तिक।
सौगन्धिकम् (नपुं०) सफ़ेद कमल पुष्प, मुण्डी ओषधी, रोहिस तृण, एक प्रकार का अञ्जन जिस्को रसाञ्जन वा गन्ध कहते हैं।
सौचिकः ( पुं० ) सूई से काम करनेवाला ( दरजी रफ़ूगर इत्यादि ) ।
सौदामनी ( स्त्री ) बिजुली ।
सौदामिनी ( स्त्री ) तथा ।
सौध (पुं० । नपुं०) ( धः । धम् )

चूना से बनाहुआ घर, अति उत्तम घर ।
सौभागिनेयः ( पुं० ) सुन्दरी वा प्यारी स्त्री का पुत्र ।
सौभाञ्जनः ( पुं० ) सहिंजन वृक्ष ।
सौम्य (त्रि०) (म्यः । म्या । म्यम्) सुधा=धी, सुन्दर, चन्द्र को निवेदन करने के योग्य वस्तु, ( पुं० ) बुध ( एक ग्रह ) ।
सौरभेयः ( पुं० ) बैल ।
सौरभेयी ( स्त्री ) गैया ।
सौराष्ट्रिक (पुं० । नपुं०) (कः । कम) सुराष्ट्र देश का विष ।
सौरिः ( पुं० ) शनैश्चर ग्रह ।
सौवर्चकम् ( नपुं० ) सोंचरखार ।
सौवर्चल (पुं० । नपुं०) (लः । लम्) तथा ।
सौविदः ( पुं० ) राजों के अन्तःपुर वा जनानखाने का रक्षक वा डेवढ़ीदार ।
सौविदल्लः ( पुं० ) तथा ।
सौवीरम् ( नपुं० ) बेर का फल, सुरमा, कांजी ।
सौवीर्यम् ( नपुं० ) तथा ।
सौहित्यम् ( नपुं० ) तृप्ति वा सन्तुष्टता ।
संयत् ( स्त्री ) सङ्ग्राम वा युद्ध ।
संयत ( त्रि० ) ( तः । ता । तम् ) बाँधाहुआ वा जकड़ाहुआ=ई ।
संयमः ( पुं० ) बाँधना, इन्द्रियों का नियह ।
संयामः ( पुं० ) तथा ।
संयुगः ( पुं० ) सङ्ग्राम वा युद्ध ।
संयुत ( त्रि० ) ( तः । ता । तम् ) संयुक्त वा मिलाहुआ=ई ।
संयोजित ( त्रि० )(तः । ता । तम्) जोड़ाहुआ=ई । [ संयोगित ]
संरावः (पु ० ) शब्द ।
संलापः ( पुं० ) परस्पर बातचीत करना ।
संवत् ( अव्यय ) वर्ष वा बरस वा साल ।
संवत्सरः ( पुं० ) तथा ।
संवननम् ( नपुं० ) मणि मन्त्र ओषधी इत्यादि से वशीकरण वा बस करना ।
संवर्तः (पुं०) प्रलय वा युग का अन्त ।
संवर्तिका ( स्त्री ) कमल इत्यादि का नया पत्ता ।
संवसथः ( पुं० ) गाँव ।
संवाहनम् ( नपुं० ) पैर हाथ इत्यादि के दबाने से शरीर की पीड़ा का दूर करना ।
संविद् ( स्त्री ) (त्—द्) बुद्धि वा ज्ञान, अङ्गीकार, युद्ध, बातचीत करना, कर्म वा काम, संयम,

नाम, सन्तुष्ट करना, सङ्केत, आचार ।

संवीक्षणम् (नपुं०) तात्पर्य से वस्तु को खोजना ।

संवीत (त्रि०) (तः । ता । तम्) घेराहुआ = ई, (जैसा नदी इत्यादि से नगर) ।

संवेगः (पुं०) हर्ष इत्यादि से कामों में जल्दी करना ।

संवेदः (पुं०) अनुभव वा ज्ञान ।

संवेशः (पुं०) सूतना ।

संव्यानम् (नपुं०) ओढ़ना वा दुपट्टा इत्यादि ऊपर का वस्त्र ("उत्तरीय" में देखो) ।

संशप्तकः (पुं०) जो पुरुष शपथ खाकर युद्ध में पीठ नहीं देता।

संशयः (पुं०) सन्देह ।

संश्रवः (पुं०) अङ्गीकार ।

संश्रुत (त्रि०) (तः । ता । तम्) अङ्गीकार कियागया वा मान लियागया = ई ।

संश्लेषः (पुं०) आलिङ्गन वा लपटना ।

संसक्त (त्रि०) (क्तः । क्ता । क्तम्) लगाहुआ वा सटाहुआ = ई ।

संसद् (स्त्री) (त्—द्) सभा ।

संसरणम् (नपुं०) राजमार्ग वा सड़क, प्राणी का जन्म, बेरोक सेना की यात्रा ।

संसिद्धिः (स्त्री) स्वभाव, अच्छी तरह से कामों का पूरा होना।

संस्कारः (पुं०) किसी वस्तु में किसी गुण का स्थापन करना (जैसा फूल इत्यादि से वस्त्र को वासना), अनुभव वा ज्ञान करना, मनोरथ, उपनयन इत्यादि संस्कार ।

संस्कृत (त्रि०) (तः । ता । तम्) संस्कारयुक्त, लक्षणयुक्त, कृत्रिम वा बनावटी वस्तु ।

संस्तरः (पुं०) कुश का बिछौना, बिछौना, यज्ञ ।

संस्तवः (पुं०) परिचय वा जानपहिचान ।

संस्तावः (पुं०) यज्ञों में की वह भूमि जहाँ पर छन्दोग ब्राह्मण लोग स्तुति करते हैं ।

संस्त्यायः (पुं०) समूह, बैठक, विस्तार ।

संस्था (स्त्री) आधार, मर्यादा वा न्यायपूर्वक व्यवहार करना, मरना वा नाश ।

संस्थानम् (नपुं०) किसी वस्तु के अवयवों का विभाग, चौरहा, मरना वा नाश ।

संस्थित (त्रि०) (तः । ता । तम्)

मरगया = हुई।
संस्पर्शः (पुं०) स्पर्श करना वा छूना।
संस्पर्शा (स्त्री) चकवड़ (ओषधीवृक्ष)
संस्फोटः (पुं०) सङ्ग्राम वा युद्ध।
[ संस्फेटः ]
संहत (त्रि०) (तः। ता। तम्) दृढ़ वा मजबूत, मिलाहुआ वा एकट्ठा हुआ = हुई।
संहतलः (पुं०) "सिंहतल" में देखो।
संहतिः (स्त्री) समूह वा झुण्ड।
संहननम् (नपुं०) शरीर वा देह।
संहारः (पुं०) नाश, बटोरना वा एकट्ठा करना, एक नरक।
संहूतिः (स्त्री) बहुत लोगों का एकट्ठा हो कर पुकारना।
सांयात्रिकः (पुं०) जहाज़ लादने वाला व्यापारी।
सांयुगीनः (पुं०) सङ्ग्राम वा युद्ध में चतुर, युद्ध का रथ।
सांवत्सरः (पुं०) ज्योतिषी।
सांशयिक (त्रि०) (कः। की। कम्) सन्देहयुक्त।
सिंहः (पुं०) सिंह (एक वनपशु), मेषादि १२ राशियों में से एक राशि का नाम, श्रेष्ठ।
सिंहतलः (पुं०) मिली हुई बाँहूँ और दहिनी हथेली।
सिंहनादः (पुं०) वीरों का सिंह की तरह गरजना।
सिंहपुच्छी (स्त्री) पिठवन ओषधी।
सिंहसंहनन (त्रि०) (नः। ना। नम्) दृढ़ अङ्ग और रूप से संयुक्त, (पुं०) अच्छा जवान।
सिंहाणम् (नपुं०) लोहा की मैल।
सिंहानम् (नपुं०) तथा।
सिंहासनम् (नपुं०) सोने से बना हुआ राजा के बैठने का आसन।
सिंहास्यः (पुं०) अडूस वृक्ष।
सिंही (स्त्री) सिंह की स्त्री, अडूस वृक्ष, बनैला भण्टा।
सैंहिकेयः (पुं०) राहु दैत्य।
स्कन्दः (पुं०) स्वामिकार्तिक।
स्कन्धः (पुं०) वृक्ष का धड़ अर्थात् शाखा पत्ता छोड़ कर शेष वृक्ष का भाग, काँधा, समूह, डार, राजा।
स्कन्धशाखा (स्त्री) "स्कन्ध" से पहिली निकली हुई शाखा।
स्कन्न (त्रि०) (न्नः। न्ना। न्नम्) चुयपड़ा वा गिरपड़ा = ड़ी।
स्खलनम् (नपुं०) धर्म इत्यादि से विचल जाना वा अन्याय करना, बालक के हाथ पैर, बिछलाय कर गिरना।
स्खलित (त्रि०) (तः। ता। तम्) गिर पड़ा = ड़ी, (नपुं०) भूल

जाना, युद्ध की मर्यादा से अ-न्यथा करना वा युद्ध की म-र्यादा को छोड़ देना ।
स्तनः (पुं०) स्तन वा चूँची ।
स्तनन्धय (पुं० । स्त्री) (यः । यी) दूधपिउवा बालक ।
स्तनप (पुं० । स्त्री) (पः । पा) तथा।
स्तनयित्नुः (पुं०) गर्जनेवाला मेघ।
स्तनितम् (नपुं०) मेघ का शब्द।
स्तब्धरोमन् (पुं०) (मा) सूअर पशु।
स्तभः (पुं०) बकरा पशु । [स्तुभः]
स्तम्बः (पुं०) तृण यव इत्यादि का गुच्छा, बिना डार का वृत्त, डण्डा वा डाँठ ।
स्तम्बकरि (पुं०) जव इत्यादि अन्न
स्तम्बघनः (पुं०) घास काटने का हथियार (खुरपा इत्यादि)।
स्तम्बघ्नः (पुं०) तथा ।
स्तम्बेरमः (पुं०) हाथी ।
स्तम्भः (पुं०) खम्भा, ठगमुरी।
स्तवः (पुं०) स्तुति वा प्रशंसा ।
स्तवकः (पुं०) गुच्छा, वह कली जो फूलने चाहती है ।
स्तिमित (त्रि०) (तः । ता । तम्) स्थिर वा निश्चल, ओदा वा गीला = ली ।
स्तुत (त्रिं०) (तः । ता । तम्) जिस की प्रशंसा वा बड़ाई की गई, जिस का वर्णन वा बयान किया गया ।
स्तुतिः (स्त्री) स्तुति वा प्रशंसा ।
स्तूपः (पुं०) यज्ञ में पशु बाँधने का खम्भा, बड़ा (भोज्यवस्तु)।
स्तेनः (पुं०) चोर ।
स्तेमः (पुं०) ओदा होना, पानी इत्यादि का बूँद ।
स्तेयम् (नपुं०) चोरी ।
स्तैन्यम् (नपुं०) तथा ।
स्तोक (त्रि०) (कः । का । कम्) अल्प वा थोड़ा = ड़ी ।
स्तोत्रम् (नपुं०) स्तुति वा प्रशंसा ।
स्तोमः (पुं०) समूह, स्तोत्र वा स्तुति, यज्ञ ।
स्त्री (स्त्री) स्त्री वा मेहरारू ।
स्त्रीधर्मिणी (स्त्री) रजस्वला वा कपड़े से भई स्त्री ।
स्त्रीपुंसौ, द्विवचन, (पुं०) स्त्री पुरुष ।
स्त्रैण (त्रि०) (णः । णी । णम्) स्त्रीसम्बन्धी वस्तु, (पुं०) स्त्री-लम्पट पुरुष ।
स्थण्डिलम् (नपुं०) व्रती लोगों की सूतने की भूमि, यज्ञ के लिये संस्कारयुक्त की हुई भूमि।
स्थण्डिलशायिन् (पुं०) (यी) स्थ-ण्डिल पर सूतनेवाला व्रतधारी।
स्थपतिः (पुं०) चितेरा, कञ्चुकी,

जीवेष्टि नाम यज्ञ करनेवाला, थवई वा मकान बनानेवाला राजगीर, बृहस्पतिसव नाम यज्ञ करनेवाला ।

स्थपुट ( त्रि० ) ( टः । टा । टम् ) टेढ़ामेढ़ा ऊँचाखाला सङ्कीर्ण स्थान ।

स्थलम् (नपुं०) स्थान वा जगह ।

स्थला ( स्त्री ) बनाई हुई भूमि ।

स्थली ( स्त्री ) बिना बनाई हुई भूमि ।

स्थविर ( त्रि० ) (रः । रा । रम्) बुड्ढा = ड्ढी ।

स्थविष्ठ ( त्रि० ) (ष्ठः । ष्ठा । ष्ठम् ) अत्यन्त मोटा = टी ।

स्थाणुः (पुं०) शिव, अत्यन्त स्थिर ( खम्भा इत्यादि ), ठूँठा वृक्ष ।

स्थाण्डिलः ( पुं० ) "स्थण्डिलशायिन्" में देखो ।

स्थानम् (नपुं०) स्थान, अवकाश, स्थिति ।

स्थानीयम् (नपुं०) राजमार्ग वा सड़क ।

स्थाने (अव्यय) योग्य वा उचित ।

स्थापत्यः ( पुं० ) "सौविदल्ल" में देखो ।

स्थापनम् (नपुं०) स्थापन करना वा रखना ।

स्थापनी (स्त्री) सोनापाढ़ा ओषधी

स्थामन् ( नपुं० ) ( म ) बल वा सामर्थ्य ।

स्थायुकः (पुं०) एक गाँवँ का अधिपति वा स्वामी ।

स्थालम् ( नपुं० ) एक प्रकार का पात्र ।

स्थाली ( स्त्री ) बटलोही (एक रसोईं का बरतन ), पाँडर ( एक पुष्पवृक्ष ) ।

स्थावरः ( पुं० ) जो चलता फिरता नहीं ( पर्वत वृक्ष इत्यादि ) ।

स्थाविरम् ( नपुं० ) बुढ़ाई वा बुढ़ौती ।

स्थासकः ( पुं० ) चन्दन इत्यादि से देह का लेपन, पानी इत्यादि का बुल्ला ।

स्थास्नु (त्रि०) ( स्नुः । स्नुः । स्नु ) बहुत काल तक स्थिर रहनेवाला = ली ।

स्थितिः ( स्त्री ) ठहरना, न्यायपूर्वक व्यवहार करना, बैठना ।

स्थिर ( त्रि० ) ( रः । रा । रम् ) स्थिर वा जो हिलता डोलता नहीं, ( स्त्री ) भूमि वा पृथ्वी, शालपर्णी ओषधी ।

स्थिरायुः ( पुं० ) सेमर वृक्ष ।

स्थूणा ( स्त्री ) खम्भा वा थूनी,

काँसे की प्रतिमा वा मूर्ति ।
स्थूल ( त्रि० ) ( लः । ला । लम् ) मोटा = टी, निर्बुद्धि वा बुद्धिरहित, ( नपुं० ) समूह ।
स्थूललक्ष (त्रि०) (क्षः । क्षा । क्षम्) दान देने में शूर ।
स्थूललक्ष्य ( त्रि० ) ( क्ष्यः । क्ष्या । क्ष्यम् ) तथा ।
स्थूलोच्चयः ( पुं० ) पर्वत का बड़ा ढोँका, असम्पूर्णता, हाथियों की मध्यम गति अर्थात् न जल्दी न धीरे ।
स्थेयस् (त्रि०) (यान् । यसी । यः) अत्यन्त स्थिर वा निश्चल ।
स्थौणेयम् ( नपुं० ) कुरोदा (एक सुगन्धवृक्ष ) ।
स्थौरिन् ( पुं० ) (री) बोझा ढोनेवाला भाड़ा । [ स्थोरी ]
स्थौल्यम् ( नपुं० ) मोटाई ।
स्नवः ( पुं० ) स्राव वा बहना ।
स्नातकः ( पुं० ) जो ब्राह्मण वेद समाप्त कर के गृहस्त हुआ, जो वेद समाप्त कर के दूसरे आश्रम को ग्रहण नहीं करता है।
स्नानम् (नपुं०) स्नान वा नहाना।
स्नायुः ( स्त्री ) वह नाड़ी वा नस जिस से अङ्ग प्रत्यङ्ग के जोड़ बँधे रहते हैं ।
स्निग्ध (त्रि०) (ग्धः । ग्धा । ग्धम्) चिकना = नी, स्नेहयुक्त, एक उमरवाला = ली ।
स्नु ( पुं० । नपुं० ) (स्नुः । स्नु) पर्वत की चोटी, पर्वत का समान भूमिभाग ।
स्नुत ( त्रि० ) ( तः । ता । तम् ) बह निकला ( जैसा गैया के स्तन से दूध ) ।
स्नुषा ( स्त्री ) पुत्र की स्त्री ।
स्नुहा ( स्त्री ) सँहुड़ एक वृक्ष ।
स्नुही ( स्त्री ) तथा ।
स्नुह् ( स्त्री ) ( क्—ग् ) तथा ।
स्नेहः ( पुं० ) प्रेम ।
स्पर्शः ( पुं० ) एक तरह का गुण (ठण्ढा गरम और मातदिल), छूना, उपताप नाम रोग [स्पशः]।
स्पर्शन (पुं० । नपुं०) (नः । नम्) ( पुं० ) वायु, ( नपुं० ) दान, छूना वा स्पर्श करना ।
स्पशः (पुं०) दूत वा हलकारा, सङ्ग्राम वा युद्ध, उपतापनाम रोग
स्पष्ट (त्रि०) ( ष्टः । ष्टा । ष्टम् ) प्रकट वा साफ़ वा खुलासा ।
स्पृक्का ( स्त्री ) असबरक ( एक ओषधीवृक्ष ) ।
स्पृशी (स्त्री) भटकटैया ( एक कँटैली लता ) ।

स्पृष्टिः (स्त्री) स्पर्श करना वा छूना ।
स्पृहा ( स्त्री ) इच्छा ।
स्पष्टृ ( त्रि० ) ( ष्टा । ष्ट्री । ष्टृ ) स्पर्श करनेवाला वा छूनेवाला=ली, (पुं०) उपतापनाम रोग [ स्पष्टृ—(टा) ] ।
स्फटा ( स्त्री ) साँप का फन ।
स्फरणम् ( नपुं० ) "स्फारणम्" में देखो ।
स्फातिः ( स्त्री ) वृद्धि ।
स्फार ( त्रि० ) ( रः । रा । रम् ) बहुत ।
स्फारणम् ( नपुं० ) स्फुरण वा फुरफुराना वा फरकना ।
स्फिच् ( स्त्री ) ( क्—ग् ) कमर के मांस का पिण्ड जिस को कुल्हा कहते हैं ।
स्फिर ( त्रि० ) ( रः । रा । रम् ) बहुत ।
स्फुट (त्रि०) ( टः । टा । टम् ) फूलाहुआ (वृक्ष इत्यादि), "स्पष्ट" में देखो ।
स्फुटनम् (नपुं०) पुष्प इत्यादि का फूलना, फूटना वा फटना ।
स्फुरण (स्त्री । नपुं०)(णा । णम्) "स्फारण" में देखो ।
स्फुलनम् ( नपुं० ) तथा ।
स्फुलिङ्ग (त्रि०) ( ङ्गः । ङ्गा । ङ्गम् ) आग की चिनगारी ।
स्फूर्जकः ( पुं० ) तेँदू वृक्ष ।
स्फूर्जथुः ( पुं० ) वज्र की ध्वनि वा बिजुली की कड़क ।
स्फेष्ठ ( त्रि० ) ( ष्ठः । ष्ठा । ष्ठम् ) अत्यन्त बहुत ।
स्फोटनम् ( नपुं० ) "स्फुटनम्" में देखो ।
स्फोरणम् (नपुं०) "स्फारणम्" में देखो ।
स्म (अव्यय) भूतकाल का द्योतक, पादपूरणार्थक ।
स्मयः ( पुं० ) गर्व ।
स्मरः ( पुं० ) कामदेव ।
स्मरहरः ( पुं० ) शिव ।
स्मितम् ( नपुं० ) मुसकुराना वा मुसकान ।
स्मृतिः ( स्त्री ) स्मरण वा याद, मनु इत्यादि के कहे हुए धर्मशास्त्र के ग्रन्थ ।
स्मेर ( त्रि० ) ( रः । रा । रम् ) मुसकानेवाला ।
स्यदः ( पुं० ) वेग वा वेग के सहित चलना ।
स्यन्दन (पुं० । नपुं०) (नः । नम्) युद्ध के लिये रथ, (पुं०) वञ्जुल एक प्रकार का वृक्ष, ( नपुं० )

बहना, पानी ।
स्यन्दनारोहः (पुं०) रथ का सवार
स्यन्दिनी ( स्त्री ) मुह का लार ।
स्यन्न ( त्रि० ) ( न्नः । न्ना । न्नम् ) बह निकला ( जैसा गैया के स्तन से दूध ) ।
स्याद्वादिकः ( पुं० ) "मोक्ष है वा नहीं है" ऐसा सन्देही वा दोनों बात का अङ्गीकार करने वाला नास्तिक ।
स्यूत ( त्रि० ) ( तः । ता । तम् ) थैली, पोयागया, सीयागया ।
स्यूतिः ( स्त्री ) सीना ।
स्योनः ( पुं० ) थैली ।
स्योनाकः (पुं०) सोनापाढ़ा ओषधी
स्रज् ( स्त्री ) ( क्—ग् ) माला ।
स्रवः ( पुं० ) बहना ।
स्रवद्गर्भा ( स्त्री ) अकस्मात् जिस का गर्भ पात हो गया ।
स्रवन्ती ( स्त्री ) नदी ।
स्रवा ( स्त्री ) मुर्रा एक वृक्ष ।
स्रष्टृ ( पुं० ) ( ष्टा ) ब्रह्मा ।
स्रस्त ( त्रि० ) (स्तः । स्ता । स्तम् ) खसक गया वा गिरपड़ा = हो।
स्राक् ( अव्यय ) शीघ्र वा जल्दी ।
स्रुच् (स्त्री) ( क्—ग् ) होम में घी की आहुति देने का पात्र ( ध्रुवा उपभृत् जुहू और स्रुवा—इन चारों के लिये यही नाम है ) ।
स्रुत ( त्रि० ) ( तः । ता । तम् ) "स्यन्न" में देखो ।
स्रुव ( पुं० । स्त्री ) ( वः । वा ) एक प्रकार का होम करने का स्रुवा, ( स्त्री ) मुर्रा वृक्ष ।
स्रुवावृक्षः ( पुं० ) विकङ्कत वा कँठेर वृक्ष । [ स्रुवोवृक्षः ]
स्रोतस् ( नपुं० ) ( तः ) सोता वा आप से जल का बहना, इन्द्रिय, नदी का वेग ।
स्रोतस्वती ( स्त्री ) नदी ।
स्रोतोऽञ्जनम् ( नपुं० ) सुरमा ।
स्रंसिन् (त्रि०) (सी । सिनी । सि) खसकनेवाला वा गिरनेवाला = ली, (पुं०) अखरोट (एक मेवा)।
स्व ( त्रि० ) ( स्वः । स्वा । स्वम् ) आत्मसम्बन्धी वा अपना = नी, (पुं०) आत्मा वा आप वा खुद, भाई बिरादर, सगोत्र, आत्मा, ( पुं० । नपुं० ) धन ।
स्वच्छन्द ( त्रि० ) ( न्दः । न्दा । न्दम् ) स्वाधीन वा स्वतन्त्र ।
स्वजनः ( पुं० ) अपना प्राणी, समान गोत्रवाला ।
स्वतन्त्र (त्रि०) (न्त्रः । न्त्रा । न्त्रम्) स्वाधीन वा स्वतन्त्र ।

स्वधा ( अव्यय ) पितृ लोगों को हवि वा पिण्ड इत्यादि देने में यह शब्द बोला जाता है।
स्वधिति ( स्त्री ) (तिः—ती) वृक्ष इत्यादि काटने की कुल्हाड़ी।
स्वनः ( पुं० ) शब्द ।
स्वनित (त्रि०) ( तः । ता । तम् ) शब्दित वा शब्दयुक्त हुआ = ई, ( नपुं० ) शब्द ।
स्वप्नः ( पुं० ) सूतना, सपना।
स्वप्नज् ( त्रि० ) ( क्—ग् ) सूतने वाला वा सुतक्कड़ ।
स्वभावः (पुं०) स्वभाव वा प्रकृति।
स्वभूः ( पुं० ) विष्णु।
स्वयम् ( अव्यय ) आप वा खुद ।
स्वयम्भूः ( पुं० ) ब्रह्मा।
स्वयंवरा ( स्त्री ) वह कन्या जो अपनी इच्छा से पति को वरे।
स्वरः (पुं०) उदात्त अनुदात्त और स्वरित (ये ३ स्वर वेद के हैं), निषाद ऋषभ गान्धार षड्ज मध्यम धैवत पञ्चम (ये ७ स्वर गानशास्त्र के हैं)।
स्वरितः ( पुं० ) उदात्त और अनुदात्त स्वर मिल कर बनाहुआ एक प्रकार का स्वर।
स्वरुः ( पुं० ) इन्द्र का वज्र, यज्ञ में खम्भा के छीलने के समय उस में से गिरा पड़िला टुकड़ा।
स्वरूप ( त्रि० ) ( पः । पा । पम् ) सुन्दर वा मनोहर, ( पुं० ) पण्डित, ( नपुं० ) स्वभाव।
स्वर् (अव्यय) (स्वः) स्वर्ग, परलोक।
स्वर्गः ( पुं० ) स्वर्ग ।
स्वर्णम् ( नपुं० ) सुवर्ण वा सोना।
स्वर्णकारः (पुं० ) सोनार ।
स्वर्णक्षीरी ( स्त्री ) मकोय वृक्ष ।
स्वर्णदी ( स्त्री ) आकाशगङ्गा।
स्वर्णदीर्घिका ( स्त्री ) तथा ।
स्वर्भानुः ( पुं० ) राहु ग्रह ।
स्वर्वेश्या ( स्त्री ) स्वर्ग की वेश्या वा अप्सरा ।
स्वर्वैद्यौ, द्विवचन, (पुं०) अश्विनीकुमार ।
स्ववासिनी ( स्त्री ) वह स्त्री जिस का पति जीता है, कुछ जवान विवाहिता स्त्री ।
स्वसृ ( स्त्री ) ( सा ) बहिन ।
स्वस्ति ( अव्यय ) कल्याण, आशीर्वाद, पुण्य, इच्छा ।
स्वस्तिकः (पुं०) राजा इत्यादि धनपात्रों का एक प्रकार का घर।
स्वस्रियः (पुं०) बहिन का लड़का वा भाञ्जा ।
स्वस्रीयः ( पुं० ) तथा।
स्वस्रेयः ( पुं० ) तथा ।

स्वातिः ( पुं० । स्त्री ) एक नक्षत्र का नाम ।
स्वादु (त्रि०) ( दुः । दुः—द्वी । दु ) स्वादयुक्त, इष्ट वा चाहा हुआ =ई, मीठा =ठी ।
स्वादुकण्टकः ( पुं० ) कँटैर वृक्ष, गोखरू वृक्ष ।
स्वादुरसा (स्त्री) ककोड़ी ओषधी।
स्वादूदः (पुं०) स्वादयुक्त जलवाला समुद्र ।
स्वाद्वी ( स्त्री ) दाख (एक मेवा)।
स्वाध्यायः (पुं०) वेद का पढ़ना ।
स्वानः ( पुं० ) शब्द ।
स्वान्तम् ( नपुं० ) मन ।
स्वापः ( पुं० ) सूतना ।
स्वापतेयम् ( नपुं० ) धन ।
स्वामिन् ( पुं० ) (मी) स्वामी वा प्रभु वा मालिक ।
स्वाराज् (पुं०) ( ट्—ड् ) इन्द्र ।
स्वाहा ( स्त्री । अव्यय ) ( स्त्री ) अग्नि की पत्नी, ( अव्यय ) देवतों को हवि देने में इस शब्द का उच्चारण करते हैं ।
स्वित् ( अव्यय ) प्रश्न वा पूछना, तर्क करना ।
स्वेदः ( पुं० ) पसीना, गरमी ।
स्वेदज (त्रि०) ( जः । जा । जम् ) स्वेद वा पसीने से उत्पन्न भया जन्तु (चीलर खटमल इत्यादि)।
स्वेदनी ( स्त्री ) मद्य बनाने का बरतन ।
स्वैर ( त्रि० ) ( रः । री । रम् ) मन्द वा ढीला =ली, स्वच्छन्द वा अपने मन का काम करनेवाला =ली ।
स्वैरिणी ( स्त्री ) कुलटा वा वेश्या वा खानगी स्त्री ।
स्वैरिता ( स्त्री ) स्वच्छन्दता वा स्वतन्त्रता ।
स्वैरिन् (त्रि०) (री । रिणी । रि) स्वतन्त्र वा अपने मन का काम करनेवाला =ली ।

—***—

# ( ह )

ह ( अव्यय ) हर्ष, पादपूरण में ।
हः ( पुं० ) कोप, हाथी, शिव ।
हञ्जिका (स्त्री) ब्रह्मदण्डी ओषधी।
हञ्जे ( अव्यय ) चेटी वा दासी का सम्बोधन ( नाट्य में ) ।
हट्टः ( पुं० ) बाजार ।
हट्टविलासिनी (स्त्री) वेश्या, न-

ख नाम गन्धद्रव्य ।
हठः (पुं०) हठ वा जबरदस्ती ।
हण्डे (अव्यय) नीच स्त्री का सम्बोधन (नाट्य में) ।
हत (त्रि०) (तः । ता । तम्) मारागया = ई, मन में टूट गया वा उदास हो गया = ई ।
हतिः (स्त्री) घात करना ।
हनुः (पुं० । स्त्री) ठुड्ढी, नख नाम गन्धद्रव्य ।
हन्त (अव्यय) खेद, हर्ष, दया, वाक्य का आरम्भ ।
हन्न (त्रि०) (न्नः । न्ना । न्नम्) हगा गया = ई, हगा = गी, (नपुं०) हगना ।
हयः (पुं०) घोड़ा ।
हयनम् (नपुं०) स्त्रियों के चढ़ने की गाड़ी ।
हयपुच्छी (स्त्री) माषपर्णी ओषधी।
हयमारकः (पुं०) कँदूल पुष्पवृक्ष।
हयी (स्त्री) घोड़ी ।
हरः (पुं०) शिव ।
हरणम् (नपुं०) हर लेना वा छीन लेना, "सुदाय" में देखो।
हरि (त्रि०) (रिः रिः—री । रि) हरे रङ्गवाला पदार्थ, कपिल वा कुछ पीली वस्तु, (पुं०) विष्णु, घोड़ा, इन्द्र, बन्दर, मेंढक, वायु, सिंह, यम, चन्द्र, सूर्य, किरण वा प्रकाश, सुग्गा, सर्प ।
हरिचन्दन (पुं० । नपुं०) (नः । नम्) एक देवतों का वृक्ष, कपिल वा कुछ पीले रङ्ग का चन्दन ।
हरिण (त्रि०) (णः । णी । णम्) श्वेत पीत मिश्रित रङ्गवाली वस्तु (जैसी केवड़े के फूल की धूली होती है), (पुं०) हरिण वा मृग, श्वेत पीत मिश्रित रङ्ग, (स्त्री) हरिणी वा मृगी, सोने की मूर्ति, हरे रङ्ग की मूर्ति ।
हरित् (त्रि०) (त्—द्) हरे रङ्ग की वस्तु, (पुं०) हरा रङ्ग, घोड़ा, (स्त्री) दिशा (पूर्व पश्चिम इत्यादि), (पुं० । नपुं०) तृण ।
हरित (त्रि०) (तः । ता । तम्) हरे रङ्ग की वस्तु, (पुं०) हरा रङ्ग (स्त्री) हरी घास ।
हरितकम् (नपुं०) साग ।
हरितालम् (नपुं०) हरताल (एक धातु) ।
हरितालकम् (नपुं०) तथा ।
हरिदश्वः (पुं०) सूर्य वा सूरज।
हरिद्रा (स्त्री) हरदी ।
हरिद्राभः (पुं०) सुवर्ण वा सोना ।
हरिद्रुः (पुं०) दारुहरदी ।

हरिन्मणिः (पुं०) पन्ना एक मणि।
हरिप्रियः (पुं०) कदम्ब वृक्ष।
हरिप्रिया (स्त्री) लक्ष्मी।
हरिवालुकम् (नपुं०) बालुका (एक गन्धवस्तु)।
हरिमन्थकः (पुं०) चना (अन्न)।
हरिहयः (पुं०) इन्द्र।
हरीतकी (स्त्री) हर्रै।
हरेणुः (पुं०। स्त्री) (पुं०) मटर (अन्न), (स्त्री) रेणुकबीज (एक सुगन्धवस्तु)।
हर्म्यम् (नपुं०) धनियों का घर।
हर्यक्षः (पुं०) सिंह।
हर्षः (पुं०) सुख वा आनन्द।
हर्षमाण (त्रि०) (णः। णा। णम्) प्रसन्नचित्त वा आनन्दित।
हलम् (नपुं०) खेत जोतने का हर।
हला (अव्यय) सखी के सम्बोधन में (नाट्य में)।
हलायुधः (पुं०) बलदेव (कृष्ण के भाई)।
हलाहल (पुं०। नपुं०) (लः। लम्) एक तरह का विष।
हलिन् (पुं०) (ली) बलदेव (कृष्ण के भाई)।
हलिप्रिय (पुं०। स्त्री) (यः। या) (पुं०) कदम्ब वृक्ष, (स्त्री) मद्य।
हल्य (त्रि०) (ल्यः। ल्या। ल्यम्) जोताहुआ खेत, (स्त्री) हलों का समूह।
हल्लकम् (नपुं०) लाल कल्हार पुष्प।
हवः (पुं०) पुकारना, आज्ञा वा हुक्म, यज्ञ वा याग।
हविष् (नपुं०) (विः) होम की वस्तु, (घी इत्यादि), घी।
हव्यम् (नपुं०) होम की वस्तु।
हव्यवाहनः (पुं०) अग्नि वा आग।
हसः (पुं०) हँसना, हास्यरस।
हसनी (स्त्री) आग की बोरसी।
हसन्ती (स्त्री) तथा।
हस्तः (पुं०) हाथ, हस्त नक्षत्र, केहुनी से लेकर बिचली अँगुली तक का हाथ, (यह नाप में लिया जाता है), (यह शब्द जब "केश"वाचक शब्द के आगे रहता है तब इस का अर्थ समूह होता है, जैसे,—केशहस्तः—बालों का समूह)।
हस्तधारणम् (नपुं०) हाथ पकड़ना, रक्षा करना। [हस्तवारणम्]
हस्तिनखः (पुं०) नगर के द्वार पर से उतरने के वास्ते बनाई हुई उतार चढ़ाव वा ढार भूमि।
हस्तिन् (पुं०) (स्ती) हाथी।

हस्तिपकः (पुं०) हाथीवान।

हस्त्यारोहः (पुं०) तथा, हाथी-सवार।

हा (अव्यय) खेद वा विषाद वा कष्ट, शोक, पीड़ा।

हाटकम् (नपुं०) सोना।

हायन (पुं०। नपुं०) (नः। नम्) बरस, (पुं०) आग की आंच, एक तरह का धान।

हारः (पुं०) हार (गले का गहना)।

हारित (त्रि०) (तः। ता। तम्) हेरायदिया वा खोयदिया वा खोगया = ई, हारागया वा हार दियागया = ई, (पुं०) हारिल पक्षी।

हारीतः (पुं०) हारिल पक्षी।

हार्दम् (नपुं०) प्रेम।

हालः (पुं०) जोतने का हर।

हाला (स्त्री) मदिरा वा मद्य।

हालिक (त्रि०) (कः। की। कम्) हरसम्बन्धी वस्तु, (पुं०) हर जोतनेवाला।

हावः (पुं०) एक प्रकार का स्त्रियों का विलास वा चोंचला वा नखरा।

हासः (पुं०) हँसना, हास्यरस।

हास्तिकम् (नपुं०) हाथियों का झुण्ड।

हास्य (त्रि०) (स्यः। स्या। स्यम्) हँसने के योग्य, (पुं०) हास्यरस, (नपुं०) हँसना।

हाहाः (पुं०) एक देवतों का गवैया।

हि (अव्यय) निश्चय, क्योंकि, पादपूरणार्थक।

हिक्का (स्त्री) हुचकी (एक प्रकार का शरीर में विकार होता है जब कि खुल कर डेकार नहीं आती)।

हिङ्गु (नपुं०) हींग (एक अन्न का मसाला)।

हिङ्गुनिर्यासः (पुं०) नीम वृक्ष।

हिङ्गुलम् (नपुं०) ईंगुर (एक लाल बुकनी)।

हिङ्गुलि (पुं०। स्त्री) (लिः। लिः —ली) बनभण्टा।

हिज्जलः (पुं०) भूमि का बेंत, समुद्र का फल।

हिडम्बः (पुं०) एक राक्षस।

हिण्डि (नपुं०) समुद्रफेन (ओषधी)।

हिण्डीरः (पुं०) तथा।

हित (त्रि०) (तः। ता। तम्) हित वा उपकार करनेवाला = ली, मित्र, भाईबन्धु।

हिन्तालः (पुं०) एक प्रकार का छोटा ताड़।

हिम (त्रि०) (मः। मा। मम्)

ठण्ढा = ण्ढी, ( नपुं० ) पाला वा बरफ, चन्दन ।

हिमवत् ( पुं०) (वान्) हिमालय पर्वत ।

हिमवालुका ( स्त्री ) कपूर ।

हिमानी ( स्त्री ) पाले का समूह वा ढेर ।

हिमावती ( स्त्री ) मकोय वृक्ष ।

हिमांशुः ( पुं० ) चन्द्रमा ।

हिरण्यम् (नपुं०) सुवर्ण वा सोना, धनदौलत, गढ़ाहुआ सोना, गढ़ी हुई चांदी ।

हिरण्यगर्भः ( पुं० ) ब्रह्मा ।

हिरण्यरेतस् ( पुं० ) (ताः) अग्नि वा आग ।

हिरण्यबाहुः (पुं०) सोनभद्र नद।

हिरुक् ( अव्यय ) समीप, बिना ।

हिलमोचिका (स्त्री) हिलसाल वृक्ष।

ही ( अव्यय ) आश्चर्य ।

हीन ( त्रि० ) ( नः । ना । नम् ) किसी वस्तु से रहित, थोड़ा, त्याग कियागया = ई, निन्दा करने के योग्य ।

हुत ( त्रि० ) ( तः । ता । तम् ) होम किया गया = ई, (नपुं०) होम करना ।

हुतभुज् (पुं०) ( क् – ग् ) अग्नि वा आग ।

हुँ ( अव्यय ) तर्क वा विचार, अङ्गीकार वा हुँकारी भरना ।

हुम् (अव्यय) तथा, वितर्क, प्रश्न वा पूछना, अनुमति में, क्रोध से बोलने में, विनती करने में, लज्जा में, मना करने में (बोला जाता है) ।

हूतिः ( स्त्री ) नाम, पुकारना ।

हूहूः (पुं०) एक देवलोक का गवैया।

हृणीया ( स्त्री ) घिन करना, निन्दा करना, कृपा करना ।

हृदयम् (नपुं०) हृदयकमल, मन ।

हृदयङ्गम (त्रि०) (मः । मा । मम्) प्यारा = री, युक्ति से मिला वचन ।

हृदयालु (त्रि०) ( लुः । लुः । लु ) रसिक वा समझदार, ( "सहृदय" में देखो ) ।

हृद् ( नपुं० ) (त्—द्) मन का अन्तःकरण ।

हृद्य ( त्रि० ) ( द्यः । द्या । द्यम् ) अभीष्ट वा प्यारा = री, (नपुं०) अस्पष्ट वचन ।

हृषीकम् ( नपुं० ) इन्द्रिय ।

हृषीकेशः ( पुं० ) विष्णु ।

हृष्ट (त्रि०) (ष्टः । ष्टा । ष्टम्) हर्षयुक्त।

हे ( अव्यय ) सम्बोधन ।

हेतिः (स्त्री) अस्त्र (खड्ग इत्यादि),

आग की ज्वाला, सूर्य की प्रभा।
हेतुः ( पुं० ) कारण ।
हेमकूटः ( पुं० ) एक पर्वत ।
हेमदुग्धकः ( पुं० ) गुल्लर वृक्ष ।
हेमन् (नपुं०) (म) सुवर्ण वा सोना।
हेमन्तः ( पुं० ) अगहन और पूस का ऋतु ।
हेमपुष्पकः (पुं०) चम्पा पुष्पवृक्ष।
हेमपुष्पिका ( स्त्री ) पीली जूही पुष्पवृक्ष ।
हेमाद्रिः ( पुं० ) सुमेरु पर्वत ।
हेरम्बः ( पुं० ) गणेश ।
हेला (स्त्री) अनादर, एक प्रकार का स्त्रियों का हाव अर्थात् सुरत में बड़ी इच्छा, खेलवाड़ ।
हेषा ( स्त्री ) घोड़ों का हिनहिनाना ।
है (अव्यय ) सम्बोधन में ।
हैमवती ( स्त्री ) पार्वती, हरें ओषधी, सफ़ेद बच ओषधी, मकोय वृक्ष ।
हैयङ्गवीनम् ( नपुं० ) पूर्वदिन के दूध से निकालागया मक्खन ।
होतृ ( पुं० ) ( ता ) होम करने वाला, यज्ञ में ऋग्वेद का जाननेवाला ऋत्विक् ।
होमः ( पुं० ) अग्नि में आहुति डालना ।
होरा (स्त्री) लग्न, राशि (मेष इत्यादि) का आधा, शास्त्र, एक प्रकार की रेखा ।
हंसः ( पुं० ) हंस पक्षी, सूर्य वा सूरज ।
हंसकः ( पुं० ) पैर का गहना ( "मञ्जीर" में देखो ) ।
हंसवाहनः ( पुं० ) ब्रह्मा ।
हिंसा (स्त्री) चोरी इत्यादि बुरा कर्म, बध करना ।
हिंस्र ( त्रि० ) (स्रः । स्रा । स्रम्) हिंसा करनेवाला वा बध करने वाला = ली ।
ह्यस् (अव्यय) (ह्यः) कल (बीताहुआ)
ह्रदः ( पुं० ) अथाह पानीवाला जलाशय ( तलाव इत्यादि ) ।
ह्रदिनी ( स्त्री ) नदी ।
ह्रसिष्ठ ( त्रि० ) (ष्ठः । ष्ठा । ष्ठम्) अत्यन्त नाटा = टी ।
ह्रस्व ( त्रि० ) (स्वः । स्वा । स्वम्) नाटा वा छोटा = टी ।
ह्रस्वगवेधुका (स्त्री) ककरी वृक्ष ।
ह्रस्वाङ्ग ( त्रि० ) (ङ्गः । ङ्गी । ङ्गम्) नाटा वा छोटा = टी, ( पुं० ) ओषधियों के अष्टवर्ग में की जीवक नाम एक ओषधी ।
ह्रादः ( पुं० ) मेघ का शब्द ।
ह्रादिनी ( स्त्री ) वज्र, बिजुली,

नदी, सलई वृक्ष ।
ह्रीः ( स्त्री ) लज्जा ।
ह्रीण ( त्रि० ) (णः । णा । णम्) लज्जित वा लज्जायुक्त ।
ह्रीत (त्रि०) (तः । ता । तम्) तथा।
ह्रीवेरम् (नपुं०) नेत्रबाला ओषधी।
ह्रेषा ( स्त्री ) घोड़ों का हिनहिनाना ।
ह्लादिनी ( स्त्री ) सलई वृक्ष ।

॥ इति ॥

शब्दब्रह्ममहोदधेः किल परम्पारं स को दृष्टवान्
यश्शब्दान्गणयेन्नयेन्निजमतिश्चार्थेषु तेषाम्बुधः ॥
तत् स्वालम्ब्य पुराविदां विरचितान्कोषान् विदान्तुष्टये
भाषायाममरप्रकाशममलङ्गोपालशर्म्मा व्यधात् ॥ १ ॥
गोपालशर्म्मणा कोषः प्रयत्नाद्रचितो ह्ययम् ॥
प्रीत्यै भूयाद्भगवतो राधामाधवयोस्सदा ॥ २ ॥

